इलाजुल्गुरबा भाषा

अर्थात्

दीन-जन-चिकित्सा

अनुवादक -

स्वर्गीय काश्मीरी पंडित प्यारेलाल रुग्गू

[संशोधित संस्करण]

प्रकाशक -

तेजकुमार बुक डिपो, (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी -

नवलकिशोर बुक डिपो, लखनऊ

श्रीमती स्मिता पटवर्धन

प्रबन्ध संचालक

द्वारा राजा राम कुमार प्रेस, लखनऊ में मुद्रित

सन् २००३

सोलहवी बार } २,०००

मूल्य रू. ६२/-

सर्वाधिकार सुरक्षित

हैं, जो थोड़ा भी लिखा-पढ़ा हो, समझ सकता है और दूसरे की दवा कर सकता है, इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अभ्यास द्वारा वैद्य हो सकता है।

इस प्रकार 'उर्दू' में इस पुस्तक की बड़ी चर्चा हुई, तो वैद्यों या यों कहना चाहिये कि सब लोगों की इच्छा हुई कि यदि यह विचित्र और सिद्ध पुस्तक नागरी अक्षरों में अनुवाद करके छापी जावे, तो सबके लिये लाभकारी और उपकारी हो, अतएव 'अवध-समाचार' के सम्पादक तथा नवलकिशोर-प्रेस के प्रोप्राइटर मुंशी नवलकिशोरजी सी० आई० ई० ने आज्ञा दी कि इस पुस्तक का नागरी भाषा में अनुवाद हो, तो इस आधीन ने इसका प्रत्यक्षर प्रथम ठेठ भाषा में वैद्यक की रीति से अनुवाद कर दिया। श्रेष्ठजन जहाँ भूल पावें, क्षमा करके सुधार लें।

तथा पुस्तक के अन्त में सब प्रकार की तौलों का विस्तार भी लिख दिया गया है जिससे कि पाठकों को किसी प्रकार का भ्रम न पड़े।

अन्त में ईश्वर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे उपकारी, सदाचारी, धर्म-व्रत-धारी, गुण-ग्राहक, गुणि-जन-सुख-दायक, श्रीमन्मुंशी नवलकिशोर साहब की आयु, आरोग्य, प्रताप और धन की वृद्धि करें और चारों ओर यश छाया रहे, और यह पुस्तक पढ़ने-पढ़ानेवालों और रोगियों को कल्याण-दायक तथा गुणदायक हो, और हाथों हाथ बिककर फिर छापने का अवसर मिले।

यह ग्रंथ यंत्रालय के व्यय से अनुवादित हुआ है इसलिये कोई इसके छापने का विचार न करे।

काशमीरी पं० प्यारेलाल शर्म्मा रुग्गू।

इलाजुल्गुरबा भाषा का सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ
प्रकृति के विषय में ...	१
सते जरूरिये (छः आवश्यक वस्तुओं का वर्णन) ...	३
नहाने का उपाय	६
नाड़ी के विषय में... ...	६
कारूरे का वर्णन	१०
पित्त के मुंजिज अर्थात् पकाने की औषधि	१३
फस्द का वर्णन	१४
क्षौर, पछने, सिंगियों और जोंकों के विषय में ...	१५
दोषों की अधिकता का वर्णन	१५
शरीर को रोगों से रक्षा करने का विषय	१६
शिर के रोग का वर्णन ...	१७
शिरोरोग का यत्न ...	१८
इतरीफल मुलय्यन... ...	१८
पाशोया	१८
लाभ	१६
हरीरा	१६
महुये के फूलों का तेल ...	१६
नास	२०
हड़ का शर्बत	२१
सूंघने की दवा	२२
लाभ	२२
लेप	२२
पीसकर फूंकने की औषधि ...	२४
इस्पन्द का तेल	२६
शतावर का तेल	२६
टपकाने की औषधि ...	२६
सरसाम की विधियों और औषधियों का वर्णन ...	२६
कद्दू का तेल	२७
नीलोफर का तेल	२७
मिरगी का वर्णन	२८
मिरगी की औषधियां ...	२८
गुललाला का शरबत ...	३०
नाक में फूँकने की औषधि ...	३०
सकते की औषधि का वर्णन	३१
नाक में टपकाने की औषधि ...	३१
निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने के रोग के विषय में	३२
मालकांगनी के तेल के निकालने कि विधि	३३
द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन	३३
सुवात अर्थात्, अधिक सोने की दवाओं के विषय में ...	३३
द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन	३३
सुवात अर्थात्, अधिक सोने की दवाओं के विषय में ...	३३
सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन ...	३४
लकवा और फालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में ...	३५
माउल असल के बनाने की रीति	३६
अयारजफैकरा की तरकीब पिछले हकीमों की तरकीब पर ...	३६
गोली वैद्यक की रीति पर ...	३७
लकवे की और गोलियाँ ...	३७
फालिज के लिये वैद्यों की आजमाई हुई औषधि	३८
मलने की औषधि	३८

भूमिका ।

उस सच्चिदानन्द ईश्वर को धन्यवाद है; जिसने मनुष्यों के कल्याणार्थ रोगों को दूर करने के लिये अपनी अपूर्व रचना से वैद्यक विद्या को प्रकट किया । इस विद्या की उत्पत्ति इस भाँति है कि जब देवता और दैत्यों ने समुद्र-मंथन किया, तो धन्वन्तरिजी महाराज दो घड़ों को हाथ में लेकर समुद्र से उत्पन्न हुए, जो चौदह रत्नों में से एक रत्न गिने जाते हैं । इनका माहात्म्य इस विद्या में बहुत है, इनके अतिरिक्त इस सिद्ध और अपूर्व विद्या के जाननेवाले बहुत से सामर्थ्यवान् वैद्य प्राचीनकाल से अब तक उत्पन्न होते आये हैं, उनका वर्णन कहाँ तक किया जावे ।

यूनानियों के ऐतिहासिक प्राचीन ग्रन्थों में लिखा है कि 'तिब' में मुख्य अफलातून हुये हैं अर्थात् उन्हीं से इस विद्या का प्रचार हुआ । इसके उपरान्त बहुत से बुद्धिमान् हकीम हुए, जिनका आज तक डंका बज रहा है ।

इन दोनों विद्याओं के देखने से भलीभाँति सूचित होता है कि इनमें एक-ही-प्रकार, वही निदान, वही औषध, पर कुछ थोड़ा अन्तर है, वह मतांतर वा देशांतर का कारण है, और दोनों विद्यायें मनुष्यों के लिये, जो लिखने के प्रमाण पर चलते जावें जीवन-मूल हैं ।

यह परमोत्तम पुस्तक 'इलाजुलगुरबा भाषा' जिसका नाम अनुवादक ने 'चिकित्सा-कलिका' रखा है, फारसी-भाषा में थी, जिसको हकीम असगर-अली साहब ने, मौलवी मुहम्मद यूसुफअली साहब की प्रेरणा से उर्दू में अनुवादित किया और वह अनुवाद यंत्रालय के व्यय से हुआ । इसमें मुख्य करके नीचे लिखी हुई बातें और ग्रंथों से विशेष महत्त्व की हैं ।

जो इलाज सैकड़ों रुपयों के खर्च करने से होता है, वह इस पुस्तक के द्वारा थोड़े ही में हो जाता है अर्थात् और ग्रंथों की औषधों में, सैकड़ों रुपये के खर्च करने से वह लाभ न हो, और इसमें कौड़ियों के खर्च से फायदा दिखाई दे, इसीलिये यह गरीब और अमीर सबके लिये गुणदायक है और बीमारियों की पहिचान और उनके निदान तो इस तरह लिखे गये

हैं, जो थोड़ा भी लिखा-पढ़ा हो, समझ सकता है और दूसरे की दवा कर सकता है, इस एक ही पुस्तक से मनुष्य अभ्यास द्वारा वैद्य हो सकता है।

इस प्रकार 'उर्दू' में इस पुस्तक की बड़ी चर्चा हुई, तो वैद्यों या यों कहना चाहिये कि सब लोगों की इच्छा हुई कि यदि यह विचित्र और सिद्ध पुस्तक नागरी अक्षरों में अनुवाद करके छापी जावे, तो सबके लिये लाभकारी और उपकारी हो, अतएव 'अवध-समाचार' के सम्पादक तथा नवलकिशोर-प्रेस के प्रोप्राइटर मुंशी नवलकिशोरजी सी० आई० ई० ने आज्ञा दी कि इस पुस्तक का नागरी भाषा में अनुवाद हो, तो इस आधीन ने इसका प्रत्यक्षर प्रथम ठेठ भाषा में वैद्यक की रीति से अनुवाद कर दिया। श्रेष्ठजन जहाँ भूल पावें, क्षमा करके सुधार लें।

तथा पुस्तक के अन्त में सब प्रकार की तौलों का विस्तार भी लिख दिया गया है जिससे कि पाठकों को किसी प्रकार का भ्रम न पड़े।

अन्त में ईश्वर से हाथ जोड़कर प्रार्थना करता हूँ कि ऐसे उपकारी, सदाचारी, धर्म-व्रत-धारी, गुण-ग्राहक, गुणि-जन-सुख-दायक, श्रीमन्मुंशी नवलकिशोर साहब की आयु, आरोग्य, प्रताप और धन की वृद्धि करें और चारों ओर यश छाया रहे, और यह पुस्तक पढ़ने-पढ़ानेवालों और रोगियों को कल्याण-दायक तथा गुणदायक हो, और हाथों हाथ बिककर फिर छापने का अवसर मिले।

यह ग्रंथ यंत्रालय के व्यय से अनुवादित हुआ है इसलिये कोई इसके छापने का विचार न करे।

काशमीरी पं० प्यारेलाल शर्म्मा रुग्गू।

इलाजुलगुरबा भाषा का सूचीपत्र

विषय	पृष्ठ
प्रकृति के विषय में ...	१
सते जरूरिये (छः आवश्यक वस्तुओं का वर्णन) ...	३
नहाने का उपाय	६
नाड़ी के विषय में... ...	६
कारूरे का वर्णन	१०
पित्त के मुंजिज अर्थात् पकाने की औषधि	१३
फस्द का वर्णन	१४
क्षौर, पछने, सिंगियों और जोंकों के विषय में ...	१५
दोषों की अधिकता का वर्णन	१५
शरीर को रोगों से रक्षा करने का विषय	१६
शिर के रोग का वर्णन ...	१७
शिरोरोग का यत्न ...	१८
इतरीफल मुलय्यन... ...	१८
पाशोया	१८
लाभ	१९
हरीरा	१९
महुये के फूलों का तेल ...	१९
नास	२०
हड़ का शर्बत	२१
सूंघने की दवा	२२
लाभ	२२
लेप	२२
पीसकर फूंकने की औषधि ...	२४
इस्पन्द का तेल	२६
शतावर का तेल	२६
टपकाने की औषधि ...	२६
सरसाम की विधियों और औषधियों का वर्णन ...	२६
कद्दू का तेल	२७
नीलोफर का तेल	२७
मिरगी का वर्णन	२८
मिरगी की औषधियां ...	२८
गुललाला का शरबत ...	३०
नाक में फूँकने की औषधि ...	३०
सकते की औषधि का वर्णन	३१
नाक में टपकाने की औषधि ...	३१
निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने के रोग के विषय में	३२
मालकांगनी के तेल के निकालने कि विधि	३३
द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन	३३
सुवात अर्थात्, अधिक सोने की दवाओं के विषय में ...	३३
द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन	३३
सुवात अर्थात्, अधिक सोने की दवाओं के विषय में ...	३३
सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन ...	३४
लकवा और फालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में ...	३५
माउल असल के बनाने की रीति	३६
अयारजफैकरा की तरकीब पिछले हकीमों की तरकीब पर ...	३६
गोली वैद्यक की रीति पर ...	३७
लकवे की और गोलियाँ ...	३७
फालिज के लिये वैद्यों की आजमाई हुई औषधि	३८
मलने की औषधि	३८

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
वायु और कफ के दूर करने का तेल	४०	नेत्र की ज्योति का यत्न ...	५४
फालिज के लिये बावची का तेल	४०	मुंडी के शरबत का नुस्खा ...	५५
लहसुन की माजून	४०	सौंफ का चूर्ण	५५
बावची की माजून	४१	ज्योतिकारक सुरमा ...	५६
नाक में टपकाने की औषधि ...	४१	सबलवाय और आंख की सफेदी इत्यादि का वर्णन ...	५७
मालखोलिया अर्थात् विक्षिप्त की औषधि	४१	बारहसिंगे के सींग की गोलियां	५८
अमलबेद की सिकंजबीन ...	४२	जाले को दूर करने और मोतिया-बिन्दु को खोदेने का सुरमा	५८
नाक में टपकाने की औषधि	४२	टपकाने की दवा	६०
औषधि नाक में टपकाने की	४३	मुंडी की माजून	६१
शरीर के फड़कने का यत्न	४४	ढलका अर्थात् आंख से प्रति-समय आंसू बहने का यत्न	६१
अंगों के कांपने का यत्न ...	४४	करंजे का यत्न	६२
आंख की ललाई दूर करने की औषधियां	४६	अरब का यत्न	६२
आंखों की पैत्तिक पीड़ा को दूर करने की औषधि ...	४६	गुर्च का तेल	६२
नेत्रपीड़ा को तत्काल दूर करने की औषधि	४७	घोंजनी का यत्न	६३
रतौंधी का यत्न	४६	शई रह वह लंबाशोथ जो पलक पर जौ के आकार का होता है	६३
दिनौंधी का यत्न	५०	प्रबाल का यत्न	६३
पलकों के मोटा हो जाने का वर्णन	५०	कर्णरोग का यत्न	६३
सलाक का गुणकारण यत्न ...	५०	मूली का तेल	६३
काजल पारने की रीति ...	५२	ऊंचा सुनने का यत्न ...	६६
मोतिया बिन्दु का यत्न ...	५२	इन्द्रायन का तेल	६६
पानी उतरने के बन्द करने का यत्न	५२	कान के घाव का यत्न ...	६६
बच की माजून	५२	कान बहने और उसके मैल के निकालने का यत्न ...	६८
मोतियाबिन्दुनाशक सौंफ का सुरमा	५३	कान के शोथ का यत्न ...	६८
सेवती का सुरमा... ...	५३	कान के कीड़ों का यत्न ...	६९
आंख और पलकों की खुजली का यत्न	५४	औषधि	६९
मनुष्य के शिर के बालों का सुरमा	५४	कान की खुजली का यत्न ...	६९
		कान में पानी रह जाने का यत्न	६९

विषय		पृष्ठ
नाक के रोगों का यत्न	...	६९
जुकाम और नजले का यत्न	...	७१
खशखाश का खमीरा	...	७२
नाक की बदबू का यत्न	...	७४
बहुत छींकों के आने का यत्न	...	७४
पीनस का यत्न ...	...	७४
मुंह के रोगों का यत्न	...	७४
दांतों के रोगों का यत्न	...	७५
दांतों की पीड़ा का यत्न	...	७५
दांतों के खट्टे होने का यत्न	...	८१
दांतों में छिद्र होने का यत्न	...	८१
लड़कों के दांत सुगमता से निकलने की औषधियां	...	८१
जिह्वा के रोगों की औषधियां	...	८१
जिह्वा के दाह का यत्न	...	८१
जिह्वा के दानों का यत्न	...	८२
ओठों के फट जाने का यत्न	...	८४
कंठ के रोगों का यत्न (खुनाक)		८४
शहतूत का शर्बत ...	...	८४
गरगरा अर्थात् कुल्ली	...	८५
आवाज के पड़जाने का यत्न	...	८६
कंठमाला का यत्न	...	८७
कंठ में जोंक के लिपट रहने का यत्न	...	८८
हृदय रोगों का यत्न	...	८९
तम्बाकू का शरबत	...	९३
सिल के रोगों का यत्न	...	९५
लड़कों की पसली के रोग का यत्न		९६
घुड़चढ़ी की गोली	...	९७
दूसरा घुड़चढ़ी का नुस्खा	...	९७
पहलू की पीड़ा का यत्न	...	९८
खांसी के रोग का यत्न	...	९८
अमलतास की गुलकन्द	...	१०१

विषय		पृष्ठ
अमलतास की चटनी	...	१०१
हालिम की चटनी	...	१०१
खशखाश की चटनी	...	१०२
गोंदी की चटनी	...	१०२
पुस्तक निम्र्माता की बनाई हुई चटनी ...	...	१०२
काढ़ा पुस्तक निम्र्माता का वर्णित		१०३
रुधिर थूकने का यत्न	...	१०३
कहरबा की टिकिया	...	१०३
गुलनार की टिकिया	...	१०३
आश्चर्यदायक औषधि	...	१०४
हुबुल्लास का शरबत	...	१०४
मानसी रोगों का यत्न	...	१०४
चन्दन का खमीरा	...	१०५
गावजबां का शरबत	...	१०५
रेशम का शरबत ...	...	१०५
रुई के फूलों का शरबत	...	१०५
रंगतरे का शरबत	...	१०५
अनन्नास का शरबत	...	१०५
ताम्बूल का शरबत	...	१०६
जहरमोहरा ...	...	१०६
चाँदनी के फूलों की गुलकन्द	...	१०६
सेवती का गुलकन्द	...	१०७
गुड़हल का गुलकन्द	...	१०७
हरसिंगार का गुलकन्द	...	१०७
माजून मन को बलदायक	...	१०७
खस का अरक ...	...	१०८
धनिये का अरक ...	...	१०८
अब्बासी का खमीरा	...	१०८
मूर्च्छा का यत्न ...	...	१०९
कुचों के रोग का यत्न, लेप	...	१०९
मेदे अर्थात् पक्वाशय का यत्न		११०
सोंठ का छवारिश	...	११०

विषय	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
मीठे और खट्टे ऊद का पाक...	१११	खाने की इच्छा करने का यत्न	१२३
कुन्दर का पाक	१११	जी के मतलाने और उबकाई आने का यत्न	१२३
सादे आमले का पाक ...	१११	कालीमिरच की गोली ...	१२५
सादी अजवायन का पाक ...	१११	कलेजे के रोगों का यत्न इस्तस्का अर्थात् जलंधर ...	१२५
सादी कुलींजन का पाक ...	१११	यरकां अर्थात् कमलवायु का यत्न	१३०
कलौंजी का पाक ...	१११	नाक में टपकाने की औषधि...	१३०
मस्तगी का पाक ...	११२	तिल्ली अर्थात् तिल्ली की सख्ती का यत्न	१३२
वज का पाक ...	११२	अफतैमून की सिकंजवीन ...	१३२
पुदीने की माजून ...	११२	तुरबुद की गोली	१३३
अनीसून का पाक ...	११२	सँभालू की टिकिया ...	१३३
लोहे के मैल का पाक ...	११२	चमगादर की गोली ...	१३३
बड़ा इतरी फल ...	११२	एलवे की गोली	१३३
नोन की गोली ...	११३	फर्राश के पत्तों का शरबत ...	१३६
सनाय की गोली ...	११३	आंतों के रोगों के रोग अतीसार का यत्न	१३६
सोहागे की गोलियां ...	११३	नरकचूर की जवारिश ...	१३६
नोन की गोली	११५	बेरों का चूर्ण	१४१
लाल हरताल का रस ...	११६	जहीर का यत्न	१४४
बेद अंजीर का तेल ...	११७	पेट के कीड़ों का यत्न ...	१५२
सोये का तेल	११७	कांच के निकल आने की औषधि	१५४
नकछिकनी का तेल ...	११७	बवासीर का यत्न	१५५
शुंठ्यादि चूर्ण	११७	कालीजीरी का चूर्ण ...	१५७
अनारदाने का चूर्ण... ...	११८	अखरोट का चूर्ण	१५८
भोजन के पाचन का चूर्ण ...	११८	हुलहुल का चूर्ण	१५८
पान का अरक	११८	करंजुवे का चूर्ण ...	१५९
बालछड़ का शरबत ...	११९	गुले सदवर्ग का अरक ...	१६३
नाजबो का शरबत ...	११९	गुरदे और फुकनी के रोगों का यत्न	१६३
विसूचिका अर्थात् हैजे का यत्न	११९		
हिचकी का यत्न ...	१२१		
कुन्दर की टिकिया ...	१२२		
प्यास की अधिकता का यत्न...	१२२		
पक्वाशय में दूध और रुधिर के जमने का यत्न और लक्षण...	१२२		
स्वभाव जो कोइला और मिट्टी			

विषय	पृष्ठ
अंगूर के पत्तों का शरबत ...	१६३
हजरुल यहूद की फंकी ...	१६३
गुलदाउदी की फंकी ...	१६४
सूजाक का यत्न ...	१६६
काकुंज की कुरस अर्थात् ... टिकिया	१६८
मूत्र के अधिक आने का यत्न	१७०
मूत्र बन्द हो जाने का यत्न...	१७१
मूत्र में रुधिर के आने का यत्न	१७२
नपुंसकता का यत्न ...	१७३
लहसुन का तेल	१८३
चमेली की पत्तियों का तेल ...	१८४
उन रोगों का यत्न जो मुख्य स्त्रियों के होते हैं—स्त्री के बांझ न होने का यत्न ...	१९६
गर्भवती के यत्न का वर्णन ...	१९७
वह औषधियां जो गर्भ को गिरने न दें	१९८
कठिनता से प्रसूति होने का यत्न	१९९
उन औषधियों का वर्णन कि स्त्री को बांझ करें ...	२००
भग के संकीर्ण करने का यत्न	२०४
सुहाग सोंठि	२०६
स्त्री के ऋतु के रुधिर के अधिक बहने का यत्न	२०६
सुपारी पाक	२०७
शूलरोग का यत्न	२१०
शरीर के प्रकट रोगों का वर्णन और आतशक का यत्न ...	२१७
इन्द्रायण का शरबत ...	२१८
कोढ़ का यत्न	२२५
शीशम का शरबत	२२७
शिर के गंज का यत्न ...	२२८
गधे की लीद का तेल ...	२२८
आंब के अचार का तेल ...	२२९
बकायन के फल का तेल ...	२२९
फर्राशा का तेल	२२९
बरस व बहक अबैस अर्थात् सफेद दाग का यत्न ...	२३०
घूँस का तेल	२३१
नारू का यत्न	२३४
रक्तपित्त का यत्न उसको सुर्ख बादा भी बोलते हैं ...	२३५
दाद का इलाज	२३६
तर और खुश्क खुजली का यत्न	२३८
बगल की दुर्गन्धि का यत्न ...	२४२
उंगलियों के फूलने और उनकी खुजली का यत्न	२४३
हर प्रकार के व्रणों के मरहमों का वर्णन	२४६
उन दानों का यत्न जो बरसात में पैदा होते हैं	२४९
नासूर का यत्न	२५०
उन औषधियों का वर्णन जो रुधिर को बन्द करती हैं...	२५२
आग से जलजाने का यत्न ...	२५३
लेप करने की दवाइयां ...	२५४
बहुत मोटाई का इलाज ...	२५६
शरीर के अधिक क्षीण होने का यत्न	२५६
मुहासों का यत्न	२५७
मुख का रंग बराबर हो जाने का यत्न	२५७
काले दाग का यत्न ...	२५८
छीप की दवायें	२५९

विषय	पृष्ठ
मस्से और तिल की दवायें ...	२६०
बद का यत्न	२६०
शोथ का यत्न	२६२
छोटे दानों को जिन्हें फुन्सियाँ बोलते हैं उनका यत्न ...	२६५
हाथ पांव के फट जाने का यत्न	२६६
जूं के अधिक होने का यत्न ...	२६७
सिरका जिसे हिंदी में वफा बोलते हैं उसका यत्न ...	२६७
नाखूनों की दवायें ...	२६८
चेचक का यत्न ...	२६८
बालों की दवायें	२६९
वह औषधियां जो बाल निकलने न दें	२७१
लू लगने का यत्न ...	२७३
ज्वर का यत्न	२७३
खस का खमीरा	२७७
आनन्द भैरव की गोली ...	२७९
बोहरान का वर्णन	२८३
बोहरान जय्यद के बारहों दिन दोहों में	२८४
विष का यत्न	२८४
भिड़ के विष की गुणदायक... दवायें	२९०
दीवाने कुत्ते का यत्न ...	२९१
तौलों के नाम और उनका हाल	२९३

इति सूची पत्रम् ।

इलाजुलगुरबा भाषा।

प्रकृति के विषय में।

वह बातें जो प्रकृति से सम्बन्ध रखती हैं वह सात हैं। उनमें से एक तत्त्व है। वह चार हैं अग्नि गर्म और खुश्क है; वायु गर्म व तर है; पानी ठंढा व तर है; खाक सर्द व खुश्क है। दूसरे के नौ प्रकार हैं–चार विषम गर्म, सर्द, तर, खुश्क और चार संयुक्त गर्म खुश्क; गर्म तर, सर्द व खुश्क, सर्द व तर नवां मोतदिल अर्थात् मध्यम, वह दो प्रकार का है मोतदिल हकीकी और गैरहकीकी मोतदिल हकीकी का कोई शरीर नहीं तीसरे दोष और वह चार हैं। एक रक्त है; जो गर्म व तर है। उत्तमोत्तम रुधिर लालरंग का मीठा व बिना दुर्गन्ध का होता है। जो इन गुणों से बदलजावे वह ठीक नहीं। दूसरा पित्त जो गर्म व खुश्क है। उत्तमोत्तम पित्त लालजर्दी लिये तेज मजा है और गैरतबई चार हैं:-मर्रासफरा, सफराय मुही, सफराय करासी, और सफराय जंगारी। मर्रासफरा वह कि बाजे हिस्से पित्त के जलकर बाकी हिस्सा में मिल जायँ और रंग उसका गँदने के सदृश होता है। उसकी उत्पत्ति पक्वाशय में है। सफराय जंगारी वह है जो बिल्कुल जलजाय और रंगत उसकी जंगार कीसी होती है। वह विष के तुल्य है। उसकी उत्पत्ति कलेजे से होती है। तीसरा, कफ जो ठण्ढा व तर है। उत्तमोत्तम कफ वह है, जो रुधिर होजावे और कफ गैरतबई स्वाद के कारण होगा या कवाम की राह से पतला है उसको माई कहते हैं व गाढ़ा उसको जस्सी और गच के सदृश वा अन्य अन्य कवाम कि बाजे भाग उसके पतले हों और बाजे गाढ़े, उसको मखाती बोलते हैं। चौथा दोष सौदा

वह सर्द और खुश्क है। निर्मल सौदा रुधिर का तलछट है। उसका काला रंग खटाई लिये और सौदाय गैरतबई (अर्थात् न्यूनाधिक्य) हर दोष के जल जाने से उत्पन्न होता है। यहाँ तक कि जो सौदा जल जावे और हर दोष का जलना उसके कवाम के गाढ़े होने को कहते हैं। और दोष का न्यूनाधिक्य उस दोष के न्यूनाधिक्य के जल जाने से है। लाभ दोषों की उत्पत्ति द्वितीय बेर के पाचन से होती है। पाचनशक्ति चार हैं:—प्रथम पाचनशक्ति पक्वाशय में उसके रस को कैलूस कहते हैं। उसका फोग विष्ठा है। दूसरी पाचनशक्ति कलेजे में इस प्रकार से कि भोजन का रस महीन रगों से जो हृदय और पक्वाशय में है हृदय में आकर पचता है, उसके रस को कैमूस कहते हैं। उसका फोग मूत्र है। तीसरा हजम अरूक अर्थात् रगें हैं। चौथा पचने का रस जोड़ों में है। इन दोनों पाचनशक्ति का फोग पसीना और मैल होकर बालों के छिद्रों के द्वारा और कुछ नाक कान आदि से दूर होता है। चौथे जोड़ हैं, उनके दो प्रकार हैं, अलग अलग और मिले हुए। अलग जोड़ों से हड्डियाँ, यह शरीर की मूल हैं। यह सब दो सौ अड़तालीस हैं। दूसरे कुर्री तीसरे पट्ठे वह दो प्रकार के हैं—एक ब्रह्माण्ड से उगे हैं, उनके सात जोड़ हैं, जोड़ों की प्रेरणा उन्हीं से है। दूसरे हराममगज से उगे हैं। वह इकतीस और एक फर्द है सिवाय गर्दन के सम्पूर्ण जोड़ों की प्रेरणा उनसे सम्बन्ध रखती है। चौथे अजला अर्थात् अदला वे कुल पांचसौ उन्नीस हैं। पांचवें ताँत इन दोनों का लाभ कि जोड़ों को हिलाते हैं। छठे रुबात वह भी महीन पट्ठे हैं। वह जोड़ों को बाँधते हैं; सातवें शराईन अर्थात् हिलानेवाली रगें जो मन से उगी हैं और वह सब रगें सिवाय शिरियान वरीदी के दो तह हैं। उनमें यह गुण हैं कि जीव को सम्पूर्ण शरीर में पहुँचाती हैं और दह अर्थात् स्थिररगें कलेजे की पीठ से उगी हैं और सब ओर वह शिरियानवरीदी के सिवाय दो तह हैं वह सम्पूर्ण शरीर में रुधिर पहुँचाती हैं। नवें झिल्ली कि वह जोड़ों की रक्षा करती है। यह सब जोड़ वीर्य से उत्पन्न होते हैं। दशवां मांस वह गाढ़े रुधिर से उत्पन्न होता है और चरबी रुधिर के पतले पानी से उत्पन्न है और सफेद मांस जिससे मनुष्य मोटा होता है मेद और मज्जा से संयुक्त है। ग्यारहवें त्वचा और बाल और नाखून बाजे हकीमों ने इनको जोड़ गिना है और बाजों ने मल और आजायरईस जिनसे मनुष्य का जीवन है तीन हैं:—मन, ब्रह्माण्ड, कलेजा

और जिनके कारण मनुष्यत्व रहे चार हैं। ऊपर वर्णन किये हुए तीन जोड़ों में चौथे लिंगेन्द्रिय है। पाँचवें प्राकृतिक विषयों में प्राण हैं वे प्राण एक उत्तम धुएँ के सदृश हैं कि दोषों की उत्तमता से उत्पन्न होते हैं। प्राण तीन प्रकार के हैं;—रूह हैवानी जो मन में है; रूह नफ्सानी जिसका स्थान ब्रह्माण्ड है; और रूह तबई जिसका स्थान हृदय है। छठे मानसी विषय में बल है और वह तीन प्रकार का है:— एक कुव्वत हैवानी, जो मन में है; दूसरे कुव्वत नफ्सानी, जो ब्रह्माण्ड में है; तीसरे कुव्वत तबई जो हृदय में है। कुव्वत नफ्सानी भी दो प्रकार की है मदरका अर्थात् मालूम करनेवाली और हिलानेवाली। प्रगट में पाँच हैं, सुनना १ देखना २ स्पर्श करना ३ चखना ४ सूँघना ५ और अप्रगट भी पांच हैं खयाल, बहम, विचार, स्मरण और क्रोध।

अवस्था-विचार।

अवस्था चार हैं:— एक बढ़नेवाली, जो तीस वर्ष पर्यन्त है; दूसरी जवानी जो पैंतीस वर्ष पर्यन्त है और बाजे चालीस वर्ष तक बताते हैं। इस अवस्था में विशेष करके पित्त की प्रबलता रहती है। तीसरी अवस्था अधेड़ जो साठ वर्ष पर्यन्त है। इस अवस्था में शीत का अधिकार रहता है। चौथी अवस्था बुढ़ापा, यह साठ वर्ष से आयु के पूर्ण होने पर्यन्त है। इस आयु में शीत तरी के साथ प्रकृति पर वेग करता है और स्त्री नपुंसक की प्रकृति मर्द सर्द के मुवाफिक होती है।

सते जरूरिये—छः आवश्यक वस्तुओं का वर्णन

प्राणों के लिए ये जरूरी चीजें हैं उनमें से एक वायु है। उत्तमोत्तम वायु वह है जिसमें बुखार और धुवां मिला न हो। वायु हर ऋतु में बदलती रहती है। ऋतु चार हैं—सैफ, खरीफ, सता, और रबीअ हकीमों के विचार से खरीफ और रबीअ का समय डेढ़ डेढ़ महीने का होता है और सैफ अर्थात् गर्मी और शीत अर्थात् सर्दी के साढ़े चार २ महीने होते हैं। रबीअ में वायु का गुण गर्मतर, गर्मी में गर्मखुश्क, खरीफ में सर्दखुश्क और जाड़े में सर्दतर होता है। हिंदुस्तान में तीन ऋतुएँ होती हैं, गर्मी, बरसात और जाड़ा। इन तीनों ऋतुओं का समय चार चार महीने का है। गर्मी फागुन से शुरू होती है और चैत, बैशाख, ज्येष्ठपर्यन्त रहती है। यद्यपि गर्मी का प्रारम्भ फाल्गुन से है; परन्तु रात्रि से प्रभातपर्यन्त सर्दी रहती है और दिन को

दोपहर के वक्त गर्मी होती है। इस महीने में सर्दी और गर्मी से बचना चाहिये; ताकि शरीर पीड़ा आदि से रक्षित रहे। गर्मी में थोड़ा भोजन करना चाहिये। इस ऋतु में, गर्मी के कारण, ठण्ढा जल बहुत पिया जाता है, जिससे पाचनशक्ति निर्बल हो जाती है। इस ऋतु में ठंढी चीजों का सेवन और ठण्ढे मकानों में रहना चाहिये।

बरसात का प्रारम्भ आषाढ़ से और श्रावण, भादों तथा कुवार तक रहता है। बरसात की दशा गर्मी और सर्दी इन दो ऋतुओं से भिन्न होती है। जब जल बरसता है तो पवन शीतल और जब नहीं बरसता तो गर्म होजाती है। यह ऋतु जल वायु के विरुद्ध होने और सर्दी गर्मी के कारण मनुष्य-शरीर के लिये अच्छी नहीं है।

जाड़े का प्रारम्भ कातिक से और अगहन, पूस तथा माघ तक रहता है। शीत ऋतु में पाचनशक्ति बलवती होती है। भीतर गर्मी रहती है। इस ऋतु में अधिक भोजन करने से कुछ हर्ज नहीं होता और परिश्रम करना गुणकारी है। पाचनशक्ति के लिये यह ऋतु सम्पूर्ण ऋतुओं से उत्तम है गर्मी के प्रारम्भ होते ही बहुधा रोग उत्पन्न होते हैं। और जबतक वायु ऋतु के अनुकूल न होजावे शान्त नहीं होते।

दूसरा सता जरूरिया खाना पीना है।

जिस भोजन से पतला रुधिर उत्पन्न हो, उस भोजन को लतीफ़ (श्रेष्ठ) कहते हैं और जिस भोजन से गाढ़ा रुधिर पैदा हो, उसको क़सीफ (नेष्ट) कहते हैं। जिस भोजन से उत्तम रुधिर उत्पन्न हो, वह भोजन महमूदउल्कैमूस है, और जिससे नेष्ट पैदा हो वह रसउल्कैमूस। जिससे बहुत रुधिर प्राप्त हो वह कसीरुल्गिजा कहलाता है। नहीं तो कलीलुल्गिजा जानना चाहिये। आरोग्यता के रक्षक को उचित है कि दो दिन में तीन बार भोजन करने का अभ्यास डाले। यानी एक दिन सुबह और शाम दो वक्त, और दूसरे दिन दोपहर में दिन को भोजन करे और सच्ची भूख बिना न खावे। भोजन अच्छी तरह चबावे ताकि जल्दी पचजावे और जब दो तीन ग्रास की क्षुधा शेष रहे छोड़ दे ताकि पचने के समय अफरा और बोझ पक्वाशय में न हो। आरोग्यता में उपाधि करने के वास्ते भोजन की अधिकता से अधिक कोई खराब नहीं; इसीकारण हकीम लिखते हैं कि बहुत से शरीर के रोग पेट भरे रहने से उत्पन्न होते हैं। जब

तक भोजन पच न जावे तब तक जोड़ों का हिलाना जैसे मैथुन, परिश्रम और दौड़ना बुरा है। यदि चिकना भोजन अधिक खाया हो तो उसकी दुरुस्ती नमकीन चीज से करे और जो खट्टी चीज खाई हो तो उसकी दुरुस्ती मीठी चीज से करे। जो गाढ़ी और उत्तम वस्तु जमा हो तो पहिले उत्तम चीज खावे और सच्ची भूख में अवश्य भोजन करे। न खाने से दुष्ट मल पक्वाशय में गिरते हैं। मनुष्य के वास्ते उत्तमोत्तम भोजन गेहूँ की रोटी और हलवान का मांस है। यह भोजन नहीं किन्तु यह भोजन और औषध दोनों का काम देता है।

अन्न का विषय।

मनुष्य के लिये उत्तम अन्न गेहूँ है क्योंकि पाचनशक्ति अधिक रखता है और गर्मी तथा सर्दी में सम है। इसके उपरांत खाने के लिये चावल भी उत्तम हैं। जितने सुगन्धवाले, महीन, पकाने पर लम्बे हों और साबित रहें वही उत्तम होते हैं। चावल गर्मी और सर्दी में समान, परन्तु दूसरे दरजे में खुश्क हैं। बाजे हिन्दुओं के विचार से ठंढा है और मुख्य करके गर्म स्वभाव में गर्मी और ठंढे स्वभाव में सर्दी पैदा करता है। लाल और गुंदे चावल पाचनशक्ति में कम हैं और कब्ज अधिक करते हैं। गेहूँ की भूसी में पकाने से चावल की दुरुस्ती हो जाती है इसके उपरांत मूंग है, यह ठंढा और कुछ खुश्क है। शीघ्र पचता है और अफरा नहीं करता इसीलिये बहुत से वैद्य इसको रोगों में खाने को देते हैं। इसके उपरान्त चना, यह गर्म है; छिलका उसका तर है। उसमें पाचनशक्ति अधिक और बलदायक है, परन्तु उदर में वायु पैदा करता है। उसके उपरान्त जौ ठंढा, खुश्क, हलका, अफरा का करनेवाला और काबिज है। पुराने जौ जिसको एकवर्ष बीता हो अच्छे होते हैं मसूर और अरहर इन सबमें मसूर कुछ खुश्क, ठंढा और उसका छिलका अरहर से गर्म है। अरहर गर्म, खुश्क और कई वैद्यों के विचार से मसूर के समान है और अफरा मसूर से अधिक रखता है। यह दोनों बुरे दोष पैदा करते हैं और उड़द सर्द और तर है, साथ ही देर में पचता है। उसके दुरुस्त करनेवाली सोंठ और हींग है। अरहर और मसूर से पाचनशक्ति अधिक रखता है। यदि कब्ज न करे और पच जावे तो अपनी लस से दूध और वीर्य पैदा करता है। बाजरा ठंढा, खुश्क, काबिज और पाचनशक्ति कम रखता है और खून

को पैदा करता है। इसी कारण मुख में दाने पैदा करता है और खुश्की और प्यास अधिक लगाता है। इसी कारण हिन्दू लोग इसको गर्म कहते हैं। दुरुस्त करनेवाला इसका दूध है। जुवार सफेद और गुन्दी अफरा कम करती है और खाने में अच्छी है परन्तु बद्धकोष्ठकारक है। मोठ को हिन्दू गर्म और खुश्क जानते हैं, अफरा करती है। बुरे दोषों को उत्पन्न करनेवाली और देर में पचाती है। मटर अफरा करनेवाला, उपद्रवी दोष का पैदा करनेवाला और अतीसार का कारण है। देहातियों का अन्न काकुन, मेड़ुवा, सावां और कोदों हैं। मेड़ुवा और काकुन सावां और कोदों से उत्तम हैं। यह तीनों ठण्ढे खुश्क बद्धकोष्ठकरनेवाले और हल्के हैं। इनका दुरुस्त करने वाला घी है। खमीरी रोटी जो खट्टी न हो तो सादी रोटी से उत्तम है। और जल्दी पचती है, परन्तु सादी रोटी से अफरा अधिक करती है और सादी रोटी खमीरी से देर में पचती है। मैदे की रोटी बहुत भारी होती है और वह रोटी जिसमें भूसी अधिक ही हल्की होती है। उससे सुद्दा नहीं पड़ता है। गर्म रोटी खाना कोष्ठकी तरी को खुश्क करता है। ठण्ढी रोटी कोष्ठ को तर करती है और जो रोटी कि सर्दी और गर्मी में समान है उसका खाना उत्तम है। सूखी रोटी खुश्की करनेवाली और देर में पचती है। बाजरे और जुवार की रोटी ठण्ढी खुश्क और कब्ज करनेवाली और कोष्ठ की हानिकर है जो की रोटी बाजरे से शीघ्र पचती हैं; परन्तु ठण्ढी खुश्क और अफरा करती है। जानना चाहिये कि उत्तम भोजन मनुष्य के लिये मांस है। पैगम्बरसाहब के बचन के अनुकूल लोक परलोक का सुन्दर भोजन मांस है। परदार जानवरों का मांस चौपायों के मांस से हल्का है। परदार जानवरों में मुरगा, तीतर, बटेर, हंस, लवा, चिड़िया, सब्जक का मांस उत्तम है। चौपायों में बकरी, भेड़, मेढ़ा, हरिण विशेष करके इनके बच्चों का मांस उत्तम है। परन्तु हरिण के मांस में गरमी अधिक है। ऊँट ऐसे बड़े जानवरों का मांस मोटा है क्योंकि जितना पशु बड़ा और मोटे शरीर का हो मांस उसका मोटा होता है। मांस में तरकारी डालकर रोटी से खाना वह भोजन ही मानों औषधि है और सादा कलिया और कबाब उत्तम सालन है। कलिये से उत्तम मांस पैदा होता है परन्तु कबाब से अच्छा नहीं पुलाव उत्तम भोजन है और दूध चावल से मनी अर्थात् वीर्य पैदा होता है।

नदी का जल उत्तम है। उसके उपरान्त कुएँ का पानी सच्ची प्यास लगने पर पीना चाहिये, चाहे भोजन करते हुए लगे या उसके पीछे। भोजन करने के उपरान्त दो तीन घड़ी के पीछे पानी पीना अच्छा है। भोजन करने के पीछे तत्काल पानी पीना उत्तम नहीं; परन्तु जिस मनुष्य की गरम प्रकृति हो और कोष्ठ में गरमी रखता हो उसे उचित है कि भोजन में थोड़ा पानी पिये, एक ही बार बहुत न पी ले। भूख के समय पानी कम पिये। चूसने की रीति से पिये या पानी के बदले शरबत या थोड़ा भोजन खाकर पिये ताकि हानि कम हो। निहार मुँह पानी पीना निषेध है क्योंकि यह बुढ़ापे और रोगों का कारण है। इसी प्रकार रात्रि को जागते ही पानी पीने से नजला पैदा होता है। परिश्रम करने, मैथुन करने, नहाने और तर मेवों के सेवन (जैसे तरबूज और खरबूजे आदि) के उपरान्त पानी पीना बहुत ही अवगुण करता है। हर समय बहुत पीना हानि-कर है। वे कलईदार तांबे के बर्तन में और शीशे के बासन में पानी पीना मना है। जो सफर आदि में तरह तरह के पानी पीने का अवसर पड़े तो उसके अवगुण के दूर करने के लिये कच्चा प्याज खाना चाहिये। जो भंग पीने का अभ्यास रखता है उसे भी पानी नहीं लगता।

तीसरा सता जरूरिया सोना जागना है। चित सोना मना है। यह विपरीत स्वप्नों और दिमाग अर्थात् भेजे को हानिकारक है। जो अभ्यास भी हो तो छोड़ दे। पट इस तरह से सोना कि शिर को तकिये पर ऐसा रक्खे कि मुंह और दोनों आंखें दाहिनी या बांई तरफ झुके, गुण करता है और भोजन पचता है। बांई और दाहिनी करवँट सोना हानि नहीं करता। निहार सोना नजला पैदा करता है। भूख में सोना शरीर को क्षीण करता है। धूप में सोना मना है। चांदनी में गुण-दायक है। बहुत सोना सरदी और तरी का चिह्न है। अधिक जागना गरमी और खुश्की की निशानी है। सोने और जागने में समभाव रखना उत्तम है अर्थात् न बहुत जागे न बहुत सोवे, क्योंकि बहुत जागना क्षीणता और तबाही का कारण है और बहुत सोना मांदगी और इन्द्रियों के आलस्य का कारण है।

चौथा सता जरूरिया लाभकारी वेगों का रोकना और उपद्रवकारक मल से शरीर को खाली करना है, मनुष्य को दो बार दिशा जाना चाहिए यह

शरीर की आरोग्यताका कारण है। बद्धकोष्ठ की दशा में उचित है कि उत्तमोत्तम शोरवों, पालक के साग और फिसलानेवाली चीजों का सेवन करे और कब्ज करनेवाले द्रव्यों से परहेज करे। कब्ज से भूख जाती रहती है। जो दो समय दिशा जावे और मल नरम हो तो कब्ज करने वाले द्रव्यों का सेवन करे। हरतरह से अपना लाभ विचार ले।

पाँचवाँ सता जरूरिया उसमें एक क्रोध और दूसरे खुशी है। इन दोनों से जीव को बाहर की ओर प्रेरणा होती है। गरमी और सरदी का गुण शरीर में मालूम होता है। प्रगट में शरीर गरम और अन्दर ठण्ढा होजाता है। तीसरे भय चौथे चिन्ता और उन दोनों से जीव को अन्दर की ओर प्रेरणा होती है। प्रगट में शरीर ठण्ढा और अन्दर गरम होजाता है। पांचवें लज्जा इसमें पहिले जीव भीतर प्रेरणा करता है फिर बाहर की ओर को किसी समय प्रगट में गरम होता है और किसी समय अन्दर, इसवास्ते लज्जावान् का मुख कभी लाल हो जाता है।

छठा सता जरूरिया स्थिर और अस्थिरता है। सामान्य शरीर का हिलना चलना शरीर को गरम करता और मलको निकालता है। अधिक चलना शरीर को ठण्ढा करता है। उससे पित्त पचता है और अधिक स्थिरता से भोजन नहीं पचता और चलने में यह बड़ाभारी गुण है जो भोजन को कोष्ठ से पक्वाशय में पहुँचाता है। वह परिश्रम जिससे सब शरीर के अंग फुर्त हों बदन की कीमिया है। अंग की सूरत दुरस्त करता है, रोगों को दूर करनेवाला, गरिष्ठता को पचानेवाला, स्वभाव का बलदायक शरीर को आरोग्यता देनेवाला है, मुख्य एक अंगका श्रम उसी अंग का बलदायक है परन्तु समभाव से हो अधिक नहीं। मलना और दबाना भी एक प्रकार का श्रम है जो मल को दूर करे परन्तु बहुत मलने और दबाने से शरीर क्षीण हो जाता है, समभाव से मलने और दबाने से पुष्टता होती है मैथुन का उपाय वह भी शरीर में आवश्यक है मैथुन समभाव से आवश्यकता के अनुकूल बलवान् को बलवान् करता है और उसकी यह रीति है कि अति आवश्यकता पर जब लिंग खड़ा हो तो मैथुन करे इस शर्तपर कि यह बात सहजस्वभाव और सुन्दर स्त्री के विचारने और उसका स्वरूप देखे बिना केवल वीर्य की अधिकता और इच्छा से हो क्योंकि बुद्धिमानों ने लिखा है कि वीर्य का बिन्दु जीव का जल है जो उससे मनुष्य उत्पन्न होता है उस

बहुमूल्य मोती को कुसमय और व्यर्थ अलग न करना चाहिये। अधिक मैथुन की हानि लिखी नहीं जा सकती है जो पुरुष युवावस्था में अधिक वीर्य से बहुतही मैथुन करते हैं उसकी अधिकता से जल्द बूढ़े होकर दुःख झेलते हैं और बहुत बुरा है-मैथुन वह है जो बिना इच्छा और रंज से हो। कम उमर, बुढ़िया, ऋतु के समय वाली स्त्री से कुरूपा, रोगिनी स्त्री से भोग करना अरुचिकारक है और अति हानि करता है। उत्तम यह है कि इस कार्य में लगा न रहै, बराबर भोग न करे, दो बेर मैथुन में तीन दिन का अन्तर अवश्य चाहिये। वैद्य एक बेर के भोग के उपरान्त तीन दिन की मोहलत उचित जानते हैं।

नहाने का उपाय।

गरीबों को हम्माम मयस्सर नहीं, इस लिये कुछ लाभ और हानि नहाने की लिखी जाती है। ठंढे पानी में नहाने से गुनगुने पानी से नहाना उत्तम है और हवा में ठंढे पानी से नहाना विशेष करके ठंढे स्वभाव वाले को अवगुण करता है और कफ के स्वभाव वाले को अधिक नहाना मना है और विशेष करके ठण्ढे पानी से नहाना नजले वाले और अतीसार के रोगी और लड़कों और बुड्ढों को हानिकर है और जब कोष्ठ में भोजन भरा हो और मैथुन के उपरान्त शीघ्र नहाना हानि करता है और बहुत दिनों तक न नहाना शरीर को शीघ्र ही भद्दा करता है और शरीर की कान्ति और सफाई खो देता है। भोजन पचने के उपरान्त नहाना उत्तम है और जाड़ों की ऋतु में गरमी से कम नहाना चाहिये और मैथुन के उपरान्त नहाना और शरीर को मलवाना भी हानिकर है और नहाना चाहे गरम पानी से हो या ठंढे पानी से हो पट्ठों को क्षीण करता है इसलिये गरम पानी से त्वचा और रगें ढीली हो जाती हैं और ठण्ढे पानी से रगों में शीतमयी सरदी बढ़ जाती है इसी कारण बहुत से हिन्दुओं को जो सदा नहाते हैं चाहे युवावस्था में स्वभाव में गरमी होने से हानि कम मालूम हो परन्तु जब युवावस्था से बढ़जाते हैं रगों और गुरदे में निर्बलता के चिन्ह प्रगट होते हैं और उनका वीर्य क्षीण पड़जाता है और बाज़े हिन्दू कई बेर नहाते हैं दिशा के पीछे भी नहाते हैं यह नहाना उनके शरीर को बहुत दुःखदायक है।

नाड़ी के विषय में।

नाड़ी का मालूम करना हकीमों के लिये बहुत ही कठिन है फिर विद्यार्थी

क्या जान सकेंगे सो हम भी थोड़ा सा वर्णन करते हैं नाड़ी हिलाने वाले रगों का हिलना है जो सोखी हुई पवन से प्राण को समभाव प्राप्त हो, नाड़ी उस समय देखना चाहिये कि रोगी क्रोध और प्रसन्नता और परिश्रम और मांदगी और आदत के छोड़ने से खाली हो और नाड़ी पर हाथ रखना कम से कम उस नाड़ी के बारह बेर हिलनें तक देखना चाहिये परन्तु नाड़ी चार उंगल से लम्बाई में अधिक हो और उंगलियों को उसके हिलने का जोर मालूम हो और शीघ्र चलती हो और छूने में गरम मालूम हो गरमी है, और जो चार उंगल से लम्बाई उसकी कम हो और उंगलियों पर जोर न मालूम हो सरदी है और जो उंगलियों की चौड़ाई से उसका हिलना अधिक हो वह अरीज है और मतली करने वाली वह नाड़ी है जो शिरियान के भीतर दबाने से उंगलियों में नरमी मालूम हो। इस रीति से उसमें उसका संयुक्त होना प्रमाण है। जो नाड़ी एकही रीति पर हो उत्तम है। जो सम न हो बुरी है और जो नाड़ी हरिण की भांति उछले तो भोजन के कच्चे पने की है या लहर के मानिन्द हो वह मौजी है या चींटी की भाँति हो वह निमली है या कांपनी के मानिन्द हो वह मुरतअश है या तागा बटने की तरह हो वह मुल्तवी है या आरी के सदृश है वह मन्शारी है यह सब नाड़ी के प्रकार बिगड़े हुये और कमजोर हैं और पुरुषों की नाड़ी स्त्रियों से बलवान् होती है और लड़कों की नाड़ी नरम और कुछ जल्दी चलती है और जवानों की नाड़ी लम्बाई और चौड़ाई में अधिक होती है और बूढ़ों की नाड़ी सुस्त चलती है।

कारूरे का वर्णन।

कारूरा शीशी को बोलते हैं जोकि रोगी का मूत्र कई कारणों से शीशी में डालकर देखते हैं इसलिये मूत्र कारूरे के नाम से प्रसिद्ध हो गया—जानना चाहिये कि मूत्र परीक्षा में यह बातें चाहिये कि सुबह को मूत्र किया हो और सोने के उपरान्त पानी न पिया हो। ऐसी वस्तु न खाई हो जिससे मूत्र रँगदार हो जाता है, जागने, क्रोध करने, मैथुन और मद्य से भी मूत्र का रंग बदल जाता है। जो देर तक कारूरा रक्खा रहे तो उसके देखने का कुछ निश्चय नहीं—जो मूत्र का रंग पीला हो तो पित्त और लाल हो तो रुधिर और सफेद हो तो कफ और काला रंग सौदा अर्थात् दग्धितदोष और सब्ज रंग हो तो सरदी जानना—और जो मूत्र मांस के धोवन का सा

हो कलेजे की नाताकती बताता है और जो दूध का सा रंग हो तो अंगों का खिलाना बतलाता है—निजिज अर्थात् मलके पकने का निशान पेशाब में यह है कि पहले पतला या गाढ़ा हो, फिर उसका समान कवाम हो जावे, ज्वर में सदा मूत्र का गाढ़ा रहना बुराई की निशानी है मूत्र का पतलापन सरदी बताता है, उसकी मुटाई दोष की अधिकता बताती है, मूत्र में बिल्कुल दुर्गन्ध न होना मिजाज में सरदी बताता है, दुर्गन्धि से दोष का सड़जाना मालूम होता है, मूत्र का बराबर करना हर विषय में उत्तम है, मूत्र में कफ की अधिकता और देरतक रहना अधिक वात के चिन्ह हैं। जो मूत्र में सत्तू या छीछड़ों या तारों या बालू या चरबी के सदृश कोई वस्तु पाई जावे इस को रसूबगैरतबई बोलते हैं चरबी जोड़के खिलने को बतलाती है और पीब अन्दर के फोड़े के फूटजाने को और मूत्र की थैली के पत्थर या गुरदे को बताती है स्त्रियों का मूत्र पुरुषों से सफेद और गहरा होता है और गर्भवाली स्त्रियों का मूत्र साफ होता है परन्तु उसमें कुछ धुनकी हुई रुई के सदृश मालूम होता है और गर्भ की आदि में मूत्र पतला होता है और अन्त में कुछ सियाही लिये होता है—और तरीके स्वभाव से लड़कों और बुड्ढों का मूत्र गाढा होजाता है—लाभ—वैद्यक की रीति से मूत्र देखने की रीति यह है कि मूत्र प्याले में करके उसपर एकबूँद तिलके तेलकी टपकावे जो बूँद मूत्र पर फैलजावे तो रुधिर और पित्त का उपद्रव है, जो तेल, उसी प्रकार शेष रहे बुराई की निशानी है, जो बूँद मूत्र के नीचे चलीजावे मृत्यु के लक्षण हैं, जो बूँद में छिद्र होजावे वह भी काल के चिह्न हैं जो बूँद मूत्र में चौड़ी होजावे आरोग्यता है, जो बूँद टुकड़े टुकड़े हो जावे रोग बढ़जावे, जो मूत्र में बूँद पूर्वकी ओर झुके आरोग्यता है, बूँद पश्चिम की ओर झुके रोग बढ़जावे, जो दक्षिण और उत्तर को झुके बुराई की निशानी है, पीला और साफ पेशाब पित्त को बतलावे और जो पीला सुरखी से हो मिलो हुई बीमारी का निशान है परन्तु पित्त की अधिकता बतावे, जो मूत्र बहुत हो और उसमें कुछ सफेदी हो अजीर्णता के लक्षण हैं, मांस के धोवन की तरह का मूत्र पार्श्वशूल को बतलाता है, जो कुन्दर के तेल के सदृश उसमें दाने दिखाई दें वह मूत्रशोथ और शरीर की नागवारी और जलन्धर को बताता है, जो मूत्रमिश्री के रंग का सा हो वह कासश्वास को बताता है, जिस मूत्र का रंग केसरि की सदृश हो तो उसे दग्धित पित्त और रुधिर का

जानो और आग के रंगका मूत्र सरसाम अर्थात् भेजे के वरम को बताता है, ज मूत्र पीला और साफ हो कलेजे की पीड़ा को बतावे और मूत्र जरदी माय और कुछ स्याही लिये हो कलेजे की गरमी के लक्षण हैं सामान्य मल वह जिसके टुकड़े बराबर हों और पतलापन और गहरेपन में बराबर औ गुड़गुड़ाहट और शब्द से खाली हो अर्थात् मल निकलने पर उदर में वा का शब्द न हो और निकलने के समय भी शब्द न हो और बिष्ठा के रं का हाल मूत्र के रंग के हाल के सदृश है, जो बिष्ठा भोजन से अधिक औ पतली और लसदार हो दोष की अधिकता या अजीर्णता या अंगका गलन बताता है, यह ज्वर में गूरा है और बिष्ठा की अधिक दुर्गन्ध दोष की दुर्गन्ध को प्रकट करती है—मुसिल—मुंजिज का सेवन—मुसिल के पहिले उचित मुंजिज अर्थात् दोषका पकाना उसे कहते हैं जो पेशाब का कवाम स होजावे। मुसिल उसको कहते हैं जो मलको रगों और जोड़ों से निकाल लावे। तलीन वह है जो मल कोष्ठ आंतों और उसके इधर उधर हो उसको निकाले। पहिले मुंजिज देना चाहिये और तलीन नहीं और दो मुसिलों का सेवन एक दिन में न चाहिये। मुसिल पीने के समय नाक बन्दकरले जिससे मुसिल की दुर्गन्धि से ग्लानि न हो और कै न होजावे और दोनों बाजू जोर से बांधे और सुगन्ध सूँघना और इलायची और पोदाना लौंग के साथ चबाना कै नहीं होने देता। जबतक मुसिल अमल न करे कुछ न खाना चाहिये, मुसिल में सोना मना है, मुसिल बहुत मीठा न करे, आबदस्त का पानी समान हो न गरम न ठण्ढा जब मुसिल बलवान् दे और वह गुण न करे और उन्माद और मूर्च्छा प्रगट हो शीघ्रही बमन करे और बुरा मुसिल बहुत हानि रखता है जिस तरह कि फस्द बुरी और रोगी जो बलवान् हो मुसिल तले ऊपर दे और जो निर्बल हो एक दो दिनके अन्तर से दे क्योंकि दस्तोंकी अधिकता से रोगी बदहाल न होजावे, मुसिल के दिन सरदी से बचजाना उचित है, खुश्क स्वभाववाले, लड़के, बूढ़े को बलवान् मुसिल न देना चाहिये। मुसिल पर गोलियां या चूर्ण या माजून या सौंफ का अरक गुनगुना या गरम पानी दस्तों की मदद के लिये उत्तम है, मुसिल के काढ़े पर ठण्ढा अरक सौंफ का पीना चाहिये। मुसिल से छुट्टी पाने के पीछे गरम मिजाज को ईसबगोल और ठण्ढे मिजाज को नाजबो के बीज या मजलके के बीज पिलाना उचित है, कोई दवा मुसिल की ऐसी नहीं कि सिवा एक दोष के

की दोषों को न निकाले और जो औषधि कि पित्त या कफ या दग्धित ोष के लिये बतलाई गई है उसका यह कारण है कि औषधि और दोषों से धिक उस दोष को निकालती है। जानना चाहिये कि बाजे आरोग्य पुरुष पही आरोग्यता के लिये प्रतिवर्ष मुसिल लेने का अभ्यास डालते हैं, बाजे : महीने के पीछे आदत रखते हैं यह आदतें अच्छी नहीं, हां रोगकी शान्ति लिये आवश्यकता पर मुसिल ले जो ऐसी आदत हो, चाहिये कि धीरे धीरे सको छोड़े क्योंकि आदत दूसरी प्रकृति है।

पित्त के मुंजिज अर्थात् पकाने की औषधि।

कासनी की जड़, नीलोफर, परसियावशान, खतमी की जड़, खुब्बाजी के ीज, बनफ्शा, गुलाब के फूल, कासनी के फूल, कासनी के बीज, शाहतरा, ुलखैरू मुंजिज देने के उपरान्त पित्त तीन दिन में पकता है परन्तु इस र्तपर कि खाली पित्त हो और जो खाली पित्त न हो तो पांच दिन में पकता ै कफ के मुंजिज की औषधि सौंफकी जड़, बड़े मुनक्के, मकोय, रसियावशान अर्थात् काली झांपवारतिकोप, गावजबां, बादरञ्जबोया, शफायज, मुलहठी की जड़, अजखर, क्रिरफ्शके बीज अर्थात् अजमोद, बरा की जड़, अनीसोनशकाई, अस्तखद्दूस कफ नौ दिन में पकता है और हुत गाढ़ा कफ दो तीन दिन अधिक में और पतला कफ पांच दिन में। सौदा अर्थात् दग्धदोष की औषध–बादरञ्जबोया, गावजबां, लसौढ़ा, कासनी की जड़, सौंफ, शहतरा, उन्नाब, अस्तखद्दूस, परसियावशान, मुलहठी, बशफाइज, ौदा पन्द्रह दिनमें पकता है और कभी पन्द्रह दिन से कम या अधिक में भी पकता है। पित्त के मुसिल की औषधि–पीलेहड़की छाल, इमली, आलूबुखारा, अफनैतीन, सकमूनिया, गुलाब के फूल, बिना भूनने के सेवन न करे। भूनने की रीति बड़ी पुस्तकों में लिखी है–कफ की मुसिल की औषधि–इन्द्रायण का फल, माहीहजर, जंगारीकूनहुब्बुल, नीरतुर, अमलतास, सौदा के मुसिल की औषधि–काबिलीहड़, कालीहड़, अफतैमूं हजर, लाजबर्द, गेरू, गारीकून, सनाइमक्की–रुधिर की स्थिरता का मुसिल–कासनी की जड़, खीरे–ककड़ी के बीज, उन्नाब, अंजबार, केवड़े की जड़, तरबूज का पानी, बनफ्शा, इमली, खट्टा शहतूत, बुजुरकतूना, शाहतरा, खाखशी प्रकट और अन्दर के बहुत से रोगों को गुण करे और बहुत स्वभावों को गुण करता है यहाँतक कि गर्भवती स्त्री और बूढ़ों और बालकों को भी देते हैं ज्वर और शोथ को गुण

करता है, सब माद्दों के मुवाफिक है आवश्यकता के अनुकूल अमलतास
और गुलाब या गरमपानी या सौंफ के अरक या कासनी के अरक या मको
के अरक में मले जो थोड़ा बादाम का तेल मिलावे उत्तम है, नहीं तो घ
डालकर गुलकन्द या शीरखिश्त या तुरंजबीन से मीठा करे, जो बनफ्शे
फूल, मुनक्के, उन्नाब, गावजबां और उसके सदृश आवश्यकता के अनुकू
कुछ गुलकन्द समेत अमलतास में मिलावे तो उत्तम है, दूध पीतेहुये लड़
के लिये बादाम का तेल मिलाने की आवश्यकता नहीं है, कुलन्ज में मुंजि
देने की आवश्यकता नहीं।

फस्द का वर्णन।

फस्द से हरदोष निकलता है परन्तु रुधिर सब दोषों से अधिक निकलत
है और बारह वर्ष से कम में फस्द लेना मना है फिर आयु के अन्त पर्यन्
बल होनेपर आवश्यकता हो तो उचित है परन्तु बाजों ने साठ वर्ष
उपरांत फस्द की मनाही की है, फस्द के पीछे लेटना चाहिये परन्तु तत्का
सोना मना है, उस दिन फस्द के पीछे भोजन थोड़ा और उत्तम खान
चाहिये। जिसदिन फस्द ले बुरा भोजन न दे, फस्द के पीछे हरीरा औ
ठंढाई मना है परन्तु गरम स्वभाववाले को ठंढाई पिलाना मना नहीं है, ठं
मिजाजवाले को गरम द्रव्य देना चाहिये कि बलहो परन्तु आवश्यकता
बिना कुछ न देना चाहिये फस्द में रुधिर कम निकालने से माद्दा हरकत
आ जाता है, ज्वर आ जाता है उस समय आवश्यकता पर फस्द लेना उचि
है, जिस मनुष्य को फस्द के उपरांत मूर्च्छा आवे उत्तम उपाय यह है
मुरग का पर गले में डालकर बमन करावे और सरेरू और जबलअरजा ए
रग है जो ऊपर को गई है शिर और गरदन को साफ करती है, फस्द ह
अन्दाम सम्पूर्ण शरीर को साफ करती है, इब्री वह रग है जो बगल से अ
है बदन की कोठी और नीचे के अङ्ग को गुण करती है, बासलीक
रक्षापूर्वक खोलना चाहिए कि उसके नीचे शिरयान है और असलीम
बासलीक की एक शाख है कलेजे की बीमारी के लिये दाहिनी ओर से खो
और तिल्ली और मानसी रोगों के लिये बाईं ओर से परन्तु उससे विश
रुधिर न निकाले–और माथे के रग की फस्द शिरपीड़ा, नेत्ररोगों को गु
करे। चाररोगों की फस्द जो दोनों नीचे होठों के है, वह होठों के अन्दर
ओर खोली जाती है मुख के ब्रणों को गुण करती है; जिह्वा के नीचे की

खुनाक को गुण करे। साफनके रगकी फस्द जो पिंजली में है और माविजकी फस्द जो घुटनों के नीचे है स्त्रियों के ऋतु के रुधिर के जारी करने को बवासीर के रोग, नाकरस, दवाली को गुण करे जो फस्द कि उत्पातकारक रुधिर के निकालने के वास्ते खोलते हैं जब रुधिर की बुरी रंगत बदलजावे और रुधिर अच्छा आने लगे बन्द करदे अगर फस्द खोले और रुधिर बन्द न हो मकड़ी का जाला या गौ का चमड़ा कच्चा उसपर रखकर बांधदे और जो शोथ के लक्षण प्रकट हों ठण्ढा लेप जैसे–रक्तचन्दन और रसौत उसपर लेप करे।

क्षौर पछने और सिंघियों और जोंकों के विषय में।

जो लड़कों के लिये मानों फस्द है क्षौर दो वर्ष से कम की आयु में उचित नहीं है, साठ वर्ष के उपरान्त निषेध है, क्षौर के दो प्रकार हैं एक केवल सिंधी पछने के बिना दूसरा प्रकार पछने देकर, यह मुख्य जोड़ और त्वचा की तरफों के साफ करने के लिये श्रेष्ठ है मांस के मध्य में क्षौर कराना उत्तम हैं, पिण्डलियों का और फस्द बासलीक और साफनके बदले है। त्वचा के रोगों में जोंकों का सेवन उत्तम है परन्तु मल के अनुसार लगावे अधिक और कम न लगावे बाजी जोंकें बिषैली हैं वह बड़ी होती हैं और उनपर काली और सब्ज लकीरें होती हैं जोंकों के छूट जाने के उपरान्त रुधिर बहे तो राख महीन छानकर उसपर बांधे।

दोषों की अधिकता का वर्णन।

रुधिर की अधिकता—रुधिर की अधिकता से मुंह मीठा, उसका रंग लाल रहे, मूत्र भी लाल हो शिर और बदन भारी रहे, शरीर में दाने निकलें दांत और मसूढों से बहुत रुधिर निकले।

पित्तदोष की अधिकता—मुंह आंख जिह्वा और मूत्र का रंग पीला रहे मुंह कड़वा और नाक में खुश्की और खरखराहट हो बहुत जगे और प्यास और जलन की अधिकता हो।

कफ की अधिकता—मुंह जिह्वा आंख और मूत्र का रंग श्वेत और शरीर ढीला हो, नाक में सरदी, प्यास कम, निद्रा बहुत, मुख का स्वाद बुरा हो।

सौदा अर्थात् दग्धित दोष की अधिकता—इसके होने से काला पड़ जाता है, मूत्र का रंग भी काला होता है, जलन, बदन की खुश्की, क्षीणता होती है, मुंह खट्टा रहता है, अंग भारी रहता है, आलस्य की अधिकता, भूख कम हो जाती है, मूत्र गहरा रहता है, जानना चाहिये कि श्वेत रंग से शरीर की

पुष्टता कफ के होने का प्रमाण है, पीलापन क्षीणता के साथ पित्त सिद्ध होता है, सुरखी रंग पुष्टता के साथ रक्ताधिक्य जानो, कालारंग क्षीणता के साथ सौदावी है, क्षीणता बदन की खुश्की बताता है, मोटा होना कफ का चिह्न है, बालों का पेचदार होना और उनकी अधिकता गरमी बतलाता है, बालों का सीधा होना, उनकी कमी शीत बतलाता है, हर दशा में शीघ्र ही प्रभाव का स्वीकार कर लेना उस दशा की अधिकता का प्रमाण है, स्मरणाधिक्य बुद्धिमानी और जल्दी जल्दी बातें करना गरमी के चिह्न हैं। स्मरण का कम होना, लज्जा और प्रतिष्ठा की अधिकता शीतलस्वभाव को सिद्ध करता है, मल में पक्का रंग का होना गरमी है उसके विपरीत शीत है मल की अधिकता तरी है और उसकी कमी खुश्की है।

शरीर की रोगों से रक्षा करने का विषय।

वर्तमान आरोग्यता की रक्षा करना गई हुई आरोग्यता के फेरने से सुगम है। आरोग्यता की रक्षा करनेवाले को उचित है, कि हानिकारक वस्तुओं से जो आगे लिखी जावेंगी, पथ्य करे और अपनी आयुरारोग्य का मित्र रहे। किसी का लोभ न करे। जो छोड़ने के योग्य वस्तु है, उसमें कुछ भी बुद्धि न लड़ावे और उसकी कुछ भी इच्छा न करे। विशेषकर रोग और निर्बलता में जिन वस्तुओं का सेवन आवश्यक हो उनमें कोताही न करे, किसी चीज की आदत न डाले; क्योंकि आदत भी प्रकृति से मिल जाती है। सामान्य श्रम भी आरोग्यता का रक्षक, मल का पाचक और क्षुधा का कर्त्ता है। उसे करना चाहिये। थोडी सी बीमारी में पौष्टिक औषधियों का सेवन न करे किन्तु आरोग्यदायक भोजन करे। जहाँ ओषधिरूप भोजन से काम निकले ओषधि न खावे। जबतक एक ओषधि से काम निकले दो न खावे। इसी तरह जो दो दवाएँ पूरी हों तो तीन दवा न खावे। और सुगम दवा से उपाय करना आरम्भ करे। उपाय तीन प्रकार के होते हैं एक उद्योग और भोजन से, दूसरा दवा से, तीसरा हाथ के कामों से जैसे चीरना फाड़ना आदि। सते जरूरिये में भोजन भी संयुक्त है। काम में लाने का नाम उपाय है। कभी भोजन करना मना किया जाता है; जैसे बोहरान में। कभी बलकारक भोजन की आज्ञा दी जाती है जो कुछ बल बाकी रखना स्वीकार हो और पुष्ट भोजन वा उसका अनुमान राह से होता है वा भोजन के भारीपने से उसके अनुमान की कमी उस समय चाहिये कि

भोजन न पचा सके और भारीपन की कमी उसी समय की जावेगी कि भूख बहुत हो और रगों में अधिक दोष हों। यद्यपि भोजन बलकारक है परन्तु शत्रु भी है; क्योंकि रोग को सहायता देता है और रोग शत्रु है और शत्रु का मित्र शत्रु होता है। सो रोग में भोजन का सेवन उतना ही करना चाहिये जिससे इलाज हो सके और बच जावे। इलाज करने की तीन रीतियाँ है एक ओषधि का तौल मालूम करना, दूसरे दवा के हाल अर्थात् गरमी, सरदी, खुश्की तरी का जांचना—तीसरे रोग का समय मालूम करना कि चारों समयों में से कौन समय है।

सम्पूर्ण बैद्य इस बात की आज्ञा देते हैं कि पीली हड़ की छाल को एक एक वर्ष तक नीचे लिखी हुई रीति के अनुसार खाने से संपूर्ण रोग नाश हो जाते हैं और आरोग्यता प्राप्त होती है। चैत्र और बैशाख में तीन माशे शहद के साथ, ज्येष्ठ और आषाढ़ में मुनक्के के साथ, श्रावण और भाद्रपद में यथारुचि लाहौरी लवण के साथ, कुवार और कार्तिक में बराबर की मिश्री के साथ, तीन माशे के अनुमान खावे ईश्वर चाहे तो सब रोगों और बद्ध-कोष्ठ से रक्षा रहेगी।

शिर के रोग का वर्णन।

जो शिर में एक ओर पीड़ा हो उसको शकीका बोलते हैं। जो उसका कारण चारों दोषों से कोई दोष या वायु हो उसको माद्दी कहते हैं। जो उसका कारण इनमें से कोई वस्तु न हो उसको साजिज कहते हैं। जो धूप, अग्नि, वायु की गरमी या गरम दवा के खाने से हो वह हार साजिज है। ठण्ढी हवा या ठण्ढे पानी के सेवन या ठण्ढी जगह में ठहरने या शीतल ओषधि के खाने से उत्पन्न हो वह बारद साजिज है। गरमी के चिह्न—त्वचा में जलन गरमी और भारीपन का न होना और ठण्ढी चीजों से आराम और गरम से हानि। सरदी के चिह्न—आलस्य और त्वचा में सरदी और जलन का न पाया जाना और ठण्ढी चीजों से हानि और गरम से लाभ पाया जाना। मूल यह है कि किसी कारण में गरमी और सरदी के पहिचानने में कठिनता नहीं होती। हर दोष की अधिकता के चिह्न पीछे कह चुके हैं। वायु के चिह्न एक ही जगह से दूसरी जगह पीड़ा का जाना और कान में किसी प्रकार का शब्द होना।

शिरोरोग का यत्न ।

जो रुधिर की अधिकता हो तो सरेरू की फस्द खोले । जो कफ या पित्त या दग्धदोष या बायु का जोर हो तो मुंजिज अर्थात् मल के पकाने के उपरान्त ग्रंथों के अनुसार मुसिलों से मल को निकाले और साजिज में प्रकृति को बदल डाले अर्थात् जो गरमी हो तो ठण्ढा करे, जो सरदी हो तो गर्म करे । अब यहां थोड़े से नुस्खे शिर की पीड़ा और शकीके के लिखे जाते हैं ।

इतरीफल कशनीजी ।

जो शिरपीड़ा, शिरके घूमने और नेत्रके रोगों को दूर करती है:—पीलीहड़ की छाल, काबिलीहड़, कालीहड़, धनियां छिला हुआ, यह सब एक एक तोला कूटछानकर घी में भूनकर तीन भाग शहद के कवाम में माजून बनावे और दो तोले खावे ।

इतरीफल मूलय्यन ।

जो स्वभाव को नरम करता है, हानिकारक दोषों को पक्वाशय और दिमाग से निकलता है, कान के शब्द, भिनभिनाहट और नेत्रों की सियाही को दूर करता है—काबिलीहड़ की छाल, पीलीहड़ की छाल, आंवले की छाल, बहेड़ा और कालीहड़ यह सब तीन तीन दाम गुलाब के सना, फूल, तुरबुद की छाल एक एक दाम, सोठ आधाटंक कूटछानकर बादाम के तेल में भूनकर तीन हिस्से शहद या मिश्री मिलावे और रुचि के अनुसार शरबत ले ।

पाशोया ।

माद्दी या साजिज शिरोरोगों का आराम करता है—खारीनोन दो दाम, गेहूँ की भूसी दो मुट्ठी बेरकी पत्ती, खतमीकी पत्ती, मकोय के पत्ते हरएक आधा आधा पाव, खतमी के बीज चार दाम, पानी में काढ़ा करें जब आधा पानी शेष रहे तो कुछ गरम से पांव धोवे । जो सब दवायें न मिलें तो जितनी ही मिल जावें आराम देंगी । जो कोई दवा न मिले केवल गरमी पानी, गेहूँ की भूसी और खारी नोन ही लाभ देता है। पांवों का दबाना और तलवे सुहराना ठण्ढी और गरम शिरपीड़ा को अच्छा करता है ।

अन्य—पांवशोया पांवों का धोना और तलवों में झावें करना शिरपीड़ा के लिये श्रेष्ठ है । सेना के पुत्र शेख अबूअली ने कानून में लिखा है कि मैं बहुधा शिरपीड़ावाले के हाथपांवों पर गरम पानी का तरेड़ा देता रहा । जहाँतक कि मालूम हुआ कुछ चीज शिरसे हाथ पांवों की ओर उतरती है इससे शिर की पीड़ा दूर हो गई और अबूमाहर ने लिखा है कि ठण्ढे पानी से नहाना गरम शिरपीड़ा को उत्तम है ।

लाभ ।

सर्व प्रकार की शिरपीड़ा में आराम से रहना, खाने पीने में कमी करना श्रेष्ठ है । इस रोग में बहुत हिलना झुलना न चाहिये । मलकारक और बद्ध-कोष्ठ और हानिकर भोजन से पथ्य करना उचित है ।

बफारह–भी शिरपीड़ा को दूर करता है एक तगार में पानी भरकर अपने आगे रक्खे और अपने को अच्छी तरह चादर से छिपाले, एक एक मिट्टी का ढेला गरम करके उसमें डाले, शिर झुकाकर उसकी भाप का बफारह से शिरपीड़ा दूर हो जावेगी ।

अन्य–बफारह जो गरम और ठण्ढी शिरपीड़ा को उत्तम है । काक-जंघा एक वृक्ष है उसका मिस्सी बोलते हैं, टुकड़े टुकड़े करके जोश देकर बफारह ले, उसके उपरान्त चन्दन दो भाग रेंड़ी एक भाग पीसकर लेप करे ।

हरीरा ।

ब्रह्मांड को अति बलकारक–भूने हुये चनों का छिलका दूर करके नौ टंक महीन पीसकर बारह टंक बादाम के तेल में भूने फिर निशास्ता नौ टंक, सफद खशखाश के बीज नौ टंक, मिश्री चार टंक मिलाकर गाय के दूध में हरीरा पकावे फिर नौ टंक घी में बघारकर गर्म गर्म खावे ।

अन्य औषध–जो गर्म शिरपीड़ा के लिये अतिश्रेष्ठ है–धनियां, काहू दोनों एक एक टंक पानी में पीसकर रस छानकर थोड़ी सी शक्कर से मीठा करके एक तोला ईसबगोल छिड़क के खावे या नीलोफर का शर्बत दो तोले मिश्री के बदले डाले ।

अन्य–विशेष करके उस पीड़ा को दूर करती है जो नजले से हो–सीप सिरके में घिसकर कान की दोनों लवों में लगाते रहें ।

अन्य–विशेष लाभ देती है–मँजीठ को शिर पर बांधें ।

अन्य–जिसको बहुत दिनों से शिरोरोग हो उसके लिये उत्तम है कि धतूरे के दो चार बीज रोज निगले ।

महुये के फूलों का तेल ।

जो सर्दी और गर्मी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है । सोंठ, बायबिड़ङ्ग, छिली हुई मुलहठी कुचलकर भँगरा, महुये के फूल यह सब बराबर ले, तिल का तेल चार भाग–महुये के पुष्पों का जीरा निकाल डाले और सब औषधियों को पहिले इतने पानी में कि तेल से दुगना हो औटाके जब

पानी तेल के बराबर रह जावे साफ करके तेल में मिलाकर जोश दे जब तेलमात्र रह जावे और पानी जल जावे छानकर रक्खे छः बूंद नाक में टपकावे बहुत प्रकार की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

नास।

जो शिरपीड़ा और सरसाम पैत्तिक को दूर करता है–कपूर, चन्दन, गुलाब में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास–कद्दू, काहू, धनियां हरा, कासनी हरी, मकोय की पत्तियां सबको या एकएक या दो दो को यथाविधि निचोड़ साफ करके कई बूंद नाक में टपकावे।

अन्य नास–शिरपीड़ा और सर्वप्रकार के शीतकी बीमारियों को उत्तम है–कालीमिर्च, पीपल,लवंग इन सब या दो एकको समय के अनुसार सौंफ के अर्क में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास–जो सर्दी और कफ की शिरपीड़ा को दूर करे, जूफे की पत्तियों का पानी साफ करके नाक में टपकावे।

अन्य–सर्दी की शिरपीड़ा को दूर करे–कटहल के मूल को उबालकर उसकी कुछ बूंद नाक में टपकावे।

अन्य–सर्दी की शिरपीड़ा को गुण करे–बायबिड़ङ्ग, सोंठ, गुड़, बराबर गर्म पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास–जो ब्रह्माण्ड को तरी से साफ करे–चमेली के पुष्प तीन, गुल-रोगन में मलकर नाक में टपकावे।

अन्य–शकीका की पीड़ा को श्रेष्ठ है–गुलदुपहरिया एक प्रकार का प्रसिद्ध पुष्प है दोपहर के समय खिलता है उस फूल की पखुड़ियां मलकर उसका जल नाक में टपकावे।

अन्य–नाजबो के पत्तों के जल की कई बूंदें जो बाईं ओर पीड़ा हो तो दहने नथने में जो दहने नथने की ओर पीड़ा हो तो बायें नथने में टपकावे।

अन्य–कालीमिर्च १, मक्खी की बिष्ठा उसके बराबर, उस स्त्री के दूध से टपकावे जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो, थोड़ा थोड़ा आंखों में लगावे।

अन्य–शकीका को गुणदायक–हाई रवासन के फूल, फिटकरी आधी कालीमिर्च के साथ पानी में पीसकर जो दर्द दहने तरफ हो तो बायें नथने में जो बायें तरफ हो तो दहने नथने में टपकावे।

तथा—शकीका को गुणदायक—रीठे की छाल को पानी में खूब मले, जब कफ निकले गर्म करके ढाई बूँद दोनों नथनों में टपकावें ।

तथा—शकीके के लिये—सिरस के बीज थोड़े पानी में पीसकर कपड़े में पोटली बांधकर जिस तरफ शिर में पीड़ा हो अढ़ाई बूँद उस तरफ के नथने में टपकावे ।

तथा—शकीका को दूर करे—नौसादर, कालादाना, हरएक दो रत्ती पानी में पीसकर गौ के घी में मिलाकर नाक में टपकावे ।

तथा—शकीका को लाभ करे—प्याज थोड़े महुवे के बीज चार कालीमिर्चों के साथ पानी में पीसकर जो बायें तरफ पीड़ा हो तो दहने नथने में और दहनी ओर हो तो बायें नथने में टपकावे—और केवल कालीमिर्च के साथही गाय का घी नाक में टपकाना शकीके को श्रेष्ठ है ।

तथा—जो शकीके की पीड़ा को उत्तमोत्तम यत्न है—समन्दर फल की मींगी को जल में पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो तो दहने नथने में टपकावे अथवा दहने तरफ हो तो बायें में टपकावे—और जो उसकी तीक्ष्णता का भय हो तो स्त्री के दुग्ध में पीसकर सेवन करे ।

अन्य—उस शकीके की पीड़ा के लिए श्रेष्ठ है जो बारी से आता हो—बन्दाल पानी में भिगोकर जल छानकर दो बूँद नाक में टपकावे मस्तक के मल को बहाकर दूर करेगा ।

चूर्ण—जिसको फंकी भी बोलते हैं—बनफशा दो माशे, अस्तखद्दूस एक माशा, धनियां दो माशे, बालछड़ एक माशा, मुण्डी एक माशा, गुलाब के फूल दो माशे, बादाम की गिरी दो माशे, मिश्री सब दवाओं के बराबर पीस छानकर एक तोला रोज खावे ।

हड़ का शर्बत ।

पैत्तिक शिरोरोग के लिये श्रेष्ठ है और स्वभाव को नर्म करता है । दश पीले हड़ों की छाल जवकुट करके चीनी की प्याली में पानी में भिगोकर ३ दिन धूप में रक्खे, चौथे दिन मलकर छाने और फिर पीली ग्यारह हड़ों की छाल को उसी रीति से उसी पानी में धूप में रोज रखकर चौथे दिन मलकर छानके एक सौ पचास मिस्काल सफेद शक्कर में कवाम करे और जो शक्कर के बदले सफेद तुरंजबीन हो तो श्रेष्ठ है ।

पानी तेल के बराबर रह जावे साफ करके तेल में मिलाकर जोश दे जब तेलमात्र रह जावे और पानी जल जावे छानकर रक्खे छः बूँद नाक में टपकावे बहुत प्रकार की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है।

नास।

जो शिरपीड़ा और सरसाम पैत्तिक को दूर करता है—कपूर, चन्दन, गुलाब में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—कद्दू, काहू, धनियां हरा, कासनी हरी, मकोय की पत्तियां सबको या एकएक या दो दो को यथाविधि निचोड़ साफ करके कई बूँद नाक में टपकावे।

अन्य नास—शिरपीड़ा और सर्वप्रकार के शीतकी बीमारियों को उत्तम है—कालीमिर्च, पीपल,लवंग इन सब या दो एकको समय के अनुसार सौंफ के अर्क में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—जो सर्दी और कफ की शिरपीड़ा को दूर करे, जूफे की पत्तियों का पानी साफ करके नाक में टपकावे।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को दूर करे—कटहल के मूल को उबालकर उसकी कुछ बूँद नाक में टपकावे।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को गुण करे—बायबिड़ङ्ग, सोंठ, गुड़, बराबर गर्म पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य नास—जो ब्रह्माण्ड को तरी से साफ करे—चमेली के पुष्प तीन, गुल—रोगन में मलकर नाक में टपकावे।

अन्य—शकीका की पीड़ा को श्रेष्ठ है—गुलदुपहरिया एक प्रकार का प्रसिद्ध पुष्प है दोपहर के समय खिलता है उस फूल की पखुड़ियां मलकर उसका जल नाक में टपकावे।

अन्य—नाजबो के पत्तों के जल की कई बूंदें जो बाईं ओर पीड़ा हो तो दहने नथने में जो दहने नथने की ओर पीड़ा हो तो बायें नथने में टपकावे।

अन्य—कालीमिर्च १, मक्खी की बिष्ठा उसके बराबर, उस स्त्री के दूध से टपकावे जिसके पुत्र उत्पन्न हुआ हो, थोड़ा थोड़ा आंखों में लगावे।

अन्य—शकीका को गुणदायक—ढाई रवासन के फूल, फिटकरी आधी कालीमिर्च के साथ पानी में पीसकर जो दर्द दहने तरफ हो तो बायें नथनें में जो बायें तरफ हो तो दहने नथने में टपकावे।

तथा—शकीका को गुणदायक—रीठे की छाल को पानी में खूब मले, जब कफ निकले गर्म करके ढाई बूंद दोनों नथनों में टपकावें।

तथा—शकीके के लिये—सिरस के बीज थोड़े पानी में पीसकर कपड़े में पोटली बांधकर जिस तरफ शिर में पीड़ा हो अढ़ाई बूँद उस तरफ के नथने में टपकावे।

तथा—शकीका को दूर करे—नौसादर, कालादाना, हरएक दो रत्ती पानी में पीसकर गौ के घी में मिलाकर नाक में टपकावे।

तथा—शकीका को लाभ करे—प्याज थोड़े महुवे के बीज चार कालीमिर्चों के साथ पानी में पीसकर जो बायें तरफ पीड़ा हो तो दहने नथने में और दहनी ओर हो तो बायें नथने में टपकावे—और केवल कालीमिर्च के साथही गाय का घी नाक में टपकाना शकीके को श्रेष्ठ है।

तथा–जो शकीके की पीड़ा को उत्तमोत्तम यत्न है—समन्दर फल की मींगी को जल में पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो तो दहने नथने में टपकावे अथवा दहने तरफ हो तो बायें में टपकावे—और जो उसकी तीक्ष्णता का भय हो तो स्त्री के दुग्ध में पीसकर सेवन करे।

अन्य—उस शकीके की पीड़ा के लिए श्रेष्ठ है जो बारी से आता हो—बन्दाल पानी में भिगोकर जल छानकर दो बूँद नाक में टपकावे मस्तक के मल को बहाकर दूर करेगा।

चूर्ण—जिसको फंकी भी बोलते हैं—बनफशा दो माशे, अस्तखद्दूस एक माशा, धनियां दो माशे, बालछड़ एक माशा, मुण्डी एक माशा, गुलाब के फूल दो माशे, बादाम की गिरी दो माशे, मिश्री सब दवाओं के बराबर पीस छानकर एक तोला रोज खावे।

हड़ का शर्बत।

पैत्तिक शिरोरोग के लिये श्रेष्ठ है और स्वभाव को नर्म करता है। दश पीले हड़ों की छाल जवकुट करके चीनी की प्याली में पानी में भिगोकर ३ दिन धूप में रक्खे, चौथे दिन मलकर छाने और फिर पीली ग्यारह हड़ों की छाल को उसी रीति से उसी पानी में धूप में रोज रखकर चौथे दिन मलकर छानके एक सौ पचास मिस्काल सफेद शक्कर में कवाम करे और जो शक्कर के बदले सफेद तुरंजबीन हो तो श्रेष्ठ है।

शिरोरोग दूर करे—बनफशा, नीलोफर, गुलाब के फूल यह हरएक चार चार मिस्काल, अस्तखद्दूस दो मिस्काल, आलूबुखारे दश दाने पानी में भिगोकर लेले और छानकर तिगुनी शक्कर में कवाम करे, दो तीन तोले खावे जो आलूबुखारे न हों तो उसके बदले इमली मिलावे।

सूंघने की दवा।

जो गर्मी के शिरोरोग को श्रेष्ठ है—कपूर या चन्दन सूँघे। ककड़ी और खीरे का सूँघना भी पैत्तिक शिरोरोग को दूर करता है।

अन्य—सर्दी के शकीका और शीत की शिरपीड़ा को गुण करे—नौसादर और हल्दी को मिलाकर सूँघे।

लाभ।

सम्पूर्ण भाँति के गर्म इत्रों के सूँघने से भेजे में बल होता है और इसी प्रकार से ठंढी सुगन्धों का सूँघना भेजे को लाभ देता है।

लेप।

शिर पीड़ा और शकीके को श्रेष्ठ है—सोंठ, चन्दन, रण्ड की जड़ की छाल कूट छानकर पानी से धोकर साठी के चावल के साथ महीन पीसकर गहरा-गहरा लेप करे।

अन्य—गरमी की शिर की पीडा को गुणकारक—ईसबगोल का लुआब खतमी के फूलों में मिलाकर पतला पतला लेप करे और पानी भी इसका उत्तम है।

अन्य—शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है जो गरमी से हो—चुका और दूब दोनों को बराबर पानी से पीसकर शिर पर लेप करे।

तथा—ककड़ी के टुकड़े और कद्दू के ताजे छिलके शिर पर रखना भी अच्छे हैं।

तथा—गरमी के शिरोरोग के लिये अतिश्रेष्ठ हैं—खतमी के पत्ते या बीज, धनियां और गेरू जल में पीस कर शिर और माथे में लेप करे।

अन्य—मेहँदी के फूल जल में पीसकर मले यह गरमी के शिरदर्द को श्रेष्ठ है।

अन्य—गरमी के शिरोरोग को दूर करे—काहू के बीज पानी में पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य—गरमी की शिरपीड़ा को गुणदायक—तिल के बृक्ष की पत्तियाँ सिरके या पानी में पीसकर मले।

अन्य—खुरपे के पत्ते सिरके या पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—चन्दन घिसकर लगावे ।

अन्य—काई मले ।

अन्य—धनियां पीसकर अण्डे की सफेदी में मिलाकर मले ।

अन्य—जौ का आटा पानी में घोलकर लगावे ।

अन्य—लसोड़ा का लुआब गरमी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है ।

अन्य—साल की लकड़ी जिसको साज भी बोलते हैं पानी में घिसकर लगाना गरमी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है ।

अन्य—अफीम गुलरोगन में कजली करके शिरपर मले ।

अन्य—कासनी के बीज गुलाब में या पानी में पीसकर मले ।

अन्य—मेहँदी की पत्ती लगाना शिरपीड़ा और मस्तक पीड़ा को गुण करती है ।

अन्य—बकायन के पत्तों को पीस कर लगाना गरमी के शिरदर्द को दूर करता है ।

अन्य—शीतलचीनी गुलाब में पीसकर मले ।

अन्य—कबाबह् गुलाब में पीसकर मले ।

अन्य—अनार की जड़ पानी में घिसकर गह्रा लेप करे ।

अन्य—सोंठ, रेंड़ी के तेल में घिसकर गरम करके लगाना सरदी की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है ।

अन्य—सरदी और साजिज और कफ की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—सहँजन के पत्ते पानी में पीसकर गरम करके लेप करे ।

अन्य—सरदी और कफ की शिरपीड़ा को गुणकारक—पीपल पानी में पीस कर लगावे ।

अन्य—कलौंजी, कालीजीरा पानी में पीसकर मले ।

अन्य—रेंड़ी, सोंठ, अजवायन पानी में पीसकर गरम करके लेप करे ।

अन्य—सर्दी की शिरपीड़ा को गुणकारक—नरकचूर पानी में पीसकर तलवे में मेहँदी की तरह लगावे ।

अन्य—शिरपीड़ा को गुणदायक-निबौली की मींगी पीसकर माथे पर मले ।

अन्य—गरमी और सर्दी के शिरोरोग को सफेद चन्दन, तज बराबर घिसकर कुछ गरम करके लगावे ।

अन्य—सरदी और गरमी की शिरपीड़ा को गुण करे—तरबूज के सफेद

बीज, मुचकुन्द के फूल दोनों या एक इनमें से पानी में पीसकर गहरा लेप करे।

अन्य—शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है चाहे वह खुश्की से हो या गरमी से—बकरी का मक्खन शिरमें मले।

अन्य—जो नजले से शिरपीड़ा हो उसके लिये उत्तम है—दो लौंग और अफीम चार रत्ती पानीमें पीसकर कुछ गरम करके लगावे।

अन्य—शकीका को गुणकारक—हड़के बीज गरम पानी में पीसकर मले।

तथा—शकीका को लाभदायक है—मुरगी की बिष्ठा और कालीमिरच दोनों पीसकर जो पीड़ा बाईं ओर हो तो दहनी ओर जो दहनी तरफ हो तो बाईं ओर शिर में मले।

अन्य—पुराने शकीके को दूर करे—जंगली कबूतर की बीट राई के साथ पीसकर लेप करे।

अन्य—जमालगोटा जल में पीसकर जिस ओर पीड़ा न हो मले, जब जलन हो कुछ गरम पानी से धो डाले यह बीमारी दूर होगी। इस रोग का यत्न शीघ्रही करना उचित है नहीं तो यह पीड़ा अति कठिनता से दूर होती है। जब पुराना हो जावे निःसंदेह शीत से होगा, गरम औषधियों के सेवन के बिना कदाचित् दूर न होगा।

अन्य—लेप जो शिरपीड़ा को आराम करे—एक बादाम कीं गिरी सरसों के तेल में पीसकर शिर पर मले पीड़ा दूर हो।

अन्य—रेंड़ी एलुवा बराबर पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे पीड़ा दूर हो।

अन्य उपाय—ठण्ढी शकीका और शिरपीड़ा दूर करे—बाबूने के पुष्प मेथी के लुआब में मिलाकर कपड़े में बांधकर गरम करके रक्खे और टकोर करे।

पीसकर फूँकने की औषधि।

ठण्ढी शिरपीड़ा के लिये महीन पीपल पीसकर नाक में फूँके।

औषधि—ठण्ढे शकीका के लिये अकरकरा दांतों में दबावे।

टिकिया—तिकोनी शकीका की पीड़ा शिरोरोग को दूर करे—धनियां, आमला, काहू के बीज, सोंठ यह सब दो भाग, अफीम, खुरासानी अजवायन, कतीरा हरएक २ भाग पीसकर तिखूँटी टिकियां बना रक्खे समयपर पानी में रगड़कर कुछ गरम करके मले।

अन्य—कान में टपकाने की पतली दवा शकीका की पीड़ा को गुणदायक-

गाजर की पत्तियों को ऊपर नीचे घी लगाकर तवे पर गरम करके उसका अरक निचोड़कर कान में टपकावे, यह यत्न मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है। दो तीन बूंदें नाक में भी टपकावे बहुत छींकें आवेंगी और आधासीसी की पीड़ा दूर होजावेगी।

टकोर—गरम शिरपीड़ा के लिये नींबू के दो टुकड़े करके गरम तवे पर रक्खें। पहिले एक टुकड़े से माथे को सेंकें। जब वह ठण्डा हो जावे उसको तवे पर रखकर दूसरे से सेंकें। इसी प्रकार एक घड़ीपर्यंत सेंकते रहें।

सुरमा—जो आधासीसी को लाभदायक है। साबुन लाहौरी थोड़े पानी में पीसकर दोनों नेत्रों में, या केवल उस नेत्र में जो पीड़ा की ओर है,सुरमे की भांति लगावें। गुलकन्द बनफशा शिरपीड़ा, खाँसी और हृदय के रोगों को श्रेष्ठ है—वनफशा के फूल एकभाग मिश्री दो भाग परस्पर खूब मिलाकर रक्खे और एक तोला भर खावे।

चटनी—भेजे को बलकारक—मेहँदी के बीज तीन माशे पीसकर शहद में मिलाकर चाटे।

काढ़ा—जो पैत्तिक और शीत के शिरोरोग को अति उत्तम है—बांस की जड़ पांच टङ्क जवकुटकर पानी में काढ़ा करके छान के आधादाम मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य—ठण्ढी और कफ की शिरपीड़ा को गुणदायक है—जवकुट की हुई सौंफ दो टंक और अधकुचली सौंफ की जड़ चार टंक, अस्तखद्दूस तीनटंक आधसेर जल में काढ़ा करे जब तिहाई जल शेष रहे साफकरके दो तोले शहद या बनफ्शे के शरबत में डालकर पिये।

अन्य—काढ़ा शिरपीड़ा के लिये—पीली हड़ का बक्कल, सोंठ, धनियां, आमला, बहेड़े की छाल, बायबिड़ंग बराबर एक टंक कूट आधसेर जल में औटावे। जब जल चतुर्थभाग शेष रहे छान कर पिये। बाजे लोग सोंठ के बदले चिरायता मिलाते हैं।

तरोड़ा—शीत की शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—बाबूना, सोया, सौंफ औटाकर शिर पर तरेड़ा दे। औषधि गरम शिरपीड़ा को गुणदायक—दो तोले इमली जल में भिगोकर उसके साफ पानी को लेकर थोड़ी शक्कर मिलावे और पिये।

तरेड़ा—गरमी की शिरपीड़ा को गुणकारक—छिले जौ, कद्दू के टुकड़े, काहू के बीज, ईसबगोल, बनफ्शा, खतमी के बीज, नीलोफर जल में औटाकर

शिर पर तरेड़ा दे और तरेड़े का सेवन मुंजिज के सेवन के उपरांत उत्तम है।

अन्य–शिरपीड़ा और आधासीसी के लिये सफ़ेद कनेर की पत्तियां छाया में सुखाकर महीन पीस रक्खे, जिस ओर पीड़ा हो उसी नथने में दो चावल के बराबर फूँके, छींके लावेगा और नाक में से बहुत जल निकलेगा और पीड़ा दूर हो जावेगी, बहुधा ऐसा हुआ है कि पाखाने और गन्दी जगहों की दुर्गंध और चमड़े की सड़ाँद से पैत्तिक शिरपीड़ा पैदा होती है, उसके दूर करने का यत्न–कुछ गरम पानी से नहाना और सिरका सूँघना। और कभी ब्रह्माण्ड में कीड़े पड़जाने से सिर में पीड़ा होती है उसके लक्षण कीड़ों का भी निकालना और दुर्गन्ध दूर करना उसका यत्न–मलीम एक लकड़ी प्रसिद्ध है उसे महीन पीसकर नाक में फूंके।

इस्पन्द का तेल।

शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है–चार टंक इस्पन्द तेल में जलावे, जब खूब जल जावे उसी तेल में पीस डाले, वह तेल हरदिन माथे पर मल करके तीक्ष्ण अग्नि से सेंके फिर गरम जल से धो डाले।

शतावर का तेल।

जिसको हिन्दू बहुधा सेवन करते हैं शकीके की पीड़ा को दूर करता है–शतावर की ताजी जड़ कूटकर उसका अरक निचोड़ लें, उसके बराबर तिल का तेल मिलाकर औटावें जब पानी जल जावे और तेल रह जावे शिर पर मलें।

टपकाने की औषधि।

शफ़तालू की पत्तियों के रस में एलुवा मिलाकर दो तीन बूंदें नाक में टपकावे, ब्रह्माण्ड के सब कीड़े मर जावेंगे।

अन्य–नीम के पत्तों का जल मीठे तेल में मिलाकर कान में टपकावे। कभी सर्प के काटने और उसका बिष दूर होने के उपरांत शिर की पीड़ा बाकी रह जाती है उसका यह यत्न है कि बिनौले की मींगी का शीरा एक तोले भर पानी में निकालकर बहुधा शिर पर लेप करे। और शिरपीड़ा जो कि चिंता की अधिकता से उत्पन्न हो उसका यत्न–कोई वस्तु खा लेना और अञ्जीर के बृक्ष की छाल की भस्म शिरके में या केवल जल में घोलकर शिर में मलना है।

सरसाम की औषधियों का वर्णन।

सरसाम ब्रह्माण्ड के शोथ का नाम है– मुख्य भेजे में हो या भेजे के परदों या दोनों में और उसके कई प्रकार हैं।

सरसाम के लक्षण—ज्वर बराबर रहे और कभी न उतरे, प्रलाप और पीड़ा और शिर भारी रहे। जो सरसाम पित्त की अधिकता से हो उसको करानीतसखालिस बोलते हैं, कफ के सरसाम को लै-सरगस कहना चाहिये, हर एक दोष से उस दोष का पहिचानना सम्भावित है। पैत्तिक और रक्त के सरसाम में ज्वर वेग से होता है, कफ तथा दग्धदोष के सरसाम में कम होता है। पैत्तिक में कठोर चित्त और कफके सरसाम में आलस्य और रक्त में तेजी और दग्धदोष में बहुधा विक्षिप्तता होती है। दग्धदोषका सरसाम कम होता है, इस रोग में फस्द जल्दी खुलवानी उचित है। विशेष करके रक्त के और पित्त के सरसाम में कभी गरम तप में बिना भेजे की सूजन की बाफ भेजे की ओर जाती है उससे बक और शिरपीड़ा होती है इस दशा को सरसाम गैरहकीकी बोलते हैं। उस समय फस्द सरेरू और पिण्डलियों मैं पछने देकर सिंगी खींचना और रुधिर के सरसाम में बिना पछने के सिंगियां खींचना और दूसरे प्रकारों में पाशोया करना उचित है और ठंढाई पिलाना और स्त्री के दुग्ध को नाक में टपकाना और शिर पर दुहना उचित है जो स्त्री का दुग्ध न मिले बकरी का दूधही शिरपर डाले और कद्दू का तेल मलना उत्तम है।

कद्दू का तेल।

कद्दू का जल निचोड़कर छानके बराबर के मीठे तेल में जोश दे जब पानी जल जावे तेल का सेवन करे।

लखलखा (उसको कहते हैं कि गीली चीजें किसी शीशी में रखकर सूंघे) जो गरम सरसाम को दूर करेगी—ताजे धनियें का पानी खीरे ककड़ी के बीजों का जल थोड़े शिरके में मिलाकर शीशी में रखकर सूंघे।

अन्य—चन्दन हरी कासनी के रस और तरबूज के जल में रगड़कर थोड़ासा कपूर भी मिलाकर शीशी में रखकर सूंघे।

नीलोफर का तेल।

जो सरदी की शिरपीड़ा और सरसाम को दूर करे—नीलोफर के फूल लेकर गुलरोगन की तरह उसका तेल बना ले।

अन्य—ऊदकी शरबत जो ब्रह्माण्ड को अतिबलदायक है—अगर पांच टंक, लौंग, बालछड़, दालचीनी हर एक डेढ़ डेढ़ टंक मिश्री पावभर यह सब दवा जवकुट करके वस्त्र में बांधकर गुलाब में भिगोकर जोश दे।

जब चौथाई शेष रहे छान कर मिश्री मिलायें शरबत का कवाम करें फि ढाई रत्ती भर कस्तूरी और अम्बर मिलावें ।

अन्य—गरम सरसाम को दूर करे—चन्दन और कपूर घिसकर काहू पत्तों के पानी में मिलाकर नाक में टपकावें ।

पाशोया—जो सरसाम को दूर करे—खैरू के फल, नीलोफर के फूल, छिल हुआ कद्दू, हर एक आध आध पाव, जौ की भूसी तीन मुट्ठी जल में जो देखकर कुछ गरमजल से पाशोया करे और चन्दर रगड़कर सुँघावे, खानेव आश जौ दे फिर ज्वर और शिरपीड़ा का यत्न करे ।

मिरगी का वर्णन ।

यह रोग बहुधा कफ से होता है और जब मिरगी आती है तो रोग पृथ्वी पर गिर पड़ता है हाथ पांव टेढ़े होजाते हैं चेष्टा बिगड़जाती है क मुँहसे निकलता है इस रोग में अवश्य करके शिर भारी होता, जिह्वा क नीची रगें सब्ज होती हैं ।

मिरगी की औषधियाँ ।

जब मिरगी आवे तो रोगी के अवयवों को मूल दशा पर देखते रहै- और सोंठ, कालीमिरच, पीपल, नौसादर, इन्दरायन के फल के अन्दर क परदा कलौंजी आदि हरएक अलग अलग या मिलाकर पीसकर नाक फूंकें, जब मिरगी दूर हो तो मुंजिज देकर हुबअयारज से मुसिल दे औ चौपायों के मांस और तर मेवों और दूध, प्याज और मसूर बरन उ वस्तुओं से जो तन्द्रा या नशा करती हैं पथ्य करें और दुर्गन्ध के सूंघ और बहुत जागने और ठंढे पानी में नहाने और पेटभर कर खाने और धू और मेह में फिरने और भयानक शब्दों और ठण्ढी पवन से भी अलग रहे जो लड़कों की मिरगी में ज्वर बहुत हो तो गरम वस्तुओं का अधिक सेव न करें और अधिक ठण्ढाई भी मना है और शाफे अर्थात् बस्ति से बद्धकोष्ठ दूर करना उचित है । इस जगह थोड़ी सी सुगम औषधियां जो इस रोग के लिये उत्तमोत्तम हैं लिखी जाती हैं ।

गोलियां—जब मिरगी का दौरा न हो तो देना चाहिये ।

गूगल की गोली—मिरगी को गुण करे मुसिल देने के उपरान्त वैद्य प्रकृति के सम करने के लिये सेवन करते हैं—कूट, सोंठ, कबावा, देवदारु हर एक तीन तीन टंक, भँगरा काला, कालीमिरच, अकरकरा, गजबेलि, सनके बीज

र एक नौ नौ टंक, गूगल सबके बराबर कूट छानकर शहद में गोलियां नावें, खूराक २ टंक, प्रभात और सन्ध्या को कुछ गरम पानी से निगलें।

औषधि—जदवार नरीना लड़केवाली स्त्री के दुग्ध में रगड़कर पिलावें।

दाग—लड़कों की मिरगी के लिये आजमाया हुआ है, मूँगे का दाना गरम करके दोनों भौहों के बीचमें दाग दें और बकरी की मेंगनी से भी दाग देना उत्तमोत्तम है।

अन्य औषधि—मिरगी के दौरे के समय श्रेष्ठ है—शरीफे के बीजों की गिरी को पीसकर कपड़े की बत्ती में रखकर उसका धुवां नाक में पहुँचावें।

अन्य—मिरगी के समय कपड़े का बन्द खटमल के रुधिर में भिगोकर उसका धुवां नाक में पहुँचावें।

अन्य—मिरगी के दौरे के समय या उसके आगे पीछे लाभदायक है—आक की जड़ का बक्कल बकरी के दुग्ध में घिसकर नाक में टपकावें। कछुये का रुधिर जौ का आटा शहद में सबको बराबर मिलाकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावें, सुबह और शाम एक एक गोली खावें।

अन्य—मिरगी के समय ढाक की जड़ जल में रगड़कर नाक में टपकावें।

अन्य—गीदड़ के पित्ते को कई कालीमिरचें डालकर सुखावें, मिरगी के समय उनमें से दो मिरचें पानी में पीसकर दोनों नथुनों में दो तीन बूँदें टपकावें, मिरगी जाती रहेगी।

अन्य—मिरगी के समय काम आती है—आधे महुवे की गुठली अढ़ाई कालीमिरचों के साथ पानी में पीसकर नाक में टपकावें।

अन्य—मिरगी के दौरे के समय सेवन करने से तत्काल मूर्च्छा दूर हो—कड़वी तोरई जलमें पीसकर दो तीन बूँदें नाक में टपकावें।

अन्य—छोटी कटाई का दूध दौरे के समय नथुनों में टपकावें।

अन्य—रुई हाथी की मस्ती में अर्थात् उस तरी में जो मस्ती के समय हाथी के कान के पास या उसके माथे से बहती है भिगोकर मिरगी के समय दो तीन बूँदें नाक में टपकावें।

अन्य—दो भाग नौसादर आधा हिस्सा सब्रसकूतरी अर्थात् एलुवा चौथे हिस्से तिलों के तेल में पीसकर कई बूँदें नाक में टपकावें।

अन्य—कटाई की जड़ भंग के बीज बराबर लेकर लड़के के मूत्र में पीसकर नाक में टपकावें।

अन्य–बकरी की सींग का धुवां दौरे के समय नाक में पहुँचाना शीघ्रही लाभ देता है।

चूर्ण—जो विशेषकरके इस रोग को दूर करे–भैंसे का सुम जलाकर एक टंक के प्रमाण मिरगीवाले को खिलाना आराम करता है।

गुललाला का शरबत।

अन्य समय या दौरे के वक्त मिरगी दूर करता है–लाले के फल बीस टंक लेकर जल में औटावें और साफ करके चालीस टंक मिश्री में कवाम करके शरबत तैयार करें, लड़के को आधा टंक और दाई को दो टंक खिलावें।

औषधि—दौरे के समय राई को पीसकर सूँघें।

अन्य–कुन्दश पिसा हुआ थैली में बांधकर सूँघे। इस मिरगी के रोग के लिये जालीनूस की परीक्षा से अकरकरा अतिउत्तम है—मुसिल लेने के उपरान्त समय पर वा अन्य समय में अकरकरा कूटकर बराबर सिरके में पीसकर तीन हिस्से शहद में पाक बनावें और सात माशे कुछ गरम जल से खावें।

अन्य औषधि—छोटी कटाई, कायफल सुखाकर कायफल, नकछिकनी दोनों छः छः माशे, तम्बाकू की नास चार तोले सब को कजली करके दो माशे के अनुमान प्रतिदिन सूँघें।

नाक में फूंकने की औषधि।

जो दौरेके समय काम आती है—घूंसके पित्ते में कालीमिरच भरकर छाया में सुखावें समय पर पीसकर दो चावल भर नाक में फूंकें।

अन्य—रतनज्योति पीसकर नाक में टपकावें।

अन्य—दौरे के समय वा अन्य समय सेवन कर सकते हैं–साबुत रीठा उसके बक्कल और बीज समेत पीसकर नास लिया करें।

अन्य—समयपर मिरगी को दूर करे—बड़ा बोट कि आकके वृक्षपर अनेक रंग का होता है उछलता है उड़ नहीं सक्ता, उसको सुखाकर कलीमिरच की बराबर लेकर पीसकर रोगी की नाक में फूंकें, आजमाया हुआ है। साहब खैरुल्तिजारब ने कालीमिरच के बदले गौ का घी लिखा है।

अन्य—चूहे का भेजा सुखाकर पानी में पीसकर आधे माशे के अनुमान नाक में फूंके तीन दिन में आराम हो जावेगा।

औषधि—जो विशेष करके मिरगी को दूर करे--तिबफरीदी में लिखा है कि मिरगी के रोगी के गले में जायफल लटकाना अति लाभकारक है,

मिरगी को फिर नहीं आने देता। इसी प्रकार हींग को लटकाना चाहिये। सुअर के सुमकी अंगूठी मंगल के दिन दाहिने हाथ में पहिनना मिरगी को दूर करता है। वह मिट्टी जिसपर सुअर ने मूत्र किया हो अपने पास रखना विशेष करके मिरगी को दूर करे और भेड़िये के दांत लड़के के गले में बांधने से मिरगी नहीं आती।

अन्य—भेड़िये की बिष्ठा और हड्डी अपने पास रखने से मिरगी दूर होती है।

अन्य—गाय के बायें सींग की अंगूठी बनाकर बायें हाथ में पहिनना भी श्रेष्ठ है।

अन्य—चूहे का होंठ लड़के की गरदन में लटकाना लड़कों की मिरगी को दूर करता है।

सकते की औषधि का वर्णन।

सकता वह रोग है कि जिसमें मनुष्य हिलडुल नहीं सकता और वह रोगी मुरदा मालूम होता है उसका कारण मुख्य भेजे में नल की गांठ पड़ने का है।

यत्न—जो रुधिर से हो तो सरेरू की फ़स्द खोलें, जो कफ़ की अधिकता हो तो कफ़ के वास्ते बस्तिकर्म और साफे के द्वारा मल निकालें और शिर को भी सेकें और कान में औषधियाँ टपकावें और सुँघें और बमन कराना उत्तम है और हाथ पांव का मलना और बांधना श्रेष्ठ है।

अन्य—शिर में तालू पर नश्तर देकर उसपर पारा मलना लाभ देता है और मुंजिज के उपरान्त कफ़ के निकलने का उपाय करें। जब इस रोग में सांस का चलना मालूम न हो तो असाध्य जानो और जो सांस का आना जाना मालूम हो तो साध्य जानो। सकते के बीमार और मुरदे में इतना अंतर है कि सकते की हालत में रोगी के नेत्र में देखने वाले का प्रतिबिम्ब मालूम होता है और मुरदे की आंख में नहीं मालूम होता।

नाक में टपकाने की औषधि।

सकते को दूर करे—नकछिकनी, पापड़िया खैर, एलुवा, चुकन्दर की जड़ जल में पीसकर छान करके कुछ बूंदें नाक में टपकावें।

अन्य—थोड़ी सी हींग सौंफ के अरक में पीसकर कण्ठ में टपकावें।

औषधि—जो शिर मुँडाकर पछने लगाकर मनुष्य के मूत्र में बचछनाग पीसकर उसपर मले तो तत्काल चेत होवे।

निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने के रोग के विषय में ।

बहुधा बुढ़ापे के कफ की अधिकता से निसियान अर्थात् स्मरण जाते रहने का रोग होता है जो यह रोग युवावस्था में हो तो ब्रह्मांड की बीमारियों के रोगों की खबर देता है इसका मुख्य यत्न यह है कि मल के पकने के उपरान्त ब्रह्मांड को ठण्ढे मुसिल से साफ करे ।

भिलावें का पाक—जो निसियान और दूसरे रोगों को श्रेष्ठ है—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बालछड़, तज, तेजपात, नागरमोथा, अस्तखद्दूस हरएक डेढ़ डेढ़ तोला, कालीमिरच, नरकचूर दो दो माशे, भिलावें का तेल सात माशे, सवापाव शहद में चटनी करके पाक बना लेवे।

अन्य—तज की माजून जो निसियान की बीमारी को दूर करे—तज,नागरमोथा दोनों दश दश टंक, सोंठि, कालीमिरच हर एक पांच पांच टंक कूट छानकर दुगुने शहद में मिलावें बाजी पुस्तकों में औषधियों की तोल बराबर लिखी है—खूराक दो टंक ।

चूर्ण—जो इस रोग को दूर करे—कुन्दर, सोंठि, नागरमोथा बराबर कूटकर फंकी बनावें अपनी रुचि के अनुसार मुनक्के के सात दानों का रस निकालकर उसके साथ एक सप्ताह भर फाँकें ।

अन्य—वज की माजून जो निसियान को दूर करती है और पट्ठों को गरम करती है—सफेद शक्कर पाव भर कवाम करके तीन टंक वज औषधि पीसकर उसमें मिलाकर माजून तय्यार करें, खूराक एक तोले के अनुमान ।

औषधि—जो स्मरण को उत्तम है—कालीमिरच, पीपल, हल्दी, कूटमीठी, मुलहटी,कालाजीरा, सांभरनोन, अजमोद सब एक एक टंक महीन पीसकर प्रतिदिन एक टंक शहद और घी में मिलाकर खावें ।

अन्य—यह औषधि ब्रह्मांड की सरदी के रोगों और निसियान को श्रेष्ठ है—पांच टंक भिलावां प्रतिदिन खावे ।

अन्य—एक तोला ब्रह्मदंडी कूट छानकर गाय के दूध से पंद्रह दिन फांकें परन्तु जागने और शीतल जल से नहाने और मदिरा और बहुत पानी पीने से पथ्य करें ।

जवारिश सोंठि सादी की—जो कोष्ठ की बीमारियों में वर्णन होगी निसियान के लिये लाभदायक है ।

अन्य—मालकांगनी का तेल पान में लगाकर एक माशा पारा उसपर रख-

कर खूब मलें, पारा उसी समय बिथर जावेगा उसी समय इस पान को पारे से साफ करके पान की गिलौरी में रखकर खावें और इसी प्रकार सर्वदा खाया करें।

मालकांगनी के तेल के निकालने की विधि।

मालकांगनी को कूटकर गजी की थैली में भरकर उसका मुँह सीकर तांबे के बरतन में रखकर उसके नीचे कोयले की आग सुलगावे और थैली पर एक भारी पत्थर रखदे तेल निकल आवेगा।

औषधि—जो निसियान को अच्छा करे—एक टंक कुन्दर रात्रि को जल में भिगो दे प्रात समय साफ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

द्वार व सदर बीमारियों का वर्णन।

द्वार उस रोग का नाम है कि हरएक वस्तु फिरती हुई मालूम हो और सदर कि उठने के समय आंख के नीचे अँधेरा आजावे। यह रोग दोषों की भाफ के हिलने और उसके ब्रह्मांड पर चढ़ने से पैदा होता है। रोग के वेग के समय पर मुंजिज के उपरान्त भेजे को साफ करना उचित है।

इतरीफल—जिसे शिरोरोग में वर्णन कर चुके हैं उत्तम है।

कल्क—दोनों रोगों को श्रेष्ठ है परन्तु जो वह पित्त से हों—धनियां, आमला कुचल कर तीन टंक रात को जल में भिगोकर प्रभात को मलकर थोड़ीसी शक्कर या शहद मिलाकर पिलावें।

काढ़ा—द्वार को गुणकारक—सरफोंका, धनिया पीसी, हड़की जड़ जवकुट करके हरएक साढ़े तीन तीन तोले औटाकर एक सप्ताह भर पिये।

अन्य—जो दौरानशिर को दूर करे—खशखाश का रस दो टंक, धनिये का शीरा दो टंक, थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—द्वार को गुण करे—पटसन के बीजों को पीसकर गेहूँ के आटे में मिलाकर रोटी पकाकर खावे।

चूर्ण—जो सदर और द्वार को गुण करे—सफेद खसखास, धनियां, बिनौले की मींगी बराबर लेकर दुगुनी मिश्री मिलाकर पीसछानकर प्रतिदिन गुलाब या जल के साथ फांके।

सुबात अर्थात् अधिक सोने की दवाओं के विषय में।

यह रोग बहुधा अधिकता से भेजे पर चाहे सादा हो या मल का होता है।

औषधि—मुंजिज के उपरांत कफका मुसिल दें उसके उपरान्त काली-

मिरच घोड़े की लार में पीसकर नेत्र में लगावें, निद्रा के अधिक वेग को दूर करेगी और ठण्ढी वस्तु के खाने से पथ्य करें और सिरका सूँघना नींद की अधिकता दूर करता है और इतरीफल खाना उत्तम है।

सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन।

बहुत जागना भेजे की खुश्की का कारण है सादा हो वा मलका।

उपाय—भेजे को तर करे और जो यह रोग मल से हो तो भेजे को साफ करना भी आवश्यक है।

औषधि—बकरी का दूध हाथ की हथेली और पांव में मलना श्रेष्ठ है।

अन्य—खशखाश का तेल तलुओं और तालू पर मलना लाभ करता है। खशखाश के तेल को बादाम के तेल की तरह निकाल लें।

अन्य—अफीख सूँघना और पसलियों पर मलना नींद लाता है।

अन्य—नाजबो के पुष्प का सूँघना और सोये के साग को तकिये के नीचे रखने से अवश्य ही निद्रा आती है।

औषधि—जो निद्रा लावे—खशखाश के बीज के दो टंक, काहू एक टंक शीरा निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाके पियें।

तैल पांच बीजों का जिसका नाम रोगन हुबूबखमसा है—और नींद लाता है और शिरपीड़ा और पैत्तिक सरसाम को लाभ देता है।

काहू के बीज, कद्दू के बीजों की गिरी, तरबूज के बीजों की गिरी, खशखाश, तिल बराबर लेकर बादाम रोगन की तरह तेल निकालकर शिर पर मलें,

काहू का तेल शिरपर मलने से नींद आती है।

तेल निकालने की रीति—काहू के पत्तों का जल दो भाग निकाल कर एक भाग मीठे तेल में मिलाकर खूब औटावे जब तेलमात्र रह जावे तो उतार ले।

लेप जो निद्रा लावे—हरी भंग की पत्तियां बकरी के दूध में मेहँदी की भांति पीसकर तलुओं में लगावे या भंग का तेल तलुओं में मले। भंग के तेल के निकालने की यह रीति है कि भंग के पत्ते बकरी के दुग्ध में पीस कर टिकिया बनाकर घी में जलावे जब काली हो जावे छानकर उस घृत का सेवन करे।

रोगी के हाथ पांव इतने खींचकर बांधे कि खिचावट से पीड़ा करें और

ऊँघा न जावे और एक दीपक उस रोगी के आगे जलावे और लोग इकट्ठे होकर किस्सा कहानी कहना शुरू करें जब देखे कि रोगी थक गया है हाथ पांव खोल दे और सब चुप हो जावें चिराग उठाले तो यह उपाय निद्रा लाने का है।

चक्की की आवाज और जल के बहने का शब्द, पवन और दरख्तों के पत्तों के हिलने की आवाज से भी निद्रा आती है। कद्दू का तेल शिरपर मलने से भेजे की खुश्की दूर हो—कद्दू के तेल के निकालने की रीति सरसाम में वर्णन हो चुकी है।

औषधि—स्त्री के दूध को नाक में टपकाने से भेजे की खुश्की दूर हो और भोजन के पच जाने के उपरान्त कुछ गरम जल से नहाना निद्रा लाता है और जो ज्वर के कारण निद्रा न आवे तो पाशोया करे।

चूर्ण—जो निद्रा के दोष और नजले को दूर करे—और भेजे को बलदायक है भुनी हुई धनियां, काहू के बीज की मींगी, भुनी हुई खशखाश के बीज, हरएक अढ़ाई अढ़ाई मिस्काल, शक्कर सफेद बारह मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बनावे शरबत दो मिस्काल।

औषधि—जो निद्रा लावे—बनफशा, पोस्ता, काहू के बीज, खशखाश, नाजबो औटाकर तरेड़ा दे।

अन्य—नास जो निद्रा लावे—खशखाश के बीज, काहू के बीज, धनियां, सूखे सोये के बीज बराबर लेकर भूने और कपड़े में ढीला ढीला बांध बांध सूंघे।

अन्य—हरे काहू का पानी लेकर छान कर स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे।

सुरमा—स्त्री की कंघी पर चिराग से काजल पारे और आंख में लगावे और कंघी शिरहाने रखकर सो रहे।

लकवा और फालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में।

फालिज उस रोग को कहते हैं कि जिससे आधा शरीर लम्बाई में ढीला हो जाता है और लकवा में एक ओर को मुंह टेढ़ा हो जाता है। यह दोनों कफ से होते हैं इन दोनों रोगों का यत्न मिलता हुआ है इसलिये एक ही जगह पर लिखा जाता है।

इस रोग के आदि में उत्तम से उत्तम यह उपाय है कि दो तीन लंघन कराकर जल की जगह माउलअसल पिये और जो यह रोग बहुत बली हो सात दिन पर्यंत भोजन न करे।

मिरच घोड़े की लार में पीसकर नेत्र में लगावें, निद्रा के अधिक वेग को दूर करेगी और ठण्ढी वस्तु के खाने से पथ्य करें और सिरका सूँघना नींद की अधिकता दूर करता है और इतरीफल खाना उत्तम है।

सहर अर्थात् निद्रा न आने की औषधियों का वर्णन।

बहुत जागना भेजे की खुश्की का कारण है सादा हो वा मलका।

उपाय—भेजे को तर करे और जो यह रोग मल से हो तो भेजे को साफ करना भी आवश्यक है।

औषधि—बकरी का दूध हाथ की हथेली और पांव में मलना श्रेष्ठ है।

अन्य—खशखाश का तेल तलुओं और तालू पर मलना लाभ करता है। खशखाश के तेल को बादाम के तेल की तरह निकाल लें।

अन्य—अफीख सूँघना और पसलियों पर मलना नींद लाता है।

अन्य—नाजबो के पुष्प का सूँघना और सोये के साग को तकिये के नीचे रखने से अवश्य ही निद्रा आती है।

औषधि—जो निद्रा लावे—खशखाश के बीज के दो टंक, काहू एक टंक शीरा निकाल कर थोड़ी शक्कर मिलाके पियें।

तैल पांच बीजों का जिसका नाम रोगन हुबूबखमसा है—और नींद लाता है और शिरपीड़ा और पैत्तिक सरसाम को लाभ देता है।

काहू के बीज, कद्दू के बीजों की गिरी, तरबूज के बीजों की गिरी, खशखाश, तिल बराबर लेकर बादाम रोगन की तरह तेल निकालकर शिर पर मलें,

काहू का तेल शिरपर मलने से नींद आती है।

तेल निकालने की रीति—काहू के पत्तों का जल दो भाग निकाल कर एक भाग मीठे तेल में मिलाकर खूब औटावे जब तेलमात्र रह जावे तो उतार ले।

लेप जो निद्रा लावे—हरी भंग की पत्तियां बकरी के दूध में मेहँदी की भांति पीसकर तलुओं में लगावे या भंग का तेल तलुओं में मले। भंग के तेल के निकालने की यह रीति है कि भंग के पत्ते बकरी के दुग्ध में पीस कर टिकिया बनाकर घी में जलावे जब काली हो जावे छानकर उस घृत का सेवन करे।

रोगी के हाथ पांव इतने खींचकर बांधे कि खिचावट से पीड़ा करें और

ऊँघा न जावे और एक दीपक उस रोगी के आगे जलावे और लोग इकट्ठे होकर किस्सा कहानी कहना शुरू करें जब देखे कि रोगी थक गया है हाथ पांव खोल दे और सब चुप हो जावें चिराग उठाले तो यह उपाय निद्रा लाने का है।

चक्की की आवाज और जल के बहने का शब्द, पवन और दरख्तों के पत्तों के हिलने की आवाज से भी निद्रा आती है। कद्दू का तेल शिरपर मलने से भेजे की खुश्की दूर हो—कद्दू के तेल के निकालने की रीति सर-साम में वर्णन हो चुकी है।

औषधि—स्त्री के दूध को नाक में टपकाने से भेजे की खुश्की दूर हो और भोजन के पच जाने के उपरान्त कुछ गरम जल से नहाना निद्रा लाता है और जो ज्वर के कारण निद्रा न आवे तो पाशोया करे।

चूर्ण—जो निद्रा के दोष और नजले को दूर करे—और भेजे को बल-दायक है भुनी हुई धनियां, काहू के बीज की मींगी, भुनी हुई खशखाश के बीज, हरएक अढ़ाई अढ़ाई मिस्काल, शक्कर सफेद बारह मिस्काल कूट छान कर चूर्ण बनावे शरबत दो मिस्काल।

औषधि—जो निद्रा लावे—बनफशा, पोस्ता, काहू के बीज, खशखाश, नाजबो औटाकर तरेड़ा दे।

अन्य—नास जो निद्रा लावे—खशखाश के बीज, काहू के बीज, धनियां, सूखे सोये के बीज बराबर लेकर भूने और कपड़े में ढीला ढीला बांध बांध सूँघे।

अन्य—हरे काहू का पानी लेकर छान कर स्त्री के दूध में मिलाकर नाक में टपकावे।

सुरमा—स्त्री की कंघी पर चिराग से काजल पारे और आंख में लगावे और कंघी शिरहाने रखकर सो रहे।

लकवा और फालिज अर्थात् अर्दितरोग के विषय में।

फालिज उस रोग को कहते हैं कि जिससे आधा शरीर लम्बाई में ढीला हो जाता है और लकवा में एक ओर को मुँह टेढ़ा हो जाता है। यह दोनों कफ से होते हैं इन दोनों रोगों का यत्न मिलता हुआ है इसलिये एक ही जगह पर लिखा जाता है।

इस रोग के आदि में उत्तम से उत्तम यह उपाय है कि दो तीन लंघन कराकर जल की जगह माउलअसल पिये और जो यह रोग बहुत बली हो सात दिन पर्यंत भोजन न करे।

माउलअसल के बनाने की रीति ।

शहद एक भाग, जल दो भाग औटावे जब तीसरा हिस्सा शेष रहे साफ करे और जहां शहद न मिले उसके बदले गुड़ही ऊपर की लिखी हुई रीति से औटाकर सेवन करे।

भोजन—कबूतर या चिड़िया का शोरबा और चनों का पथ्य दोष का पकाना रोग से चौथे दिन आरम्भ करके हुबअयारिज का नवें दिन या चौदहवें दिन मुसिल दें और दूसरीबार भी मल निकालना इस रोग में आवश्यक है और हर दोष के मुँजिज की औषधि हर दोष के नीचे वर्णन हो चुकी है।

मुँजिज का काढ़ा—सौंफ छ:माशे, सौंफ की जड़ एक तोला, सोये के बीज, अजवायन, अजमोद तीन तीन माशे, बालछड़ चार माशे, कासनी की जड़ एक तोला, गुलकन्द दो तोले डेढ़ पाव जल में औटावे जब आधपाव रहे तो पिये और प्रतिदिन इसी तरह सेवन करे।

अयारज की गोलियां—फैकराअयारज—फैकरा छ: टंक, पीले हड़ों की छाल पांच टंक, शोधी तुरबुद चार टंक, हुबुलनील दो टंक, इन्द्रायण के फल का परदा दोनों एक एक टंक, हिन्दी नमक पांच टंक कूट छानकर गोलियां बनावे।

अयारजफैकरा की तरकीब पिछले हकीमों की तरकीब पर ।

असारों, बालछड़, शज, मस्तंगी, दारचीनी, अस्तखद्दूस, सौंफ गुलाब के फूल हरएक एक टंक एलुवा दुगुना कूटपीसकर छान ले मुसिलों के दे चुकने के उपरान्त इस रोग के बराबर करने के लिये जिसका वर्णन किया जाता है सेवन करें।

कांपनी और कफके सम्पूर्ण रोगों तथा कमर और पेट के दर्द की गोलियाँ ।

धोई हुई गन्धक पारा, लाल हरताल, बेशमदीर, जो एक प्रकार का विष है, नींबू के जल में आठ पहर खरल करके उड़द के बराबर गोलियां बनावे एक गोली से तीन गोली तक घृत के साथ खाय।

अन्य—जो फालिज और लकवे में मुसिलों के उपरांत प्रकृति के बराबर करने के लिये श्रेष्ठ है—अकरकरा, कालीमिरच, पीपल हरएक तीन तीन माशे, पीपलामूल छ: माशे, सोंठ मीठातेलिया एक एक तोला कूट छानकर गुड़ और घी में मिलाकर मूँग की बराबर गोलियां बनावे और एक या दो गोली खाय।

गोली वैद्यक की रीति पर ।

मालकांगनी, रत्नज्योति, पीपल तीन तीन टंक मुसली काली पन्द्रह टंक सोंठ सोलह टंक, जमालगोटे की गिरि सब्जी दूर करके चार टंक यह सब दवा कूट छानकर जल मिलाकर खरल में पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे और दो गोलियां प्रतिदिन खाय ।

लकवे की और गोलियां ।

सोंठ, बच बराबर कूटकर शहद में मिलाकर अखरोट के बराबर प्रतिदिन दोबार खाया करे और इस औषधि के सेवन के समय में माउलअसल का पीना उचित है ।

बफारह—फालिज और लकवे के लिये लहसन एक टंक, पक्का सोंठ एक टंक, बकायनके पक्के पत्ते, सँभालू के पत्ते पाव पाव सेर, सोंठ जवकुट करके सबको मिलाकर दो सेर जल में औटावे जब आधा रहे रक्षा से लिहाफ के अन्दर उसका बफारा ले ।

अन्य—कुचला फालिज लकवे और भेजे के रोगों और कटिपीड़ा के लिये श्रेष्ठ है और शीतलप्रकृतिवालों के स्वभाव को अच्छा करदेता है—पन्द्रह कुचले पन्द्रह दिन जल में भिगोकर तीन दिन पीछे जल बदलते रहे जब पन्द्रह दिन पीछे नरम होजावे बक्कल दूर करके सुखावें फिर अग्नि में इतना जलावें कि धुवाँ बन्द होजावे कोयला बनाकर ठण्ढा करके उसके बराबर कालीमिरच मिलाकर पीसकर कालीमिरच के लराबर गोलियां बांधे एक गोली प्रतिदिन सुबह खाय ।

अन्य—वैद्यक की रीति का नुस्खा जो फालिज और कफ के रोगों को शान्त करता है—कुचल, भंग के बीज, नकछिकनी आठ आठ टंक तीनों औषधियों को पावभर दूध और आधापाव जल में औटावे चतुर्थांश शेष रहे कुचला और भंग के बीज छिलके उतारकर तज, पीपल, सोंठ, सौंफ हरएक डेढ़ डेढ़ टंक खूटछान हरी ब्रह्मदंडी या सूखी ब्रह्मदंडी के जल में औटाकर उसमें सब औषधियों को खरल करे और चनेकी बराबर गोलियां बनाकर प्रात और संध्या को एक वा दो गोली खाय । इस रोग में जब तक भूख सच्ची न हो भोजन न करे और जबतक प्यास न लगे माउलअसल न पिये और लकवे के रोगी को अंधेरे निर्वातस्थान में बैठाना उचित है और जिसको फालिज ज्वर के साथ हो गरम दवायें न दे किन्तु पहिले ज्वर का यत्न करे फिर

फालिज को दूर करे गरम जल फालिज के रोगी को हानिकारक है ।

फालिज के लिये वैद्यों की आजमाई हुई औषधि ।

कलई, जस्त, बेशसियाह, पारा हरएक दश माशे, कालीमिरच पांच टंक । पहिले जस्त और कलई को गलाकर पारे में डाले कि गोला बँधजावे, फिर छः पहर खरल करे, फिर बेशसियाह को थोड़ा थोड़ा उसमें छिड़ककर छः पहर पीसे, फिर कालीमिरच थोड़ी थोड़ी डालकर उसी प्रकार खरल करे कि अठारह पहर खरल होजावे और प्रभात उठकर एक चावलभर खावे और उड़नेवाले जानवरों का मांस भोजन करे ।

बज की माजून—जो लकवे के लिये आजमाई हुई है—बज बीस टंक, सोंठ, कालाजीरा सात सात टंक, सौ टंक शहद में मिलावे और प्रतिदिन एक टंक खाया करे इस औषधि के सेवन में माउलअसल पीना आवश्यक है।

अन्य—जो फलिज और सम्पूर्ण कफ के रोगों के लिये उत्तम है—बज दश टंक, कालीमिरच, पोदीना, कालाजीरा, कलौंजी तीन तीन टंक, पावभर शहद में मिलावे और दो टंक खावे ।

अन्य—भिलावें की मीगी को शक्कर के साथ विरेचन के उपरान्त खाना फालिज, लकवे और मिरगी को दूर करे ।

मलने की औषधि ।

जिह्वा पर मलने से फालिज को अच्छा करे—राई,अकरकरा पीसकर शहद में मिलाकर जिह्वा पर मले ।

औषधि—जो फालिज के रोगी की प्रकृति को समान करता है एक बीरबहूटी शिरपांव उखाड़कर पान की गिलौरी में प्रतिदिन खाया करे ।

औषधि—फालिज में उत्तमोत्तम औषधि भंग है । जालीनूस कहता है कि जो कालीमिरच महीन पीसकर तेल में मिलाकर मले कोई औषधि इसके बराबर नहीं ।

अन्य—लकवे को श्रेष्ठ है—सन के बीज पांच टंक शहद में मिलाकर जुलाब के उपरान्त पन्द्रह दिन खावे ।

तेल—जिसका मलना फालिज और लकवे के रोगी को श्रेष्ठ है—सफेद कनेर की जड़ की छाल, सफेद घुंघची की दाल काले धतूरे की पत्तियां हरएक दो दाम, सबको कूट छानकर टिकियां बनाकर पाव भर तेल में तले, जब टिकियां जलजावें उसी तेल में कजली करे, जब वह थिराजावे फालिज के रोगी के जोड़ों पर

उस तेल को मले और इस तेलका लगाना वीर्य को बल भी देता है ।

अन्य तेल—जिसका मलना अर्दित रोग को दूर करे—मीठा तेल पाव भर, कूठ, कलौंजी दोनों दो दो दाम इन दोनों को तेल में खूब जलाकर सेवन करे ।

अन्य—जिसका मलना फालिज को अच्छा करे,अरण्ड के पत्ते, धतूरे के पत्ते, आक के पत्ते, सहदेई के पत्ते, सहँजन के पत्ते, असगन्ध के पत्ते, सँभाल् के पत्ते सब बराबर कूटकर पानी निचोड़कर बराबर मीठे तेल में औटावे यहां तक पानी जलकर तेल रह जावे उसके उपरांत सोंठ और कड़वीकूठ पीस कर मिलाकर सेवन करे ।

अन्य—वह तेल-कि पट्ठों को बल दे और फालिज और झोले को गुण करे और पेट की बात को निकाले—कूट दो टंक, बालछड़ ,अशना, तेजपात, अकरकरा, सोंठ, हर एक एक टंक जवकुट कर जल में भिगो दे और प्रातः काल औटावे कि तीसरा हिस्सा रह जावे और मलकर छानकर पाव भर मीठा तेल मिलाकर फिर औटावे कि पानी जल जावे और तेल रह जावे ।

दाउदी का तेल—जो बाबूने के बदले भी काम में आता है और सरदी के रोगों को उत्तम है—गुलदाउदी से यथाबिधि रोगनगुल तैयार करे परन्तु फूल तीन बेर बदले ।

तितली का तेल—उसका मलना बदन के झोले कोऔर पट्ठों को अतिश्रेष्ठ है—तितली के हरे पत्तों को चौगुने मीठे तेल में औटावे, जब केवल तेल शेष रहे सूखी साढ़े चार अदकिये तितली सेर भर जल में पकावे जब आधा रह जावे साफ करके एक अदकिया वही मीठा तेल डालकर यहां तक औटावे कि तेलमात्र ही शेष रह जावे ।

बाबूने का तेल—भेजे की सरदी के रोगों को अति श्रेष्ठ है बाबूने के हरे फूल दो भाग, मेथी एक भाग, तिल का तेल छः भाग शीशे में करके चालीस दिन धूप में रक्खे और बाज लोग बाबूने के फूल और मेथी को दश भाग जल में औटाते हैं यहां तक कि तेलमात्र शेष रह जाता है ।

अन्य—तितली के हरे पत्तों के साथ तिलों का तेल मिलाकर शीशी में करके धूप में रक्खे चालीस दिन के उपरान्त सेवन करे ।

अन्य तेल—जो मलने से फालिज और काँपनी को दूर करे—हुबाछिला हुआ चार दाम, कूट कड़वी दो दाम, जायफल, धतूरे के बीज दो दाम, कूट छानकर पानी में टिकियां बनाकर बाधकर दुगुने मीठे तेल में जलाकर साफ करके मले ।

वायु और कफ के दूर करने का तेल।

अजवायन, अकरकरा, इस्पन्द, खारी नोन बराबर लेकर अधकुचला करे और आठ हिस्से जल में भिगोकर औटावे जब चौथा भाग रहे छानकर तिलों का तेल बराबर औषधियों को मिलाकर फिर औटावे कि तेल शेष रह जावे।

फालिज के लिये बावची का तेल।

बावची आध सेर, सुरख अजवाइन अढ़ाई दाम कूट छानकर पानी में टिकियां बनावे और अढ़ाई सेर धतूरे के वृक्ष का जल और आध सेर मीठा तेल मिलाकर लोहे की कड़ाही में पकावे जब टिकिया जल जावे छानकर मले।

तेल–सम्पूर्ण शीत के भेजे की बीमारियों को दूर करे, माल कांगनी भिलावां, लहसुन बराबर कूटछानकर गोलियां बनाकर तीन दिन सुखाके पातालयन्त्र में तेल खींचे एक घूंघची से चार घूंघची पर्यंत पान में खावे।

तेल–जो झोले के रोग और वायु आदिक शीतके रोगों को श्रेष्ठ है–मैनफल पांचदाम, सोंठ चारमाशे, करंजुवा, बाबूना, कठ कड़वी तीन तीन दाम, कलौंजी, पवाँर के बीज, धतूरे के बीज, अजमोद, मालकाँगनी, इस्पन्द, पीपलामूल, कायफल, खुरासानी अजवाइन, अकरकरा, अजवाइन देशी दो दो दाम, दारुहल्दी, बायबिड़ंग एक एक दाम, तिलों का तेल दो सेर, रेंडी का तेल आधपाव, अलसी का तेल आधपाव यथाविधि तेल तैयार करके मर्दन करे, परन्तु सरदी के दिनों में वायु और ठंढी चीजों से पथ्य करे।

फंकी–जो फालिज और बातज रोगों के लिये श्रेष्ठ है–अजमोद, बायबिड़ंग, काबिली, नमक लाहौरी, देवदारु, शैतरा, चीता, पीपलामूल, सौंफ, पीपल, कालीमिरच हरएक अढ़ाई टंक, पीले हड़ की छाल साढ़े बारह टंक, बिधारा, सोंठ एक एक टंक कूट छानकर एक तोले से डेढ़ तोले पर्यंत खाया करे।

लहसुन की माजून।

आध पाव लहसुन के बड़े बड़े जवे छीलकर डेढ़ पाव गाय के दूध में ओटावे, जब घुलमिल जावें छानकर कवाम करके बाबूने के फूल, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, कालीहड़ की छाल, अकरकरा, कबाबा, खूलंजान अर्थात् कुलींजन एक एक दाम कूट छानकर कवाम में लावे।

अन्य औषधि–जो फालिज और लकवे को श्रेष्ठ है–सोंठ, लाहौरी नमक पीसकर नाक में नास लें।

बाबची की माजून ।

जो शीतके रोगोंको दूर करे–बाबची, सोंठ, तेजपात, बालछड़, नागरमोथा, ालीमिरच, अकरकरा, कलौंजी, कठ, शहद, भिलावाँ यह सब दो दो भाग, ग, राई, पीपल एक एक भाग कूट छानकर बादाम के तेल में पकाकर तिगुने हद में मिलाकर रक्खे, छः महीने के उपरान्त सेवन करे।

नाक में टपकाने की औषधि ।

जो लकवे और मिरगी को श्रेस्ठ है और भेजे को तरी से साफ करती है, ोड़ी कलौंजी और इस्पंद लेकर चुकन्दर की जड़ और इन्द्रायन की जड़ को ल में पीस छानकर दो तीन बूँद नाक में टपकावे ।

शरबत ।

शरबत–जो लकवे और फालिज के रोगी के भेजे के साफ करने के लिये ाम आता है ।

सोंठ, बालछड़, कुलींजन, एक एक मिस्काल, कालीमिरच, पीपल आधा ाधा टंक यह सब औषधि कुचल के थैली में बांधकर तीन सेर शहद और ोन सेर जल में औटावे और बार बार थैली को मलता रहे कि कवाम हो ावे और दो तोले प्रभात उठाकर पिये ।

चटनी ।

चटनी–जो फालिज और कफ के रोगों को उत्तम है–बच, अकरकरा, ायफल, कुलींजन, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, नरकचूर, पीपलामूल बराबर कर बराबर शहद में मिलावे और वैद्य की मति के अनुसार खाय ।

मालखोलिया अर्थात् विक्षिप्त की औषधि ।

जो यह रोग अधिक हो तो उसको जनून कहते हैं और जो क्रोध और वन्ता आदिक हो तो मानिया बोलते हैं और जो हँसी खेल और दुःख देना ाधिक हो तो उसको दाअलकलब कहना उचित है जो अशीलता और मनुष्यों से रुचि हो उसको फितरब कहते हैं। मालखोलिया के यत्न में शीघ्रता अवश्य है-- हिले पहिल फस्द करे क्योंकि पहिले यह यत्न सुगम है, और स्थिर होने के ाछे बड़ी कठिनता होती है। हर दशा में रोगी को प्रसन्न रखना, अच्छी जगह ठाना, घृतसंयुक्त भोजन खिलाना और बहुत सुलाना तथा कई बेर मुसिलों द्वारा मल निकालना और मन को पुष्ट रखना उत्तम से उत्तम यत्न है। ालखोलिया के रोगी को जो अच्छा लगे वही करने देना उचित है परन्तु कान्त और भय हानिकारक है। जो ऐसा रोगी काम की अधिक चिन्ता

करे तो आज्ञा दे दे परन्तु अधिक नहीं और फस्द के उपरान्त माउलज पिलाना उत्तम है। माउलजबन के सेवन के दिनों में बल देखकर मु देता रहै।

अमलबेद की सिकञ्जबीन।

जो दग्धित दोष को श्रेष्ठ है—अमलबेद सात मिस्काल, शाहतरा, गाव हर एक चार मिस्काल, मिश्री तीनभाग, बहुत खट्टा सिरका, मिश्री का ती हिस्सा सबकी चाशनी करे बकरी का दूध जिसका माउलजबन बनावे सिकञ्जबीन से फाड़े मालखोलिया में बहुधा शिर पर मारना लाभ करत कि उसको बुद्धि आवे और इन्द्रियों का बल पीड़ा के कारण चैतन्य हो जो रोगी फिरजावे फिर मारे और अफीम खिलाना उसकी औषधि है और रत्ती से प्रारम्भ करके आधे टंक पर्यन्त पहुँचावे परन्तु यह उसी को ल करती है जो युवा हो। दागकर दाग को छोड़ देना उत्तममोत्तम यत्न तिब्बयूसफी में सर्वदा मद्यपीना और नाच दिखाना इसके यत्न में लिखा है

अन्य—सिकञ्जबीन अमलबेद माउलजबन में इस दग्धित दोष के रोग लिये सेवन करते हैं—कालीहड़, नमक हिंदी एक एक मिस्काल, अमलबेद प मिस्काल, सिरके में भिगोकर इस सिरके से सादी सिकंजबीन बनाकर अ अदकिये दो रतल भर दूध में मिलाकर पकाकर ठण्ढा करके टपकावे। प अदकिये से नौ अदकिये पर्यंत जितना चाहे खावे।

नाक में टपकाने की औषधि।

जो विक्षिप्तता को लाभदायक है—मनुस्य के केश जलाकर गुलरोगन कजली करके नाक में टपकावे।

कहानी—एक मनुष्य को अकेले बैठने का ब्यसन और उन्माद शुरू हुआ गरीबी के सबब उस बेचारे को रोगशांति का मकदूर न था। मैंने प हफ्तन्दाम की फ़स्द खोली फिर उसको बकरी का दूध खाकसीर केतस पिलाया बहुत गुण किया।

मालखोलिया का एक प्रकार मिराक के साथ होता है और मिरा एककोष्ठ के ऊँचे का परदा है उसके लक्षण—गुदा के पवनकी अधिकता, अफा पीड़ा, उदरदाह और खट्टी डकार जली हुई और मन्दाग्नि और खफक अर्थात् उन्माद है, उसका यत्न—हर चिल्ले में वासलीक की फस्द ले अ ताजखरूस के पत्तों का रस पिलाना इस रोग में अतिगुणदायक है।

मालखोलिया का एकप्रकार और है उसको ईश्क कहते हैं।

यत्न–रोगी को किसी और कामों में लगावे और उसके प्रियतम की भेंट धर्मशास्त्रानुसार ऊत्तम यत्न है। उन मनुस्यों को रोगीके आगे नियत करे कि उसके प्यारे की बुराई करें और जो प्यारा न हों उससे भोग करना भी प्रीतिको कम करता है।

तिबफरीदी में लिखा है कि लोहे के बुझे हुये जल का पीना प्रीति को कम करता है और उसकी यह रीति है कि लोहे को गरम करके जब पानी में बुझाने लगे यह कहे कि जिस तरह यह गरम लोहा पानी में ठण्ढा होता उसी प्रकार अमुक के पुत्र अमुक की प्रीति अमुक की सन्तान अमुक से ठण्ढी करदे। तीन बेर यह कहकर लोहा ठण्ढा करे। फिर उस जलसे प्रीति करनेवाले का मुख धोये और उसके हृदयपर छिड़के। तीन दिनके सेवन में प्रीति भूल जावेगी।

तिबफरीदी और अन्य पुस्तकों में लिखा है कि उस संगमर्मर का टुकड़ा जिसमें किसीके मरनेकी तारीख लिखी हो लेकर थोड़ा घिसकर प्यारे और प्यार करनेवाले के वियोग के संकल्प से दोनों को कहे बिना खिलावे, विशेष करके प्रीति को दूरकरता है।

एक पुस्तकमें मैंने देखा कि जो बिच्छूका डंक, कुत्तेका नाखून और कछुये का नाखून ऊँट के चमड़े में यन्त्र बनाकर विक्षिप्त रोगवाले के गले में बाँधे तो यह बीमारी दूर हो और यह यत्न मिरगी को भी उत्तम है।

औषधि नाक में टपकाने की।

जो फिरंगी डाक्टर ने विक्षिप्तता के दूर करने के लिये आजमाई हुई बताई है।

उल्लू का भेजा अढ़ाई रत्ती टिघलाकर कौड़ीभर कपूर मिलाकर पीसे कि खूब मिल जावे, फिर अढ़ाई रत्ती कौवे का रुधिर उसमें मिलाकर दो यव के अनुमान लेकर कई बूँदें तुलसी के रस में नाक में टपकावे विक्षिप्तता दूर हो जावेगी।

अन्य—कद्दू का तेल जिसका सहर और सरसाम मेंवर्णन किया जा चुका है विक्षिप्तता को उत्तम है।

अन्य–तोफ़तुलमोमनीन लिखा है कि नये कुल्हड़ में स्त्री के केश जलाकर उस कुल्हड़ में प्यार करनेवाले पुरुष को जल पिलाने से प्रीति कम होती है और उससे अरुचि हो जाती है।

शरीर के फड़कने का यत्न ।

फड़कने का कारण पवन है, फड़कने की अधिकता किसी रोग का कारण होती है ।

यत्न—नमक और भूसी से सेकै और जो तेल फ़ालिज में वर्णन किये गये हैं उनको मर्दन करे । गरम दवा का लेप भी गुणकारी है । जो इन चीजों से दूर न हो तो कफ़ को मुसिल से निकाले ।

अंगों के कांपने का यत्न ।

जो मल कफ़ का हो तो उसके लक्षण मालूम करके उसी अंग के मल को साफ़ करे, जो कांपनी मैथुन की अधिकत्ता से हो तो मैथुन छोड़ दे, जो मद्य की अधिकता से हो तो मदिरा छोड़ दे, और ताजा दूध पीना और आधा भूना मुरगी का अण्डा खाना कांपनी को गुणदायक है ।

नेत्ररोग का यत्न ।

शरीर का उत्तमोत्तम अंग नेत्र है जो इसमें कोई दोष आ जावे तो उसके यत्न में आलस्य न करना चाहिये, और आंख को झांप और धुयें औरगंदी पवन से बचाना चाहिये । रोने की अधिकता और मैथुन और नशे और खीचनेवाली अधिक चीजें नेत्रों को हानिकारक हैं, सर्वदा सूक्ष्मावस्तुओं को देखना निषेध है परन्तु श्रम की रीति पर उचित है । हरियाली पर दृष्टि करना नेत्र के तेज को संचित करना है । नेत्ररोग पर जबतक तीनदिन न बीतें कोई यत्न न करना चाहिये । नेत्र की पीड़ा और शोथ को जो मांस के प्रदे की लाली के साथ हो रमद कहते हैं ।

यत्न—सरेरू की फ़स्द लें जो नाना प्रकार की रमद को गुणदायक है, जोंक लगाना भी लाभ देता है, मांस और मिठाई और खटाई से पथ्य करना उचित है । रमद के प्रारम्भ में ठण्ढा जल नेत्र पर लगाना निषेध है, और पीला कपड़ा हल्दी में रँगकर या नीला कपड़ा आंख के सामने लटकाना उचित है अब कई दवायें रमद की जो सुगम हैं वर्णन करता हूँ ।

गोली–जो रमद के लिये श्रेष्ठ है, लिखा है कि रमद की पीड़ा के लिये कोई इससे उत्तम यत्न नहीं है ।

भुनी हुई फिटकरी पक्के दो दाम, हल्दी सात माशे जो कच्ची हो तो उत्तम है, अफीम पांच माशे पावभर पक्के कागजी नींबू के रस में लोहे की कड़ाही में नरम आग में पकाकर कजली करे जब गोलियां बनाने के

ोग्य हो गोलियां बना रक्खें, जल में रगड़कर पतला पतला आंख पर मले और नेत्र के किनारों की तरफ से थोढ़ी आंख में भी लगावे।

औषधि–जो गुणकारी है और कान के जखमों को टपकाने की दवा की रीति पर सेवन से गुणकारी है और दूध में मिलाकर उसकी पिचकारी लेना मूत्र के निकलने की जगह को उत्तम है–धोया हुआ सफेदा छः टंक, निशास्ता, कतीरा, बबूल का गोंद हरएक डेढ़ टंक, कपूर दो दाम, कुंद्दर और अफीम आधी आधी दिरम ८ शाफा बनावे।

औषधि–नेत्र की पीड़ा को एक दम में ठहरावे–लोध, गेहूँ की मैंदा, घी, हरएक चार टंक सबको खमीर करे और चार गोलियां बनावे और ठीकड़ा आग पर रखकर उसमें एक गोली रख दे जब कुछ गरम हो नरम नरम नेत्र पर बांधे। ठंढा होने के उपरान्त दूसरी गोली बाँधे। इसी प्रकार चारों गोलियां बांधने से पीड़ा दूर होती है।

पोटली–जो नेत्र की पीड़ा के लिये अद्वितीय है–घिकुवार की गूदी एक माशा, अफीम एक रत्ती खूब पीसकर घिकुवार की गूदी में पोटली बांधकर पानी में भिगोकर आंख पर फेरै एक दो बूँद नेत्र के बीच में भी टपकावे।

अन्य–जो नेत्रपीड़ा के लिये आजमाया हुआ है–लोध एक माशा, भूनी फिटकरी एक माशा, अफीम आधा माशा, इमली की पत्तियां चार माशे सबको पीसकर पोटली बनाके प्रतिसमय आंख पर फेरे।

अन्य–आंखों की पीड़ा और सबल वायु को उत्तम है–इमली की पत्तियां, सिरस की पत्तियां, हल्दी, फिटकरी आधा आधा टंक महीन कूटकर पोटली बनाकर पानी में भिगोकर प्रतिसमय आंख पर फेरै और कुछ उसका जल आंख पर टपकावे।

तथा–रमद के लिये–कोकनार एक, अफीम एक रत्ती, दो लौंग, भूनी हुई बेलगिरि चार माशे, हल्दी चने के बराबर, इमली की पत्तियां थोड़ी सी पोटली बांधकर पानी में भिगोकर आंख पर फेरै और अन्दर भी टपकावे।

तथा–कपूर तीन भाग, पठानी लोध एक भाग आपस में पीसकर पोटली बांधे और दो घड़ी पानी में भिगोकर आंख पर फेरै और भीतर टपकावे।

तथा–लोध, फिटकरी, मुरदारसंग, हल्दी, जीरा सफेद, हर एक टंक टंक, अफीम चने के बराबर, कालीमिरचें चार, तूतिया हरे उड़द के बराबर कूट छानकर पोटली बांधकर पानी में भिगोकर आंख पर फेरै।

अन्य–रमद को दूर करे–पीली हड़ की छाल, काबिली हड़ की छाल, आंवला रसौत, गेरू, इमली की पत्तियां, अफीम, भुनी फिटकरी, सफेद जीरा यह सब थोड़ी थोड़ी कपड़े में पोटली बांधकर गुलाब हो तो अच्छा नहीं तो जल से भिगोकर आंख पर फेरै।

औषधि–जो नेत्रों की पीड़ा को लाभ दे–कालाजीरा, सफेद लोध महीन पीसे और भुनी फिटकरी भी पीसकर घिकुवार के गूदे में मिलाकर पोटली बांधें और पानी से भिगोकर फेरै।

अन्य–जो सर्व प्रकार के नेत्ररोगों को गुण करे–अफीम एक माशा, भुनी फिटकरी दो माशे, इमली की पत्तियां दश माशे सब महीन पीसकर पोटली बांधकर आंख पर फेरै और पानी उसका आंख में टपकावे।

आंख की ललाई दूर करने की औषधियां।

फिटकरी एक माशा, अलसी दो माशे दोनों साबुत पोटली बांधकर पानी से भिगोकर आंख पर फेरै।

अन्य–पैत्तिक नेत्रपीड़ा को गूणदायक है—ईसबगोल का लुआब आंख में लगावे।

अन्य—जिस दिन नेत्रपीड़ा हो उसी दिन धतूरे की पत्तियां कुछ गरम करके कान में टपकावे, जो बाई आंख में पीड़ा हो तो दाहिनी में जो दाहिनी में हो तो बाईं में डाले।

अन्य–जो बच्चों के रमद को गुणदायक है–नीम की कोपल पीसकर कुछ गरम करके जिस तरफ पीड़ा न हो उस ओर के कान में टपकावे और जो दोनों नेत्रों में पीड़ा हो तो दोनों कानों में टपकावे।

अन्य—नेत्रपीड़ा को दूर करे–केवल घिकुवार की मींगी पीसकर सोने के समय आंख में टपकावे।

आंखों की पैत्तिक पीड़ा को दूर करने की औषधि।

गोंदी की पत्ती मलकर उसका पानी निकालकर आंख में टपकावे।

अन्य—हल्दी जल में पीसकर दूसरी ओर के कान में टपकावे।

औषधि—बिहीदाने का लुआब उस स्त्री के दुग्ध में जिसने बेटी जनी हो और धनियां के पत्तों का जल मिलाकर छानकर आंख में टपकावे तो आंख की ललाई को दूर करे।

औषधि—नींबू का रस लोहे के बर्तन में लोहे के दस्ते से हल करे जब
ला होजावे आंख के चौगिर्द अनुलेपन करे।

अन्य—लोध, आंवला, गाय के घी में भूनकर टण्ढे जल में पीसकर मले
न्तु आंख के बीच जाने न पावे।

अन्य—पीली हड़ की छाल, गेरू, रसौत, जंगी हड़ घिसकर आंख के
र्द लेप करे।

अन्य—आंख की ललाई को गुण करे—सूखी इमली बीज निकालकर पानी
भिगोकर मलकर छानकर अफीम तीन रत्ती, फिटकरी पांच रत्ती उसी
मली के जल के साथ लोहे के बासन में पकावे कि पानी गाढ़ा होजावे
सको सीप में रखकर लेप करे जो इमली न मिले उसके पत्तों का जल
कर पकाकर लेप करे।

अन्य—सोंठ, समगअरबी एक एक टंक, गेरू एक मिस्काल, अफीम दो टंक
टछानकर पानी में कजली करके शाफा बनाकर लेप करता रहे।

अन्य—अमचूर लोहे के तवे पर लोहे के दस्ते से थोड़ा थोड़ा पानी के साथ
ब पीसकर लेप करे और आंख में टपकावे।

नेत्रपीड़ा को तत्काल दूर करने की औषधि।

बरगद का दुग्ध आंख में लगावे।

अन्य—नीम के पत्ते और सोंठ बराबर अलग अलग पीस छानकर दोनों
ो बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनावे समय पर जल से
ीसकर लगावें।

औषधि—जो आंख की ललाई और गुबार को जो बगल की दुर्गन्धि से
ो गुणदायक है—अढ़ाई कालीमिरचें, थोड़ी चूल्हे की मिट्टी लाल जली हुई
ीनों को बांस के चोंगे या चीनी के प्याले में खूब कजली करे जब काला
ोजावे आंख में लगावे।

औषधि—जो नेत्र की सुरखी को आराम करे—बांसे के पत्ते पीसकर
टिकिया करके तीन दिन आंख पर बांधे।

अन्य—कपास की पत्ती दही में जोश देकर पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—अनार की पत्ती पीसकर टिकिया करके सोते वक्त आंख पर बांधे

अन्य—जो लड़कों की रमद को गुण करती है—लड़के के मूत्र में रुई भिगोकर
ांख पर बांधे।

अन्य—जब रमद शुरू हो जो हीड़ा दाहिने नेत्र में हो तो बायें अँगूठे नाखून में और जो पीड़ा बायें नेत्र में हो तों दाहिने पांव के अँगूठे के नख मदारका दुग्ध भर दे।

औषधि—जो रमद को गुण करे—गोभी को पीसकर टिकिया बना आंख पर बांधे।

अन्य—आंख, हृदय और पेट की जलन को गुण करे—मकोय, आमल मुलहठी, नागरमोथा, खस, नीलोफर के बीज एक एक टंक, मिश्री नौ ट कूट छानकर दो दाम के अनुमान खावे।

अन्य—कफ के रमद को गुणदायक—सहँजने के पत्तों का थोड़ा सा र शहद में मिलाकर आंख पर लगावे और उस पर वस्त्र बांधकर सो र प्रातसमय खोले, तीन दिन में आराम होगा।

अन्य—जो लड़कों आदि के रमद को गुण करे–साफ किया हुआ चाक दो मिस्काल, अंजरूत, मिश्री एक एक मिस्काल महीन कूट छानकर छिड़ और बाजे अंजरूत के बदले ममीरा डालते हैं।

अन्य–जली हुई मेथी का लुआब थोड़े कतीरे के साथ आंख में टपका बड़ी पीड़ा को दूर करता है।

अन्य—आम की कैरी पीसकर आंख पर बांधे।

अन्य—कटाई के पत्ते पीसकर आंख पर बांधें और कटाई के पत्तों व पानी भी आंख में टपकाना अतिश्रेष्ठ है।

अन्य—सुरखी दूर करे—छीली हुई मुलहठी कूटके थोड़े जल में पीसक रुई उसमें भिगोकर आंख पर रक्खे।

अन्य—सुरखी को दूर करे—लोध छः टंक, पीली हड़ की छाल दो टं अनार के पत्तों के जल में पीसकर रुई उसमें भिगोकर तीन दिन बराब रात को आंख पर रक्खे।

अन्य—वह औषधि पतली जिससे किसी अंग को धोवे जो नेत्रोंके बुखा को दूर करे और खुजली को गुण करे और सुरखी को दूर करे—पीलीह की छाल बहेड़े की छाल, आमला जवकुट कर रात्रि को जल में भिग रक्खे प्रातःकाल को उस जल से नेत्रों को एक दिन धोवे।

अन्य—कि आराम होने की–दश मूंडी सेवन करने से एक वर्ष आंख न दूखे, चालीस मुण्डी निगल जावे तो दो वर्ष पर्यन्त आराम से रहे। यह

आजमाया हुआ है। यूनानी कहते हैं कि जो बुधवार को सूर्योकय के समय एक अनार की कली जो फूली न हो वृक्ष से मुख से तोड़कर निगले एक वर्ष पर्यन्त रमद से रक्षित रहे, जो दो निगले तो दो वर्ष पर्यन्त बचा रहे।

रतौंधी का यत्न।

कालीमिरच, कमीला, पीपल बराबर बारीक पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—कालीहड़, सोंठ, कालीमिरच कूट छानकर गोली बनाकर पानी में घिसकर लगावे।

औषधि—आजमाई हुई बौअली सैना की बकरी की कलेजी का कवाब बनावे उससे जो जल टपके आंख में लगावे। कई साबुत पीपल कलेजी में रखकर आगपर इतनी देर रखते हैं कि जल जावे, फिर पीपल को निकालकर शहद मिलाकर आंख में लगाते हैं।

अन्य—प्याज का जल आंख में लगावे या सिरस के पत्तों का पानी आंख में लगावे।

अन्य—समन्दरफल की गूदी बकरी के मूत्र में घिसकर आंख में लगावे।

अन्य—लाहौरी नमक की सलाई आंख में फेरे।

अन्य— दही के तोड़ में थूक मिलाकर आंख में लगावे।

अन्य—अदरक पीसकर उसका जल नेत्र में टपकावे। जो अदरक न हो तो सोंठ पानी में घिसकर दो तीन बूंद आंख में टपकावे।

अन्य—कालीमिरच थूक में घिसकर आंख में लगावे।

अन्य—रोहू मछली का पित्ता आंख में लगावे।

अन्य—कसौंधी के फूल का पानी आंख में लगावे।

अन्य—सहँजने की कोमल डाली का जल दो मिस्काल शहद में मिलाकर आंख में टपकावे।

अन्य—सिरस के बीज चार दाम खूब पीसकर आटे में मिलाकर रोटी पकाकर तीन दिन खावे।

अन्य—हड़, लालमिरच शहद में मिलाकर आंख में लगावे।

अन्य—कालीमिरच रोहू के पित्ते में भिगोकर सुखावे, जब पत्ता मिल जावे मिरच घिसकर आंख में लगावे।

अन्य—गधे का रुधिर ताजा आंख में लगावे दो तीन दिन में दूर हो।

अन्य—मनुष्य के कान का मैल पीली हड़ की छाल के साथ बराबर

पीसकर गोलियां बनावे और जल में कजली करके सन्ध्या के अनुमान आंख में लगावे।

अन्य-सरकंडे को गिरह से तोड़कर उसी के ऊपर की छाल जलावे, जब चार अंगुल जलने से शेष रहे इसके दो टुकड़े करे लालतरी कि उसके बीच जमा होगी आँख में लगावे। यद्यपि वह तेजी के कारण पीड़ा और दाह करेगी परन्तु मल को आंसुवों के साथ बहाकर रोग को खो देगी।

अन्य-हुक्के की नैजिस पर चिलम रखते हैं उसकी कीट आंख में लगावे।

दिनौंधी का यत्न।

भेजे को तरकर और बकरे का कल्ला और पायँ और उड़द की दाल खाया करे कि रुधिर गाढ़ा होजावे। ठण्ढे जल में गोते लगाना और उसमें आंखें खुली रहना गुण करता है।

सलाक या पलकों के मोटा होजाने का वर्णन।

सलाक पलकों के मोटा हो जाने को कहते हैं कि उसके साथ खुशकी और खुजली हो और पलक के बाल गिर जावें। उसको लौलिक में बाम्हनी बोलते हैं। उसका उत्तमोत्तम उपाय यह है कि सरेरू की फस्द ले और शिर के पीछे पछने लगावे फिर औषधि का सेवन करे।

सलाक का गुणकारक यत्न।

जो पलकों को घास की भांति उगाता है रूई की बत्ती मदार के दुग्ध में भिगोकर सुखावे और दिये में मीठा तेल भरकर वह बत्ती जलाकर काजल पार के आंख में लगावे। कई पुस्तकों में मीठे तेल के बदले घृत लिखा है।

अन्य-सलाक को गुण करे-धतूरे और भँगरे के पत्तों का पानी लेकर उसमें रुई भिगोकर छाया में सुखावे और मीठे तेल में वह बत्ती जलाकर काजल पारे वह काजल बासी पानी से आंख में लगावे।

अन्य-पुराने डोल का चमड़ा कोयलों की आग पर जलाकर कोयला करके पीसकर धुनी हुई रुई में रखकर बत्ती बनावे और सरसों के तेल में जलावे और उसका काजल लेकर आंख में लगावे।

अन्य-मदार की जड़ जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर आंख के गिर्द अनुलेपन करे, आंख की खुजली और सुरखी और पलकों के फूलने को दूर करती है। बाजी पुस्तकों में लिखा है कि जो नीम के पत्ते पीसकर उसका पानी लेकर आंख में लगावे तो खुजली और सलाक को दूर करे।

अन्य–अधिक बालों को जो पलकों में निकल आते हैं अर्थात् प्रबाल को श्रेष्ठ है और सलाक और आंसू और आंख की खुजली और सुरखी को दूर करे। दो दाम जस्त लोहे के बर्तन में कोयलों की आग पर टिघलाकर बथुये के साग का पानी थोड़ा थोड़ा उस पर टपकावे कि पीला या सफेद कुश्ता हो जावे उसे महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—पलकों के गिर जाने और सलाक को श्रेष्ठ है–छछूँदर का गूह आधा जलाकर और आधा बेजला दोनों को पीसकर शहद में मिलाकर लेप करे।

अन्य–जो सलाक को दूर करे और खुजली और पलक की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सफेद बिसखोपड़े की जड़ छाया में सुखाकर पानी में घिसकर आंख में लगावे।

अन्य–मक्खी का शिर तोड़ करके सुखाकर पानी में पीसकर मले।

अन्य–पलकों के फूलने को दूर करे–सीप जलाकर पीसकर नेत्रों में लगावे।

अन्य—दिनौंधी को उत्तम है–कटाई का फल पानी में उबाल कर इसका बफारा ले।

अन्य–कबूतर की बीट शहद में मिलाकर पलक पर लगावे।

अन्य—सर्प की केंचुली जलाकर तिल के तेल में मिलाकर पलक पर लेप करे।

अन्य–उस सलाक को दूर करे कि पलक गिर जावे ओर किनारे लाल हो–बबूल की पत्तियां एक सेर, पांच सेर जल में औटावे, जब चतुर्थांश रह जावे छानकर प्रतिदिन दो बेर पलक पर लेप करते रहें, थोड़े दिनों में ईश्वर की कृपा से आराम हो जावेगा।

अन्य—गधे की लीद सुखाकर पातालयन्त्र की रीति पर तेल खींचे और पलक पर मले।

अन्य—कद्दू को जलाकर उसकी राख सुरमे की भांति लगावे।

अन्य–जो सलाक को श्रेष्ठ है–पुराना कपड़ा, गाढ़ा या रुई तीन बेर हल्दी में रँगकर सुखाके फिर उसी प्रकार तीन बेर निबौली की गिरी के सीरे में भिगोकर सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकर उसका काजल लेकर लगावे।

अन्य—संगबुसरी, तूतिया, कपूर, मिश्री बराबर कूट छान के पानी में खरल करके गोलियां बनावे, आवश्यकता पर जल में घिसकर आंख में लगावे।

अन्य—कुन्दर को सुरमें की भांति करके नेत्र में लगाना आंख की ज्तोति को साफ करता है और आंख के घाव और आंख के जमे हुये रुधिर और आंख के आंसू बहने और सलाक और आंख की सफेदी और खुजली को गुण करता है और धुंध को दूर करता है विशेषकर शहद में मिलाकर और कुन्दर का काजल भी यही गुण करता है।

काजल पारने की रीति।

कुन्दर को दिये में जलाकर उस पर एक बर्तन औंधावे कि काजल उसमें इकट्ठा हो।

अन्य—पलकों के झड़ने को गुण करे—खुरमा के बीज तीन टंक, बालछड़ दो टंक पानी में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—पलकों के बाल जमाने के लिये कि कोढ़ से गिर गये हों—जंगी हड़, माजूफल को जलाकर सुरमा मिलाकर लेप करे।

मोतियाबिंद का यत्न।

उसका यह लक्षण हैं कि प्रारम्भ में रोगी को मक्खी और मच्छर की भांति नेत्र के सामने मालूम हों और दिन दिन अधिक होते जावें और उतरने के उपरान्त पुतली बदल जावे और ज्योति जात्ती रहे।

पानी उतरने के बंद करने का यत्न।

पहले कनपटियों पर गुल देना है कि सुरमा बनानेवाले जानते हैं। जोंकें लगाना कनपटियों पर प्रारम्भ में भी गुण करता है। जब पानी सब उतर आवे, मल के पकाने के उपरांत भेजे को साफ करे।

बच की माजून।

मोतियाबिन्द के प्रारम्भ में सेवन करना उचित है—बच, हींग, सोंठ, सौंफ बराबर लेकर शहद में मिलावे और एक मिस्काल के अनुमान खावे।

अन्य—मोतियाबिन्द को दूर करे—निर्मली शहद में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द को दूर करे—हँकूत के बीज दो भाग, अफीम एक भाग कूट छान के शाफा बनावे।

अन्य—नौसादर को सुरमे की भांति नेत्र में लगाना मोतियाबिन्द को दूर करता है।

अन्य—सफेद घुंघची का जल कागजी नींबू के रस में मिलाकर प्रातःकाल नेत्र में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द के लिये आश्चर्यदायक गुण रखता है और अधिक होने नहीं देता—इमली के पत्ते दश तोले फूल के कटोरे में नीम की लकड़ी के दस्ते से कि उसमें पैसा जमाया हुआ हो इतना कजली करे कि गाढ़ा हो जावे, फिर उस स्त्री के दुग्ध में कि पुत्रजनी हो चालीस पहर खरल करके सेवन करे।

मोतियाबिन्दनाशक सौंफ का सुरमा।

सौंफ का हरा वृक्ष लेकर शीशे या चीनी के बासन में रक्खे, जब सूख जावे पीसकर सुरमा लगावे।

सेवती का सुरमा।

सेवती के फूल कुन्दर बराबर पीसकर रुई में लपेटकर बत्ती बनाकर मीठे तेल में जलाकर उसका काजल लगावे।

औषधि—भीमसेनीकपूर पुत्रवती स्त्री के दुग्ध में पीसकर लगावे।

अन्य—कौवे का पित्ता आधा वजन शहद में मिलाकर खूब कजली करके आंख में लगावे रोग शान्ति को प्राप्त होगा।

अन्य—निर्मली, हींग, सफेद फिटकरी, सङ्गबुसरी, तूतिया एक-एक दाम बारीक पीसकर दही में खरल करे यहां तक कि आठ सेर दही खरल में भलीभांति कजली करे। इसके उपरान्त गोलियां बनाकर रक्खे और आवश्यकता पर स्त्री के दुग्ध में घिसकर लगावे।

अन्य—प्रारम्भ में सेवन करने से मोतियाबिन्द दूर होता है—हड़ की गुठली की गूदी स्वच्छ जल में तीस पहर खरल करके गोलियां बनाकर नेत्र में लगावे।

अन्य—मोतियाबिन्द के लिये आजमाया हुआ—जो इस रोग के प्रारम्भ में सेवन करे अधिक होने न दे—दो कागजी नींबू का रस लेकर चार तोले गाय के मक्खन में खूब मलकर मक्खन में थोड़ा जल डालकर दो रातदिन रख दे, फिर मक्खन को जल से धोकर उसी प्रकार दो नींबू के रस में कजली करके जल डालकर दो रातदिन रक्खे और धोवे, इसी प्रकार पच्चीस बेर करके चीनी व शीशा के बासन में रक्खे और दो दाने खशखाश के बराबर लगाया करे।

अन्य—नीम के बीज का सुरमा लगाना पानी उतरने को गुण करता है।

अन्य—मनुष्य के कान का मैल, हींग बराबर शहद में पीसकर आंख में लगाया करे। दूध मछली खाना मोतियाबिन्द के रोगी को हानि करता है।

आंख और पलकों की खुजली का यत्न।

पहिले सरेरू की फस्द ले फिर खुजली की औषधियों का सेवन करे।

माजू, जंगी हड़ पीसकर आंख पर लेप करना आंख और पलकों की खुजली को गुण करता है।

मनुष्य के शिर के बालों का सुरमा।

मनुष्य के शिर के केश जलाकर महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—अन्डे का छिलका जलाकर महीन पीसकर लगावे। नीम का सुरमा बहुधा नेत्ररोगों को गुणदायक है—नीम के पत्तों को आबखोरे में रखकर कपरौटी करके इतनी देर आग में रक्खे कि भीतर जलकर राख हो जावे उस राख को नींबू के रस में खरल करके लगावे।

अन्य—आंख की खुजली और दाह को गुण करे—सीसे का मैल आंख में लगावे। सीसे का मैल उस स्याही को कहते हैं कि सीसे के टुकड़े को जूती के तले या बांस के चोंगले पर रगड़ने से प्रकट हो उस स्याही को उँगली में लेकर आंख में लगावे।

नेत्र की ज्योति का यत्न।

यह रोग कई प्रकार से होता है बहुधा बुढ़ापे में नेत्र को भेजे की कमजोरी और अग्नि के मन्द होने से नेत्र कीं ज्योति कम हो जाती है। यह असाध्य है परन्तु उपाय से हाथ न उठाना चाहिए कि अधिक न हो जावे।

यत्न—भेजे का मल निकाले और बल दे। शलगम कच्चे और पकाकर खाना नेत्र की ज्योति को गुण देता है। शिर में कंघी करना बूढ़ों की ज्योति को उत्तम है, चाहिए कि प्रतिदिन कई बेर कंघी दे कि बुखार को आंख से शिर की ओर सुखा दे। शेखुलरईस ने कहा है कि साफ पानी में तैरना और उसमें आंख खोलना भी लाभ देता है। थोड़ा वमन आंख की ज्योति को गुण देता है। नीचे के शरीर का श्रम और उसका दबाना और मलना ज्योति को श्रेष्ठ है। ज्योति की हानिकारक यह बातें हैं— बहुत रोना और गरदन के पीछे पछने लगाना और बहुत भूखा रहना

और बहुत भोग करना और सोया, मसूर और जो कुछ बद्धकोष्ठकारक बस्तु हों बिशेष करके ज्योति को हानिकारक हैं।

मुंडी के शरबत्त का नुस्खा।

जो ज्योति की हीनता और दिमाग की तरी को गुणदायक है और बुखारों को दिमाग से दूर करता है—मुंडी के फूल पाव भर, शक्कर सफेद तीन पाव, मुंडी के फूलों को डेढ़ सेर जल में रात्रि को भिगोकर प्रातःकाल जोश दे, जब तृतीययांश रहे छानकर शक्कर मिलाकर शरबत का कवाम करे और चार तोले खावे। मुंडी का अरक भी नेत्रों को बल देता है।

सौंफ का चूर्ण।

नेत्रों की ज्योति को बलदायक आजमाया हुआ है—तिब दाराशिकोही से यह औषधि प्राप्त की गई—रात्रि को दो टंक सौंफ कूटछानके दो टंक सफेद शक्कर के साथ मिला खाकर सो रहे इसी प्रकार से सर्वदा सेवन करे। सौंफ का अतर सौंफ के अरक से निकाल कर आंख में लगावे बहुत गुण करता है।

गोली—चमेली के फूल डंडी तोड़कर बराबर मिश्री मिलाकर खरल करके आख म लगावे।

अन्य—ज्योति को बल दे—सङ्गबुसरी आधा तोला टुकड़े टुकड़े करके दो तीन कागजी नींबू के रस में भिगोवे और मिट्टी के बर्तन में रखकर कप-रौटी करके जंगली कण्डों में रखकर आग दे फिर निकालकर पीसकर आंख में लगावे।

गोलियां—ज्योति को श्रेष्ठ हैं—हड़ के बीज की मींगी बारह, पीपल पांच, कालीमिरच पांच, आंवले के रस में इतना पीसे कि काली हो जावें फिर गोलियां बनाकर पानी में घिसकर आंख में लगावे।

अन्य—रीठे के बीजों की मींगी नींबू के रस में खरल करके गोलियां बनाकर रक्खे प्रातः समय थूंक में घिसकर आंख में लगावे।

गोली—ज्योति की हीनता को गुण करे और आंख की ललाई को श्रेष्ठ है—जंगी हड़, मिश्री बराबर पीसकर गोलियां बांधकर आंख में लगावे।

सलाई जिसका सेवन बैद्यक में लिखा है—सीसे को अग्नि में गलाकर त्रिफले के जल में बुझावे फिर मेह के पानी में फिर भँगरे के जल में फिर घृत में बुझावे फिर शहद में फिर सलाई बनाकर प्रातसमय आंख में फेरे आंख की सब बीमारियो को श्रेष्ठ है और ज्योति को बल देती है।

औषधि–बहुधा नेत्र की बीमारियों को गुण करे और उसके सर्वदा सेवन से आंख अच्छी रहती है–जब कि नींद से जगे अपना थूँक आंख में लगावे ।

अन्य–ज्योति को उत्तम है–हँकूत की गूदी पानी में पीसकर आंख में लगावे ।

अन्य–निर्मली जल में घिसकर आंख में लगाना ज्योति को अधिक करता है ।

अन्य–सिरस का चूर्ण । गजी का कपड़ा सिरस के पत्तों के पानी में भिगोकर सुखावे, तीन बेर इसी तरह करे, फिर उसकी बत्ती बनाकर चमेली के तेल में जलाकर उसका काजल लेकर रक्खे और अंजन की रीति पर आँख में लगाया करे ।

लेप–आंख के बुखार और लाली और नेत्र की ज्योतिकी कमजोरी को गुण करता है परंतु बहुत दिनों तक लगाना चाहिये–जंगी हड़ बहुत छोटी दो, अफीम चार रत्ती, लौंग शिर की तरफ से सबको कूपजल में पीस रक्खे और आंख पर लगाया करे जौ किञ्चित नेत्र में जावे तो कुछ हानि नहीं ।

औषधि–बहुधा नेत्ररोग और ज्योति और मोतियाबिन्द के प्रारम्भ को श्रेष्ठ है–प्याज का जल शहद में मिलाकर आंख में लगावे ।

ज्योतिकारक सुरमा ।

सोलह कालीमिरचें, साठ पीपल, पचास चमेली की कली अस्सी तिल के फूल सबको मिलाकर खरल करके सुरमा लगावे ।

अन्य–कालीमिरच एक माशा, पीली हड़ की छाल दो माशे, छिली हुई हल्दी तीन माशे, गुलाब या पानी में खरल करके सुरमे की भांति करके आंख में लगावे ।

अन्य–ज्योति को श्रेष्ठ है–मोजिज फारसी पुस्तक से प्राप्त–दो अखरोट, हड़ की मींगी तीन दोनों को जलाकर पीसे और चार कालीमिरचें मिलाकर खरल करके सुरमे की भांति वनावे । रसौत को सुरमे के बदले लगाना सर्वदा नेत्र को गुण करता है ।

अन्य–नीम के फूल छाया में सुखाकर उसके बराबर कलमी शोरा लेकर सुरमा करके सोने के समय नेत्र में लगावे । सबल और नाखुना को भी लाभ करता है ।

औषधि–धुनी हुई रुई मदार के दुग्ध में भिकोकर छाया में सुखाकर बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलाकर उसका काजल सावधानी से लेकर नीम की लकड़ी में पीसकर फूलके कटोरे में गुलाब के साथ सातदिन खरल करे और सलाई के साथ आंख में लगावे।

सबलबाय और आंख की सफेदी इत्यादि का वर्णन।

सबल एक परदा है। आंख की रगों में मल के भर जाने से उत्पन्न होता है। उसको माड़ा और फूली बोलते हैं। जकरह अर्थात् नाखुना आंख के बड़े कोये की ओर पैदा होता है। आंख की सफेदी को हिन्दी में जाला बोलते हैं वह सफेदी है कि आंख की स्याही पर पैदा हो।

यत्न–पहिले फस्द सरेरू या माथे की रगखोले उसके उपरान्त जो दवावें आंख को साफ करती हैं सेवन करे–आंख के दर्द, नाखुना और दमा को गुण-कारक–अरहर का रस एक दाम छानकर बिना कलई किये हुए बरतन में उस नीम की लकड़ी से जिसमें पैसा जमाया हो दस कागजी नींबू के रस में खरल करके गोलियां बना रक्खे, समय पर घिसकर आंख में लगावे।

गोली–सबल और आंख को गुण अर्थात् फूली को उत्तम है–सिरस के बीजों की मींगी, खिरनी के बीज कूट छानकर सिरस के पत्तों के रस में मिलाकर खरल करके गोलियां बांधकर समय पर स्त्री के दूध में घिस-कर लगावे।

अन्य–फूली को गुणकारक–जंगी हड़, पलाशपापड़ा, लाहौरी नोन, रक्त-चन्दन बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे और पानी में घिसकर लगावे।

गोली–सबल और सलाक और नजले को गुणकारक है–समुद्रफल की मींगी, रीठे की मींगी, खिरनी के बीज, कालीहड़ के बीज बराबर लेकर नींबू के रस में कजली करके खरल करे और गोलियां बनाकर लगावे।

अन्य–रक्तचन्दन एक तोला, भुनीहुई फिटकरी बराबर कूटछानकर घिकु-वार के लुआब में खरल करके गोलियां बनाकर एक गोली घिसकर आंख में लगावे।

अन्य–नाखुने को श्रेष्ठबूअली सेना का आजमाया हुआ है–शहद बकरी के पित्ते में मिलाकर आंख में लगाया करे।

अमल–आजमाया हुआ है कि जाले को आंख से दूर करता है–नोन और

शक्कर को जिह्वा पर रक्खे कि जिह्वा खरखरी हो जावे सो उस जिह्वा से आंख के जाले को चाटे।

गोली—नाखुना और सफेदी और पानी उतरने के प्रारम्भ को गुणदायक है—साबुन कच्चे पांच दाम, तूतिया, राल साढ़े तीन तीन माशे साबुन को छुरी से टुकड़े टुकड़े करके लोहे के बर्तन में आग पर गलावे, फिर तूतिया पीसकर साबुन में मिलावे, फिर राल डालके उस बर्तन को आग पर रहने दे और लोहे के दस्ते से कजली करे, जब काला हो जावे उतार ले, समय पर खशखाश के दाने के बराबर लेकर सीप में मिलाकर आंख में लगावे, फिर उसी प्रकार तीन दिन के उपरान्त लगावे।

नाखुने की औषधि—हल्दी, दारचीनी, आंबा हल्दी एक एक दाम, नीम के पत्ते छः टंक कूटछानकर छः महीने के बछड़े के मूत्र में दो पहर खरल करके गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर आवश्यकता पर गुलाब में घिसकर लगावे।

तथा—एक हल्दी की गिरह लम्बीचौड़ी लेकर उसमें छिद्र करके गेहूँ की दो कच्ची रोटियों में उस गांठ को रखकर तवे पर आग से पकावे जब रोटी जल जावे हल्दी निकाल ले, समय पर हल्दी को फिटकरी के साथ घिसकर आंख में लगावे।

बारहसिंगे के सींग की गोलियां।

जो आंख के जाले को गुणकारक हैं—पहिले बारहसिंगे के सींग को पानी में पीसे, फिर कागजी नींबू के रस में खूब पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, समय पर घिसकर आंख में लगावे थोड़े दिनों में आराम हो जावेगा।

जाले को दूर करने और मोतियाबिन्द को खो देने का सुरमा।

मिश्री दो भाग, लाहौरी नोन एक भाग दोनों पीसकर सुरमे की भांति करके आंख में लगावे एक सप्ताह में मोतियाबिन्द जाता रहेगा।

औषधि—सबल को दूर करे—कबूतर या मुरगी की बीट कागजी नींबू के रस में कजली करके तांबे के बर्तन में रक्खे, समय पर आंख में लगावे।

अन्य—अबाबील की बीट शहद में मिलाकर आंख में लगावे, तिबफरीदी के ग्रन्थकार ने जाले के लिये आजमाया हुआ लिखा है।

औषधि–जो जाले को गुण करे—बारहसिंगे का सींग दूध में घिसकर लगावे।

अन्य—लाहौरी नोन से सलाई बनावे और दिन में कई बेर आंख में फेरे नाखुना और जाले को गुणदायक है।

अन्य—फूली को गुण करे—कबूतर या चिड़िया की बीट पीस कर आंख में लगावे।

अन्य—नाखुना को गुणदायक–मदार की जड़ जल में घिसकर लगावे।

अन्य—नेत्रपीड़ा और जाले को दूर करे–कटाई की जड़ नींबू के रस में घिसकर लगावे।

अन्य–फूली अच्छी हो–अरहर के पुराने वृक्ष की जड़ घिसकर लगावे।

अन्य—सफेदी को दूर करे–बरगद के वृक्ष का दूध आंख में भरवे।

अन्य—फूली को उत्तम—बैंगन की जड़ पानी में घिसकर लगावे।

अन्य—फूली को गुणकारक–कड़वी तोरई के बीज की गिरी मीठे तेल में पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—समुद्रझाग पीसकर लगावे और बाजे समुद्रझाग बिनौले के तेल में पीसकर लगाते हैं।

अन्य–सफेदी को श्रेष्ठ है–लाले का पुष्प शहद में महीन पीसकर लगावे।

अन्य—लड़कों की फूली को श्रेष्ठ है–मिश्री उस स्त्री के दुग्ध में कि बेटा रखती हो पीसकर लगावे।

अन्य–सोंठ, फिटकरी, लाहौरी नोन बराबर कूटछानकर प्रतिदिन आंख में लगावे कि जाला दूर हो।

अन्य–सफेदी को गुण करे–गधे का सुम जलाकर महीन पीसकर लगावे।

अन्य—चमेली के फूलों की गोलियां जो नेत्र की ज्योति के विषय में वर्णन हुआ जाले को उत्तम हैं।

औषधि—नाखुने को उत्तम है–प्याज का लालपानी कई दिन आंख में लगावे।

अन्य—तेजपात महीन पीसकर आंख में लगाना आंखों की अँधेरी और नाखुना और मोतियाबिन्द को गुण देता है।

औषधि–नेत्र की ज्योति को बल दे और नाखुना और फूली और बहुत से

रोगों को गुणकारक है—कलमीशोरा बहुत सफेद महीन पीसकर हल्दी रंग के अनुमान मिलाकर लगावे ।

औषधि—गुणदायक है–बिषखपड़े की जड़ और सफेदा पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य—जो सबल को श्रेष्ठ है—रेंड़ी एक, मिश्री साढ़े चार माशे, अंजरूत शोधी हुई तीन मिस्काल पीसकर लगावें ।

अन्य—शाफा सबल और नाखुने और खारिश में गुणकारक—जंगार समगअरबी, सफेदाकाशगरी बराबर पीसकर पानी से शाफा बनाकर सुखाकर रक्खे, समय पर जल से घिसकर लगावे ।

टपकाने की दवा ।

आंख की फूलीको दो दाम आंवले जवकुटकर पानी में दो घंटे औटावे और साफ करके प्रतिदिन तीन बेर आंख में टपकावे ।

सुरमा—जो सबल फूली नाखुना को उत्तम है–चूरीसब्ज एक दाम महीन पीसकर नींबू के रस में खूब खरल करे जब सूख जावे आंख में लगावे ।

अन्य सुरमा—फूली, सबल, रतौंधी, तरी के सुखाने और ज्योति को गुण करे–नौसादर, फिटकरी बराबर महीन कूट छानकर अच्छी तरह खरल करके लगावे ।

अन्य—फूली को श्रेष्ठ है–आध सेर प्याज का जल निकालकर उसमें कपड़ा भिगोकर फिर सुखावे और खट्टे मीठे से बचावे फिर उसकी बत्ती बनाकर पाव भर मीठे तेल में जलावे और उसका काजल पारकर आंख में लगावे ।

काढ़ा—बैद्य का बनाया हुआ सबल को श्रेष्ठ है पन्द्रह दिन सेवन करना चाहिये–पीली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, नीम के बृक्ष की छाल गुर्च, चिरायता, रक्त चन्दन, शहतरा, खस, मुण्डी के फूल तोला तोला भर औटाकर साफ करके एक दाम शुद्ध शहद मिलाकर पिये ।

अन्य काढ़ा—रक्तचन्दन, निबौलबेर, नींबू की छाल, आंबाहल्दी, पीली हड़ों की छाल, बहेड़ा, आमला, बांसा दो दो दाम, कुटकी तीन दाम, फलूस की गिरी चार दाम, कड़ुवा चिरायता डेढ़ दाम, सोंठ, गुर्च, नागरमोथा एक एक दाम सबको कूटकर प्रतिदिन दो दाम तीन पाव जल में औटावे जब

आधपाव जल शेष रहे छानकर दो दाम शहद मिलाकर चौदह दिन तक इसी तरह पिये ।

मुंडी की माजून ।

आंख की बीमारियों को श्रेष्ठ है—पीली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, जंगीहड़ की छाल, काबिली हड़ की छाल, धनियां, शहतरा, मुलेठी एक एक तोला मुण्डी के फूल सब औषधियों के बराबर मिश्री तीन हिस्से, सब हड़ों को तेल में भूनकर मिश्री में कवाम करे—खूराक दो तोले ।

ढलका अर्थात् आंख से प्रतिसमय आंसू बहने का यत्न ।

इस रोग में मुंजिज के उपरान्त जुलाब दे—फिर औषधियों का सेवन करे।

गोली—खुजली और ढलके को दूर करे—पीलीहड़ के बीज दो भाग, बहेड़े की मींगी तीन भाग, आमले के बीज की गिरी एक भाग पीसकर रक्खे और समय पर पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य—ढलके को गुणदायक—सिरस के बीज, कालीमिरच, बनफ्शा अलग अलग कूट छानकर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर नेत्र में लगाया करे।

अन्य—जो ढलके को दूर करे—जंगीहड़, माजूफल, बालछड़, पीलीहड़ की छाल बराबर जल में पीसकर गोलियां बनाकर आंख में और आंख के गिर्द लगावे ।

शाफा—किरमह, ढलका, नेत्र की लाली और खुजली को गुण करे— समन्दर झाग, सफेद कत्था, भुनी फिटकरी, पीलीहड़ की छाल, रसौत, अफीम, तूतिया बराबर लेकर स्वच्छ जल में खरल करके शाफा बनाकर लगावे ।

सुरमा—ढलके को गुणकारक—जले हुये पीली हड़ के बीज तीन टङ्क, माजूफल, लाहौरी नोन डेढ़ डेढ़ टंक पीस छानकर सेवन करे। किसी किसी ने जली हुई पीली हड़ों के बदले जली हुई कालीहड़ लिखी है ।

सुरमा—ढलके को गुणकारक—नोन, कालीमिरच एक एक भाग, पीपल दो भाग, समुद्रझाग अर्धभाग, सुरमा औषधियों के तीन भाग, सबको खरल करके सुरमा बनावे ।

औषधि—जो घोड़े के ऊपर का दांत पानी में रगड़कर आंख में लगावे पानी उतरने को श्रेष्ठ है ।

औषधि—अधिक ढलके के पानी गिरने को श्रेष्ठ है—तीन बत्तियां धुनी हुई रुई की बनाकर सात टंक धतूरे में जल के दो बेर भिगोकर सुखावे, फिर

मदार के दूध में दो बेर तर करके छाया में सुखाकर रेंड़ी के तेल से चिरा भरकर वही बत्तियां जलावे और उसका काजल लेकर थोड़े घृत और भु हुई फिटकरी और तूतिया में मिलाकर रक्खे और आंख में लगावे।

औषधि–ढलक को श्रेष्ठ है—कुन्दर जलाकर गुलाब में मिलाकर आं को उससे धोवे जो गुलाब न हो तो पानी काफी है।

अन्य–आबनूस की लकड़ी घिसकर आंख में लगावे।

अन्य–पीली हड़ की छाल अंजरूत बराबर पीसकर लगावे।

करंजे का यत्न।

जो जन्म से है तो उसका यत्न नहीं, परन्तु लिखा है जब लड़का करं उत्पन्न हो तो उसको उस स्त्री का दूध जो बहुत काली हो पिलाना चाहि जो दाई हब्शिनि हो तो सबसे उत्तम। शेखरईस ने अपनी पुस्तक कानू में लिखा है कि सलाई इन्दरायन के हरे फल में चुभोकर आंख में फेरे औ इसी प्रकार गाजर का छिलका महीन पीसकर लगाना गुण देता है।

अरब का यत्न।

यह एक नासूर है कि नाक की तरफ के आंख के कोये में होता है उ तरफ दबाने से उससे आलायश निकलती है।

यत्न—नासूर को मैल से साफ करके मरहम लगावे।

अन्य–संगजराहत के दो टुकड़े रेंड़ी के तेल में घिसे जब गाढ़ा होवे उस बत्ती भरकर नासूर में रक्खे।

अन्य—चिराग की कीट जो पुराने दिये की जगह पर जम जाती है लेक कपड़े में लगाकर नासूर पर जमावे।

अन्य–बथुये के पत्ते, तम्बाकू के फूल बराबर लेकर गौ के घृत में कजल करके लगावे।

अन्य–हुक्के की नै की कीट अफीम बराबर पीसकर बत्ती बनाकर रक्खे

अन्य–समुद्रशोष नरम पीसकर पानी मिला के बत्ती बनाकर रक्खे।

अन्य—नींब के पत्ते, प्योंदीबेर के पत्ते पीसकर कपड़े पर लपेट कर लगावे

अन्य—कत्था, एलुवा बराबर पीसकर नासूर पर लगावे।

अन्य—कुत्ते की जिह्वा जलाकर थूंक में मिलाकर लेप करे।

गुर्च का तेल।

गुर्च, हल्दी को कूटकर मीठे तेल में औटाकर छानकर नाक में टपकावे

औषधि—स्वच्छ शहद आग पर रखकर गहरा करके थोड़ा समुद्रझाग उसमें मिलाकर उतार ले और बत्ती उसमें डुबोकर नासूर में रक्खे।

अन्य—छिली हुई मसूर और अनार का छिलका कूटकर छान कर लगावे।

घोंजनी का यत्न।

रसौत, गेरू, जंगी हड़, पोस्ता पीसकर लेप करे।

अन्य—लौंग, हल्दी पीसकर लेप करे।

अन्य—हींग सिरके में कजली करके कुछ गरम करके लेप करे। पुरानी कच्ची दीवार का कोयला गरम पानी ऐ घिसकर लगावे।

शईरह वह लम्बा शोथ जो पलक पर जौ के आकार का होता है।

मक्खी का शिर दूर करके उस जगह मलकर गरम मोम से सेंकें।

प्रबाल का यत्न।

बालों को अन्दर से उखाड़कर खटमल का रुधिर लगावे।

औषधि—बालों के उखाड़ने के उपरान्त नौसादर बकरी के पित्ते में मिलाकर मले।

चूर्ण—जो आंख की बहुत बीमारियों को गुण करता है—मुण्डी की जड़ छाया में सुखाकर कूटकर उसके बराबर शक्कर मिलावे, आधा दाम हर सुबह को पन्द्रह दिन पर्यन्त गाय के दुग्ध में फांके।

कर्णरोग का यत्न।

हकीमों ने लिखा है कि जो मनुष्य कान के रोगों से बचा रहना चाहे तो सोते वक्त कान में रुई रखकर सोये और कहा है कि जो वस्तु कान में टपकावे कुछ गरम करके टपकावे। अब यहां कर्णरोगी की औषधियों का वर्णन करता हूँ।

औषधि—जो सरदी के कर्णशूल को गुण करे—बकरी की मेंगनी, अजवायन मनुष्य के मूत्र में औटाकर बफ़ारा ले।

तथा—कर्णपीड़ा को गुण करे—घाव को पीब से साफ करके नीम के पत्ते औटाकर बफारा ले।

मूली का तेल।

मूली के पत्तों का रस तीन भाग तिल का तेल एक भाग सब को औटावे जब तेल शेष रहे छानकर कान में टपकावे।

अन्य तेल—सब प्रकार के कर्णरोगों को जो शीत से हों गुण करता है—

इस्पन्द, मालकांगनी, अजवायन बराबर मीठे तेल में जो औषधियों की तौल के बराबर हो जलाकर छानकर सेवन करे।

अन्य–सरदी की कर्णपीड़ा को गुणकारक—कूट, इस्पन्द, सोंठ बराबर पीसकर टिकिया बनाकर सरसों के तेल में पकावे, जब जल जावे साफ करके कई बूंद कान में टपकावे।

अन्य–सरदी की कर्णपीड़ा और शीत की शिरपीड़ा को गुण देता है—किस्त अर्थात् कूट, चिरायता, बायबिड़ंग, असगन्ध, बिधारा, हल्दी, आंबा-हल्दी, सँभालू के पत्ते, अंजीर की जड़, इस्पन्द, सुहागा, सोंठ, मिरच यह एक एक टंक, तेल दो सेर, दवा कूटकर रात को आध सेर जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर छानकर तेल मिलाकर आग पर रक्खे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे तो सेवन करे।

टपकाने की औषधि—कान की पीड़ा को गुण करे—सुदर्शन के पत्ते निचोड़कर उसका जल कुछ गरम करके कई बूंद कान में टपकावे।

अन्य—शीत की कान की पीड़ा को श्रेष्ठ है—लहसुन कूटके उसका साफ रस लेकर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य—गरमी और सरदी की कर्णपीड़ा को गुणदायक–भंग के पत्तों का रस निचोड़कर छानकर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य—भंग के पत्तों के रस में बत्ती लपेटकर कान में रक्खे या भंग को पीसकर मीठे तेल में जलावे और छानकर कान में टपकावे।

अन्य—कान की पीड़ा और कान के बहने को उत्तम है—महावर रात को पानी में भिगोकर प्रातसमय साफ करके कुछ गरम करके तीन बूँद कान में टपकावे।

अन्य–कान की पीड़ा को गुण करे जो सरदी से हो—नीम की पीली पत्तियां अढ़ाई, थोड़ी अजवायन, हल्दी चने बराबर लड़के के मूत्र में पीसकर दो तीन बूंद कुछ गरम करके टपकावे।

अन्य—कर्णपीड़ा को गुणकारक—सिरस या आम की पत्ती का रस निकालकर कुछ गरम दो बूँद कान में टपकावे।

अन्य–कर्णपीड़ा को गुणकारक—थोड़ी मक्खी का बिष्ठा जल में कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य—कान के दर्द को जो सरदी से हो श्रेष्ठ है—काला नोन मूत में पीसकर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य—दूधपीते बच्चे का मूत्र कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य—मनुष्य के शिर के केश जलाकर उसकी राख गुलरोगन में कजली करके कान में टपकावे।

अन्य—घिकुवार के पत्ते गरम करके दूसरे कान में टपकावे।

अन्य—जो पीड़ा शीत से हो तो मुरमक्की गौ के मूत्र में मिला कर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य—रैहां अर्थात् नाजबो के बीज निचोड़कर कुछ गरम करके कान में टपकावे।

अन्य—चुकन्दर निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य—आजमाई हुई—एक रत्ती भर अफीम जलाकर उसका भस्म चार चावल भर लेकर गुलरोगन में कजली करके कान में टपकावे।

अन्य—कान में जमे हुये रुधिर को घुलाकर निकाल डाले—करम्ब के पत्तों का रस निचोड़कर सिरके या गुन्दनी के रस में कुछ गरम करके टपकावे।

अन्य—गौ का पित्ता कुछ गरम करके कान में टपकावे, वात की और कफ की पीड़ा को शान्त करे।

अन्य—मुरगी के अण्डे की सफेदी कान में टपकाना कान के गरम शोथ को नाश करे।

अन्य—पक्के इन्द्रायन के फल के परदे मीठे तेल में मिलाकर टपकाना ऊँचा सुनने को गुण करे।

अन्य—राई का तेल कान के सुद्दे को खोलता है और दिनी बहिरपने को गुण करता है।

अन्य—पपड़ियाखार में कुछ गरम पानी मिलाकर टपकाना अत्यन्त पीड़ा को गुण करता है।

अन्य—खट्टे अनार का अरक शहद के साथ पैत्तिक कर्णपीड़ा का नाशकारक है।

अन्य—खुरफे के पत्तों का रस तेल के साथ पैत्तिक कर्णपीड़ा को नाश करता है।

अन्य—प्याज के रस में अंडे की सफेदी मिलाकर टपकाना श्रेष्ठ है।

लेप—कान की कठोरता को जो पित्त से हो गुणदायक है—पपड़िया खार खतमी पीसकर लेप करे ।

ऊँचा सुनने का यत्न ।

प्रारम्भ में जुल्लाब दे जब बहुत दिनों का होता है नहीं जाता है इसलिये उचित है कि शीघ्र इस रोग में हुबअयारज से जिसका वर्णन कर चुका हूं ब्रह्माण्ड के मल निकलने को जुल्लाब दे फिर दवा कान में डाले ।

औषधि—कान के भारी होने को गुण करे—मदार के पीले पत्ते जो अछिद्र हों आग पर गरम करके उसका रस कान में टपकावे इसी प्रकार दो सप्ताह पर्यन्त करे ।

अन्य—कान के भारीपने को—लहसुन में बकरी का पित्ता मिलाकर थोड़े तेल में औटाकर कुछ गरम कान में टपकावे ।

अन्य—ऊँचा सुनने को गुण करे—ऊंट का मूत्र कुछ गरम करके कान में टपकावे ।

अन्य—काली गाय कलोर का मूत्र सवासेर मधुरी अग्नि में औटावे जब पांच दाम शेष रहे साफ करके शीशे में रखकर प्रतिदिन अढ़ाई बूँद कान में टपकावे ।

अन्य—प्याज का रस कुछ गरम कान में टपकाना ऊँचे सुनने और भिनभिनाहट और पीड़ा और कान के बहने को गुणकारी है ।

इन्द्रायन का तेल ।

बहरेपन और कान की भरभराहट को श्रेष्ठ है—हरा इन्द्रायन का फल तिलों के तेल में तलकर साफ करके रक्खे दो तीन बूँद कान में टपकावे ।

औषधि—बहरेपन को नाश करे—दो कालीमिरचें पीसकर छूंछी में रखकर प्रतिदिन एक बेर कान में फूंके और चिल्लाने की आवाज और नक्कारह और नरसिंहा और तोप आदि का शब्द सुनना ऊँचा सुनने को श्रेष्ठ है कि यह कान के लिये मानों उत्तम परिश्रम है ।

अन्य—पपड़िया खार सिरके में कजली करके छानकर कुछ गरम कान में टपकावे ।

कान के घाव का यत्न ।

जब कान से मल निकलने लगे शीघ्र खुश्क औषधि का सेवन न करे कि उससे पीड़ा पैदा होजाती है किन्तु उस मैल को औषधि से साफ करे

उसके उपरान्त खुश्क दवा डाले और शहद कान में टपकाना बत्ती शहद में भिगो करके कान में रखना कान के मैल को साफ करता है और पीड़ा को नाश करता है-और नीम के पत्तों का बफारा लेना भी कान के मैल को साफ करता है।

अन्य–कान के घाव को गुण करे–प्याज का रस मुरगे के अंडे की सफेदी में मिलाकर कान में टपकावे।

औषधि—नीम के तेल में शहद मिलाकर बत्ती उसमें भिगोकर कान में रक्खे।

अन्य–कान के घाव को गुण करे–एलुवा, समुद्रझाग, गेरू, कुन्दर हरएक थोड़ी-थोड़ी पीस रोगन में पीसकर सुरमा मिलाकर कान में टपकावे।

अन्य—बकरी का दूध कान में टपकावे।

अन्य—लड़के के मूत्र में अनार की छाल जोश देकर साफ करके कान में टपकावे।

अन्य—भुनी फिटकरी, मुरमक्की हरएक बराबर शहद में मिलाकर उसमें बत्ती तर करके कान में रक्खे।

अन्य–भुना सुहागा पीसकर छूँछी में रखकर कान में फूँककर उसके ऊपर कई बूंद नींबू के रस को टपकावे।

अन्य–मैल निकलने को गुण करे और घाव को भर दे–विशेष करके बालकों को अति उत्तम है–गँगनधूल कान में फूंक कर उसके ऊपर कई बूँद नींबू का रस टपकावे।

अन्य–खुजली और पीब बहने को गुण करे–मेथी दूध में सानकर और छानकर कुछ गरम कान में टपकावे। कर्णपीड़ा में स्त्री का दुग्ध और दूधों से उत्तम है।

अन्य—कान की आलायश को उत्तम है–घुड़बच पानी में पीसकर कुछ गरम कान में टपकावे।

अन्य—कान के घाव को नाश करे–कान से मैल साफ होने के उपरान्त पीली कौड़ी जलाकर कान में फूंककर उसके ऊपर कई बूंद नींबू का रस टपकावे।

अन्य—लोध महीन पीसकर कान में डाले तो कान के कीड़ों को नाश करे और घाव को सुखावे। लाल साग का रस निचोड़कर कान में टपकावे।

अन्य—कर्णव्रण को श्रेष्ठ है—एक जुगुनू गुलरोगन में पीसकर टपकावे ।

तेल—जो कान के नासूर को दूर करता है—छोटी घोंघी सजीव पावभर महीन खरल करके उसके बराबर सरसों पीसकर मिलावे और दो सेर जल डालकर इतना औटावे कि पानी जलकर तेल शेष रह जावे । प्रतिदिन कान में टपकावे और जो घोंघा तेल में भूने यही गुण करता है और जहाँ सरसों का तेल न मिले मीठा तेल ही डाले । तेल नासूर और साफा को श्रेष्ठ है, जो एक प्रकार की फुन्सियां हैं—कड़ुवा तेल पाव भर, आमला, मुण्डी एक एक तोला नींबू के पत्ते दश, कमीला, कालीमिरच तीन तीन माशे, तूतिया एक माशा, पहिले तेल को गरम करके कमीले के सिवा सम्पूर्ण औषधि उसमें डालकर जलावे फिर निकालकर पीसे और कमीला भी पीसकर मिलावे और कान में टपकाया करे । औषधि उस घाव को दूर करे कि जो बहुधा लड़कों के कान के पीछे होता है । रोली जिसका टीका लगाते हैं उसको बालक के मूत्र व जल में पीसकर लगावे यद्यपि कुछ दाह होगा परन्तु बहुत गुण करेगा ।

कान बहने और उसके मैल के निकालने का यत्न ।

जो बोहरान के कारण से हो बन्द न करे और बोहरान से न हो माजू जवकुटकर सिरके में औटावे और मलकर छानकर कान में टपकावे ।

कान के शोथ का यत्न ।

जो शोथ कान के भीतर हो तो अति भयानक है इस दशा में सरेरू की फस्द खोलना उचित है । लेप—इस सूजन को जो कान के पीछे हो श्रेष्ठ है—मसी अर्थात् चकसोन कि एक प्रसिद्ध वृक्ष है उसकी नई पत्तियां लाहौरी नोन के साथ पीसकर लेप करे ।

अन्य—उसी सूजन को गुण करे—सुपारी, विषमारी की जड़, करेले के बीज, गेरू, कालाजीरा, कुचला पानी में पीसकर कुछ गरम करके लेप करे ।

अन्य—उसी शोथ को गुण करे—लहसुन की जड़ पीसकर कुछ गरम करके मले ।

औषधि—कान के शोथ को अच्छा करती है, और शीघ्र ही बहाकर निकाल देती है—हुलहुल की पत्तियाँ कूटकर कई बूंद कई दिन तक कान में टपकावे ।

अन्य—प्याज का रस मेथी या अलसी या ईसबगोल के लुआब में पकाकर टपकाना भी गुण रखता है ।

कान के कीड़ों का यत्न ।

कभी गरमी के कारण कान में कीड़े पड़ जाते हैं उसका यत्न—एलुवा जल में पीसकर उस पानी से कान को भर दे और देर तक भरा रहने दे जो कीड़े मरजावें फिर कान को इस तरह झुकावे कि पानी निकल जावे ।

औषधि ।

मलीम एक लकड़ी होती है उसे महीन पीसकर कान में डाले कीड़ों को दूर करे ।

अथवा—सँभालू के पत्तों का रस कान में टपकावे ।

अन्य—हल्दी की एक गांठ और आधा दाम शहद नीम के पत्तों का रस सरसों के तेल में डालकर यहां तक औटावे कि औषधियां जल जावें, इस तेल की दो बूँद कान में टपकावे शीघ्र आनन्द होगा ।

अन्य—आधा टंक तिलों का तेल कान में टपकाने से कान के कीड़े और वह कीड़े जो कान में घुस गये हों मर जाते हैं । इसी तरह प्याज का रस वह मक्खी जो घोड़े और कुत्तों पर बैठती है कान में घुस जाए । मकरा के पत्ते कि हिन्दू उसको चन्नद के बदले समझते हैं कान में टपकावे आश्चर्यदायक फल रखता है ।

अन्य—तेज शराब कान में टपकाना कान की पीड़ा और मल को नाश करे ।

कान की खुजली का यत्न ।

तेल और सिरका औटाकर छानकर टपकावे खुजली दूर हो ।

अन्य—चँबेली के तेल में थोड़ा एलुवा कजली करके कुछ गरम करके कान में टपकावे ।

कान में पानी रह जाने का यत्न ।

छींकना और खाँसना उसको गुण करता है—और शिर उस तरफ झुका रखना कि जिस तरफ के कान में जल है या सौंफ की लकड़ी कान में लगाकर चूसे और तिल का तेल कुछ गरम करके टपकाना गुण करता है या हथेली कान पर रखकर एक पांव खड़ा होकर जिस और के कान में पानी है शिर को उस तरफ झुकाकर कूदे ।

नाक के रोगों का यत्न ।

नाक में दो राहें हैं एक भेजे की तरफ दूसरा मुख की ओर और नाक

की बीमारियों में एक रोग नकसीर है जो वह ज्वर या सरसाम या बोहरान के दिन कि चौथा सातवां ग्यारहवां चौदहवां दिन है नकसीर फूटे बन्द न करे क्योंकि बोहरानी नकसीर में मुख्य मल को इस ओर से दूर करती है परन्तु अधिकता में शीघ्र बन्द करे। जो दोनों रानों और दोनों पांवों और दोनों अंडकोषों को जोर से बांधे तो नकसीर बन्द हो जाती है और ठंढा पानी शिर पर डालना उससे गरगरा अर्थात् कुल्ली करना उत्तम है। लेप—जो नकसीर को गुण करे—सरेस, मुल्तानीमिट्टी बराबर पीसकर कुछ गरम माथे और नाक पर मले।

अन्य—ईसबगोल को सिरके में भिगोकर माथे पर मले।

अन्य—माजूफल खूब पीसकर नाक में फूंके।

अन्य—रसौत की राख नाक में फूंके।

अन्य—चक्की की गरद नाक में फूंके।

अन्य—उड़द का आटा नरम गूंदकर तालू पर लगावे।

अन्य—बेर की पत्ती पीसकर माथे पर मले।

अन्य—छोटी कटाई पानी में पीसकर तालू पर लगावे और उसके पत्तों और जड़ का पानी निचोड़ कर नाक में टपकावे।

अन्य—केले के वृक्ष का रस सुड़कना नकसीर को गुण करे। अण्डे का छिलका इसतरह जलावे कि काला हो जावे उसको पीसकर छूंछी में रखकर जिस नथने में नकसीर फूटी हो फूंके।

अन्य—घोंघा और गौ का सींग और बकरी का सींग जलाकर महीन करके नाक में फूंके।

अन्य—आमला भिगोवे जब नरम हो जावे टिकिया बनाकर तालू में बांधे।

अन्य—गधे की लीद निचोड़कर नाक में टपकावे।

अन्य—गाय का सूखा गोबर पीसकर नाक में फूंके और ताजे गोबर को माथे पर लगाना गुण करता है।

अन्य—नीम के पत्ते और अजवायन पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य—शोराकलमी सिरके में पीसकर माथे पर मले।

अन्य—बत्ती को मुरगे के अण्डे की सफेदी में मिलाकर थोड़ा कपूर उस पर छिड़ककर नाक में रक्खे।

अन्य-गधे की लीद जलाकर उसकी राख नाक में फूंके।

अन्य-जंगली कण्डे की राख महीन पीसकर नाक में फूंके।

अन्य-गूलर के वृक्ष की छाल पानी में पीसकर तालू पर बांधे।

अन्य-नीम के पत्ते चौलाई पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य-पुरानी गज पानी में पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य-जौ का आटा, मुल्तानीमिट्टी, धनियां, ईसबगोल, आमला, गेरू बराबर पीसकर माथे पर लगावे।

अन्य-ऊँट के बाल जलाकर उसकी राख घी में मिलाकर पतला पतला नाक में टपकावे।

अन्य-ढाक के फूल चार सेर पानी में औटावे जब आध सेर शेष रहे ठण्ढा करके तीन टंक शहद मिलाकर पिये नकसीर और स्त्री ऋतु के रुधिर को बन्द करे।

अन्य-कुंदर महीन पीसकर नाक में फूंके।

अन्य-हरी दूब कूट निचोड़कर उसका साफ रस लेकर नाक में टपकावे।

अन्य-रक्तचन्दन पीसकर थोड़ा कपूर कजली करके कुछ दिन खावे नकसीर दूर होगी।

अन्य-निशास्ता सिरके में मिलाकर शिर पर आगे की तरफ रक्खे।

अन्य-नकसीर को गुणदायक-कुन्दर, अफीम एक एक कौड़ी के बराबर लाल साग के रस में जो मिले तो उत्तम है नहीं तो पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

जुकाम और नजले का यत्न।

जो मैल भेजे से नाक की ओर निकले उसको जुकाम बोलते हैं और जो कण्ठ की ओर गिरे उसका नाम नजला है। जो इन तरियों के निकलने में छीलन और पीलाई और नेत्र में जलन मालूम हो गरमी से है, जो इस तरह न हो तो वह सरदी से है। इस रोग में मैथुन, औंधे सोने और खटाई और दूध दही से पथ्य करे और शिर के नीचे ऊँचा तकिया न रक्खे और एक दो दिन भोजन न करे और न पानी पिये। जुकाम चाहे शीत से हो या पित्त से शिर को खुला न रखना चाहिये। अब कुछ औषधियां जुकाम और नजले की गुणकारक लिखता हूँ।

माजून-जो जुकाम और नजले को गुण करे-अजवाइन, अफीम पांच

पांच टंक, कालीमिरच दश टंक, अकरकरा, बालछड़, नरकचूर, गूगल, तज, कायफल, सोंठ एक एक टंक, मुरमक्की आधा टंक तिगुनें शहद में कवाम करे।

अन्य—जो जुकाम को उत्तम है—झाऊ की पत्तियों का बफारा ले।

अन्य—कूटका बफारा ले और इस तरह कोरे कागज का धुआं नाक में पहुँचाना जुकाम को गुण करता है।

अन्य—शक्कर और चन्दरस का धुआं गरम जुकाम को गुण करे।

गोली—जो नजले और जुकाम को गुण करे और भूख बढ़ावे—जंदबा९-खताई चार मिस्काल, अजवाइन पांच मिस्काल, अफीम सात मिस्काल, कतीरा, बबूल का गोंद, मुलहठी, कालीमिरच, इलायची के दाने दो दो मिस्काल, नरकचूर, नागरमोथा बालछड़, तेजपात, कबाबा, कुलञ्जन, पीपल, अजवाइन, सोंठ, इस्पन्द, दो दो टंक, मुरमक्की, अकरकरा आधा आधा मिस्काल पीस छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे और एक गोली रोज खावे।

खशखाश का खमीरा।

पैत्तिक जुकाम को गुण करे—खशखाश के पोस्त २५ पानी में भिगोकर आधसेर शक्कर में कवाम करे। कवाम के अन्त में सफेद खशखाश का दूध, ईसबगोल का लुआब पांच पांच मिस्काल उसमें डाले। उतारने के समय बबूल का गोंद, खतमी के बीज, निशास्ता, छिली हुई मुलहठी चार चार टंक कूट-छानकर मिलावे।

अन्य—जो नजले को छाती पर गिरने न दे और खाँसी को गुण करे—खश-खाश के पोस्ते बीज समेत बीस टंक, सफेद मिश्री पचास टंक, पूर्ववत् कवाम में मिलावे, खुराक दश दश टंक पानी के साथ।

अन्य—जुकाम को गुणकारक—सात कालीमिरचें थोड़े पानी में निगल ले। मुहम्मदजकरिया ने बरुलसाअत में लिखा है कि जो गरम पानी से जुकाम वाले के शिर पर तरेड़ा दे और पानी की गरमी भेजे में अपना फल करे तो शीघ्र शान्ति होती है और कपड़ा सेंककर तालूपर रक्खे जब गरमी उसके भेजे में पहुँचेगी तो शीघ्र ही आनन्द होगा।

अन्य—नजले को नाक की तरफ गिरावे—पुरानी रुई की बत्ती नाक में

रखना उत्तम है और कई बेर परीक्षा हुई है जो शिरपीड़ा नजले से हो उसको दूर करता है।

गोली–नजले को दूर करे–अजवाइन एक मिस्काल, काहू के बीज एक मिस्काल, पोस्ता आधा मिस्काल, मूंग के बराबर गोलियाँ बनाकर मुँह में रक्खे।

अन्य—नजले को गुण करे और भेजे को तरी से साफ करे—समुद्रफल की मींगी स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य–जुकाम को गुण करे–कलौंजी भुनी हुई, नौसादर दो दो माशे, सोंठ तीन माशे, पोटली बाँधकर सूँघे और बाजे उस में सिरका भी मिलते हैं।

अन्य–जो सुद्दा खोलता है और जुकाम को गुण करता है–इस्पन्द थोड़े सिरके में भिगोकर भूनकर कपड़े में ढीला बांधकर सूँघे।

अन्य–कलौंजी पीसकर गुलरोगन में मिलाकर सूँघे।

लेप–नजले को गुण करे–मुरमक्की, एलुवा, बबूल का गोंद, निशास्ता, गेरू, छालिया तीन तीन माशे, अजवाइन, अफीम डेढ़ डेढ़ माशे कूट-छानकर कागज पर कि सुई से उसमें छेद किया हो मलकर दोनों कनपटियों पर लगावे।

गोली–खशखाश के बीज, सफेद छिली हुई मुलहठी, कुचली, अफीम तीन तीन टंक, सम्मगअरबी जो एक प्रकार का बिलायती गोंद होता है, कतीरा, निशास्ता, काहू के बीज दो दो टंक, अजवाइन, मुरमक्की, अकरकरा आधा आधा दाम कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक दो गोली।

लेप–शीत के नजले को उत्तम है–लौंग पीसकर तालू में लगावे। जुकाम को उत्तम है—गेहूँ की भूसी भिगोकर उसका पानी लेकर सिरके में औटावे और सिरके को उसके तालू पर रक्खे।

अन्य–कफ के जुकाम को गुण करे–सोंठ, धव के फूल डेढ़ डेढ़ माशा, खश-खाश का पोस्ता एक, तीन फल जल में औटावे जब चार दाम शेष रहे उसको बुनकी तरह पिये और चाहे मीठा करले।

अन्य नास–मस्तक पीड़ा को गुण करे और बन्द नजले को खोलती है–हुड़ के बीज छः माशे, सफेद घुँघची की मींगी चार माशे, कालीमिरच दो

माशे, नौसादर एक माशे कूट छानकर थोड़ी नास ले, नाक से पानी बहेगा और बहुत तेज है।

अन्य नास—नजले को उत्तम है—सिरस के बीजों को महीन पीसकर नास ले।

नाक की बदबू का यत्न।

यदि नासिका की दुर्गन्धि भेजे के दोष से हो ब्रह्माण्ड को साफ करे और जो नाक के घाव के कारण हो घाव पर मरहम लगावे।

अन्य—नाक की दुर्गन्धि को श्रेष्ठ है—तोंबे का रस एक बूंद भर नाक में टपकावे जो और हरा तोंबा न मिले तो सूखा तोंबा पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रभात को एक बूंद उसमें से नाक में टपकावे।

अन्य—गधे का मूत्र नाक में टपकावे।

बहुत छींकों के आने का यत्न।

यद्यपि थोड़ी छींकें आना आरोग्यता के चिह्न हैं परन्तु बहुत आने को लोग रोग समझते हैं।

उपाय—छींक रोके—छोंगनि को उसी हाथ की तर्जनी उँगली और अँगूठे से पकड़ जोर से दबावे और जोर से मले और धनिये की पत्तियां और चन्दन सूँघना छींक को गुण करे।

अन्य—कुलींजन की पोटली बांधकर सूँघे, छींक को दूर करे। जो बालक को छींकें आवें बकरी का कल्ला आग पर भूने जो पानी उससे टपके लड़के की नाक में टपकावे।

पीनस का यत्न।

यह वह रोग है कि रोगी नाक से बोलता है और बहुधा खाना पानी नाक से निकल आता है।

गोली—पीनस को दूर करे—सोंठ, पीपल, छोटी इलायची के दाने एक एक टंक, पुराना गुड़ चौबीस टंक कूटकर गोलियां बनावे और दो माशे रात को प्रति दिन खाया करे, बहुत गुण करेगा।

मुँह के रोगों का यत्न।

किसी वस्तु का स्वाद न मालूम होने को बुतलान जौक बोलते हैं। कभी इतना मुख का स्वाद जाता रहता है कि रोगी मिठाई और खटाई का स्वाद नहीं जानता। इसका कारण तरी की अधिकता है।

यत्न–पहिले मुंजिज के उपरान्त भेजे को जुल्लाब दे नानख्वाह और तीक्ष्ण वस्तुओं का चाबना जैसे कि मिरच और राई और सिरका और लहसुन और प्याज गुण करता है।

दांतों के रोगों का यत्न।

दांत के रोगी को उचित है कि कठोर वस्तु दांतों से न तोड़ और जिस चीज के खाने से दांत झूठे पड़ें न खावे और जब कोई वस्तु खाने के समय दांतों में रह जावे दांतों को खिलाल से साफ करता रहे कि दुर्गन्धि न आवे परन्तु इतना बहुत खिलाल न करे कि दांतों की जड़ खराब हो जावे और गरम और सर्द चीजों से पथ्य करे।

दांतों की पीड़ा का यत्न।

जो दांतों के हिलने से हो और दांत कम हिलते हों और बुढ़ापा न हो यत्न करे और जो अधिक हिलें दांतों को उखाड़ डाले। थोड़ा नरकचूर सदा मुंह में रखना दांतों की रक्षा करता है। जो पीड़ा के साथ मसूढ़ों पर शोथ हो तो उन चीजों से कुल्ली करे जो सूजन को गुण करें–और एकबेर गरम जल और ठण्ढे पानी से कुल्ली करे और ध्यान रक्खे कि किस जल से पीड़ा शान्त होती है जो गरम से पीड़ा होगी तो ठण्ढे पानी से पीड़ा शान्त होगी और जो शीत से पीड़ा होगी तो गरम जल से दर्द दूर होगा। इस जगह कुछ सुगम औषधियों का जो दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ हैं वर्णन करता हूँ।

हल्दी महीन पीसकर कपड़े में रखकर जो दांत कि पीड़ा करता है उसके नीचे रक्खे और इसका मञ्जन भी मलना उत्तम है।

अन्य–शीत के दन्तरोग को नाश करे–अदरक के वरक करके नोन पीसकर उसपर छिड़के और पीड़ावाले दांत पर रक्खे।

अन्य–तुलसी की पत्तियां और कालीमिरच पीसकर गोली बनाकर दांतों के नीचे दबावे।

अन्य–बिनौला गरम करके दांत के नीचे दबाकर सो रहे और बिनौला औटाकर कुल्ली करना भी श्रेष्ठ है।

अन्य मँजीठ का लगाना दांत की पीड़ा को दूर करता है।

अन्य–अंजीर के दूध से रुई भिगोकर दांतों के नीचे दबावे गुण करेगा।

अन्य–ईसबगोल सिरके में भिगोकर दांतों पर रखना पैत्तिक दन्तपीड़ा को शांत करे।

अन्य–पुराने दांतों की पीड़ को श्रेष्ठ है–कपूर दांतों के नीचे रक्खे जो दांतों को कीड़ों ने खाया हो छेदों में उसके भरदे अधिक छिद्र बढ़ने न देगा और कीड़ों को मार डालेगा।

अन्य–अकरकरा एक टंक, नौसादर अफीम पांच पांच टंक, महीन पीसकर कीड़े के खाये हुए छिद्रों में रक्खे।

अन्य–दांतों की पीड़ा को शांत करे और कीड़ों के खाये हुये को गुण करे–सोंठ नरम कूटकर शहद और सिरके में मिलाकर दांतों के छिद्रों में रक्खे।

अन्य–मदार की जड़ का बक्कल चौथाई टंक पानी में भिगोकर दांतों पर रक्खे।

अन्य–नौसादर ज्वार के बराबर रुई में लपेटकर दर्दवाले दांतों के नीचे रक्खे और जितना जल मुँह से निकले निकलने दे पीड़ा शांत हो जावेगी।

अन्य–दांतों के कीड़ों को गुण करे–बाय्यबिड़ंग छीलकर सालू में जो लाल कपड़ा है पोटली बांधकर कीड़े खाये हुये दांतों के नीचे रक्खे।

अन्य–थोड़ा गंधक सिरके में मिलाकर उससे रुई भिगोकर कीड़े खाये हुये दांतों पर रक्खे।

अन्य–मुलीम घिसकर दांतों पर रक्खे।

अन्य–जो दन्तपीड़ा और मसूढ़ों की सूजन को गुण करे–प्याज, कलौंजी दोनों बराबर चिलम में रखकर तम्बाकू के बदले इतना पिये कि मुँह से लार बहे।

अन्य–दांतों को सुगमता से निकालता है सेंहुँड़ वृक्ष का दूध हिलते हुये दांत पर रक्खे और इस बात की सावधानी रखे कि दूध दूसरे दांत पर न पहुँचे।

अन्य–दांत के दर्द को गुण करे–अकरकरा मस्तगी बराबर लेकर थोड़ा मोम मिलाकर एक चने के बराबर दांतों के नीचे इतनी देर रक्खे कि लार मुँह से बहने लगे।

अन्य–उस दांत के रोग को श्रेष्ठ है कि कीड़ों के खाने के कारण हो–छोटी कटाई का फल तम्बाकू की तरह हुक्के में पीकर उसका धुआँ मुंह में रोके।

अन्य–सुहागा मोम मिलाकर दांतों के छिद्र में जिसको कीड़ों ने खाया हो रक्खे पीड़ा जाती रहेगी।

अन्य–विशेष करके दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है–लड़के का दांत जो छोटी उमर में गिरा हो उसको दूध का दांत बोलते हैं चाँदी में ये यन्त्र बनाकर अपने पास रक्खे पीड़ा को दूर करे।

अन्य–पीलू की लकड़ी से दातोन करना दांतों को पुष्ट करता है।

अन्य—नीम की लकड़ी से जो दातोन करने का अभ्यास करे तो दांतों में कीड़े नहीं पड़ते हैं और गरमी से दांतों में दर्द नहीं होता है।

मंजन—जो दांतों की पीड़ा को गुण करे—भुनी फिटकरी एक टंक, जले हुये करंजुवे दो, भुना तूतिया एक टंक, कालीमिरच बारह कूट छानकर मले।

अन्य–जली फिटकरी बराबर उसके मिस्सी मिलाकर मले।

अन्य–शीत की दंतपीड़ा को गुणकारी है–तम्बाकू दो भाग, कालीमिरच एक भाग पीसकर दांतों पर मले।

अन्य–हरप्रकार की दंतपीड़ा को दूर करे–सुपारी और कत्थे की राख, पीपल की राख तीनों बराबर, तूतिया एक औषधि का चतुर्थ भाग सबको कूट छानकर दांतों और दांतों की जड़पर मलकर एक घण्टा शिर नीचे करे कि मुँह से लार निकले फिर कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

अन्य–करंजुवा जलावे और राख उसकी नमक में मिलाकर मले।

अन्य–ठण्ढी पीड़ा को गुण करे–सज्जी, कालीमिरच पीस कर मले।

अन्य–हर प्रकार की पीड़ा को शान्त करे–अकरकरा, कपूर बराबर पीस कर मले।

अन्य–दांतों को दृढ़ करे–भूनी फिटकरी एक भाग, तूतिया भुना चतुर्थभाग, कत्था डेढ़भाग कूट छानकर मंजन बनाकर मले।

अन्य–तूतिया सब्ज आधा दाम भर घी में जलावें और नींब की पत्तियों की राख कि उसको छोटे कुल्हड़े में जलाया हो आधा दाम, संगजराहत एक दाम बराबर मिलाकर दांतों पर मले।

अन्य–कत्था सफेद एक तोला, गुलसेवती सूखी, गुलनार तीन तीन माशे, मस्तगी आधा माशा, बड़ी इलायची छः माशे, मिस्सी एक तोले, भूनी सुपारी डेढ़ तोला, भूनी धनियां छः माशे सबको जलाकर पीसे और मंजन बनावे।

अन्य–रेवन्दचीनी पीसकर मिस्सी उसमें मिलाकर मले, शीघ्र ही आराम होगा।

अन्य–भिलावाँ जलाकर इस्पन्द महीन पीसकर मले, दांतों को दृढ़ करता है।

अन्य–सुपारी, माजूफल, भिलावाँ तीनों औषधि जलाकर मंजन बनाकर मिस्सी की भांति मले, लार मुँहसे बहेगी और दांत दृढ़ होंगे और पीड़ा दूर हो जावेगी।

अन्य–पीड़ा को गुण करे और दांतों को दृढ़ करे–हिन्दी तूतिया तेल में भूनकर, सोंठ, सफ़ेद कत्था, सुपारी जलाकर मंजन बनावे।

अन्य–उस दांत की पीड़ा और मसूढ़ों को गुण करे कि शीत से हो–सोंठ, हल्दी, लाहौरीनमक, कालीमिरच, तम्बाकू की नास सम्पूर्ण औषधि बराबर पीसकर दांतों पर मलकर लार मुंहसे निकाले और एक घण्टे के उपरान्त पान खाकर दांतों को पीक से धोवे फिर दूसरी गिलौरी खावे जो आवश्यक हो तो दो घड़ी के उपरान्त पानी पिये।

अन्य–दांतों को दृढ़ करता है–फिटकरी दो टंक, नोन एक टंक कूटकर मंजन मले।

अन्य–राल का मंजन मलना गुण करता है।

अन्य–दांतों का दर्द और कीड़ों के खाये हुये दांत को गुण करे–तूतिया अग्नि पर रक्खे और लोहे के दस्ते से पीसे फिर अग्नि से उतार पीसकर दांतों पर मले।

अन्य–दांतों से रुधिर निकलने न दे–जामुन की लकड़ी जलाकर और पीसकर मले।

अन्य–चन्दरस मलना दांतों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य–मौलसिरी की लकड़ी जलाकर पीसकर मलना उत्तम है।

अन्य–संगजराहत मलना मसूढ़ों से रुधिर निकलने को बन्द करे।

अन्य–कचनार की लकड़ी जलाकर मंजन बनाकर मले।

अन्य पीड़ा को गुण करे–राई पीसकर मंजन बनावे।

अन्य–बारहसिंगे का सींग जलाकर पीसकर मलना दांतों को बल देता और साफ करता है।

अन्य–बसद पीसकर मलना दांतों को दृढ़ और साफ करता है।

अन्य—मसूर जलाकर मले तो दांतों को साफ करता है।

अन्य—सरूकी पत्तियां जलाकर राख उसकी मलना दांतों को साफ करता है।

अन्य—बरगद की छाल पीसकर दांतों के नीचे रक्खे तो पीड़ा दूर हो।

अन्य—कालीमिरच, सोंठ, मुरमक्की, थोड़ा नमक मिला पीसकर मले तो दांतों की पीड़ा को जो शीत से हो गुण करता है।

अन्य—सीप जलाकर मलना दांतों को साफ करता है।

अन्य—बालछड़ पीसकर मलना मसूढ़ों और दांतों को बल देता है और मुख को सुगन्धित करता है।

अन्य—शिरपीड़ा को श्रेष्ठ है—पाह कालीमिरच बराबर कूटछानकर दांतों पर मले।

अन्य—दांतों को मजबूत और पीड़ा को दूर करे—सिरस का गोंद कालीमिरच महीन पीस मंजन बनाकर मले।

अन्य—जला हुआ माजू एक, बे जला एक, जली हुई सुपारी एक, बे जली एक कूट छानकर मंजन करे फिर कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

कुल्ली—जो दर्द को दूरकरे और दांतों को मजबूत करे—बायबिड़ंग सैंतीस दाने, कबाबचीनी अठारह दाने, मसूर की पत्तियां ग्यारह, झाऊ की कोंपल एकदाम आधपाव जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे कुछ गरम जल से कुल्ली करे।

अन्य—दांतों के कीड़ों को उत्तम है—चँबेली की पत्तियां एक मुट्ठी, इस्पन्द डेढ़ तोला, सेरभर जल में औटावे जब पाव सेर शेष रहे साफ करके कुल्ली करे।

अन्य—दांतों की पीड़ा को श्रेष्ठ है—पीपल की छाल, बरगद की छाल पानी में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—फिटकरी एक तोला, मोचरस छः माशे जवकुटकर आध सेर पानी में औटावे जब आधा शेष रहे कुल्ली करे तो पीड़ा को शांत करे और दांतों को मजबूत करे।

अन्य—बबूल की छाल दो दाम, कायफल तीन माशे, इस्पन्द तीन माशे कूटकर पावभर जल में औटावे जब आधा शेष रहे तो सोने के समय कुल्ली करे।

अन्य—उस पीड़ा को शांत करे जो नजले, बात, तरी और मसूढ़ों के ढीले होने से होवे—मकोय, खशखाश का पोस्ता, इस्पन्द, मँजीठ बराबर पानी में औटावे जब अर्धभाग शेष रहे कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—अकरकरा, मसूर, खशखाश का पोस्ता औटाकर कई बेर कुल्ली करे।

अन्य—दन्तपीड़ा को गुणकारक—अबहलपाह जो कसीस की भांति होती है औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गेहूँ की भूसी, पुराने यव की भूसी औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—जो दांतों से मैल या पीब आने को गुण करे—फिटकरी, माजू औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पीड़ा को शांत करे—माजू, तोंबरी के बीज चार दाम के अनुमान लेकर एक सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके कुल्ली करे शीघ्र ही फल करेगा (तोंबरी खिले हुये कबाबे की सूरत की होती है)।

अन्य—मसूढ़ों की सूजन को गुण करे—काले चने भिगोकर औटाकर कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—दांतों की पीड़ा और कीड़ों से खोखले हुये दांतों को गुण करे—कटाई का वृक्ष डाल फूल और फल समेत कूटकर पानी निचोड़कर उससे कुल्ली करे या कटाई को पानी में औटाकर चार दिन पर्यन्त कुल्ली करे।

अन्य—सरू के फूल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पियाबांसा की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—मोलसरी की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—सिरस के वृक्ष की छाल कुचलकर औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—रूसे की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—अनार और गुलनार और माजू यह सब एक २ या दो दो और मसूर उसके बराबर मिलाकर औटाकर कुल्ली करना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर निकलने को बन्द करता है।

अन्य—गुनगुने पानी से कुल्ली करना मसूढ़ों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—माजू दांतों पर मलना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर आने को गुण करे,

लेप—इस्पन्द पीसकर कुछ गरम जल में मिलाकर गालों के ऊपर जहां पीड़ा हो लगावे।

दांतों के खट्टे होने का यत्न ।

खट्टे और कसैली चीज खाने से दांत खट्टे हो जाते हैं ।

यत्न—गेहूं की गरम रोटी दांतों में दबावे । नारियल, बादाम, पीलामोम और हींग चबाना दांतों के खट्टे होने को दूर करे । पैत्तिक प्रकृतिवाले को खुरफे के बीज चबाना और राई का मलना गुण करे । हर प्रकार के खट्टे दांतों को नोन पीसकर मलना लाभ करता है ।

दांतों में छिद्र होने का यत्न ।

नौसादर और अफ़ीम कूटकर दांतों के छिद्रों में रक्खे और थोड़ी मस्तगी पीसकर दांतों पर लगावे ।

कुल्ली—मसूढ़ों के शोथ और दंतपीड़ा को गुण करे—पीले हड़ों की छाल, मकोय, धनियां, इस्पन्द दो दो मिस्काल, खशखाश के पोस्ते दो, अजबाइन दो टंक, आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके कुल्ली करे ।

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने की औषधियां ।

चिकनी चीजें जैसे कि अण्डे की जरदी, हराम मग्ज, भेजा और मुरग का पर धीरे से दांतों की जगह पर मले ।

औषध—गुलरोगन मकोय के पत्तों का रस निचोड़कर उसमें मिलाकर पीड़ा के समय मलना श्रेष्ठ है । ताबूलखवास में लिखा है कि लड़के के गले में सीप का लटकाना मुख्य करके शीघ्र ही दांतों को उगावेगा इस प्रकार होंठ छछूंदर का और सँभालू की जड़ का लड़के के गले में लटकाना मुख्य करके फल रखता है ।

जिह्वाके रोगों की औषधियां ।

यह रोग बहुधा तरी से होता है ।

यत्न—राई, पीपल, सोंठ, नौसादर अकरकरा इन दवाओं से एक एक या सब पीसकर जिह्वापर मले और कभी उसमें सिरका मिलाते हैं और कायफल के काढ़े से कुल्ली करना गुणकारी है ।

अन्य—जिह्वा के भारी होने को जो पित्त से शोथ हो गुणकारी है—गुलाब के फूल छिली हुई मसूर दोनों को साथ पीसकर और मकोय की पत्तियों का रस मिलाकर जिह्वा की जड़ पर मले ।

जिह्वा के दाह का यत्न ।

दही पानी में मिलाकर कुल्ली करे और कत्था जिह्वा पर रक्खे ।

अन्य—उस पीड़ा को शांत करे जो नजले, बात, तरी और मसूढ़ों के ढीले होने से होवे—मकोय, खशखाश का पोस्ता, इस्पन्द, मँजीठ बराबर पानी में औटावे जब अर्धभाग शेष रहे कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—अकरकरा, मसूर, खशखाश का पोस्ता औटाकर कई बेर कुल्ली करे।

अन्य—दन्तपीड़ा को गुणकारक—अबहलपाह जो कसीस की भांति होती है औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गेहूँ की भूसी, पुराने यव की भूसी औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—जो दांतों से मैल या पीब आने को गुण करे—फिटकरी, माजू औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पीड़ा को शांत करे—माजू, तोंबरी के बीज चार दाम के अनुमान लेकर एक सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके कुल्ली करे शीघ्र ही फल करेगा (तोंबरी खिले हुये कबाबे की सूरत की होती है)।

अन्य—मसूढ़ों की सूजन को गुण करे—काले चने भिगोकर औटाकर कुछ गरम से कुल्ली करे।

अन्य—दांतों की पीड़ा और कीड़ों से खोखले हुये दांतों को गुण करे—कटाई का वृक्ष डाल फूल और फल समेत कूटकर पानी निचोड़कर उससे कुल्ली करे या कटाई को पानी में औटाकर चार दिन पर्यन्त कुल्ली करे।

अन्य—सरू के फूल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पियाबांसा की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—मोलसरी की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—सिरस के वृक्ष की छाल कुचलकर औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—रूसे की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—अनार और गुलनार और माजू यह सब एक २ या दो दो और मसूर उसके बराबर मिलाकर औटाकर कुल्ली करना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर निकलने को बन्द करता है।

अन्य—गुनगुने पानी से कुल्ली करना मसूढ़ों की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—माजू दांतों पर मलना मसूढ़ों को बलदायक है और रुधिर आने को गुण करे,

लेप—इस्पन्द पीसकर कुछ गरम जल में मिलाकर गालों के ऊपर जहां पीड़ा हो लगावे।

दांतों के खट्टे होने का यत्न ।

खट्टे और कसैली चीज खाने से दांत खट्टे हो जाते हैं ।

यत्न—गेहूं की गरम रोटी दांतों में दबावे । नारियल, बादाम, पीलामोम और हींग चबाना दांतों के खट्टे होने को दूर करे । पैत्तिक प्रकृतिवाले को खुरफे के बीज चबाना और राई का मलना गुण करे । हर प्रकार के खट्टे दांतों को नोन पीसकर मलना लाभ करता है ।

दांतों में छिद्र होने का यत्न ।

नौसादर और अफ़ीम कूटकर दांतों के छिद्रों में रक्खे और थोड़ी मस्तगी पीसकर दांतों पर लगावे ।

कुल्ली—मसूढ़ों के शोथ और दंतपीड़ा को गुण करे—पीले हड़ों की छाल, मकोय, धनियां, इस्पन्द दो दो मिस्काल, खशखाश के पोस्ते दो, अजबाइन दो टंक, आध सेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके कुल्ली करे ।

लड़कों के दांत सुगमता से निकलने की औषधियां ।

चिकनी चीजें जैसे कि अण्डे की जरदी, हराम मग्ज, भेजा और मुरग का पर धीरे से दांतों की जगह पर मले ।

औषध—गुलरोगन मकोय के पत्तों का रस निचोड़कर उसमें मिलाकर पीड़ा के समय मलना श्रेष्ठ है । ताबूलखवास में लिखा है कि लड़के के गले में सीप का लटकाना मुख्य करके शीघ्र ही दांतों को उगावेगा इस प्रकार होंठ छछूंदर का और सँभालू की जड़ का लड़के के गले में लटकाना मुख्य करके फल रखता है ।

जिह्वाके रोगों की औषधियां ।

यह रोग बहुधा तरी से होता है ।

यत्न—राई, पीपल, सोंठ, नौसादर अकरकरा इन दवाओं से एक एक या सब पीसकर जिह्वापर मले और कभी उसमें सिरका मिलाते हैं और कायफल के काढ़े से कुल्ली करना गुणकारी है ।

अन्य—जिह्वा के भारी होने को जो पित्त से शोथ हो गुणकारी है—गुलाब के फूल छिली हुई मसूर दोनों को साथ पीसकर और मकोय की पत्तियों का रस मिलाकर जिह्वा की जड़ पर मले ।

जिह्वा के दाह का यत्न ।

दही पानी में मिलाकर कुल्ली करे और कत्था जिह्वा पर रक्खे ।

जिह्वा के दानों का यत्न।

इसको मुँह आना भी कहते हैं। कदाचित् रुधिर के दोष से हो तो दानों का रंग लाल होगा और पित्त की अधिकता में पीला, कफ में सफेद और सौदावी अर्थात् दग्धितदोष में कालारंग होता है। जो यह रोग दग्धितदोष से हो तो बहुत बुरा है, जो बालकों को हो तो मृत्यु के चिह्न हैं।

यत्न—जो युवा मनुष्य का मुँह आवे तो चारबन्द की फस्द ले।

अन्य—औषध जो जवानों और लड़कों के मुँह आने को गुण करे—बकायन की छाल पीसकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर जिह्वा पर छिड़के।

अन्य—जला हुआ कागज, बड़ी इलायची के दाने, सफेद कत्था, भुनी फिटकरी बराबर पीसकर थोड़ा थोड़ा मुँह में छिड़के।

अन्य—मसूर जलाकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—जला हुआ गावजबां उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँह में छिड़के।

अन्य—बड़ी इलायची के दाने, छालिया दोनों जलाकर महीन करके मुँह में छिड़के।

अन्य—सफेद कत्था, शोराकलमी बराबर पीसकर मुँह में छिड़के।

अन्य—मुँह आने को गुण करे और विशेष करके लड़कों की जिह्वा के दानों को दूर करे—मिश्री पीसकर थोड़ा कपूर मिलाकर छिड़के।

अन्य—भुनी फिटकरी, माजू बराबर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को दूर करे—बाज या जुर्रा या बाशा की बीट दो रत्ती भर पीसकर लड़के के मुँह में छिड़के, कफ के मुँह आने को गुण करे।

अन्य—छिले हुये जौ जलाकर कत्था सफेद बराबर मिलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को गुण करे—मनुष्य के शिर के केश जलाकर राख उसकी जिह्वा पर मले, जो कफ से मुँह आवे तो शहद में मिलाकर मले।

अन्य—रसौत नींबू के रस में पीसकर मले।

अन्य—जो लड़कों के मुँह आने को गुण करे—निशास्ता जल में कजली करके मले।

अन्य—गुलाब की पत्तियां और खुरफे की पत्तियां चबाना गरमी के मुँह आने को दूर करे।

अन्य—अमलतास की पत्ती जिह्वा पर मले।

अन्य—शहतूत की पत्ती चाबे।

अन्य—गोंदी की छाल में कत्था लगाकर चाबे।

अन्य—बबूल की कोंपल पीसकर मलना और पीना हर प्रकार के मुँह आने को गुण करे।

कुल्ली—गरम मुँह आने को गुण करे—त्रिफला और सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गरम मुँह आने को गुण करे— माजू, गुलेनार, सिरके में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—आमले पानी में भिगोकर उस जल से कुल्ली करे।

अन्य—सौदावी अर्थात् दग्धित दोष के जिह्वा के दानों को गुण करे— मेहँदी की पत्तियां चबावे।

अन्य—गाय की हड्डी की मींगी मले।

अन्य—अनार की छाल, गोंदी की छाल, सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—बबूल की छाल, झड़बेरा की छाल औटाकर कुल्ली करना श्रेष्ठ है और जो पारे, शिंगरफ और रसकपूर खाने से हुआ हो उसको भी गुण करे।

अन्य—मुँह आने को गुणकारक—अरहर की पत्तियों का शीरा निकालकर उससे कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल पानी में भिगोकर उस पानी से कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल, मसूर की दाल औटावे और साफ करके कपूर मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—मेहँदी भिगोकर उसके जल से कुली करे।

अन्य—उस मुँह आने को श्रेष्ठ है जो पारे और रसकपूर खाने से पैदा हो—त्रिफला, मोचरस, खशखाश का पोस्ता औटाकर कुछ रेंड़ी का तेल मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—जिह्वा के फट जाने को गुण करे—लसोढ़ा मुँह में रक्खे और ईसबगोल के लुआब से कुल्ली करे और कत्था मुख में रखना गुण करता है।

मुख से लार बहने का यत्न ।

बहुधा सोने के समय मुँह से लार बहना कोष्ठ की तरी से होता है।

यत्न—कोष्ठ को साफ करे और इतरीफल, सगीर खावे और राई पीसकर उसमें शक्कर मिलाकर फांकना गुण करता है और देर तक दातौन करना श्रेष्ठ है और कासनी जवकुटकर थोड़ा नोन मिलाकर चूर्ण बनाकर कुछ दिन फांके ।

औषधि—जो लार बहने को बन्द करे—शक्कर सफेद आधपाव कवाम करे सात माशे मस्तगी उसमें मिलावे, लड़के के लिये खुराक दो माशे जवान के लिये नव माशे ।

ओठों के फटजाने का यत्न ।

ओठों के फट जाने का कारण खुश्की है ।

यत्न—घृत में नोन मिलाकर प्रति दिन तीन बेर नाभि पर मले गुण-दायक है ।

अन्य—ओठ और जिह्वा के फट जाने को उत्तम है—मीठे कद्दू के बीजों की मींगी या तरबूज के बीजों की मींगी पानी में पीस कर मले ।

अन्य—कतीरा पीसकर और ईसबगोल का लुआब ओठों पर मले ।

अन्य—बायबिड़ंग की झाग निकालकर ओठों पर मले ।

कण्ठ के रोगों का यत्न (खुनाक) ।

खुनाक वह शोथ है कि नरखरे या नरखरे के पट्टे या मरी या मरी के पट्टे में पैदा होता है नरखरा उसको कहते हैं कि उससे आवाज निकलती है और मरी से भोजन और मद्य का सेवन होता है जो नरखरे में शोथ हो तो उसके चिह्न श्वास का रुकना है और जो मरी में शोथ हो तो कठिनता से खाना पीना उतरना उसके चिह्न हैं ।

यत्न—सरेरू की फस्द और जिह्वा के नीचे की रग खोले और अमलतास मुख में रखना बहुत लाभ करता है और खुनाक में माउलसईर कि मसूर और खशखाश उसमें मिलाकर पकाया हुआ भोजन करे दो भाग खशखाश और मसूर बराबर हो ।

शहतूत का शरबत ।

खुनाक की सूजन, गले के शोथ, कव्वे, तालू और जिह्वा की सूजन को श्रेष्ठ है—खट्टे शहतूत का रस निचोड़कर बराबर मिश्री में कवाम करे ।

गरगरा अर्थात् कुल्ली ।

जो गले की पीड़ा और सूजन को गुण करे–नीम की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में मिलाय औटाकर साफ करके कुछ गरम करके कुल्ली करे ।

अन्य–खुनाक को गुणकारक–अमलतास, मसूर, मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर कुछ गरम गरगरा करे ।

अन्य–शहतूत का रस, धनियां, मसूर भिगोकर उसके पानी में मिलाकर गरगरा करे ।

अन्य–जौ अधकुचले भिगोकर उसका साफ पानी लेकर कुछ गरम गरगरा करे ठंडा और गरम शोथ और कंठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है इसी प्रकार कुछ गरम पानी से गरगरा करना खुनाक को गुण करे ।

अन्य–बबूल की पत्तियां औटाकर गरगरा करे ।

अन्य–खुनाक को गुण करे–अरहर की पत्तियों का रस निकालकर कुछ गरम करके गरगरा करे–यदि अरहर की पत्तियां न मिलें अरहर की दाल पानी में भिगोकर कुछ गरम करके गरगरा करे ।

अन्य–तूत की जड़ और पत्तियां और उसकी नरम डालियां पानी में औटाकर गरगरा करे ।

अन्य–धनिये का चाबना गले की पीड़ा को गुण करे ।

अन्य–मकोय, कालीजीरी, कालीमिरच, खड़िया मिट्टी बराबर पानी में घिसकर लगावे गले के शोथ और खुनाक को दूर करे ।

अन्य–जदवार, रेवन्दचीनी तीन तीन माशे, अफीम तीन रत्ती कुछ गरम पानी में मिलाकर लेप करे ।

अन्य–सूखा करेला सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य–गले की पीड़ा को गुण करे–हतीस की जड़ पानी में घिसकर कुछ गरम करके मले ।

अन्य–नौसादर मलना खुनाक को नाश करे ।

अन्य–मुरगी का बिष्ठा सिरके में मिलाकर कण्ठ में लगावे शोथ को दूर करता है ।

अन्य–तोंबे के बीज, गेरू, लालचन्दन, कालीजीरा, सिरस की छाल, ...र, कालीमिरच, कालीजीरी, सूखा करेला, सोये के बीज ये सब औषध बराबर पीसकर सिरके में मिलाकर गुनगुना मले ।

जिह्वा के दानों का यत्न।

इसको मुँह आना भी कहते हैं। कदाचित् रुधिर के दोष से हो तो दानों का रंग लाल होगा और पित्त की अधिकता में पीला, कफ में सफेद और सौदावी अर्थात् दग्धितदोष में कालारंग होता है। जो यह रोग दग्धितदोष से हो तो बहुत बुरा है, जो बालकों को हो तो मृत्यु के चिह्न हैं।

यत्न—जो युवा मनुष्य का मुँह आवे तो चारबन्द की फस्द ले।

अन्य—औषध जो जवानों और लड़कों के मुँह आने को गुण करे—बकायन की छाल पीसकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर जिह्वा पर छिड़के।

अन्य—जला हुआ कागज, बड़ी इलायची के दाने, सफेद कत्था, भुनी फिटकरी बराबर पीसकर थोड़ा थोड़ा मुँह में छिड़के।

अन्य—मसूर जलाकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—जला हुआ गावजबां उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँह में छिड़के।

अन्य—बड़ी इलायची के दाने, छालिया दोनों जलाकर महीन करके मुँह में छिड़के।

अन्य—सफेद कत्था, शोराकलमी बराबर पीसकर मुँह में छिड़के।

अन्य—मुँह आने को गुण करे और विशेष करके लड़कों की जिह्वा के दानों को दूर करे—मिश्री पीसकर थोड़ा कपूर मिलाकर छिड़के।

अन्य—भुनी फिटकरी, माजू बराबर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को दूर करे—बाज या जुर्रा या बाशा की बीट दो रत्ती भर पीसकर लड़के के मुँह में छिड़के, कफ के मुँह आने को गुण करे।

अन्य—छिले हुये जौ जलाकर कत्था सफेद बराबर मिलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को गुण करे—मनुष्य के शिर के केश जलाकर राख उसकी जिह्वा पर मले, जो कफ से मुँह आवे तो शहद में मिलाकर मले।

अन्य—रसौत नींबू के रस में पीसकर मले।

अन्य—जो लड़कों के मुँह आने को गुण करे—निशास्ता जल में कजली करके मले।

अन्य—गुलाब की पत्तियां और खुरफे की पत्तियां चबाना गरमी के मुँह आने को दूर करे।

अन्य—अमलतास की पत्ती जिह्वा पर मले।

अन्य—शहतूत की पत्ती चाबे।

अन्य—गोंदी की छाल में कत्था लगाकर चाबे।

अन्य—बबूल की कोंपल पीसकर मलना और पीना हर प्रकार के मुँह आने को गुण करे।

कुल्ली—गरम मुँह आने को गुण करे—त्रिफला और सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गरम मुँह आने को गुण करे— माजू, गुलेनार, सिरके में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—आमले पानी में भिगोकर उस जल से कुल्ली करे।

अन्य—सौदावी अर्थात् दग्धित दोष के जिह्वा के दानों को गुण करे—मेहँदी की पत्तियां चबावे।

अन्य—गाय की हड्डी की मींगी मले।

अन्य—अनार की छाल, गोंदी की छाल, सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—बबूल की छाल, झड़बेरा की छाल औटाकर कुल्ली करना श्रेष्ठ है और जो पारे, शिंगरफ और रसकपूर खाने से हुआ हो उसको भी गुण करे।

अन्य—मुँह आने को गुणकारक—अरहर की पत्तियों का शीरा निकालकर उससे कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल पानी में भिगोकर उस पानी से कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल, मसूर की दाल औटावे और साफ करके कपूर मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—मेहँदी भिगोकर उसके जल से कुली करे।

अन्य—उस मुँह आने को श्रेष्ठ है जो पारे और रसकपूर खाने से पैदा हो—त्रिफला, मोचरस, खशखाश का पोस्ता औटाकर कुछ रेंड़ी का तेल मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—जिह्वा के फट जाने को गुण करे—लसोढ़ा मुँह में रक्खे और ईसबगोल के लुआब से कुल्ली करे और कत्था मुख में रखना गुण करता है।

जिह्वा के दानों का यत्न।

इसको मुँह आना भी कहते हैं। कदाचित् रुधिर के दोष से हो तो दानों का रंग लाल होगा और पित्त की अधिकता में पीला, कफ में सफेद और सौदावी अर्थात् दग्धितदोष में कालारंग होता है। जो यह रोग दग्धितदोष से हो तो बहुत बुरा है, जो बालकों को हो तो मृत्यु के चिह्न हैं।

यत्न—जो युवा मनुष्य का मुँह आवे तो चारबन्द की फस्द ले।

अन्य—औषध जो जवानों और लड़कों के मुँह आने को गुण करे—बकायन की छाल पीसकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर जिह्वा पर छिड़के।

अन्य—जला हुआ कागज, बड़ी इलायची के दाने, सफेद कत्था, भुनी फिटकरी बराबर पीसकर थोड़ा थोड़ा मुँह में छिड़के।

अन्य—मसूर जलाकर उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—जला हुआ गावजबां उसके बराबर सफेद कत्था मिलाकर मुँह में छिड़के।

अन्य—बड़ी इलायची के दाने, छालिया दोनों जलाकर महीन करके मुँह में छिड़के।

अन्य—सफेद कत्था, शोरांकलमी बराबर पीसकर मुँह में छिड़के।

अन्य—मुँह आने को गुण करे और विशेष करके लड़कों की जिह्वा के दानों को दूर करे—मिश्री पीसकर थोड़ा कपूर मिलाकर छिड़के।

अन्य—भुनी फिटकरी, माजू बराबर पीसकर मुख में छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को दूर करे—बाज या जुर्रा या बाशा की बीट दो रत्ती भर पीसकर लड़के के मुँह में छिड़के, कफ के मुँह आने को गुण करे।

अन्य—छिले हुये जौ जलाकर कत्था सफेद बराबर मिलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य—लड़कों के मुँह आने को गुण करे—मनुष्य के शिर के केश जलाकर राख उसकी जिह्वा पर मले, जो कफ से मुँह आवे तो शहद में मिलाकर मले।

अन्य—रसौत नींबू के रस में पीसकर मले।

अन्य—जो लड़कों के मुँह आने को गुण करे—निशास्ता जल में कजली करके मले।

अन्य—गुलाब की पत्तियां और खुरफे की पत्तियां चबाना गरमी के मुँह आने को दूर करे।

अन्य—अमलतास की पत्ती जिह्वा पर मले।

अन्य—शहतूत की पत्ती चावे।

अन्य—गोंदी की छाल में कत्था लगाकर चावे।

अन्य—बबूल की कोंपल पीसकर मलना और पीना हर प्रकार के मुँह आने को गुण करे।

कुल्ली—गरम मुँह आने को गुण करे—त्रिफला और सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—गरम मुँह आने को गुण करे—माजू, गुलेनार, सिरके में औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—आमले पानी में भिगोकर उस जल से कुल्ली करे।

अन्य—सौदावी अर्थात् दग्धित दोष के जिह्वा के दानों को गुण करे—मेहँदी की पत्तियां चबावे।

अन्य—गाय की हड्डी की मींगी मले।

अन्य—अनार की छाल, गोंदी की छाल, सफेद कत्था औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—बबूल की छाल, झड़बेरा की छाल औटाकर कुल्ली करना श्रेष्ठ है और जो पारे, शिंगरफ और रसकपूर खाने से हुआ हो उसको भी गुण करे।

अन्य—मुँह आने को गुणकारक—अरहर की पत्तियों का शीरा निकालकर उससे कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल पानी में भिगोकर उस पानी से कुल्ली करे।

अन्य—अरहर की दाल, मसूर की दाल औटावे और साफ करके कपूर मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—मेहँदी भिगोकर उसके जल से कुली करे।

अन्य—उस मुँह आने को श्रेष्ठ है जो पारे और रसकपूर खाने से पैदा हो—त्रिफला, मोचरस, खशखाश का पोस्ता औटाकर कुछ रेंड़ी का तेल मिलाकर कुल्ली करे।

अन्य—जिह्वा के फट जाने को गुण करे—लसोढ़ा मुँह में रक्खे और ईसबगोल के लुआब से कुल्ली करे और कत्था मुख में रखना गुण करता है।

मुख से लार बहने का यत्न।

बहुधा सोनें के समय मुँह से लार बहना कोष्ठ की तरी से होता है।

यत्न—कोष्ठ को साफ करे और इतरीफल, सगीर खावे और राई पीसकर उसमें शक्कर मिलाकर फांकना गुण करता है और देर तक दातौन करना श्रेष्ठ है और कासनी जवकुटकर थोड़ा नोन मिलाकर चूर्ण बनाकर कुछ दिन फांके।

औषधि—जो लार बहने को बन्द करे—शक्कर सफेद आधपाव क्वाम करे सात माशे मस्तगी उसमें मिलावे, लड़के के लिये खुराक दो माशे जवान के लिये नव माशे।

ओठों के फटजाने का यत्न।

ओठों के फट जाने का कारण खुश्की है।

यत्न—घृत में नोन मिलाकर प्रति दिन तीन बेर नाभि पर मले गुणदायक है।

अन्य—ओठ और जिह्वा के फट जाने को उत्तम है—मीठे कद्दू के बीजों की मींगी या तरबूज के बीजों की मींगी पानी में पीस कर मले।

अन्य—कतीरा पीसकर और ईसबगोल का लुआब ओठों पर मले।

अन्य—बायबिड़ंग की झाग निकालकर ओठों पर मले।

कण्ठ के रोगों का यत्न (खुनाक)।

खुनाक वह शोथ है कि नरखरे या नरखरे के पट्टे या मरी या मरी के पट्टे में पैदा होता है नरखरा उसको कहते हैं कि उससे आवाज निकलती है और मरी से भोजन और मद्य का सेवन होता है जो नरखरे में शोथ हो तो उसके चिह्न श्वास का रुकना है और जो मरी में शोथ हो तो कठिनता से खाना पीना उतरना उसके चिह्न हैं।

यत्न—सरेरू की फस्द और जिह्वा के नीचे की रग खोले और अमलतास मुख में रखना बहुत लाभ करता है और खुनाक में माउलसईर कि मसूर और खशखाश उसमें मिलाकर पकाया हुआ भोजन करे दो भाग खशखाश और मसूर बराबर हो।

शहतूत का शरबत।

खुनाक की सूजन, गले के शोथ, कव्वे, तालू और जिह्वा की सूजन को श्रेष्ठ है—खट्टे शहतूत का रस निचोड़कर बराबर मिश्री में कवाम करे।

गरगरा अर्थात् कुल्ली ।

जो गले की पीड़ा और सूजन को गुण करे—नीम की पत्तियां थोड़े शहद और सूखी मकोय में मिलाय औटाकर साफ करके कुछ गरम करके कुल्ली करे ।

अन्य—खुनाक को गुणकारक—अमलतास, मसूर, मकोय की पत्तियों के रस में औटाकर कुछ गरम गरगरा करे ।

अन्य—शहतूत का रस, धनियां, मसूर भिगोकर उसके पानी में मिलाकर गरगरा करे ।

अन्य—जौ अधकुचले भिगोकर उसका साफ पानी लेकर कुछ गरम गरगरा करे ठंडा और गरम शोथ और कंठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है इसी प्रकार कुछ गरम पानी से गरगरा करना खुनाक को गुण करे ।

अन्य—बबूल की पत्तियां औटाकर गरगरा करे ।

अन्य—खुनाक को गुण करे—अरहर की पत्तियों का रस निकालकर कुछ गरम करके गरगरा करे—यदि अरहर की पत्तियां न मिलें अरहर की दाल पानी में भिगोकर कुछ गरम करके गरगरा करे ।

अन्य—तूत की जड़ और पत्तियां और उसकी नरम डालियां पानी में औटाकर गरगरा करे ।

अन्य—धनिये का चाबना गले की पीड़ा को गुण करे ।

अन्य—मकोय, कालीजीरी, कालीमिरच, खड़िया मिट्टी बराबर पानी में पीसकर लगावे गले के शोथ और खुनाक को दूर करे ।

अन्य—जवखार, रेवन्दचीनी तीन तीन माशे, अफीम तीन रत्ती कुछ गरम पानी में मिलाकर लेप करे ।

अन्य—सूखा करेला सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य—गले की पीड़ा को गुण करे—हतीस की जड़ पानी में घिसकर कुछ गरम करके मले ।

अन्य—नौसादर मलना खुनाक को नाश करे ।

अन्य—मुरगी का बिष्ठा सिरके में मिलाकर कण्ठ में लगावे शोथ को गुण करता है ।

अन्य—तांबे के बीज, गेरू, लालचन्दन, कालीजीरा, सिरस की छाल, मसूर, कालीमिरच, कालीजीरी, सूखा करेला, सोये के बीज ये सब औषध बराबर पीसकर सिरके में मिलाकर गुनगुना मले ।

अन्य—मोरया जो हिन्दी जड़ है मैलारंग पीसकर लगावे गले की पीड़ा को गुण करे।

अन्य—रेवन्दचीनी, गेरू, कालीजीरी, कालीहड़, हल्दी, आमला, मुल्तानी मिट्टी बराबर कूट छानकर कुछ गरम जल में मिलाकर मले।

अन्य—जो लड़कों का कव्वा लटक आवै उसको गुण करे—मुल्तानी मिट्टी सिरके में मिलाकर तालू पर रक्खे।

अन्य—माजू सिरके में घिसकर तर्जनी उँगली में लगाकर कव्वा लटक गया हो उससे उठावे।

अन्य—चूल्हे की लालमिट्टी, एक कालीमिरच पीसकर मिलाकर कव्वा उससे उठावे।

अन्य—कपोल के शोथ को श्रेष्ठ है—सेंभल की छाल जलाकर तिलों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य—मेथी जौ का आटा बराबर सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—खुनाक को श्रेष्ठ है और यह औषधि उलवीखां की आजमाई हुई है—कछुये को लेकर मुख उसका रोगी के मुख के बराबर रक्खे जो कछुये के मुख की श्वास रोगी के कंठ में भी प्रवेश करे और उसकी खुनाक गलकर नाश हो और गर्दन की पीठ पर पछने लगाना खुनाक को नाश करता है।

आवाज के पड़ जाने का यत्न।

जो नजला कण्ठ की ओर गिरे और उससे आवाज पड़ जावे, थोड़ी अफीम खावे और खशखाश के पोस्ते और अजवाइन को औटाकर गरगरा करे गुण देता है। और जो कफ के कारण हो तो तीन वर्ष की पुरानी गोंदी की जड़ को जो पृथ्वी के नीचे होती है थोड़ी थोड़ी मुख में रक्खे। इस्पन्द से गरगरा करना आवाज को साफ करता है।

अन्य—बन्द आवाज को खोले—अदरक लेकर उसे भीतर से खाली करके थोड़ी हींग और नमक पीसकर उसके छेद में रक्खे, फिर अदरक को कपड़े में लपेटकर उस पर खमीर लगाकर भूभल में रक्खे, जब अदरक पककर उसमें से गन्ध आने लगे आग से निकालकर छीलकर खावे—आवाज खुल जावे।

अन्य—बन्द आवाज को गुण करे—मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि चावल गुड़ में पकाकर सोने के समय पेट भरकर खावे। फिर एक घण्टे के उपरान्त दो चमचे गुनगुना पानी पिये, तीन दिन में आवाज खुलजावे।

अन्य—थोड़ी हींग गरम जल से कण्ठ के नीचे उतारे ।

अन्य—मूली के बीज कूटकर गरम पानी में मिलाकर खावे ।

अन्य—हड़ के बीज की मींगी, पीपल, लाहौरी नोन बराबर शहद में मिलाकर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक तोला दो सप्ताह पर्यन्त खावे ।

अन्य—बन्द आवाज को जो कफ से हो उत्तम है—मालकङ्गनी, बच, खुरासानी अजवाइन, कुलींजन, पीपल पीसकर शहद में मिलाकर एक दाम के अनुमान प्रभात और सन्ध्या में चाटे ।

अन्य—मुर्जरिबात अकबरी में लिखा है कि—चिराग का गुल पान में डालकर खावे उस बन्द आवाज को जो सेंदुर खाने से हो अधिक गुण करे ।

अन्य—आवाज खोलता है—गन्ना भूभल में गुनगुना करके छील कर खावे ।

अन्य—मुख में कबाबा रखना आवाज को खोलता है । करंब की चटनी आवाज के खोलने को गुण करे और करंब की डालियां थोड़े पानी में पकाकर कपड़े में छानकर शहद में कवाम करके सेवन करे ।

कण्ठमाला का यत्न ।

कण्ठमाला शोथ है जो गले में पैदा होता है ।

अन्य—मुंजिज के उपरान्त का का जुल्लाब दे ।

अन्य—कण्ठमाला को उत्तम है—मूली के बीज, बकरी के दुग्ध में पीसकर लेप करे, प्रतिदिन लसोढ़े की पत्तियां गरम भूभल में गुनगुनी करके दश दिन तक कण्ठमाला पर बांधे ।

अन्य—थोड़ी कसोंधी की पत्तियां, चार कालीमिरचों में पीसकर मले ।

अन्य—सरसों पीसकर लगाया करे ।

अन्य—लिखा है कि जुल्लाब देने के उपरान्त जब तक रोग नाश न हो चार माशे जंगीहड़ कूटछान कर रात को सदा खाया करे—और यह मरहम लगावे—गूगुल एक तोला, कालीमिरच तीन माशे सिरके में पीसकर मरहम बनावे ।

अन्य—मसूर, धनियां सिरके में पकाकर पीसकर लगाया करे ।

अन्य—सोंठ एक टंक, कुलथी के बीज तीन टंक गोमूत्र में पकाकर ठण्डा करके लेप करे ।

अन्य—यह औषध कराबादीन शफाई से प्रति की गई है कण्ठमाले को श्रेष्ठ है—कतीरा पाँच भाग, नानख्वाह दो भाग कूट छानकर धनियां की पत्तियों का रस निचोड़कर उसमें मिलाकर मले ।

अन्य—बकरी के कंधे की हड्डी लेकर जलाकर एक सप्ताह पर्यन्त दो टंक खावे, मोरिया की लकड़ी उसको मदनमस्त भी कहते हैं कूट छानकर गुनगुना करके लेप करे ऊपर से पुरानी रुई गरम करके बांधे।

अन्य—गौ का सींग और नख जलाकर तेल में मिलाकर कण्ठमाला के रोगी को लेप करे।

अन्य—पीलू की पत्तियां ऊंट या गौ के मूत्र में पीसकर लगावे उसके ऊपर पान बांधे।

अन्य—मुंडी के फूल दो तोले पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ करके पिये। इसी प्रकार एक मास पर्यन्त सेवन करे।

अन्य—आजमाया हुआ है, कण्ठमाला के मल को उखाड़े और यह औषध मुजर्रिबात अकबरी की है—एक भाग सिरस के बीज कूट छानकर दो भाग शहद में मिलाकर हांडी में रक्खे और उस पर सरपोश ढांककर उसके किनारे उड़द का आटा लगावे और एक सप्ताह पर्यन्त धूप में रक्खे। इसके उपरांत खोलकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे। यद्यपि इस औषध में दुर्गन्धि है परन्तु कण्ठमाला के मल के दूर करने में अद्वितीय है।

अन्य—चूके की जड़ बांधना विशेष करके कण्ठमाला को श्रेष्ठ है।

अन्य—बकरी के सींग का गूदा जंगली कण्डे की आग में जलावे, जब जलकर सफेद हो जावे चूर्ण बनाकर प्रतिदिन सात माशे चौदह दिन तक फांके, भोजन खिचड़ी खावे।

अन्य—कण्ठमाला को दूर करे—जौ का आटा अलसी, कबूतर की बीट सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—धनियां और जौ का सत्तू सर्वदा कण्ठमाला पर लगाया करे।

अन्य—सिरस की छाल, तोंबा, कालीमिरच, कालीजीरी पीसकर बराबर लगाया करे।

अन्य—बरगद का दूध कण्ठमाला पर लगाना कण्ठमाला को पकाता है।

अन्य—सरेरू की फस्द खोलना और भोजन कम करना उत्तमोत्तम यत्न है।

कण्ठ में जोंक के लिपट रहने का यत्न।

नोन, नौसादर, सिरके में मिलाकर गरगरा करे और गन्धक का धुवां कण्ठ में पहुँचाना जोंक को कण्ठ से गिरा देता है और धुवां पहुँचाने की

यह रीति है कि नरकुल लेकर एक ओर उसके गन्धक रक्खे। उस पर आग रख-कर दूसरी ओर से हुक्के की भांति खींचे। जो जोंक कण्ठ से छूटकर कोष्ठ में गिर जावे तो शीघ्र ही वमन करे, न निकले तो मुसिल ले।

अन्य—काली मिट्टी कपड़े में बांधकर रोगी के मुख में रक्खे, शीघ्र ही जोंक मिट्टी की सुगन्ध से निकल आवेगी।

अन्य—पिसी हुई राई दो भाग, सिरका आठ भाग दोनों मिलाकर गर-रा अर्थात् कुल्ली करे।

अन्य—राई, कलौंजी पीसकर साम में फूंके, गुण करती है।

अन्य—मोठ हिंदी मुख में रक्खे, जोंक उसकी प्रीति से निकल आवेगी।

हृदय रोगों का यत्न।

दमा अर्थात् श्वास बहुधा बुढ़ापे में कफ की अधिकता से होता है। यह रोग **बहुत दिन रहने** वाले रोगों में से है। इसके उपाय से भूल न करे। मुंजिज के उपरान्त **कभी कभी** कफ का जुल्लाब मुसिल से करता रहे।

गोली—**श्वास** रोग को श्रेष्ठ है—करंजुवे की गूदी, पीपल पीसकर अदरक के रस में कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां प्रभात को खाया करे।

अन्य गोली—हल्दी, राई, सज्जी चार चार भाग, गुड़ अठारह भाग कूट-छानकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम को इसी प्रकार चालीस दिन तक खावे।

अन्य—सीप जलाकर अदरक के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर खावे।

अन्य—गोली जो श्वास रोग को गुण करे—मदार की कली जो खिली न हो दो भाग, पीपल एक भाग, लाहौरीनोन एक भाग महीन पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली प्रतिदिन खावे।

गोली—एक मदार का पत्ता, पच्चीस कालीमिरचें कूटछानकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, जवान सात गोली और लड़के दो गोली खावें।

अन्य—पीपल, कालीमिरच एक एक टंक, काकड़ासिंगी आधा टंक, सज्जी सफेद चौथाई, टंक, अफीम चार रत्ती कूट छानकर अदरक के जल में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली। जो अदरक न मिले तो एक टंक सोंठ मिलाकर गोलियां बनावे।

अन्य—एलवा, सफेद सज्जी, कालीमिरच, हल्दी कूट छानकर घीकुवा के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे, खूराक ए गोली गुनगुने जल से खावे।

अन्य—नीलचौका लकड़ी दो टंक, मालकांगनी चौथाई टंक, कूट छानक पानी में खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे। प्रात-संध्या एक गोल खाया करे, खटाई से पथ्य करे चिकना भोजन खावे।

अन्य गोली—सांक और कफ की खांसी को श्रेष्ठ है—अकरकरा, काली मिरच, अनार की छाल, अजमोद बांस की पत्तियां छोटी कटाई की जड़ बबूल की छाल, सफेद सज्जी, लाहौरीनोन, सांभरनोन एक एक माशा अफीम दो माशे कूटछानकर अदरक के रस में चने की बराबर गोलिय बनाकर मुख में रखकर उसकी राल निगल जावे।

अन्य—दमे को श्रेष्ठ है—एलवा, सुहागा, मुरमक्की कूट छानकर चने की बराबर गोलियां बनावे दो प्रभात को दो सन्ध्या को खाया करे।

अन्य—पीपल एक तोला कपड़े को पानी में भिगोकर पीपल उसमें लपेट कर भूभल में रक्खे। एक घण्टे के उपरान्त निकाल कर भुना सुहागा, कुलींजन, कालीमिरच एक एक मिस्काल, पीपल, अकरकरा डेढ़ भाग बारीक पीसकर घीकुवार के रस में खूब खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावे।

अन्य—बांसा, कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, कालीमिरच, कलौंजी, पीपल, भारंगी, कटाई के बीज बराबर लेकर अदरक के रस में गोलियां बनावे, एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—कसौंधी का हरा फल भूनकर खावे।

अन्य—रीठे की गिरी खाना सांक को गुण करे।

अन्य—आश्चर्यदायक औषध है—रूस के बीज, नकछिकनी, पान तीनों औषध भूनकर पीसकर चार रत्ती के बराबर पान में खावे।

अन्य—मदार के पत्ते, मुरमक्की, कत्था सफेद पानी में पीसकर मले और मुरमक्की घी के मिट्टी के बासन में रक्खे और बरतन का मुख बन्द करके जलते हुये चूल्हे या तन्दूर में रक्खे, जब जलकर राख हो जावे पीसकर प्रति-दिन एक रत्ती पान में खाया करे।

अन्य—कासश्वास को नाश करे—मदार की पत्ती जो पीली होकर दरख्त

से गिर पड़ी हों एक सेर चूना, नोन दो दो टंक दोनों को जल में पीसकर मदार के पत्तों पर लगाकर सुखाकर मिट्टी के बासन में रखकर जंगली कंडे की आग में एक पहर तक जलावे, जब भस्म हो जावे एक रत्ती रोज खाया करे दूध दही और खटाई से पथ्य करना उत्तम है।

अन्य—मदार की कोपल पान में रखकर सरदी में तीन दिन पर्यन्त प्रतिदिन एक कोपल खावे, चौथे रोज डेढ़ कोपल, पांचवें दिन दो कोपल, इसी प्रकार चालीस दिन पर्यन्त आधी आधी कोपल प्रतिदिन अधिक करके खावे।

अन्य—मदार की कली जो खिली न हो जितनी चाहे लेकर हर फूल में एक कालीमिरच रखकर मिट्टी की नई हांडी में रक्खे, उस पर खारीनोन बिछाकर हांडी का मुख मूंदकर तन्दूर में रक्खे। ठण्ढे होने के उपरान्त निकालकर चार रत्ती उसमें से रोज खाया करे।

अन्य—कफ के दमे की नाशकारक—इलायची के दाने, मालकंगनी दो माशे लेकर निगल जावे।

अन्य—अदरक का रस, प्याज का रस, लहसुन का रस, घीकुवार का रस, शहद यह सब औषधि बराबर लेकर चीनी या शीशे के बासन में रखकर पृथ्वी में गाड़े तीन दिन के उपरान्त निकालकर एक कौड़ी के बराबर प्रतिदिन खाया करे।

अन्य—बिसखपरे की थोड़ी सी जड़ प्रतिदिन पान में खावे।

अन्य—तम्बाकू का गुल आग में जलाकर सफेद करके पीसकर दो रत्ती पान में खाया करे बादी और खटाई से पथ्य करे।

अन्य—तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके आग में जलावे, जब सफेद हो जावे उसको पानी में कजली करके एक रातदिन रहने दे और प्रतिदिन दो तीन बार उसको हिलाते रहै, फिर छानकर और उसका जल लेकर पतीली में औटावे, जब नोन हो जावे उसमें दो रत्ती लेकर पान में खाया करे।

अन्य—थूहर की लकड़ी खोखली करके एक दाम फिटकरी उसमें रखकर कपड़मिट्टी करके कंडे की आग में जलावे, जब ठंढा हो जावे फिटकरी निकालकर दो रत्ती के बराबर पान में खाया करे।

अन्य—दमे को गुण करे—चाहे वह सरदी से हो या गरमी से ईसबगोल अंगुली भर बराबर तीन चार महीने सुबह और शाम फांकने से शान्ति होती

अन्य—बकरी के कंधे की हड्डी लेकर जलाकर एक सप्ताह पर्यन्त दो टंक खावे, मोरिया की लकड़ी उसको मदनमस्त भी कहते हैं कूट छानकर गुनगुना करके लेप करे ऊपर से पुरानी रुई गरम करके बांधे ।

अन्य—गौ का सींग और नख जलाकर तेल में मिलाकर कण्ठमाला के रोगी को लेप करे ।

अन्य—पीलू की पत्तियां ऊंट या गौ के मूत्र में पीसकर लगावे उसके ऊपर पान बांधे ।

अन्य—मुंडी के फूल दो तोले पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ करके पिये । इसी प्रकार एक मास पर्यन्त सेवन करे ।

अन्य—आजमाया हुआ है, कण्ठमाला के मल को उखाड़े और यह औषध मुजर्रिबात अकबरी की है—एक भाग सिरस के बीज कूट छानकर दो भाग शहद में मिलाकर हांडी में रक्खे और उस पर सरपोश ढांककर उसके किनारे उड़द का आटा लगावे और एक सप्ताह पर्यन्त धूप में रक्खे । इसके उपरांत खोलकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे। यद्यपि इस औषध में दुर्गन्धि है परन्तु कण्ठमाला के मल के दूर करने में अद्वितीय है ।

अन्य—चूके की जड़ बांधना विशेष करके कण्ठमाला को श्रेष्ठ है ।

अन्य—बकरी के सींग का गूदा जंगली कण्डे की आग में जलावे, जब जलकर सफेद हो जावे चूर्ण बनाकर प्रतिदिन सात माशे चौदह दिन तक फांके, भोजन खिचड़ी खावे ।

अन्य—कण्ठमाला को दूर करे—जौ का आटा अलसी, कबूतर की बीट सिरके में पीसकर लगावे ।

अन्य—धनियां और जौ का सत्तू सर्वदा कण्ठमाला पर लगाया करे ।

अन्य—सिरस की छाल, तोंबा, कालीमिरच, कालीजीरी पीसकर बराबर लगाया करे ।

अन्य—बरगद का दूध कण्ठमाला पर लगाना कण्ठमाला को पकाता है।

अन्य—सरेरू की फस्द खोलना और भोजन कम करना उत्तमोत्तम यत्न है।

कण्ठ में जोंक के लिपट रहने का यत्न।

नोंन, नौसादर, सिरके में मिलाकर गरगरा करे और गन्धक का धुआं कण्ठ में पहुँचाना जोंक को कण्ठ से गिरा देता है और धुवां पहुँचाने की

ह रीति है कि नरकुल लेकर एक ओर उसके गन्धक रक्खे। उस पर आग रख-
र दूसरी ओर से हुक्के की भांति खींचे। जो जोंक कण्ठ से छूटकर कोष्ठ
गिर जावे तो शीघ्र ही वमन करे, न निकले तो मुसिल ले।

अन्य—काली मिट्टी कपड़े में बांधकर रोगी के मुख में रक्खे, शीघ्र ही
ोंक मिट्टी की सुगन्ध से निकल आवेगी।

अन्य—पिसी हुई राई दो भाग, सिरका आठ भाग दोनों मिलाकर गर-
रा अर्थात् कुल्ली करे।

अन्य—राई, कलौंजी पीसकर साम में फूंके, गुण करती है।

अन्य—मोठ हिंदी मुख में रक्खे, जोंक उसकी प्रीति से निकल आवेगी।

हृदय रोगों का यत्न।

दमा अर्थात् श्वास बहुधा बुढ़ापे में कफ की अधिकता से होता है। यह
ोग बहुत दिन रहने वाले रोगों में से है। इसके उपाय से भूल न करे। मुंजिज
उपरान्त कभी कभी कफ का जुल्लाब मुसिल से करता रहे।

गोली—श्वास रोग को श्रेष्ठ है—करंजुवे की गूदी, पीपल पीसकर अदरक
रस में कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां प्रभात
ो खाया करे।

अन्य गोली—हल्दी, राई, सज्जी चार चार भाग, गुड़ अठारह भाग कूट-
ानकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम
ो इसी प्रकार चालीस दिन तक खावे।

अन्य—सीप जलाकर अदरक के रस में खरल करके चने की बराबर
ोलियां बनाकर खावे।

अन्य—गोली जो श्वास रोग को गुण करे—मदार की कली जो खिली न
ो दो भाग, पीपल एक भाग, लाहौरीनोन एक भाग महीन पीसकर जंगली
र की बराबर गोलियां बनावे एक गोली प्रतिदिन खावे।

गोली—एक मदार का पत्ता, पच्चीस कालीमिरचें कूटछानकर कालीमिरच
े बराबर गोलियां बनावे, जवान सात गोली और लड़के दो गोली खावें।

अन्य—पीपल, कालीमिरच एक एक टंक, काकड़ासिंगी आधा टंक, सज्जी
सफेद चौथाई, टंक, अफीम चार रत्ती कूट छानकर अदरक के जल में जंगली
बेर की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली। जो अदरक न मिले तो
पांच टंक सोंठ मिलाकर गोलियां बनावे।

अन्य—एलवा, सफेद सज्जी, कालीमिरच, हल्दी कूट छानकर घीकुवा के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे, खूराक ए गोली गुनगुने जल से खावे।

अन्य—नीलचौका लकड़ी दो टंक, मालकांगनी चौथाई टंक, कूट छानक पानी में खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे। प्रात-संध्या एक गो खाया करे, खटाई से पथ्य करे चिकना भोजन खावे।

अन्य गोली—सांक और कफ की खांसी को श्रेष्ठ है—अकरकरा, काली मिरच, अनार की छाल, अजमोद बांस की पत्तियां छोटी कटाई की ज बबूल की छाल, सफेद सज्जी, लाहौरीनोन, सांभरनोन एक एक माश अफीम दो माशे कूटछानकर अदरक के रस में चने की बराबर गोलि बनाकर मुख में रखकर उसकी राल निगल जावे।

अन्य—दमे को श्रेष्ठ है—एलवा, सुहागा, मुरमक्की कूट छानकर चने क बराबर गोलियां बनावे दो प्रभात को दो सन्ध्या को खाया करे।

अन्य—पीपल एक तोला कपड़े को पानी में भिगोकर पीपल उसमें लपेट कर भूभल में रक्खे। एक घण्टे के उपरान्त निकाल कर भुना सुहागा, कुलींजन कालीमिरच एक एक मिस्काल, पीपल, अकरकरा डेढ़ भाग बारीक पीसक घीकुवार के रस में खूब खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर ए गोली रोज खावे।

अन्य—बांसा, कायफल, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, कालीमिरच, कलौंजी पीपल, भारंगी, कटाई के बीज बराबर लेकर अदरक के रस में गोलिय बनावे, एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—कसौंधी का हरा फल भूनकर खावे।

अन्य—रीठे की गिरी खाना सांक को गुण करे।

अन्य—आश्चर्यदायक औषध है—रूस के बीज, नकछिकनी, पान तीनों औषध भूनकर पीसकर चार रत्ती के बराबर पान में खावे।

अन्य—मदार के पत्ते, मुरमक्की, कत्था सफेद पानी में पीसकर मले और मुरमक्की घी के मिट्टी के बासन में रक्खे और बरतन का मुख बन्द करके जलते हुये चूल्हे या तन्दूर में रक्खे, जब जलकर राख हो जावे पीसकर प्रति-दिन एक रत्ती पान में खाया करे।

अन्य—कासश्वास को नाश करे—मदार की पत्ती जो पीली होकर दरख्त

से गिर पड़ी हों एक सेर चूना, नोन दो दो टंक दोनों को जल में पीसकर मदार के पत्तों पर लगाकर सुखाकर मिट्टी के बासन में रखकर जंगली कंडे की आग में एक पहर तक जलावे, जब भस्म हो जावे एक रत्ती रोज खाया करे दूध दही और खटाई से पथ्य करना उत्तम है।

अन्य—मदार की कोपल पान में रखकर सरदी में तीन दिन पर्यन्त प्रतिदिन एक कोपल खावे, चौथे रोज डेढ़ कोपल, पांचवें दिन दो कोपल, इसी प्रकार चालीस दिन पर्यन्त आधी आधी कोपल प्रतिदिन अधिक करके खावे।

अन्य—मदार की कली जो खिली न हो जितनी चाहे लेकर हर फूल में एक कालीमिरच रखकर मिट्टी की नई हांडी में रक्खे, उस पर खारीनोन बिछाकर हांडी का मुख मूंदकर तन्दूर में रक्खे। ठण्ढे होने के उपरान्त निकालकर चार रत्ती उसमें से रोज खाया करे।

अन्य—कफ के दमे की नाशकारक—इलायची के दाने, मालकंगनी दो माशे लेकर निगल जावे।

अन्य—अदरक का रस, प्याज का रस, लहसुन का रस, घीकुवार का रस, शहद यह सब औषधि बराबर लेकर चीनी या शीशे के बासन में रखकर पृथ्वी में गाड़े तीन दिन के उपरान्त निकालकर एक कौड़ी के बराबर प्रतिदिन खाया करे।

अन्य—बिसखपरे की थोड़ी सी जड़ प्रतिदिन पान में खावे।

अन्य—तम्बाकू का गुल आग में जलाकर सफेद करके पीसकर दो रत्ती पान में खाया करे बादी और खटाई से पथ्य करे।

अन्य—तम्बाकू का गुल इकट्ठा करके आग में जलावे, जब सफेद हो जावे उसको पानी में कजली करके एक रातदिन रहने दे और प्रतिदिन दो तीन बेर उसको हिलाते रहै, फिर छानकर और उसका जल लेकर पतीली में औटावे, जब नोन हो जावे उसमें दो रत्ती लेकर पान में खाया करे।

अन्य—थूहर की लकड़ी खोखली करके एक दाम फिटकरी उसमें रखकर कपड़मिट्टी करके कंडे की आग में जलावे, जब ठंढा हो जावे फिटकरी निकालकर दो रत्ती के बराबर पान में खाया करे।

अन्य—दमे को गुण करे—चाहे वह सरदी से हो या गरमी से ईसबगोल अंजुली भर बराबर तीन चार महीने सुबह और शाम फांकने से शान्ति होती

है। कफ के श्वासरोग को शान्तिकारक है—पान सरवर नाखून के बराबर पान में रखकर खाया करे।

अन्य—समुद्रफल दो, पीपल चार दोनों को जलाकर पीसकर एक कौड़ी के बराबर पान में रोज खाया करे।

अन्य—मकड़ी का जाला साफ करके गुड़ में लपेटकर खावे, यद्यपि गरमी बहुत करता है परन्तु गुणदायक है।

अन्य—रूसे के पत्तों का रस दमे को गुण करता है।

अन्य—चार तोले गेहूं मदार के रस में तीन दिन भिगोवे, फिर मिट्टी के बरतन में रखकर उसका मुख बन्द करके जंगली कंडों में जलावे, जब ठण्ढा हो जावे पीस छानकर चार तोले गुड़ मिलाकर दो दाम आलमगीरी के बराबर गोलियां बनावे, एक गोली प्रभात को खाया करे और खटाई और बादी से परहेज करे।

अन्य—चिड़चिड़े का नोन थोड़ा खाया करे, हृदय को कफ से साफ करता है और श्वासरोग को दूर करता है। थूहर का नोन भी यही गुण रखता है। मदार का नोन खाना भी श्वासरोग को नाश करता है, उसके नोन के बनाने की यह रीति है—मदार के पत्ते सुखाकर जलाकर रात को बर्तन में भिगो दे, प्रभात को उसका साफ जल लेकर जलावे कि पानी जलकर खार हो जावे। और नोन भी इसी रीति से बनाते हैं।

मुसिल—जो विशेष करके श्वासरोगों को नष्ट करता है जमालगोटा छीलकर चिराग में जलावे जब राख हो जावे पीसकर चार भाग करे, प्रतिदिन एक भाग पान में खावे।

अन्य—भुनी फिटकरी, मिश्री बराबर कूट छानकर फंकी बनावे, खूराक एक माशे से छः माशे पर्यन्त।

अन्य—गेहूं आवश्यकता के अनुकूल नये कुल्हड़ में जलाकर कोयला करके, हल्दी जले हुये गेहूं के बराबर लेकर जलावे, फिर दोनों महीन पीसकर मिलावे। पहिले दिन साढ़े पांच माशे गरम या ठंढे पानी से खावे, दूसरे दिन एक कौड़ी के बराबर अधिक करे, इसी तरह एक माशा इक्कीस दिवस पर्यंत सेवन करे। जो ईश्वर चाहे तो सात दिन के उपरान्त फर्क मालूम होगा।

अन्य—कली मदार की जड़ डेढ़भाग, अजवाइन एक भाग कूटछानकर गुड़ में मिलाकर गोलियां बनावे और एक तोला भर हर प्रभात को खावे।

अन्य—करील की लकड़ी जलाकर उसकी भस्म एक माशा भर खाया करे

अन्य—आंवलासार गन्धक सात माशे, मिश्री चार टंक, शहद में मिलाकर दोमाशे पानपर लगाकर मलकर खावे।

अन्य—पियाबांसा का छोटा सा वृक्ष जड़ और पत्तों समेत छाया में सुखाकर कूटछानकर चूर्ण बनाकर एक हथेलीभर प्रतिदिन खावे।

रन्य—बारहसिंगे का सींग जलाकर पहिले दिन एक माशे भर शहद में मिलाकर खावे फिर एकमाशा रोज अधिक करके एक तोला पर्यन्त पहुँचावे। जो इससे गरमी अधिक हो तो छोड़ दे।

अन्य—मदार की छाल, सहँजने की छाल तीन तीन टंक, जवाखार एक टंक, पीपल सात टंक, सब्ज तूतिया चौथाई टंक, भूनकर चूर्ण बनावे, खूराक आधा टंक खाय।

अन्य—इन्दरायन की जड़ पीपल, सज्जी बराबर कूटछानकर रक्खे, एक माशा सुबह और एकमाशा शाम को खाया करे।

अन्य—लाहौरी नोन पहिले दिन दो माशे पीसकर सोने के समय चाटे और हर रोज आधा माशा अधिक करे कि छः माशे पर्यन्त पहुँच जावे। इस पर जल न पिये, जो प्यास बहुत मालूम हो तो गुनगुना पानी पिये।

अन्य—मदार की पत्ती अढ़ाई पाव, मंडवे की टहनियां टुकड़े टुकड़े करके सवासेर सादी अजवाइन, पन्द्रह दाम अधकुचली आंवलासार गन्धक, सांभर नोन, लाहौरी नोन, कालानोन, जवाखार, सज्जी तीन तीन दाम सह सम्पूर्ण औषधि हांड़ी में भरकर ढकना देकर उसका मुख मिट्टी से बन्द कर दे, उस पर से कपरौटी करके बहुत सी लकड़िकों में रखकर जलावे, जब भस्म होजावे पीसकर खाया करे और थोड़ा थोड़ा बड़ाकर एक अंजुली तक पहुँचावे परंतु इस औषधि से रुधिर आने का भय है अधिक न खावे।

फंकी वैद्य इसका सेवन अवश्य कराते हैं—पुष्करमूल, भारंगी, कालीमिरच, पीपल, कटाई के बीज, काकड़ासिंगी, काला नोन, लाहौरी नोन, सज्जी, बिल्लीलोटन बराबर कूटछानकर फंकी बनावे एक माशा सुबह और एक माशा संध्या को खावे और भोजन में घृत अधिक खाय।

तम्बाकू का शरबत।

तम्बाकू के हरे पत्तों का रस और उसके बराबर गुड़ लेकर शरबत बनाकर साफ करके रक्खे खुराक एक दाम से दो दाम पर्यन्त। निर्बल को

कम दे कि उसको बमन और अतीसार का भय है और श्वासरोग को बहुत ही गुणदायक है पांच दिन में बिल्कुल आराम कर देता है ।

चटनी–कासश्वास को जो कफ से हो उत्तम है–अलसी और इस्पन्द बराबर पीसकर दुगुने शहद में मिलाकर प्रतिदिन उस से एक तोला भर चाटे। बाजों ने लिखा है कि भुनी अलसी तीस टंक, कालीमिरच दश टंक तिगुने शहद में मिलाकर चाटे और बाजे मिरच के बदले पोदीना मिलाते हैं और बाजे केवल तिगुनी अलसी में कवाम करते हैं ।

अन्य–सांस आने को गुण करे–भुना सुहागा तीन तोले, शदद चार तोले मिलाकर रक्खे सोने के समय उसमें से तीन उँगली लेकर चाटे ।

अन्य–कफ के दूर करने में अद्वितीय है–कायफल, सोंठ, पुष्करमूल, काकड़ासिंगी, भारंगी, पीपल बराबर कूटछानकर शहद में मिलाकर रोज एक दाम खाया करे ।

अन्य–बावची, हल्दी, पीपल, आंबाहल्दी, कालीमिरच कालानोन, काला चीता, भुनासुहागा एक एक दाम, सज्जी आधा दाम कूटछानकर खूराक एक मिस्काल गरम जल से ।

अन्य—काकड़ासिंगी, पुष्करमूल, भारंगी, कायफल बराबर कूटछानकर सोंठ भिगोकर उसके पानी में तर करके प्रभात और संध्या एक एक टंक के अनुमान खावे ।

अन्य–कासश्वास को गुण करे–हड़ बहेड़ा दोनों एक एक भाग कूटछानकर एक एक टंक प्रभात और एक टंक शाम को खावे और दो टंक रीठे प्रतिदिन खाना दमे को गुण करता है ।

अन्य–कड़वी कूट दुगुने शहद में मिलाकर चाटे कासश्वास को गुण करे।

अन्य–अलसी, मेथी सात माशे दाख मुनक्के एक तोला पानी में औटाकर साफ करके पिये ।

अन्य—बड़ी कटाई की जड़ टुकड़े टुकड़े करके पावभर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे पिये ।

अन्य—कफ की खांसी को गुण करे–जंगली प्याज, शैतरा, सोंठ, भारंगी, कटाई जड़ और पत्तों समेत, रूसा, बबूल की छाल दो दो दाम यह सम्पूर्ण औषधि जवकुट करके छः हिस्से करे एक भाग आधसेर जल में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये ।

अन्य—दमे और खांसी को गुण करे—छोटी कटांई की जड़, गिलोय, पुष्करमूल, भारंगी, काकड़ासिंगी, नरकचूर तीन तीन माशे एक सेर जल में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये।

हलवा—सिल और रूखी खांसी को गुण करे—मीठे कद्दू के बीजों की गिरी खीरे, ककड़ी के बीजों की गिरी, खशखाश, निशास्ता बराबर शीरा निकालकर सफेद मिश्री या तुरंजबीन शीरखिस्त या बनफ्शे का शरबत मिलाकर पिये।

हलवा—हृद्रोग, सिल, खांसी और दिक अर्थात् जीर्णज्वर और आँतों की गांठ को श्रेष्ठ है और बलकारक और भेजे का तर करनेवाला है—निशास्ते को पानी में औटाकर शक्कर मिलाकर कवाम करे फिर खशखाश और कद्दू के बीजों की गिरी का शीरा मिलाकर हलवा बनावे।

सिल के रोग का यत्न।

सिल फेफड़े के घाव को बोलते हैं। इस रोगबाले को ऐसा ज्वर आवे जो कभी न उतरे, कभी खांसी से रुधिर भी निकलता है और रोगी दिन दिन क्षीण पड़ता जाता है। यद्यपि यह रोग असाध्य है परन्तु इसलिये कि रोगी शीघ्र मर न जावे बासलीक की फस्द खोले फिर ज्वर और कास का यत्न करे।

गोली—जो सिल को गुण करे—संगजराहत, जहरमोहरा, सफेद कत्था, कतीरा, समगअरबी, निशास्ता, सफेद खशखाश, खतमी के बीज, गेरू एक एक टंक, अफीम एकमाशा कूटछानकर गोलियां बनावे और कभी ज्वर की अधिकता में थोड़ा कपूर प्रकृति के अनुसार मिलाया जाता है।

टिकिया—सिल और दिकको गुण करे—गेंगटा जलाकर दश टंक, निशास्ता सफेद, खशखाश, काली खशखाश दश दश टंक, साफ किये खुरफे के बीज, छिली हुई मुलहठी, छिले हुये खतमी के बीज तीन तीन टंक, समगअरबी, कतीरा एक एक टंक, ईसबगोल के लुआब में टिकिया बनावे खूराक दो टंक खाय।

अन्य—सिल के रोग के लिये इस्माईल खां का आजमाया हुआ है—खशखाश सफेद अधकुचला दश टंक, ईसबगोल तीन टंक, आधसेर जल में औटावे, जब आधा पानी रहे आधसेर मिश्री में कवाम करे, ऊपर से सफेद खशखाश, समगअरबी दो दो टंक पीसकर मिलावे, एक तोला खाय।

अन्य–सिल को गुण करे–मुल्तानी मिट्टी दो मिस्काल पीसकर पिये।

लड़कों की पसली के रोग का यत्न।

इस रोग में ज्वर और खांसी होती है और पसली दब जाती है। यह प्रकार का है, एक वह कि उसका मल गरम हो उसमें ज्वर भी होता इससे ऐसी चिंता नहीं, इसमें सात दिन पर्यन्त तेज चीजें कि जिससे भीत के जोड़ छिल जावे जैसे कि तूतिया और जमालगोटा और वैसी कोई औष न दे और उत्तम उपायों से तलीन करना चाहिये कि अमलतास, उन्ना मुनक्के, बनफ्शे शीघ्र ही मल को निकाले, दूसरा वह कि कफ के दोष से इसमें ज्वर और ऊर्ध्वश्वास भी होता है पहिले से इसमें भय है।

जो लड़कों के डब्बे को दूर करे–कमीला, चूना, सब्ज तूतिया, पीलीह बहेड़े की छाल, कत्था सफेद बराबर महीन पीसकर गोलियां बनावे, समय थोड़े घृत में मिलाकर मले।

गोली–केंचुवा, पेठे के बीज, लौंग बराबर लेकर गोलियां बनावे। ए गोली प्रतिदिन दे, दो तीन दिन में रोग दूर हो जावेगा।

गोली–करंजुवे के बीज की गिरी एक, कच्ची सब्ज तूतिया एक रत्ती महीन पीसकर सरसों की बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे

अन्य–एलुवा, जमालगोटा सब्जी दूर करके बराबर लेकर लोहे के बर्त में उस गोमूत्र में जो जनी न हो लोहे के दस्ते से पीसकर मूंग के बराब गोलियां बनावे, आयु के अनुसार दाई के दूध में दे।

अन्य–लड़कों के डब्बे को श्रेष्ठ है और कीड़ों को निकालती है–कमील ८ माशे, हींग १ माशे कूटछानकर दही के पानी में कालीमिरच के बराब गोली बनावे, दूध पीते हुए बालक को एक गोली गरम जल के साथ औ बड़े लड़के के लिये आयु के प्रमाण दे।

अन्य–लड़के की पसली के रोग को शांत करे–चूका की लकड़ी, काली मिरच, पीले हड़ों की छाल, तुरबुद की छाल बराबर पीसकर कालीमिरच बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाय।

अन्य–सूखा केंचुवा पानी में पीसकर एक बूंद लड़के के कन्ठ में टपकावे बहुत गुण करे।

अन्य–बकायन की पत्ती कुछ गरम करके पहले रेंड़ी का तेल पेट प मलें उस पर पत्ती बांधे।

अन्य काढ़ा—कुसुम के फूल एक माशा दो टंक लड़की के मूत्र में औटावे, जब आधा या चतुर्थांश रहे पिलावे।

अन्य—जवासे की जड़ दो माशे पानी में औटाकर लड़के को पिलावे।

अन्य—लड़के की पसली के रोग को दूर करे—सम्मगअरबी एक तोला, एलुवा छः माशे कूटछानकर घीकुवार के रस में मिलाकर लगावे।

अन्य—यह औषधि वैद्यों के मत से निश्चय की गई है कि एक गोली घुड़चढ़ी है अर्थात उसका गुण रोगी को रोग से छुड़ाने में उस मनुष्य के छूटने के अनुसार है कि घोड़े पर सवार हो। यह नुस्खा योगियों का है इसको हुबमिसकोंनिबाज भी बोलते हैं। इसके नुस्खे बहुत हैं उसमें से एक सुगम नुस्खा लिखता हूँ बहुधा रोगियों के रोग की शांति करता है, विशेष करके लड़के की पसली को जो ज्वर के बिना हो गुण करे।

घुड़चढ़ी की गोली।

गन्धक, पारा, हरताब, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, पीलेबाजों की छाल, बहेड़े की छाल, आंवला, सुहागा, तरबूज के बीजों की गिरी, नाजबों के पत्तों का रस बराबर लेकर पहिले पारे और गन्धक को खूब पीसकर शेष ओषधि लोहे के बासन में डालकर लोहे के दस्त से भंगरे के रस में तीन दिन पीसकर मूंग के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

दूसरा घुड़चढ़ी का नुस्खा।

पारा एक दाम, गन्धक सफेद, तुरबुद दो दो टंक कालीमिरच तीन टंक, सुहागा चार टंक, पीले हड़ों की छाल आठ टंक, रेंडी सात टंक, शोधा जमालगोटा आठ टंक इलायची चार टंक कूटछानकर गोलियां बनावे।

यह गोलियां श्वासरोग के लिये हड़, बहेड़े और आमले के साथ और जुकाम के लिये शक्कर के साथ और सूखी खांसी के लिये भंगरे के रस के साथ और बिष के दूर करने को ग्यारह गोलियां चिड़चिड़े के रस के साथ और बात के दूर करने को शहद के साथ और बातिक कोलंज अर्थात् वह पीड़ा जो कूलों अन्तड़ी में पैदा होती है सौंफ के अरक के साथ खाना और लगाना चाहिये।

बकरी के मूत्र में रगड़कर सफेद दाग के लिये गुण करे और आंख के जाले के लिये स्त्री के दूध में रगड़कर लगाना और ताऊन अर्थात् एक फोड़े को जो अंडकोष या कुचों या बगल के नीचे निकलता है नींबू के रस के साथ गुण करे और बातके लिये अदरक के रस से एक गोली निगल जाना श्रेष्ठ है।

पहलू की पीड़ा का यत्न ।

जो पीड़ा के साथ ज्वर और खांसी भी हो वासलीक की फस्द खोले और शेष यत्न जो बड़ी पुस्तकों में लिखे हैं करे जो पहलू की पीड़ा बात और शीत से हो तो वह पीड़ा एक स्थान से दूसरे स्थान में जावे उसमें ज्वर नहीं होता ।

औषधि—पहलू की पीड़ा को जो बात और सरदी से हो गुण करे—थोड़ी सोंठ और थोड़ी अरंड की जड़ कुचलकर पानी में औटाकर पिये ।

लेप—पहलू की पीड़ा को जो ज्वर के बिना हो गुण करे—मदार की जड़ लड़के के मूत्र में खिसकर पीड़ा की जगह पर लगाकर धूप में बैठे और जंगली कंडों से सेंक करे ।

अन्य—बारहसिंगे की सींग, कालीमिरचें पांच पीसकर कुछ गरम करके लेप करे ।

अन्य—हृदयरोग को गुण करे—देवदारु अढ़ाई माशे पीसकर पांच माशे गुड़ मिलाकर गोलियां बनाकर खावे बाजे उसके बराबर सोंठ भी अधिक करते हैं ।

अन्य—छाती की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सँहजने की पत्तियां पकाकर खावे ।

अन्य—मेथी शहद मिलाकर औटाकर पीवे, पुराने हृद्रोग और श्वासरोग को गुण करे ।

खांसी के रोग का यत्न ।

जो खांसी की पहलू की सूजन और फेफड़े की सूजन जातुस्सदर और कलेजे के शोथ और सिल आदि के कारण हो तो उन रोगों को शांत करे । खांसी का विस्तृत वृत्तान्त यह है कि कभी सूखी होती है जो उसमें कोई वस्तु नहीं निकलती है और कभी तर होती है कि उसमें से कफ निकलता है और छाती में खरखराहट होती है । जो यह रोग कफसे हो तो मुंजिज के उपरान्त कफ का जुलाब दे और सूखी खांसी में तर औषधियों का सेवन करे ।

गोली—उस खांसी को दूर करे जो कफ से हो—काकड़ासिगी कूट छानकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे ।

अन्य—तर और खुश्क खांसी को दूर करे—साफ की हुई मुलहठी, कतीरा सम्मगअरबी, निशास्ता, मिश्री बराबर कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे ।

अन्य—जो अजमाया हुआ खांसी को गुण करे—पिस्ते हूलके फूल, पीली हड़ दोनों बराबर लेकर अदरक के रस में मूंग की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—कालीमिरच, सज्जी, चने भूनकर छील करके बराबर लेकर अदरक के रस में गोलियां बनावे।

अन्य—एक सप्ताह में खांसी को दूर करे—हल्दी एक टंक सज्जी सफेद चौथाई टंक, कूटछानकर खरल में पीसकर छोटे बेर की बराबर गोलियां बनाकर प्रातः और संध्या एक एक गोली खाया करे।

अन्य—कालीमिरच, सुहागा, काकड़ासिंगी, लौंग, फिटकरी, भारंगी हड़ की छाल, पीपल, लाहौरी नोन चने की बराबर लेकर सब औशधियों के बराबर सोंठ मिलाकर कूटछानकर नींबू के रस में खरल करके छोटे बेर की बराबर गोलियां बनाकर सोने के समय एक या दो गोलियां खावे।

अन्य—लड़कों की खांसी को जो कफ से हो गुण करे—सुहागा आधा कच्चा और आधा भूनकर उसके बराबर कालीमिरच लेकर घिकुवार के रस में खरल करके चने की बराबर गोलियां बनाकर सेवन करे।

अन्य—छोटी कटाई की जड़, मुलहठी, काकड़ासिंगी, कुलींजन, हड़ की छाल पानी में औटाकर बबूल की छाल मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—श्वास कास को नाश करे—कालीमिरच, पीपल, करंजुवे के बीजों की गिरी, कटाई के बीज, भुना सुहागा, सफेद कत्था एक एक टंक, अफीम आधा टंक, कूटछानकर एक पहर अदरक के रस में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर मुख में रक्खे।

अन्य—हड़ की छाल, करंज के बीज की गिरी, काकड़ासिंगी, कालीमिरच, मुलहठी बराबर कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर मुँह में रक्खे।

अन्य—थोड़ी खशखाश भूनकर पीसकर थोड़ा लाहौरी नोन और कालीमिरच मिलाकर एक माशे के बराबर प्रतिदिन दो तीन बेर खाया करे।

अन्य—शलगम पर कपरौटी करके तन्दूर में पकावे, उसका कुछ गरम पानी निचोड़कर मिश्री मिलाकर पिये।

गोली—जो कफ की खांसी को दूर करे—मुलहठी कालीमिरच भूनकर उसके

बराबर मिश्री मिलाकर कूटछानकर चने के बराबर गोलियां बनावे, रात्रि को दो गोलियां मुख में रख ले।

अन्य—हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, दारचीनी, फिटकरी, सुहागा, चीत, लौंग। लाहौरी नोन, सोंठ बराबर ले और सुहागे को भूनकर छोटे बेर की बराबर गोलियां बनावे, एक गोली प्रभात एक सन्ध्या खावे।

अन्य—जो कफ की खांसी को गुण करे—पँवार के बीज पीसकर चार माशे की बराबर तीन सप्ताह पर्यंत खावे।

अन्य—केले का पत्ता जलाकर उसकी भस्म लेकर थोड़े नोन में मिलाकर प्रतिदिन कईबेर खाया करे।

अन्य—गुदा पर तेल लगाना विशेष करके कास रोग को शांत करता है।

अन्य—पुरानी खांसी को गुण करे—पीपल चिलम पर रखकर तम्बाकू की तरह पिये।

अत्य—गले में लटकाना विशेष करके श्रेष्ठ है—रियाज आलमगिरी में लिखा है कि कौवे की बीट थैली में बांधकर लड़के के गले में लटकाये, खांसी दूर होगी।

अन्य—कफ की खांसी को गुण करे—कुचला घी में जलाकर पीसकर रक्खे, प्रभात को दो रत्ती उसमें से खावे।

हरीरा—खांसी के लिये श्रेष्ठ है—गेहूँ की भूसी पानी में मलकर उसका रस निकालकर बादाम की गिरी का रस और निशास्ता और शक्कर मिलाकर हरीरा बनाकर कुछ पिये।

अन्य—लाहौरी नोन, साम्हर नोन, काला नोन, अजवाइन, नमक, नपनी, सुहागा सम्पूर्ण औषधि बराबर लेकर मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर ऊपर से कपरौटी करके आध गज का गहरा एक गढ़ा खोदे, उसमें जंगली कंडे भरकर उसके बीच में कुल्हड़ रखकर जलावे, जब ठंढा होजावे जलाकर पीसकर उसके बराबर समगअरबी मिलाकर एक माशा प्रतिदिन खाया करे।

चूर्ण—खांसी को गुण करे—त्रिफला, लाहौरी नोन, अनार की छाल, कौंच के बीजों की गिरी, रूसे के पत्तों की राख, अवासे की राख एक एक भाग, पीपल, कालीमिरच आधा आधा भाग कूट छानकर एक माशा सुबह और शाम खायाकरे तीन दिन में आराम होवे।

अन्य—अनार की छाल जो बिलायती हो तो अतिउत्तम नहीं तो पीपल, काकड़ासिंगी छः छः माशे, लाहौरी नोन, काला नोन एक एक तोला, हड़ की छाल दो तोले, कूटछानकर फंकी बनाकर प्रतिदिन कई बेर खाया करे।

अन्य—काकड़ासिंगी, छिली हुई मुलहठी, बबूर का गोंद, खशखाश का पोस्ता, पीपल, समंदरफल की गिरी बराबर कूटछानकर फंकी बनावे, तीन माशे के अनुमान खावे।

जूफा का शरबत।

कफ की खांसी को गुणकारक—साफ की हुई मुलहठी, सौंफ, खतमी के बीज, परसियावशान दो दो टंक, जूफा, मुलहठी एक एक टंक, लसोढ़ा तीस टंक, खशखाश के पोस्ते बीजों समेत ग्यारह, पावभर शरबत बनावे।

अमलतास की गुलकन्द।

तबियत को मुलायम करती है, कफ छाती से साफ करती है खांसी को मुफीद है—अमलतास एक भाग, मिश्री दो भाग, यथा बिधि गुलकन्द बनावे और एक तोला भर खावे।

अमलतास की चटनी।

जो प्रकृति को नरम करनेवाली और कफ को हृदय से दूर करती है और खांसी को शांत करती है—अमलतास जल में कजली करके तीन भाव शक्कर में कवाम करे और दो तोले सौंफ का अरक या उसके रस के साथ खावे।

हालिम की चटनी।

कफ की खांसी को दूर करे और मल को हृदय पर गिरने से रोकती और पहलू की पीड़ा को दूर करती है—हालिम कूटकर शहद में मिलाकर चाटे।

अन्य—सरसों पीसकर शहद में मिलाकर चाटना तर खांसी को गुण करता है।

अन्य—खांसी और ऊर्ध्वश्वास और लड़कों के खरखर करने को गुण करे—बड़े मुनक्के दो दाम, उत्तम शहद तीन दाम, कालीमिरच, पियाबांसा, भारंगी, नागरमोथा, काकड़ासिंगी छः छः माशे, अतीस, बच खुरासानी चार चार माशे कूटछानकर शहद में मिलाकर आयुप्रमाण दाई के दूध में मिलाकर दे।

खशखाश की चटनी।

उस खांसी को जो नजले से हो गुण करे—खशखाश के पोस्ते दानोंसमेत पीस, लसोढ़ा उसी के बराबर, सौंफ, खतमी के बीज एक एक तोला आध सेर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ करके पावभर शक्कर में कवाम करे फिर साफ की हुई मुलहठी दो टंक, समगअरबी एक टंक, कतीरा आधा टंक पीसकर मिलावे, सोने के समय और प्रभात को एक तोला उसमें से चाटे।

गोंदी की चटनी।

खांसी को गुण करे—गोंदी लेकर उसका लुआब निकालकर बराबर की शक्कर मिलाकर कवाम के अंत में थोड़ा बबूल का गोंद पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य—लड़कों की खांसी और वमन को गुण करे—काकड़ासिंगी, अतीस, पीपल, मुलहठी, समगअरबी बराबर कूटछानकर शहद में मिलाकर चाटे।

अन्य—खांसी को गुण करे—समगअरबी डेढ़ तोला, कतीरा, निशास्ता एक एक तोला, छिली हुई मुलहठी आधा तोला, सफेद मिश्री बारह दाम, आलमगीरी और कभी गरमी के समय तरबूज के बीजों की गिरी एक तोला अधिक करते हैं।

अन्य—लड़कों के खरखर करने और कफ की खांसी को गुण करे और उसका सदा खाना लड़कों की पुष्टता और बल को करता है—काकड़ासिंगी पीसकर शहद मिलाकर लड़के को चटावे। खूराक आयु के प्रमाण।

अन्य—खांसी को गुण करे और औषधि से बल में अधिक है—मुनक्के बड़े दाने निकालकर, काकड़ासिंगी, दारचीनी मिलाकर चटावे।

अन्य—नागरमोथा, मुलहठी कूटछानकर शहद में मिलाकर थोड़ा उससे दाई के दूध में मिलाकर लड़के को दे।

पुस्तक निर्म्माता की बनाई हुई चटनी।

जो खांसी को गुण करे—छिली हुई मुलहठी, मुनक्के बड़े चार चार टंक, खशखाश के पोस्ते दानोंसमेत सात, लसोढ़े, अलसी दो टंक, सादी अंजीरें तीन, सौंफ की जड़, जूफा एक टंक सबको तीन पाव जल में औटावे, जब पाव भर जल शेष रहे साफ करके पाव भर मिश्री में कवाम करे, फिर बादाम की गिरी, निशास्ता, चिलगोजे की गिरी चार टंक, काकड़ासिंगी दो टंक, रुब्बिस्सूस, समगअरबी एक एक टंक, पीपल आधा टंक, मुनक्का एक माशा पीसकर मिलावे, एक मिस्काल से दो मिस्काल पर्यंत खावे।

काढ़ा पुस्तक निर्म्माता का वर्णित ।

जो खांसी को गुण करे—गावजबां एक मिस्काल, सौंफ एक टंक, मुलहठी चार टंक, एक खशखाश का पोस्ता, समगअरबी आधा टंक, लसोढ़े के सत्रह दाने, खतमी के बीज एक टंक, बड़े मुनक्के ग्यारह दाने, मिश्री यथाविधि बनाकर सेवन करे ।

अन्य—गेहूं चार टंक, पावभर पानी में औटावे और दो माशे या एक माशे लाहौरीनोन डाले जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये, एक सप्ताह में खांसी दूर होगी ।

अन्य—उस खांसी को जो नजले से हो शीघ्र ही गुण करती है—खशखाश के पोस्तों की डंडी तोड़ करके चार, लाहौरीनोन दो माशे, अढ़ाई पाव जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके सोने के समय पिये ।

रुधिर के थूकने का यत्न ।

जो खँखार से रुधिर आवे तो हृदय की गरमी से है और जो बिना खँखार के आवे भेजे से है और जो खांसी में आवे गले और मुँह कलेजे से है।

यत्न—जो भेजे से रुधिर आवे—सरेरू की फस्द खोले और जो हृदय से आवे तो बासलीक की फस्द और मुख के किसी जोड़ से आवे चारों रगों की फस्द खोले ।

कहरबा की टिकिया ।

मुँह से लोहू आने और स्त्री के अधिक रज के गिरने और रुधिर के मूत्र को गुण करे—कहरबा दो टंक, खुरफे के बीज, घोंघा जलाया हुआ, धोया हुआ धनियां, भुना निशास्ता, गेरू, अकाकिया, कतीरा एक २ दाम लेकर टिकिया बनावे दो टंक खावे ।

गुलनार की टिकिया ।

खून थूकने के लिये गुण करे—चार दाम चूके के बीज, धनियां दो टंक, कतीरा, सम्मगअरबी, सहँजना, माजू एक एक टंक की टिकिया बनावे, दो टंक खावे, कदाचित् बद्धकोष्ठ अर्थात् कब्ज करने की आवश्यकता हो तो अढ़ाई रत्ती अफीम अधिक करे ।

अन्य—सम्मगअरबी, मुलतानी मिट्टी, कतीरा फंकी बनाकर सात माशे खशखाश के और अदरक के रस में मिलाकर पिये ।

बराबर मिश्री मिलाकर कूटछानकर चने के बराबर गोलियां बनावे, रात्रि को दो गोलियां मुख में रख ले।

अन्य—हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, काकड़ासिंगी, भारंगी, दारचीनी, फिटकरी, सुहागा, चीत, लौंग। लाहौरी नोन, सोंठ बराबर ले और सुहागे को भूनकर छोटे बेर की बराबर गोलियां बनावे, एक गोली प्रभात एक सन्ध्या खावे।

अन्य—जो कफ की खांसी को गुण करे—पँवार के बीज पीसकर चार माशे की बराबर तीन सप्ताह पर्यंत खावे।

अन्य—केले का पत्ता जलाकर उसकी भस्म लेकर थोड़े नोन में मिलाकर प्रतिदिन कईबेर खाया करे।

अन्य—गुदा पर तेल लगाना विशेष करके कास रोग को शांत करता है।

अन्य—पुरानी खांसी को गुण करे—पीपल चिलम पर रखकर तम्बाकू की तरह पिये।

अन्य—गले में लटकाना विशेष करके श्रेष्ठ है—रियाज आलमगिरी में लिखा है कि कौवे की बीट थैली में बांधकर लड़के के गले में लटकाये, खांसी दूर होगी।

अन्य—कफ की खांसी को गुण करे—कुचला घी में जलाकर पीसकर रक्खे, प्रभात को दो रत्ती उसमें से खावे।

हरीरा—खांसी के लिये श्रेष्ठ है—गेहूँ की भूसी पानी में मलकर उसका रस निकालकर बादाम की गिरी का रस और निशास्ता और शक्कर मिलाकर हरीरा बनाकर कुछ पिये।

अन्य—लाहौरी नोन, साम्हर नोन, काला नोन, अजवाइन, नमक, नपनी, सुहागा सम्पूर्ण औषधि बराबर लेकर मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर ऊपर से कपरौटी करके आध गज का गहरा एक गढ़ा खोदे, उसमें जंगली कंडे भरकर उसके बीच में कुल्हड़ रखकर जलावे, जब ठंढा होजावे जलाकर पीसकर उसके बराबर समगअरबी मिलाकर एक माशा प्रतिदिन खाया करे।

चूर्ण—खांसी को गुण करे—त्रिफला, लाहौरी नोन, अनार की छाल, कौंच के बीजों की गिरी, रूसे के पत्तों की राख, जवासे की राख एक एक भाग, पीपल, कालीमिरच आधा आधा भाग कूट छानकर एक माशा सुबह और शाम खायाकरे तीन दिन में आराम होवे।

अन्य—अनार की छाल जो बिलायती हो तो अतिउत्तम नहीं तो पीपल, काकड़ासिंगी छः छः माशे, लाहौरी नोन, काला नोन एक एक तोला, हड़ की छाल दो तोले, कूटछानकर फंकी बनाकर प्रतिदिन कई बेर खाया करे।

अन्य—काकड़ासिंगी, छिली हुई मुलहठी, बबूर का गोंद, खशखाश का पोस्ता, पीपल, समंदरफल की गिरी बराबर कूटछानकर फंकी बनावे, तीन माशे के अनुमान खावे।

जूफा का शरबत।

कफ की खांसी को गुणकारक—साफ की हुई मुलहठी, सौंफ, खतमी के बीज, परसियावशान दो दो टंक, जूफा, मुलहठी एक एक टंक, लसोढ़ा तीस टंक, खशखाश के पोस्ते बीजों समेत ग्यारह, यावश्र शरबत बनावे।

अमलतास की गुलकन्द।

तबियत को मुलायम करती है, कफ छाती से साफ करती है खांसी को मुफीद है—अमलतास एक भाग, मिश्री दो भाग, यथा बिधि गुलकन्द बनावे और एक तोला भर खावे।

अमलतास की चटनी।

जो प्रकृति को नरम करनेवाली और कफ को हृदय से दूर करती है और खांसी को शांत करती है—अमलतास जल में कजली करके तीन भाग शक्कर में कवाम करे और दो तोले सौंफ का अर्क या उसके रस के साथ खावे।

हालिम की चटनी।

कफ की खांसी को दूर करे और मल को हृदय पर गिरने से रोकती और पहलू की पीड़ा को दूर करती है—हालिम कूटकर शहद में मिलाकर चाटे।

अन्य—सरसों पीसकर शहद में मिलाकर चाटना तर खांसी को गुण करता है।

अन्य—खांसी और ऊर्ध्वश्वास और लड़कों के खरखर करने को गुण करे—बड़े मुनक्के दो दाम, उत्तम शहद तीन दाम, कालीमिरच, पियाबांसा, भारंगी, नागरमोथा, काकड़ासिंगी छः छः माशे, अतीस, बच खुरासानी चार चार माशे कूटछानकर शहद में मिलाकर आयुप्रमाण दाई के दूध में मिलाकर दे।

खशखाश की चटनी।

उस खांसी को जो नजले से हो गुण करे—खशखाश के पोस्ते दानोंसमेत पीस, लसोढ़ा उसी के बराबर, सौंफ, खतमी के बीज एक एक तोला आध सेर पानी में औटावे जब आधा रहे साफ करके पावभर शक्कर में कवाम करे फिर साफ की हुई मुलहठी दो टंक, समगअरबी एक टंक, कतीरा आधा टंक पीसकर मिलावे, सोने के समय और प्रभात को एक तोला उसमें से चाटे।

गोंदी की चटनी।

खांसी को गुण करे—गोंदी लेकर उसका लुआब निकालकर बराबर की शक्कर मिलाकर कवाम के अंत में थोड़ा बबूल का गोंद पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य—लड़कों की खांसी और वमन को गुण करे—काकड़ासिंगी, अतीस, पीपल, मुलहठी, समगअरबी बराबर कूटछानकर शहद में मिलाकर चाटे।

अन्य—खांसी को गुण करे—समगअरबी डेढ़ तोला, कतीरा, निशास्ता एक एक तोला, छिली हुई मुलहठी आधा तोला, सफेद मिश्री बारह दाम, आलमगीरी और कभी गरमी के समय तरबूज के बीजों की गिरी एक तोला अधिक करते हैं।

अन्य—लड़कों के खरखर करने और कफ की खांसी को गुण करे और उसका सदा खाना लड़कों की पुष्टता और बल को करता है—काकड़ासिंगी पीसकर शहद मिलाकर लड़के को चटावे। खूराक आयु के प्रमाण।

अन्य—खांसी को गुण करे और औषधि से बल में अधिक है—मुनक्के बड़े दाने निकालकर, काकड़ासिंगी, दारचीनी मिलाकर चटावे।

अन्य—नागरमोथा, मुलहठी कूटछानकर शहद में मिलाकर थोड़ा उससे दाई के दूध में मिलाकर लड़के को दे।

पुस्तक निर्म्माता की बनाई हुई चटनी।

जो खांसी को गुण करे—छिली हुई मुलहठी, मुनक्के बड़े चार चार टंक, खशखाश के पोस्ते दानोंसमेत सात, लसोढ़े, अलसी दो टंक, सादी अंजीरें तीन, सौंफ की जड़, जूफा एक टंक सबको तीन पाव जल में औटावे, जब पाव भर जल शेष रहे साफ करके पाव भर मिश्री में कवाम करे, फिर बादाम की गिरी, निशास्ता, चिलगोजे की गिरी चार टंक, काकड़ासिंगी दो टंक, रब्बिस्सूस, समगअरबी एक एक टंक, पीपल आधा टंक, मुनक्का एक माशा पीसकर मिलावे, एक मिस्काल से दो मिस्काल पर्यंत खावे।

काढ़ा पुस्तक निर्म्माता का वर्णित ।

जो खांसी को गुण करे—गावजबां एक मिस्काल, सौंफ एक टंक, मुलहठी चार टंक, एक खशखाश का पोस्ता, समगअरबी आधा टंक, लसोढ़े के सत्रह दाने, खतमी के बीज एक टंक, बड़े मुनक्के ग्यारह दाने, मिश्री यथाविधि बनाकर सेवन करे ।

अन्य—गेहूं चार टंक, पावभर पानी में औटावे और दो माशे या एक माशे लाहौरीनोन डाले जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये, एक सप्ताह में खांसी दूर होगी ।

अन्य—उस खांसी को जो नजले से हो शीघ्र ही गुण करती है—खशखाश के पोस्तों की डंडी तोड़ करके चार, लाहौरीनोन दो माशे, अढ़ाई पाव जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके सोने के समय पिये ।

रुधिर के थूकने का यत्न ।

जो खँखार से रुधिर आवे तो हृदय की गरमी से है और जो बिना खँखार के आवे भेजे से है और जो खांसी में आवे गले और मुँह कलेजे से है।

यत्न—जो भेजे से रुधिर आवे—सरेरू की फस्द खोले और जो हृदय से आवे तो बासलीक की फस्द और मुख के किसी जोड़ से आवे चारों रगों की फस्द खोले ।

कहरबा की टिकिया ।

मुँह से लोहू आने और स्त्री के अधिक रज के गिरने और रुधिर के मूत्र को गुण करे—कहरबा दो टंक, खुरफे के बीज, घोंघा जलाया हुआ, धोया हुआ धनियां, भुना निशास्ता, गेरू, अकाकिया, कतीरा एक २ दाम लेकर टिकिया बनावे दो टंक खावे ।

गुलनार की टिकिया ।

खून थूकने के लिये गुण करे—चार दाम चूके के बीज, धनियां दो टंक, कतीरा, सम्मगअरबी, सहँजना, माजू एक एक टंक की टिकिया बनावे, दो टंक खावे, कदाचित् बद्धकोष्ठ अर्थात् कब्ज करने की आवश्यकता हो तो अढ़ाई रत्ती अफीम अधिक करे ।

अन्य—सम्मगअरबी, मुलतानी मिट्टी, कतीरा फंकी बनाकर सात माशे खशखाश के और अदरक के रस में मिलाकर पिये ।

अन्य—गेरू, कुन्दर, गुलअनार सम्ममअरबी बराबर पीस कर आमले के शरबत में मिलाकर खावे।

आश्चर्यदायक औषधि।

थूक में लहू आने और रुधिर के बमन करने के लिये—बबूल की कोपल, अनार की पत्तियां, आमला, चार चार माशे, धनियां दो माशे रात्रि को जल में भिगोकर सबको पीसकर साफ करके थोड़ी मिश्री या शक्कर मिलाकर पिये।

काढ़ा—लोहू थूकने को गुण करे—गिलोय, बाँसे की पत्तियां एक एक तोला औटाकर साफ करके दो टंक समगअरबी पीसकर मिलाकर पिये।

कल्क—गुलखैरू एक तोले भर रात्रि को पानी में भिगोकर प्रातःकाल मलकर साफ करके पिये।

हुब्बुल्लास का शरबत।

रुधिर के थूकने को जो खफकान अर्थात् उन्माद और इसहाल अर्थात् अतीसार के साथ हो गुण करे—हुब्बुल्लास चार टंक, चन्दनचूर, छिला हुआ आमला, गुलनार दो दो टंक पावभर शक्कर सफेद में कवाम करे और शीतल होने के उपरान्त भुनी सम्मगअरबी एक टंक पीसकर अधिक करे।

अन्य—लहू थूकने को गुण करे—बांसे की पत्तियां जो सूखी हों आधा तोला, जो गीली हों एक तोला, पीसकर शहद में मिलाकर खावे।

अन्य—दो टंक खुरपे का जल पीना लहू थूकने को दूर करता है।

अन्य—लहू थूकने और रुधिर के वमन को श्रेष्ठ है—गोभी पानी में पीस-कर एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—खतमी के बीज, छोटी माईं कूटछानकर पानी में मिलाकर पिये।

अन्य—अफीम खाना लहू थूकने को गुण करता है। जो तरकारियां कि लहूथूकने को श्रेष्ठ हैं यह है—तुरई, कद्दू, पालक का साग, खुरफा लालसाग, छिले हुये मसूर।

अन्य—कचनार और उसकी कोपल का रस लहू थूकने को गुण करे।

मानसी रोगों का यत्न।

खफकान अर्थात् हौलदिल जिसको संस्कृत में उन्माद रोग बोलते हैं दो प्रकार का है—एक यह कि उसका कारण मन में हो, दूसरे वह कि किसी दूसरे अंग के संयुक्त होने में होवे जैसे कि कोष्ठ, कलेजा, भेजा, आंतों और

गर्भाशय आदि से हो जो उन्माद किसी अंग के संयुक्त होने से हो उस अंग का यत्न करे और जो अंग के संयुक्त होने से न हो तो मल को निकाले और सादे खफकान में प्रकृति को सम करना काफी है।

चन्दन का खमीरा।

जो पैत्तिक उन्माद के लिये श्रेष्ठ है—चन्दन का बूरा बीस मिस्काल रात को जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर साफ करके आधसेर शक्कर में कवाम करे जो कवाम पतला हो तो उसको चंदन का शरबत बोलते हैं और जो खट्टा करना चाहे तो नींबू का रस मिलावे।

गावजबां का शरबत।

जो मन को बलकारक और उन्माद को उत्तम है—गावजबां पावभर मिश्री एक सेर यथाबिधि शरबत बनावे।

रेशम का शरबत।

दिल को बलकारक है—कच्चा रेशम चालीस टंक तीन दिन जल में भिगोकर औटावे जब तृतीयांश शेष रहे खौलते में साजिज, बालछड़ दो दो मिस्काल, चन्दनचूरा, इलायची के दाने चार चार मिस्काल एक थैली में बांधकर डाले फिर शीघ्र ही मलकर साफ करके आधसेर कन्द में कवाम करे।

रुई के फूलों का शरबत।

मन को बल और हर्ष देता है और उन्माद, दाह और विक्षिप्तता को दूर करता है—रुई के फूल गुलाब में जो गुलाब न हो पानी में औटावे जब आधा शेष रहे दूने गुड़ में कवाम करे खूराक बीस टंक पर्यन्त।

रंगतरे का शरबत।

पैत्तिक उन्माद को बलकारक है पुस्तक निर्माता ने बनाया है—रंगतरे का ताजा फांकों से निकालकर बीज दूर करके निचोड़कर उसका स्वच्छ रस लेकर बराबर मिश्री में कवाम करे और अन्त में थोड़ा गुलाब मिलावे।

अनन्नास का शरबत।

निर्माता का बनाया हुआ—अनन्नास का रस एक भाग, मिश्री दो भाग, यथाबिधि कवाम करे और जो खुश्क अधिक करे तो थोड़ा गुलाब उत्तम और बलकारक होगा।

ताम्बूल का शरबत ।

शीत के उन्माद रोग को बल देता है और निसियान और कफ और मन्द अग्नि को दूर करता है—सौ ताम्बूल पक्के पीले रंग के कूटकर पानी में औटाकर साफ करके आधसेर शक्कर के साथ कवाम करे जो उसमें थोड़ा गुलाब मिलावे तो बलकारक है ।

अन्य—जो पैत्तिक हौल दिल को गुण करे और मन को गुणकारक है—जहरमोहरा घिसकर एक टंक गुलाब के फूल, सूखी धनियां, छिला हुआ खुरफा, चन्दन, गुलाब में पीसकर यह सम्पूर्ण औषध दो दो टंक, गावजबां बंशलोचन एक टंक, मुश्क आधा टंक, दूनी सफेद शक्कर, शहद बराबर ।

अन्य—शीत के उन्माद को श्रेष्ठ है—नरकचूर, बालछड़, अशना, सोंठ पीपल एक एक टंक, साजिज हिन्दी, बड़ी इलायची के दाने दो दो टंक लौंग, कस्तूरी आधा आधा टंक, शहद तिगुना ।

अन्य—शीत के खफकान अर्थात् उन्माद को नाश करता है और जीव को रक्षित रखता है और इन्द्री, कोष्ठ और तिल्ली को बल देता है और पसीने की दुर्गंधि को अच्छा करता है और वायु का पचाने वाला आंतों को दुरुस्त करता और मुख की दुर्गंधि को दूर करता है और शिर पीड़ा और उत्पात कारक मल को नष्ट करता है और प्रसूति और इस्तस्का में गुण करता है—साजिज हिन्दी पीसकर दश दाम, शक्कर सफेद पाव भर यथाबिधि पाक बनावे चार टंक पर्यन्त खावे ।

जहरमोहरा ।

जो अतिसुगम औषध मन को बलदायक है—जहरमोहरा घिसा हुआ अकीक पत्थर, यशव पत्थर, बशद मूंगा दो दो भाग गुलाब में घिसकर नारियल दरियाई, जदवार, तवाशीर एक एक भाग गुलाब में घिसकर सम्पूर्ण औषधियों को इकट्ठा करके खरल करके गोलियां बनावे, फिर चौड़े पत्थर से चिकना करके उस पर सोने के वर्क लगावे, समय पर चार रत्ती के बराबर गुलाब में घिसकर पिये ।

चांदनी के फूलों की गुलकन्द ।

पैत्तिक उन्माद रोग को गुण करे—चांदनी के फूल सौ, सफेद मिश्री सौ टंक, गुलकन्द बनाये और थोड़ा गुलाब मिलाकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और एक तोला भर खावे ।

सेवती का गुलकन्द ।

हिन्दुस्तान के प्राचीन वैद्यों का सेवित है उन्माद रोग को गुण करे और प्रकृति को नरम करे—हरे सेवती के फूल की पँखुड़ी से जीरा निकालकर दुगुनी मिश्री में मिलाकर शीशे में भरकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और तीन हरे सेवती के फूलों का जीरा दूर करके चाबना और खाना उन्माद रोग को दूर करे ।

गुड़हल का गुलकन्द ।

मन, इन्द्री और धारणा शक्ति को बल देता है, हर्ष अधिक करता और विशेष करके उन्माद रोग को दूर करता है । गुड़हल के फूल सब्जी निकालकर दूनी मिश्री में मलकर रक्खे ।

हरसिंगार का गुलकन्द ।

जो मन को बलदायक और पैत्तिक उन्माद के लिये अद्वितीय औषधि है—हरसिंगार के फूलों की डंडी दूर करके उसकी सफेदी लेकर दूनी शक्कर में मलकर शीशे में भरकर चालीस रात चाँदनी में रक्खे और प्रभात को एक तोला उसमें से खाया करे ।

अन्य—पैत्तिक उन्मादरोग के लिये—रक्तचन्दन आधा तोला, आमला, धनियां पांच-पांच माशे आधपाव जल में भिगोकर प्रभात को उसका साफ जल लेकर दो दाम सफेद शक्कर मिला कर खावे ।

काढ़ा—शीत के हौलदिल के लिये—गावजबां दो टंक, लौंग ४ औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

माजून मन को बलदायक ।

आमले का मुरब्बा, हड़ का मुरब्बा सब दो, गावजबां दो टंक, चन्दन घिसकर एक टंक, गुलाब के फूल दो टंक रामतुलसी, गावजबां के फूल एक दाम, चँबेली का गुलकन्द चार तोले, किसमिस साढ़े चार माशे, मिश्री तिगुनी ।

औषधि—चम्पे के फूल शहद में मिलाकर खावे पित्त के हौलदिल को गुण करे—चार कंघी का रस पानी में मिलाकर मिश्री से मीठा करके पिये ।

अन्य—पित्त के हौलदिल के लिये अद्वितीय है—नाजबो के बीज एक तोला रात्रि को जल में भिगोकर वायु में रक्खे, प्रभात को दो दाम शक्कर मिलाकर चमचे से निगल जावे ।

अन्य—गेरू, कुन्दर, गुलअनार सम्मगअरबी बराबर पीस कर आमले के शरबत में मिलाकर खावे।

आश्चर्यदायक औषधि।

थूक में लहू आने और रुधिर के बमन करने के लिये—बबूल की कोपल, अनार की पत्तियां, आमला, चार चार माशे, धनियां दो माशे रात्रि को जल में भिगोकर सबको पीसकर साफ करके थोड़ी मिश्री या शक्कर मिलाकर पिये।

काढ़ा—लोहू थूकने को गुण करे—गिलोय, बांसे की पत्तियां एक एक तोला औटाकर साफ करके दो टंक सम्मगअरबी पीसकर मिलाकर पिये।

कल्क—गुलखैरू एक तोले भर रात्रि को पानी में भिगोकर प्रातःकाल मलकर साफ करके पिये।

हुब्बुल्लास का शरबत।

रुधिर के थूकने को जो खफकान अर्थात् उन्माद और इसहाल अर्थात् अतीसार के साथ हो गुण करे—हुब्बुल्लास चार टंक, चन्दनचूर, छिला हुआ आमला, गुलनार दो दो टंक पावभर शक्कर सफेद में कवाम करे और शीतल होने के उपरान्त भुनी सम्मगअरबी एक टंक पीसकर अधिक करे।

अन्य—लहू थूकने को गुण करे—बांसे की पत्तियां जो सूखी हों आधा तोला, जो गीली हों एक तोला, पीसकर शहद में मिलाकर खावे।

अन्य—दो टंक खुरपे का जल पीना लहू थूकने को दूर करता है।

अन्य—लहू थूकने और रुधिर के वमन को श्रेष्ठ है—गोभी पानी में पीसकर एक टंक के अनुमान खावे।

अन्य—खतमी के बीज, छोटी माईं कूटछानकर पानी में मिलाकर पिये।

अन्य—अफीम खाना लहू थूकने को गुण करता है। जो तरकारियां कि लहूथूकने को श्रेष्ठ हैं यह है—तुरई, कद्दू, पालक का साग, खुरफा लालसाग, छिले हुये मसूर।

अन्य—कचनार और उसकी कोपल का रस लहू थूकने को गुण करे।

मानसी रोगों का यत्न।

खफकान अर्थात् हौलदिल जिसको संस्कृत में उन्माद रोग बोलते हैं दो प्रकार का है—एक यह कि उसका कारण मन में हो, दूसरे वह कि किसी दूसरे अंग के संयुक्त होने में होवे जैसे कि कोष्ठ, कलेजा, भेजा, आंतों और

र्भाशय आदि से हो जो उन्माद किसी अंग के संयुक्त होने से हो उस अंग का यत्न करे और जो अंग के संयुक्त होने से न हो तो मल को निकाले और ादे खफकान में प्रकृति को सम करना काफी है।

चन्दन का खमीरा।

जो पैत्तिक उन्माद के लिये श्रेष्ठ है–चन्दन का बूरा बीस मिस्काल रात ो जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जल में भिगोकर प्रातःकाल औटाकर ाफ करके आधसेर शक्कर में कवाम करे जो कवाम पतला हो तो उसको दन का शरबत बोलते हैं और जो खट्टा करना चाहे तो नींबू का स मिलावे।

गावजबां का शरबत।

जो मन को बलकारक और उन्माद को उत्तम है–गावजबां पावभर मिश्री क सेर यथाबिधि शरबत बनावे।

रेशम का शरबत।

दिल को बलकारक है–कच्चा रेशम चालीस टंक तीन दिन जल में गोकर औटावे जब तृतीयांश शेष रहे खौलते में साजिज, बालछड़ दो दो स्काल, चन्दनचूरा, इलायची के दाने चार चार मिस्काल एक थैली में धकर डाले फिर शीघ्र ही मलकर साफ करके आधसेर कन्द में कवाम करे।

रुई के फूलों का शरबत।

मन को बल और हर्ष देता है और उन्माद, दाह और विक्षिप्तता को दूर रता है–रुई के फूल गुलाब में जो गुलाब न हो पानी में औटावे जब आधा र रहे दूने गुड़ में कवाम करे खूराक बीस टंक पर्यन्त।

रंगतरे का शरबत।

पैत्तिक उन्माद को बलकारक है पुस्तक निर्माता ने बनाया है–रंगतरे का ा फांकों से निकालकर बीज दूर करके निचोड़कर उसका स्वच्छ रस र बराबर मिश्री में कवाम करे और अन्त में थोड़ा गुलाब मिलावे।

अनन्नास का शरबत।

निर्माता का बनाया हुआ–अनन्नास का रस एक भाग, मिश्री दो भाग, ाबिधि कवाम करे और जो खुश्क अधिक करे तो थोड़ा गुलाब उत्तम र बलकारक होगा।

ताम्बूल का शरबत ।

शीत के उन्माद रोग को बल देता है और निसियान और कफ और मन्द अग्नि को दूर करता है—सौ ताम्बूल पक्के पीले रंग के कूटकर पानी में औटाकर साफ करके आधसेर शक्कर के साथ कवाम करे जो उसमें थोड़ा गुलाब मिलावे तो बलकारक है ।

अन्य—जो पैत्तिक हौल दिल को गुण करे और मन को गुणकारक है—जहरमोहरा घिसकर एक टंक गुलाब के फूल, सूखी धनियां, छिला हुआ खुरफा, चन्दन, गुलाब में पीसकर यह सम्पूर्ण औषध दो दो टंक, गावजबां बंशलोचन एक टंक, मुश्क आधा टंक, दूनी सफेद शक्कर, शहद बराबर ।

अन्य—शीत के उन्माद को श्रेष्ठ है—नरकचूर, बालछड़, अशना, सोंठ पीपल एक एक टंक, साजिज हिन्दी, बड़ी इलायची के दाने दो दो टंक लौंग, कस्तूरी आधा आधा टंक, शहद तिगुना ।

अन्य—शीत के खफकान अर्थात् उन्माद को नाश करता है और जीव को रक्षित रखता है और इन्द्री, कोष्ठ और तिल्ली को बल देता है और पसीने की दुर्गंधि को अच्छा करता है और वायु का पचाने वाला आंतों को दुरुस्त करता और मुख की दुर्गंधि को दूर करता है और शिर पीड़ा और उत्पात कारक मल को नष्ट करता है और प्रसूति और इस्तस्का में गुण करता है—साजिज हिन्दी पीसकर दश दाम, शक्कर सफेद पाव भर यथाबिधि पाक बनावे चार टंक पर्यन्त खावे ।

जहरमोहरा ।

जो अतिसुगम औषध मन को बलदायक है—जहरमोहरा घिसा हुआ, अकीक पत्थर, यशव पत्थर, बशद मूंगा दो दो भाग गुलाब में घिसकर नारियल दरियाई, जदवार, तवाशीर एक एक भाग गुलाब में घिसकर सम्पूर्ण औषधियों को इकट्ठा करके खरल करके गोलियां बनावे, फिर चौड़े पत्थर से चिकना करके उस पर सोने के वर्क लगावे, समय पर चार रत्ती के बराबर गुलाब में घिसकर पिये ।

चांदनी के फूलों की गुलकन्द ।

पैत्तिक उन्माद रोग को गुण करे—चांदनी के फूल सौ, सफेद मिश्री सौ टंक, गुलकन्द बनाये और थोड़ा गुलाब मिलाकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और एक तोला भर खावे ।

सेवती का गुलकन्द ।

हिन्दुस्तान के प्राचीन वैद्यों का सेवित है उन्माद रोग को गुण करे और प्रकृति को नरम करे—हरे सेवती के फूल की पँखुड़ी से जीरा निकालकर दुगुनी मिश्री में मिलाकर शीशे में भरकर चालीस रात चांदनी में रक्खे और तीन हरे सेवती के फूलों का जीरा दूर करके चाबना और खाना उन्माद रोग को दूर करे ।

गुड़हल का गुलकन्द ।

मन, इन्द्री और धारणा शक्ति को बल देता है, हर्ष अधिक करता और विशेष करके उन्माद रोग को दूर करता है । गुड़हल के फूल सब्जी निकालकर दूनी मिश्री में मलकर रक्खे ।

हरसिंगार का गुलकन्द ।

जो मन को बलदायक और पैत्तिक उन्माद के लिये अद्वितीय औषधि है—हरसिंगार के फूलों की डंडी दूर करके उसकी सफेदी लेकर दूनी शक्कर में मलकर शीशे में भरकर चालीस रात चाँदनी में रक्खे और प्रभात को एक तोला उसमें से खाया करे ।

अन्य—पैत्तिक उन्मादरोग के लिये—रक्तचन्दन आधा तोला, आमला, धनियां पांच-पांच माशे आधपाव जल में भिगोकर प्रभात को उसका साफ जल लेकर दो दाम सफेद शक्कर मिला कर खावे ।

काढ़ा—शीत के हौलदिल के लिये—गावजबां दो टंक, लौंग ४ औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

माजून मन को बलदायक ।

आमले का मुरब्बा, हड़ का मुरब्बा सब दो, गावजबां दो टंक, चन्दन घिसकर एक टंक, गुलाब के फूल दो टंक रामतुलसी, गावजबां के फूल एक दाम, चँबेली का गुलकन्द चार तोले, किसमिस साढ़े चार माशे, मिश्री तिगुनी ।

औषधि—चम्पे के फूल शहद में मिलाकर खावे पित्त के हौलदिल को गुण करे—चार कंघी का रस पानी में मिलाकर मिश्री से मीठा करके पिये ।

अन्य—पित्त के हौलदिल के लिये अद्वितीय है—नाजबो के बीज एक तोला रात्रि को जल में भिगोकर वायु में रक्खे, प्रभात को दो दाम शक्कर मिलाकर चमचे से निगल जावे ।

अन्य—ईसबगोल एक तोला उसका लुआब निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—पित्त के खफकान और मन के नरम करने के लिये गुणदायक है—इमली जल में भिगोकर पानी उसका लेकर सफेद शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—पान खाना ठण्ढे हौलदिल को गुण करता है, अफीमखाना पैत्तिक उन्माद को श्रेष्ठ है, अतरज सादे की जवारिश पैत्तिक उन्माद को श्रेष्ठ है और कोष्ठ की बीमारी और कै और मतली को भी दूर करती है।

अन्य—चने की दाल चार टंक रात्रि को पांच या छः दाम जल में भिगोकर प्रभात को खूब मलकर शक्कर मिलाकर खावे और खट्टी और बादी चीजों से पथ्य करे।

अन्य—रेवंदचीनी पानी में पीसकर दोनों कन्धों के बीच में लगावे।

अन्य—खुलासतुल्तिजारब साहब ने अपनी मुर्जरिबात में लिखा है कि चुकन्दर को भूभल में रक्खे थोड़ी देर के पीछे निकालकर छिलका दूर करके गरम गरम उसके वरक छीलकर मिश्री पीसकर सब वरकों पर छिड़के उसमें से पानी मीठा निकलेगा उसके पिये, इसी प्रकार कई बेर सेवन करे।

खस का अरक।

खस का अरक निकालकर सेवन करे—पैत्तिक उन्माद और बद्धकोष्ठ को दूर करता है पुस्तक निर्माता ने कई बेर अरक निकालकर सेवन किया है, इस अरक में जो सफेद शक्कर मिलावे या खमीरा बनावे और खस का इतर उसमें मिलाकर सेवन करे तो उन्माद को गुण करे और ज्वर की गरमी का नाशकारक है।

धनिये का अरक।

मन को बल देता है और उन्मादरोग को दूर करता है—धनियां छिलके दूर करके गावजबां दो दो तोले, इलायची के दाने, चँबेली के फूल, गावजबां के फूल, गुलाब के फूल, चन्दन चूरा पांच-पांच तोले, ऊद एक तोला, कस्तूरी एक माशा, गाय का दूध पांच सेर, पानी में आवश्यकता के अनुकूल अरक खावे।

अब्बासी का खमीरा।

अब्बासी लालरंग का सेरभर लेकर अरक खींचे, फिर गुलाब मिलावे, फिर शक्कर मिलाकर कवाम करे, थोड़ा जहरमोहरा और बंशलोचन पीसकर मिलाकर खमीरा बनावे।

मूर्च्छा का यत्न।

मूर्च्छा संज्ञा के जाते रहने को बोलते हैं। मूर्च्छा बहुत प्रकार से होती है, जैसे मन की निर्बलता और मनमें खराब बुखारों और दुर्गंध के पहुँचने के कारण। सो मूर्च्छा में ठण्ढा पानी मुखपर छिड़कै और सुगंधद्रव्य सुँघावे। जो मूर्च्छा स्वभाव की गरमी से हो मिट्टी गुलाब या पानी से भिगोकर सुँघाना श्रेष्ठ है और जो शीत से हो कस्तूरी सुँघावे और लोबान का धुवां ले। और पांव मलना और वमन कराना मूर्च्छा को गुण करता है। जब मूर्च्छा न हो मूर्च्छा का कारण मालूम करके यत्न करे। शेखुलूरईस ने लिखा है कि खीरा सुँघाना विशेष करके मूर्च्छा को दूर करता है।

अन्य—कभी सुपारी खाने से मूर्च्छा आ जाती है।

यत्न—उसको शीघ्र ही थोड़ा जल पिलावे और छींकें ले और ठण्ढे पानी से दोनों हाथों की उंगलियों के शिर धोवे। इसीलिये सुपारी की भूसी खाने से कि वह हृदय को छीलती है निषेध किया है, परन्तु जो सुपारी मुँह में रखकर उसका लुआब निगल जावे और भूसी दूर करे तो मन को बल करे।

कुचों के रोग का यत्न, लेप।

लटके हुये कुचों को कठोर करे—बड़ी कटाई और छोटी कटाई की जड़, अन्दार की छाल, कन्दौरी की जड़, कच्ची मौलसिरी बराबर महीन पीसकर लेप करे।

अन्य—जो छातियों के बढ़ने के पहिले सेवन करे तो छातियों को बढ़ने न दे कुंदुरू और कौड़ी जलाकर बराबर पीसकर प्रतिमास में तीन बेर लगाया करे।

अन्य—चमगादर का रुधिर कभी कभी लगाया करे।

अन्य—गिजाई जो बरसात में पैदा होती है चालीस लेकर नोन में डाले, जब मिल जावे मुल्तानी मिट्टी मिलाकर लगावे कुचों को कठोर करता है।

अन्य—बरगद का रेशा अर्थात् जटा जो पृथ्वी पर न लटकी हो उसकी कोमल पीली और लाल नोकें लेकर सुखाकर जल में पीसकर लगावे।

अन्य—लजालू, असगन्ध की जड़ प्रतिदिन पीसकर लगावे।

अन्य—दूध को जो खुश्की और गरमी के कारण जम गया हो बहाता है—मूंग, साठी के चावल दोनों को पीसकर कुछ गरम जल में लगावे।

अन्य—कुचों के शोथ को गुण करे—मकोय, गुलखैरू, गोखुरू, तिरबसी, अफीम, गेरू एक एक माशा पीसकर कुछ गरम करके लेप करे।

अन्य–अनार की छाल का तेल मलना कुचो कों कठोर और योनि को सङ्कीर्ण करता है–अनार की छाल पक्का सेरभर, छोटा माजूफल अधकुचला आधपाव चौगुने मीठे जल में औटावे, जब एक सेर शेष रहे उसके बराबर तिल्ली का तेल मिलाकर फिर औटावे, जब पानी जलकर तेलमात्र रहे सेवन करे।

अन्य–जब अधकुचले करके अनार की छाल, झाऊ महीन पीसकर दूध में मिलाकर रात दिन में दो वेर बराबर लगावे।

अन्य–अरण्ड के पत्ते सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य–शीशम की पत्तियां पानी में औटाकर सूजन उससे धोवे और पत्ती उसकी गरम करके बांधे।

चूर्ण–जो दूध अधिक करे–सौंफ, शतावरि बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे और चने भिगोकर उसके पानी के साथ यह चूर्ण फाँके कुछ दिन में दूध अधिक होगा। बाजों ने लिखा है कि चने को दूध में भिगोवे।

लेप–जो दूध की अधिकता को कम करे–काहू के बीज मसूर, जीरा सिरके में पीसकर लेप करे।

मेदे अर्थात् पक्वाशय का यत्न।

कोष्ठ की पीड़ा जो बोझ और भोजन के उत्पात से कि भोजन पचा न हो।

यत्न–गरम पानी में नोन मिलाकर बमन करे और जबतक भूख मालूम न हो भोजन न करे और भूख के समय नरम आहार जो शीघ्र पचे खावे और जो पीड़ा वायु से हो और बदलती रहें गेहूं की भूसी नोन या बाजरा या कँगनी कपड़े में बांधकर या गरम रेत से सेंके और सादी अजवायन के अरक का पानी पीना गुण करता है–पीपल बात को दूर करे और भोजन को पचावे और कोष्ठ और वीर्य को बल दे और तरी को कोष्ठ से सुखावे–पांच टंक पीपल को पीसकर पाव भर शक्कर में कवाम करे।

सोंठ का जवारिश।

जो खराब बात और शीत के कोष्ठ की पीड़ा को दूर करे और भोजन की पचानेवाली और निसियान को दूर करनेवाली है और कोष्ठ और ठण्ढे कलेजे को गरम करती है–सोंठ पीसकर पांच मिस्काल पाव भर शक्कर में कवाम करे और बाजे सोंठ को नींबू के रस में तीन दिन भिगोकर सुखाकर पीसकर शक्कर में कवाम करते हैं और बाजे बीस टंक अदरक पीसकर पाव भर शक्कर में कवाम करते हैं।

मीठे और खट्टे ऊद का पाक।

जो कोष्ठ को बल देता है और अग्नि को तीक्ष्ण करता है—लोबान पीसकर दो टंक, सफेद शक्कर पाव भर में कवाम करके जवारिश बनावे। जो खट्टा करना चाहे तो नींबू का रस आवश्यकता के अनुकूल अधिक करे।

कुन्दर का पाक।

कफ के अतीसार को गुणकारक है और भोजन को पचाता और शीत के कोष्ठ को बल देता है—कुन्दर, बड़ी इलायची दो दो टंक, सोंठ, कुलींजन, अजवायन, बालछड़, कलौंजी, छोटी इलायची के दाने, कालीमिरच यह सब एक एक टंक, शक्कर तिगुनी।

सादे आमले का पाक।

जो कोष्ठ को बल देता है—आंवलों का रस पच्चीस टंक जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो जल में निकालकर आध सेर शक्कर में कवाम करे और कवाम के अंत में पांच टंक मस्तगी मिलावे।

सादी अजवाइन का पाक।

भोजन का पाचक और भूख को अधिक करे और बात को दूर करे।

औषधि—अजवायन नींबू के रस में दो बेर भिगोकर सुखाकर दश टंक पीसकर आध पाव शक्कर में कवाम करे।

सादी कुलींजन का पाक।

बात को दूर करे और भोजन को पचावे और कोष्ठ और कलेज़े को गुण करे और मेदे की तरी और खट्टी डकार और शीत के पार्श्वशूल को दूर करे—पाव भर शक्कर को कवाम में लाकर पांच टंक कुलींजन पीसकर यथाविधि मिलावे।

कलौंजी का पाक।

कफ को दूर करे और बात और कोष्ठ के अफरा को पचावे और जानवरों के बिष और दीवाने कुत्ते के काटे को गुण करे और कोष्ठ के कीड़ों को मारे और स्त्री के ऋतु के रुधिर और मूत्र को खोले और गुरदे और मूत्र को गुणदायक और गर्भाशय और पार्श्वशूल को दूर करे और कफ के और सौदा अर्थात् दग्धित दोष के पुराने ज्वर को गुण करे—पांच टंक कलौंजी एक रात सिरके में भिगोकर सुखाकर भूनकर आध सेर शक्कर में कवाम करे।

अन्य—कोष्ठपीड़ा को नाश करे—कालाजीरा बनाया हुआ पच्चीस टंक, बालछड़ दश टंक, कालीमिरच दश टंक, बूरैअरमनी अढ़ाई टंक, शहद सम्पूर्ण औषधियों का तिगुना।

अन्य—कोष्ठ की बात और स्वभाव की सरदी को गुण करे और कोष्ठ को गुण करे और कोष्ठ को बल दे और भोजन को शीघ्र पचावे—काला-जीरा बना हुआ तीस मिस्काल, सोंठ दश मिस्काल, अजवायन, पीपल, बालछड़, तज, बूरैअरमनी दो दो मिस्काल, शहद तिगुना।

मस्तगी का पाक।

जो कोष्ठ की शीत को गुणदायक, बलदायक और पाचक है यह सेलान-लुआब से लिखा गया।

वज का पाक।

यह औषध कुचों के रोग में वर्णन हो चुकी।

पुदीने की माजून।

कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे—पुदीने की पत्तियां छः टंक, सोंठ, अजवायन, कालाजीरा, तीन तीन टंक, बड़ी इलायची के दाने, सौंफ, कालीमिरच दो दो टंक, मिश्री तिगुनी।

अनीसून का पाक।

जो कोष्ठ को बलदायक और पाचक है और भूख और कफ के अतीसार को गुणदायक और कोष्ठ की पीड़ा और अफरा और गुदा की पवन को दूर करे—अनीसून सिरके में भिगोकर छाया में सुखावे फिर थोड़ी भूनकर दश टंक कूटछानकर आध सेर शहद में कवाम करे।

लोहे के मैल का पाक।

जो भूख लावे और कोष्ठ को गुणदायक और वीर्य को अधिक करे और रंग को अच्छा करे और बवासीर को गुणदायक है—काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, मुलहठी, सोंठ, इलायची के दाने, बालछड़, गुलाब के फूल, यह सब बराबर ले और सोवा, लोहे का मैल, हड़ों को कूटछानकर घी में भिगोकर औषधियों के बराबर मिश्री या शहद में मिलावे और एक टंक से दो मिस्कालपर्यन्त खावे।

बड़ा इतरी फल।

जो कोष्ठ को बल दे और अफरा को दूर करे और रंग को अच्छा करे—

पीले हड़ों की छाल, काले हड़ों की छाल, काबिली हड़ों की छाल, आमला कूटछानकर तेल में भूनकर, पीपल, कालीमिरच छः छः टंक, शैतरज, इन्द्रयव मीठे छिले हुये तिल, सफेद खशखाश, मिश्री दो दो टंक तिगुने शहद में मिलावे।

औषध—भोजन को पचावे और भूख लावे—गुलाब के फूल छः टंक, नागरमोथा पांच टंक, बड़ी इलायची के दाने चार टंक, बालछड़, असारों, कुलीजन, साजिज तीन तीन टंक, तज, जरनब, मस्तगी, तुरंज की छाल नरकचूर दो दो टंक, आमले का रस आध सेर, मिश्री एक सेर, यथाविधि माजून बनावे।

नोन की गोली।

जो कोष्ठ के बात को गुण करे और कोष्ठ की पुष्टिकारक है और हिचकी को दूर करती है और पाचक है—लाहौरीनोन, कालानोन तीन तीन मिस्काल, पोदीना, नरकचूर पाँच पाँच मिस्काल, पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, बच, कालाजीरा, सफेद जीरा, लालनोन नव नव मिस्काल, धनियां आठ टंक, सौंफ अजवायन बीस बीस टंक कूटछानकर नींबू के रस में खमीर करके सुखावे फिर सूखे या हरे आमले के पानी में मिलाकर सुखाकर कूटछानकर नींबू के रस में बेर के बराबर गोलियाँ बनावे।

अन्य—स्वभाव को नरम करती है और पाचक अग्नि को बड़ाती है—पीले हड़ की छाल, सोंठ, पीपल, अनारदाना, सनाय, तुरबुद, खोखले मुनक्के दाने निकालकर एक एक भाग कंद छः भाग गोलियां बनावे।

सनाय की गोली।

बद्धकोष्ठ, अफरा और अजीर्ण को दूर करती है—सनाय, पीले हड़ की छाल, कालीमिरच एक एक टंक, बड़े मुनक्के बारह टंक पानी में कूटछानकर गोलियां बनावे और नव माशे प्रभात के समय खावे कदाचित् अधिक आवश्यक हो तो दोनों समय खावे।

सोहागे की गोलियां।

भूख लातीं और कोष्ठ की पीड़ा को दूर करती हैं—सुहागा दो टंक, अजवायन साढ़े दश टंक, कालीमिरच बारह टंक, एलुवा सोलह टंक कूटछानकर

घीकुवार के रस में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनावे—बात के लिये तीन गोलियां और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये दो गोली और पेट बढ़ जाने के लिये आजमाई हुई है।

गोली पाचक—कालाजीरा, राई, गुड़ बराबर लेकर बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पानी से निगल जावे।

अन्य—पीले हड़ों की छाल, सनाय चार चार टंक, सोंठ एक टंक, मुनक्के अढ़ाई टंक, शक्कर पाँच टंक कूटछानकर जायफल के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सोने के समय।

अन्य—गोली जो पाचक है और बात और तिल्ली और कोष्ठ के अफरा को दूर करती है और भूख लाती है—सोंठ दो भाग, भुना सुहागा, पीले हड़ की छाल, सेंधानोन, हींग एक एक भाग, सहँजने की जड़ का रस या उसके पत्तों के रस में जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे।

अन्य—भूख लावे और वैद्य को प्रशंसित करे—पीले हड़ की छाल, बहेड़ा आमला, कालानोन, सनाय बराबर कूटछानकर नींबू के पानी में गोलियां बनावे, एक तोला वा न्यूनाधिक स्वभाव के अनुकूल गरम जल के साथ सोने के समय खावे।

गोली—बद्धकोष्ठ को दूर करे और उदर और पहलू की पीड़ा को श्रेष्ठ है—एलुवा, सातरा दो दो टंक, कालीमिरच, हंकूत के फल की गिरी एक एक दाम कूटछानकर नींबू के रस में चने के बराबर गोलियां बनाये, खूराक चार गोलियां गरम पानी से।

गोलियां जो भूख लाती हैं—पीले हड़ की छाल, सौंफ, पोदीना, लाहौरी नोन, खट्टी चूक एक एक तोला, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, चीत, अजवायन, साढ़े तीन तीन माशे, दो नींबू के जल में पीसकर गोलियां बनावे।

पाचक गोलियां—कालानोन, खट्टी चूक दो दो तोले, अजवायन दो माशे, लौंग, कालीमिरच, एक एक माशा यह सम्पूर्ण औषध कूटछानकर चूक में मिलाकर गोलियां बनावे भोजन के उपरान्त एक माशा खावे। अमलबेत हिन्दी दवा है भोजन को पचावे और भूख लावे और कोलंज* और इस्तस्का अर्थात् जलंधर को श्रेष्ठ है और बात को पचाता है—पीपल, हड़ और नमक

* वह पीड़ा जो कूलों और अँतड़ी में उत्पन्न हो।

दि को नींबू के रस या तुरंज की खटाई में खमीर करके एक खट्टे को
दर से खाली करे उसमें यह दवा भर दे। खट्टा दो प्रकार का है एक तेज
हा कि जो उसमें सुई रक्खे गल जाने और दूसरे में तेजी और खटाई कम
ती है।

अन्य—जो बद्धकोष्ठ, कफ और बात और कोष्ठ की सरदी को गुण करे
शेष करके दूध पीनेवाले लड़कों के लिये श्रेष्ठ है—काली हड़ चार दाम, नर,
चूर, सौंफ दो दो दाम, भुना सुहागा एक दाम कूटछानकर चने के समान
लियां बनावे, खुराक एक गोली।

नोन की गोली।

बात को खो देती है और भोजन को पचा देती है और हैजे को गुण
रती है—लाहौरीनोन, इन्दरानीनोन, साँभरनोन, कालानोन, नमक नफ्ती,
लीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सौंफ, अजवायन, एक एक टंक
लाजीरा, सफेदजीरा, शैतरज, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, सुहागा, नौसादर,
नाय छः छः माशे, भुनी हींग एक माशा सम्पूर्ण औषधियों को बराबर
सकर चौबीस नींबू के रस से खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलियां
नाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

अन्य—कोष्ठ के बात को दूर करती है—पीले हड़ की छाल, सोंठ काला-
न, बायबिड़ंग, शैतरज, हींग बराबर कूटछानकर तिगुने पुराने गुड़ में
लाकर छः माशे के अनुमान गोलियां बनाकर गुनगुने पानी से सुबह
वक्त खावे।

चूर्ण—कालानोन भूख लाता है और पाचक है, अजवायन, शैतरज सात
त टंक, पीपल दो टंक, पीले हड़ की छाल दो टंक, सोंठ बारह टंक,
लानोन पचास टंक कूटछानकर नींबू के रस में तीन बेर पीसकर सुखावे,
टंक के अनुमान खावे।

हरीरा—कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे—कुसुम के बीजों की गिरी एक तोला
नी में रस निकालकर दो तोले शक्कर मिलाकर हरीरा पकाकर गुनगुना पिये।

अन्य—भूख के लिये अति उत्तम है—लाल मिरच नींबू के रस में चालीस
न खरल करके दो रत्ती की बराबर पान में खावे।

अन्य—सोंठ दो दाम, सौंफ एक दाम, हींग तीन दाम कूटछानकर नींबू
रस में टिकिया बनाकर तवा कोयलों की आग से गरम करके टिकिया

को उस पर रक्खे जब लाल होजावे पीसकर आवश्यकता के अनुकूल खावे।

अन्य—कोष्ठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सिरस की पत्तियां, कालीमिरच बारह पीसकर पिये।

अन्य—अजवायन, कालानोन भँगरे के रस में मिलाकर खावे।

अन्य—भूख के लिये बहुत गुण करे—रामपत्री जो सूरत और स्वादु में तरी के समान होती है एक तोला खरल से महीन पीसकर उसमें पारा मिलाकर फिर दो पहर पर्यंत खरल करे, जब खूब मिल जावे प्रभात को दो चावल के बराबर पान में रखकर खाया करे और सरदी में चालीस दिन पर्यंत खावे कि गुण उसका प्रकट हो और जो पारा दवा में कच्चा है हानि भी नहीं करेगा।

अन्य—भूख के लिये श्रेष्ठ है—अजवायन, घीकुवार के पानी में पहिले भिगोकर सुखावे फिर नींबू के रस में सात बेर भिगोकर सुखाकर स्वभाव के अनुकूल खावे बातघ्न और पाचक है।

त्रिकटु—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ तीन औषध के हैं—सोंठ, काली-मिरच, पीपल बराबर लेकर कूटछानकर खावे बातघ्न और पाचक है।

चतुर्जातक—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ चार औषधि—तज, तेजपात, नागकेसर, इलायची बराबर कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसकी बराबर शक्कर मिलावे कोष्ठ को गुण करे और वात को नाश करे।

लाल हरताल का रस।

इसको नागकेसर बोलते हैं। भूख लाता है और वीर्य को पुष्ट करता है और कास श्वास को दूर करता है—छः टंक शीशा गलाकर एक दाम लालहरताल की उसको चुटकी दे अर्थात् गलने में पिसी हुई हरताल थोड़ी थोड़ी उस पर डालकर लोहे के दस्ते वे चलावे फिर उतारकर ठंढी करे फिर गलाकर एक दाम हरताल की चुटकी दे, इसी प्रकार चार बेर करके चार दाम हरताल की चुटकी दे इसके उपरांत दो दाम पारा और एक टंक शोधा तांबा कूटा हुआ चार पहर पर्यन्त तुलसी के पत्तों के रस में खूब पीसकर दो सकोरों में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट आग दे, जब ठण्ढा हो जावे निकालकर घीकुवार के रस में चारपहर खरल करके यथा-विधि आंच दे, फिर भँगरे के जलमें चारपहर खरल करके उसी प्रकार आंच दे, खूराक आधी रत्ती पान में खावे। गजपुट आग उसे कहते हैं कि

एक गढ़ा गोल एक गज गहरा और उसका मुंह एक गज का हो खोदकर उसमें कण्डे भरकर दवा को उसके बीच में रखकर आंच दे।

पंचकोल—पांच दवा के अर्थ हैं—पीपल, पीपलामूल, चाब, चीत, सोंठ कूटछानकर फंकी बनावे भूख पैदा करता है और बात और कफ को दूर करता है।

बेदअंजीर का तेल।

उस कोष्ठ की पीड़ा को जो बात से हो गुणकारक है—अरण्ड के पत्तों का रस निकालकर बराबर तेल में जलावे जब पानी जल जावे पेट पर मले।

सोये का तेल।

शीत की पीड़ा को नाश करता है और बात को गुण करे—सोये के पत्तों का रस और आधा उसका तिलों का तेल लेकर उसमें जलावे। बाजों के विचार से चौथाई तिलों का तेल चाहिये।

नकछिकनी का तेल।

भूख पैदा करे—नकछिकनी सूखी चार सेर पीसछानकर दश सेर अदरक के रस में खरल कर टिकियां बनाकर दशसेर घी में भूने जब टिकियां जल जावें घी को छान रक्खे और दो माशे उसमें से खाया करे।

चूर्ण—उदर की पीड़ा को श्रेष्ठ है—त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, लाहौरीनोन, छिलाहुआ पीपलामूल, अकलीलुलमलक, शैतरज, चाब बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक एक टंक से दो टंक पर्यन्त खावे।

शुंठ्यादिचूर्ण।

कोष्ठ की तरी को नष्ट करता है और क्षुधा लाता है—सोंठ दश टंक, सौंफ पांच टंक, मस्तगी तीन टंक, मिश्री बराबर मिलाकर फंकी बनावे।

सनाय का चूर्ण—उदरपीड़ा और कोलंज को गुण करे और पित्त, कफ और सौदर को निकालता है—सनाय, पीले हड की छाल, कालानोन बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे और दो तोले प्रतिदिन गरम पानी के साथ खावे।

अन्य—भूख के लिये—कालानोन, कालीमिरच, पीपल दो दो दाम, भुना सुहागा एकदाम बारह पहर नींबू के रस में खरल करे और चार रत्ती से एक मासे पर्यन्त भोजन के उपरान्त खावे।

चूर्ण—आमला, काबिली हड़ सात सात टंक, पीपल शैतरज, लाहौरीनोन बराबर कूटछानकर खूराक एक टंक।

को उस पर रक्खे जब लाल होजावे पीसकर आवश्यकता के अनुकूल खावे।

अन्य—कोष्ठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सिरस की पत्तियां, कालीमिरच बारह पीसकर पिये।

अन्य—अजवायन, कालानोन भँगरे के रस में मिलाकर खावे।

अन्य—भूख के लिये बहुत गुण करे—रामपत्नी जो सूरत और स्वादु में तरी के समान होती है एक तोला खरल से महीन पीसकर उसमें पारा मिलाकर फिर दो पहर पर्यंत खरल करे, जब खूब मिल जावे प्रभात को दो चावल के बराबर पान में रखकर खाया करे और सरदी में चालीस दिन पर्यंत खावे कि गुण उसका प्रकट हो और जो पारा दवा में कच्चा है हानि भी नहीं करेगा।

अन्य—भूख के लिये श्रेष्ठ है—अजवायन, घीकुवार के पानी में पहिले भिगोकर सुखावे फिर नींबू के रस में सात बेर भिगोकर सुखाकर स्वभाव के अनुकूल खावे बातघ्न और पाचक है।

त्रिकटु—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ तीन औषध के हैं—सोंठ, कालीमिरच, पीपल बराबर लेकर कूटछानकर खावे बातघ्न और पाचक है।

चतुर्जातक—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ चार औषधि—तज, तेजपात, नागकेसर, इलायची बराबर कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसकी बराबर शक्कर मिलावे कोष्ठ को गुण करे और वात को नाश करे।

लाल हरताल का रस।

इसको नागकेसर बोलते हैं। भूख लाता है और वीर्य को पुष्ट करता है और कास श्वास को दूर करता है—छः टंक शीशा गलाकर एक दाम लालहरताल की उसको चुटकी दे अर्थात् गलने में पिसी हुई हरताल थोड़ी थोड़ी उस पर डालकर लोहे के दस्ते वे चलावे फिर उतारकर ठंढी करे फिर गलाकर एक दाम हरताल की चुटकी दे, इसी प्रकार चार बेर करके चार दाम हरताल की चुटकी दे इसके उपरांत दो दाम पारा और एक टंक शोधा तांबा कूटा हुआ चार पहर पर्यन्त तुलसी के पत्तों के रस में खूब पीसकर दो सकोरों में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट आग दे, जब ठण्ढा हो जावे निकालकर घीकुवार के रस में चारपहर खरल करके यथाविधि आंच दे, फिर भँगरे के जलमें चारपहर खरल करके उसी प्रकार आंच दे, खूराक आधी रत्ती पान में खावे। गजपुट आग उसे कहते हैं कि

गढ़ा गोल एक गज गहरा और उसका मुँह एक गज का हो खोदकर
में कण्डे भरकर दवा को उसके बीच में रखकर आंच दे।

पंचकोल—पांच दवा के अर्थ हैं-पीपल, पीपलामूल, चाब, चीत, सोंठ
छानकर फंकी बनावे भूख पैदा करता है और बात और कफ को दूर
ता है।

बेदअंजीर का तेल।

उस कोष्ठ की पीड़ा को जो बात से हो गुणकारक है-अरण्ड के पत्तों का
निकालकर बराबर तेल में जलावे जब पानी जल जावे पेट पर मले।

सोये का तेल।

शीत की पीड़ा को नाश करता है और बात को गुण करे-सोये के पत्तों
रस और आधा उसका तिलों का तेल लेकर उसमें जलावे। बाजों के
ार से चौथाई तिलों का तेल चाहिये।

नकछिकनी का तेल।

भूख पैदा करे-नकछिकनी सूखी चार सेर पीसछानकर दश सेर अदरक
स में खरल कर टिकियां बनाकर दशसेर घी में भूने जब टिकियां जल
घी को छान रक्खे और दो माशे उसमें से खाया करे।

चूर्ण—उदर की पीड़ा को श्रेष्ठ है-त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, लाहौरीनोन,
ाहुआ पीपलामूल, अकलीलुलमलक, शैतरज, चाब बराबर कूटछानकर
बनावे, खूराक एक टंक से दो टंक पर्यन्त खावे।

शुंठ्यादिचूर्ण।

कोष्ठ की तरी को नष्ट करता है और क्षुधा लाता है-सोंठ दश टंक,
पांच टंक, मस्तगी तीन टंक, मिश्री बराबर मिलाकर फंकी बनावे।

सनाय का चूर्ण—उदरपीड़ा और कोलंज को गुण करे और पित्त, कफ
सौदर को निकालता है—सनाय, पीले हड की छाल, कालानोन बराबर
छानकर चूर्ण बनावे और दो तोले प्रतिदिन गरम पानी के साथ खावे।

अन्य—भूख के लिये—कालानोन, कालीमिरच, पीपल दो दो दाम, भुना
गा एकदाम बारह पहर नींबू के रस में खरल करे और चार रत्ती से
मासे पर्यन्त भोजन के उपरान्त खावे।

चूर्ण—आमला, काबिली हड़ सात सात टंक, पीपल शैतरज, लाहौरीनोन
बर कूटछानकर खूराक एक टंक।

अन्य–कोष्ठपीड़ा को नाश करे–कालाजीरा बनाया हुआ पच्चीस टंक, बालछड़ दश टंक, कालीमिरच दश टंक, बूरैअरमनी अढ़ाई टंक, शहद सम्पूर्ण औषधियों का तिगुना।

अन्य–कोष्ठ की बात और स्वभाव की सरदी को गुण करे और कोष्ठ को गुण करे और कोष्ठ को बल दे और भोजन को शीघ्र पचावे–कालाजीरा बना हुआ तीस मिस्काल, सोंठ दश मिस्काल, अजवायन, पीपल, बालछड़, तज, बूरैअरमनी दो दो मिस्काल, शहद तिगुना।

मस्तगी का पाक।

जो कोष्ठ की शीत को गुणदायक, बलदायक और पाचक है यह सेलानलुआब से लिखा गया।

वज का पाक।

यह औषध कुचों के रोग में वर्णन हो चुकी।

पुदीने की माजून।

कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे–पुदीने की पत्तियां छः टंक, सोंठ, अजवायन, कालाजीरा, तीन तीन टंक, बड़ी इलायची के दाने, सौंफ, कालीमिरच दो दो टंक, मिश्री तिगुनी।

अनीसून का पाक।

जो कोष्ठ को बलदायक और पाचक है और भूख और कफ के अतीसार को गुणदायक और कोष्ठ की पीड़ा और अफरा और गुदा की पवन को दूर करे–अनीसून सिरके में भिगोकर छाया में सुखावे फिर थोड़ी भूनकर दश टंक कूटछानकर आध सेर शहद में कवाम करे।

लोहे के मैल का पाक।

जो भूख लावे और कोष्ठ को गुणदायक और वीर्य को अधिक करे और रंग को अच्छा करे और बवासीर को गुणदायक है–काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, मुलहठी, सोंठ, इलायची के दाने, बालछड़, गुलाब के फूल, यह सब बराबर ले और सोवा, लोहे का मैल, हड़ों को कूटछानकर घी में भिगोकर औषधियों के बराबर मिश्री या शहद में मिलावे और एक टंक से दो मिस्कालपर्यन्त खावे।

बड़ा इतरी फल।

जो कोष्ठ को बल दे और अफरा को दूर करे और रंग को अच्छा करे–

पीले हड़ों की छाल, काले हड़ों की छाल, काबिली हड़ों की छाल, आमला कूटछानकर तेल में भूनकर, पीपल, कालीमिरच छः छः टंक, शैतरज, इन्द्रयव मीठे छिले हुये तिल, सफेद खशखाश, मिश्री दो दो टंक तिगुने शहद में मिलावे ।

औषध—भोजन को पचावे और भूख लावे—गुलाब के फूल छः टंक, नागरमोथा पांच टंक, बड़ी इलायची के दाने चार टंक, बालछड़, असारों, कुलींजन, साजिज तीन तीन टंक, तज, जरनब, मस्तगी, तुरंज की छाल नरकचूर दो दो टंक, आमले का रस आध सेर, मिश्री एक सेर, यथाविधि माजून बनावे ।

नोन की गोली ।

जो कोष्ठ के बात को गुण करे और कोष्ठ की पुष्टिकारक है और हिचकी को दूर करती है और पाचक है—लाहौरीनोन, कालानोन तीन तीन मिस्काल, पोदीना, नरकचूर पाँच पाँच मिस्काल, पीले हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, बच, कालाजीरा, सफेद जीरा, लालनोन नव नव मिस्काल, धनियां आठ टंक, सौंफ अजवायन बीस बीस टंक कूटछानकर नींबू के रस में खमीर करके सुखावे फिर सूखे या हरे आमले के पानी में मिलाकर सुखाकर कूटछानकर नींबू के रस में बेर के बराबर गोलियाँ बनावे ।

अन्य—स्वभाव को नरम करती है और पाचक अग्नि को बड़ाती है—पीले हड़ की छाल, सोंठ, पीपल, अनारदाना, सनाय, तुरबुद, खोखले मुनक्के दाने निकालकर एक एक भाग कंद छः भाग गोलियां बनावे ।

सनाय की गोली ।

बद्धकोष्ठ, अफरा और अजीर्ण को दूर करती है—सनाय, पीले हड़ की छाल, कालीमिरच एक एक टंक, बड़े मुनक्के बारह टंक पानी में कूटछानकर गोलियां बनावे और नव माशे प्रभात के समय खावे कदाचित् अधिक आवश्यक हो तो दोनों समय खावे ।

सोहागे की गोलियां ।

भूख लातीं और कोष्ठ की पीड़ा को दूर करती हैं—सुहागा दो टंक, अजवायन साढ़े दश टंक, कालीमिरच बारह टंक, एलुवा सोलह टंक कूटछानकर

घीकुवार के रस में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनावे—बात के लिये तीन गोलियां और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये दो गोली और पेट बढ़ जाने के लिये आजमाई हुई है।

गोली पाचक—कालाजीरा, राई, गुड़ बराबर लेकर बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पानी से निगल जावे।

अन्य—पीले हड़ों की छाल, सनाय चार चार टंक, सोंठ एक टंक, मुनक्के अढ़ाई टंक, शक्कर पाँच टंक कूटछानकर जायफल के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सोने के समय।

अन्य—गोली जो पाचक है और बात और तिल्ली और कोष्ठ के अफरा को दूर करती है और भूख लाती है—सोंठ दो भाग, भुना सुहागा, पीले हड़ की छाल, सेंधानोन, हींग एक एक भाग, सहँजने की जड़ का रस या उसके पत्तों के रस में जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन एक गोली खावे।

अन्य—भूख लावे और वैद्य को प्रशंसित करे—पीले हड़ की छाल, बहेड़ा आमला, कालानोन, सनाय बराबर कूटछानकर नींबू के पानी में गोलियां बनावे, एक तोला वा न्यूनाधिक स्वभाव के अनुकूल गरम जल के साथ सोने के समय खावे।

गोली—बद्धकोष्ठ को दूर करे और उदर और पहलू की पीड़ा को श्रेष्ठ है—एलुवा, सातरा दो दो टंक, कालीमिरच, हंकूत के फल की गिरी एक एक दाम कूटछानकर नींबू के रस में चने के बराबर गोलियां बनाये, खूराक चार गोलियां गरम पानी से।

गोलियां जो भूख लाती हैं—पीले हड़ की छाल, सौंफ, पोदीना, लाहौरी नोन, खट्टी चूक एक एक तोला, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, चीत, अजवायन, साढ़े तीन तीन माशे, दो नींबू के जल में पीसकर गोलियां बनावे।

पाचक गोलियां—कालानोन, खट्टी चूक दो दो तोले, अजवायन दो माशे, लौंग, कालीमिरच, एक एक माशा यह सम्पूर्ण औषध कूटछानकर चूक में मिलाकर गोलियां बनावे भोजन के उपरान्त एक माशा खावे। अमलबेत हिन्दी दवा है भोजन को पचावे और भूख लावे और कोलंज* और इस्तस्का अर्थात् जलंधर को श्रेष्ठ है और बात को पचाता है—पीपल, हड़ और नमक

---

* वह पीड़ा जो कूलों और अँतड़ी में उत्पन्न हो।

आदि को नींबू के रस या तुरंज की खटाई में खमीर करके एक खट्टे को अन्दर से खाली करे उसमें यह दवा भर दे। खट्टा दो प्रकार का है एक तेज खट्टा कि जो उसमें सुई रक्खे गल जाने और दूसरे में तेजी और खटाई कम होती है।

अन्य—जो बद्धकोष्ठ, कफ और बात और कोष्ठ की सरदी को गुण करे विशेष करके दूध पीनेवाले लड़कों के लिये श्रेष्ठ है—काली हड़ चार दाम, नर, कचूर, सौंफ दो दो दाम, भुना सुहागा एक दाम कूटछानकर चने के समान गलियां बनावे, खुराक एक गोली।

नोन की गोली।

बात को खो देती है और भोजन को पचा देती है और हैजे को गुण करती है—लाहौरीनोन, इन्दरानीनोन, साँभरनोन, कालानोन, नमक नफ्ती, पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सौंफ, अजवायन, एक एक टंक कालाजीरा, सफेदजीरा, शैतरज, सोंठ, कालीमिरच, पीपल, सुहागा, नौसादर, सनाय छः छः माशे, भुनी हींग एक माशा सम्पूर्ण औषधियों को बराबर पीसकर चौबीस नींबू के रस से खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रतिदिन खाया करे।

अन्य—कोष्ठ के बात को दूर करती है—पीले हड़ की छाल, सोंठ कालानोन, बायबिड़ंग, शैतरज, हींग बराबर कूटछानकर तिगुने पुराने गुड़ में मिलाकर छः **माशे के** अनुमान गोलियां बनाकर गुनगुने पानी से सुबह के वक्त खावे।

चूर्ण—कालानोन भूख लाता है और पाचक है, अजवायन, शैतरज सात सात टंक, पीपल दो टंक, पीले हड़ की छाल दो टंक, सोंठ बारह टंक, कालानोन पचास टंक कूटछानकर नींबू के रस में तीन बेर पीसकर सुखावे, दो टंक के अनुमान खावे।

हरीरा—कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे—कुसुम के बीजों की गिरी एक तोला पानी में रस निकालकर दो तोले शक्कर मिलाकर हरीरा पकाकर गुनगुना पिये।

अन्य—भूख के लिये अति उत्तम है—लाल मिरच नींबू के रस में चालीस दिन खरल करके दो रत्ती की बराबर पान में खावे।

अन्य—सोंठ दो दाम, सौंफ एक दाम, हींग तीन दाम कूटछानकर नींबू के रस में टिकिया बनाकर तवा कोयलों की आग से गरम करके टिकिया

को उस पर रक्खे जब लाल होजावे पीसकर आवश्यकता के अनुकूल खावे।

अन्य—कोष्ठ की पीड़ा को श्रेष्ठ है—सिरस की पत्तियां, कालीमिरच बारह पीसकर पिये।

अन्य—अजवायन, कालानोन भँगरे के रस में मिलाकर खावे।

अन्य—भूख के लिये बहुत गुण करे—रामपत्री जो सूरत और स्वादु में तरी के समान होती है एक तोला खरल से महीन पीसकर उसमें पारा मिलाकर फिर दो पहर पर्यंत खरल करे, जब खूब मिल जावे प्रभात को दो चावल के बराबर पान में रखकर खाया करे और सरदी में चालीस दिन पर्यंत खावे कि गुण उसका प्रकट हो और जो पारा दवा में कच्चा है हानि भी नहीं करेगा।

अन्य—भूख के लिये श्रेष्ठ है—अजवायन, घीकुवार के पानी में पहिले भिगोकर सुखावे फिर नींबू के रस में सात बेर भिगोकर सुखाकर स्वभाव के अनुकूल खावे बातघ्न और पाचक है।

त्रिकटु—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ तीन औषध के हैं—सोंठ, काली मिरच, पीपल बराबर लेकर कूटछानकर खावे बातघ्न और पाचक है।

चतुर्जातक—यह संस्कृत शब्द है इसके अर्थ चार औषधि—तज, तेजपात नागकेसर, इलायची बराबर कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसकी बराबर शक्कर मिलावे कोष्ठ को गुंण करे और वात को नाश करे।

लाल हरताल का रस।

इसको नागकेसर बोलते हैं। भूख लाता है और वीर्य को पुष्ट करता है और कास श्वास को दूर करता है—छः टंक शीशा गलाकर एक दाम लालहरताल की उसको चुटकी दे अर्थात् गलने में पिसी हुई हरताल थोड़ी थोड़ी उस पर डालकर लोहे के दस्ते वे चलावे फिर उतारकर ठंढी करे फिर गलाकर एक दाम हरताल की चुटकी दे, इसी प्रकार चार बेर करके चार दाम हरताल की चुटकी दे इसके उपरांत दो दाम पारा और एक टंक शोधा तांबा कूटा हुआ चार पहर पर्यन्त तुलसी के पत्तों के रस में खूब पीसकर दो सकोरों में रखकर कपड़मिट्टी करके गजपुट आग दे, जब ठण्ढा हो जावे निकालकर घीकुवार के रस में चारपहर खरल करके यथा-विधि आंच दे, फिर भँगरे के जलमें चारपहर खरल करके उसी प्रकार आंच दे, खूराक आधी रत्ती पान में खावे। गजपुट आग उसे कहते हैं कि

एक गढ़ा गोल एक गज गहरा और उसका मुंह एक गज का हो खोदकर उसमें कण्डे भरकर दवा को उसके बीच में रखकर आंच दे।

पंचकोल—पांच दवा के अर्थ हैं—पीपल, पीपलामूल, चाब, चीत, सोंठ कूटछानकर फंकी बनावे भूख पैदा करता है और बात और कफ को दूर करता है।

बेदअंजीर का तेल।

उस कोष्ठ की पीड़ा को जो बात से हो गुणकारक है—अरण्ड के पत्तों का रस निकालकर बराबर तेल में जलावे जब पानी जल जावे पेट पर मले।

सोये का तेल।

शीत की पीड़ा को नाश करता है और बात को गुण करे—सोये के पत्तों का रस और आधा उसका तिलों का तेल लेकर उसमें जलावे। बाजों के विचार से चौथाई तिलों का तेल चाहिये।

नकछिकनी का तेल।

भूख पैदा करे—नकछिकनी सूखी चार सेर पीसछानकर दश सेर अदरक के रस में खरल कर टिकियां बनाकर दशसेर घी में भूने जब टिकियां जल जावें घी को छान रक्खे और दो माशे उसमें से खाया करे।

चूर्ण—उदर की पीड़ा को श्रेष्ठ है—त्रिफला, त्रिकुटा, हींग, लाहौरीनोन, छिलाहुआ पीपलामूल, अकलीलुलमलक, शैतरज, चाब बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक एक टंक से दो टंक पर्यन्त खावे।

शुंठ्यादिचूर्ण।

कोष्ठ की तरी को नष्ट करता है और क्षुधा लाता है—सोंठ दश टंक, सौंफ पांच टंक, मस्तगी तीन टंक, मिश्री बराबर मिलाकर फंकी बनावे।

सनाय का चूर्ण—उदरपीड़ा और कोलंज को गुण करे और पित्त, कफ और सौदर को निकालता है—सनाय, पीले हड की छाल, कालानोन बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे और दो तोले प्रतिदिन गरम पानी के साथ खावे।

अन्य—भूख के लिये—कालानोन, कालीमिरच, पीपल दो दो दाम, भुना सुहागा एकदाम बारह पहर नींबू के रस में खरल करे और चार रत्ती से एक मासे पर्यन्त भोजन के उपरान्त खावे।

चूर्ण—आमला, काबिली हड़ सात सात टंक, पीपल शैतरज, लाहौरीनोन बराबर कूटछानकर खूराक एक टंक।

अन्य—कालीमिरच, अजवायन, शैतरज, पीपल नौ टंक, हड़ की छाल दश टंक, कालानोन पचास टंक कूटछानकर तीन बेर नींबू के रस में पीसकर सुखावे, एक टंक खावे।

अन्य—बद्धकोष्ठ दूर करे—पीली हड़ की छाल तीन माशे, लाहौरीनोन दो माशे कूटछानकर चूर्ण बनावे और एक तोले मुनक्के के साथ मिलाकर खावे।

अन्य—लौंग, कालानोन, पीपल, कालीमिरच, सोंठ, गुलाब के फूल, भुना नौसादर बराबर कूटछानकर खूराक एक टंक खावे।

अनारदाने का चूर्ण।

जो भूख लाता, कोष्ठ को बल देता और अतीसार को गुण करता है—अनारदाना पाव भर, सोंठ, सफेदजीरा एक एक दाम लाहौरीनोन अढ़ाई दाम सबको कूटछानकर एक तोला वा न्युन अधिक खावे और चाहिये कि औषधियों को बहुत महीन पीसे।

भोजन के पाचन का चूर्ण।

जो प्रकृति को नरम करे—पीली हड़की छाल, बहेड़े की छाल, आमला सफेद जीरा, सौंफ, कालानोन, सनाय एक एक तोला, सोंठ छः माशे चूर्ण बनावे, खूराक छः माशे सोने के समय खावे।

चूर्ण—कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे—भुना नोन और उससे दूनी सौंफ पुदीना, शातर और थोड़ी सोंठ और हींग और कालीमिरच मिलावे।

पान का अरक।

कोष्ठ की पीड़ा को गुणकारक और पाचकाग्नि को बल दे—दो सौ पान साजिज आधपाव, बालछड़, अजवायन, सौंफ छटांक छटांक भर, छोटी इलायची के दाने आधपाव, पुदीने की पत्तियां, कुलींजन, नरकचूर दो दो दाम इलायची के दाने, कुलींजन और नरकचूर अधकुचला करके रात्रि को पांच सेर जल में सब औषधियों के साथ भिगो दे, प्रभात को पान मिलाकर अरक खींचे।

टिकिया—कोष्ठ को बलकारक—लोबान चार टंक, कुरंज की छाल तीन टंक, लौंग, मस्तगी, बालछड़, इलायची, जावित्री दो दो टंक कूटछानकर गुलाब में टिकिया बनावे, खूराक दो टंक। यद्यपि यह टिकिया गरीबों के योग्य नहीं, परन्तु पुस्तकनिर्मांता ने एक मित्र के कोष्ठ के बल के लिये बनाई थी लाभ किया इसलिये लिखा है।

बालछण का शरबत ।

बालछड़ का शरबत शीत कफ और कलेजे के रोग को गुण करे—बालछड़ बीस टंक डेढ़ सेर जल में औटावे, जब आध सेर शेष रह जाय सेर भर शहद में कवाम करे ।

लेप—उदरपीड़ा और गर्भाशय की पीड़ा को श्रेष्ठ है—चूहे की मेंगनियां जो पंसारी की दूकान से मिलें उत्तम, नहीं तो जहां से मिलें उसके बराबर सौंफ पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य—पेट के दर्द को गुण करे--निर्मली पानी में घिसकर गुनगुनी नाभि के गिर्द लगावे ।

अन्य—कोष्ठ की पीड़ा को गुण करे—बालू सिरके में खमीर करके कपड़े में पोटली बांधकर गुनगुनी सेंक करे ।

अन्य—काले तिल, अजवायन, पीले हड़ की छाल, खारीनोन सिरके में मिलाकर टकोर की भांति सेंक करे ।

चूर्ण—कोष्ठ की शीत और मन्दाग्नि और कलेजे की निर्बलता को गुण करे।

नाजबो का शरबत ।

अढ़ाई सेर शहद, आध सेर मिश्री, बालछड़ दो मिस्काल, लौंग दो मिस्काल बड़ी इलायची, छोटी इलायची के दाने छः छः मिस्काल, लोबान तीन मिस्काल, दालचीनी तीन मिस्काल, सोंठ, कालीमिरच दो दो मिस्काल, केसर आधा मिस्काल, कस्तूरी चौथाई टंक, अम्बर पांच टंक यह सम्पूर्ण औषधि कुचलकर थैली में बांधकर नाजबो के शरबत के साथ चांदी या तांबे के कलईदार बर्तन में दो दिन भिगोकर शहद और शक्कर में मिलाकर औटाकर कवाम में लावे और थैली को प्रतिसमय मलते जावे फिर कस्तूरी और केसर और अम्बर उसमें मिलावे और बाजे कालीमिरच के बदले पीपल मिलाते हैं ।

गुलकन्दशकरा—जो पक्वाशय को बलकारक और पाचक और स्वभाव को नरम करने वाली है—गुलाब के फूल एक भाग, शक्कर दो भाग खूब मिलाकर चालीस दिन धूप में रक्खे । जो शक्कर के बदले शहद मिलावे तो उसको गुलकन्द असली शहत की कहते हैं ।

विसूचिका अर्थात् हैजे का यत्न ।

जब भोजन कोष्ठ में उपद्रवकारक हो जावे उसको कै और दस्तों से

निकाले और जबतक वह उपद्रवकारक मल दूर न हो ले शीघ्र ही बन्द न करे और जिस जगह प्यास की अधिकता या स्वभाव में गरमी या हरी कै हो कभी भी गरम दवायें न दे पानी के बदले गुलाब या सौंफ का अरक या मकोय का केवल अरक दे और इस रोग में उत्तमोत्तम उपाय सोना या भोजन न करना है।

गोली—हैजे को गुण कारक—मदार की जड़ बराबर अदरक के जल में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली हैजेवाले रोगी को दे जो मरता भी हो तो गुणदायक हो।

काढ़ा—हैजे को गुण करे—सौंफ तीन टंक, पोदीना दो टंक, लौंग चार, गुलकन्द दो तोले औटाकर पिये।

औषधि—चोबहयात घिसकर पिये।

अन्य—नरककूर का काढ़ा पीना विसूचिका को गुण करता है।

अन्य—हैजे को गुण करे—सफेद छोटी इलायची की छाल एक तोला किन्तु दो तोले तक जो गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो आधसेर जल में औटकर जब आधा पानी शेष रहे तो पिये।

अन्य—पेठे के फूल छः माशे पीसकर हैजेवाले को पिलावे, शीघ्र ही अच्छा हो जाय।

अन्य—सरफोंके की जड़ दो माशे पानी में घिसकर पिये।

अन्य—जो मुख्य करके विसूचिका को गुण करे—नीला कपड़ा जलाकर मनुष्य के मूत्र में मिलाकर पिये, कहा है कि जब मनुष्य को हैजे का असर मालूम हो उसी समय अपना मूत्र पिये, हैजे के अवगुण से बचाता है और बहुधा मनुष्य यही सेवन करते हैं।

अन्य—हैजे को गुणकारक—पांच माशे खरैटी की जड़ पानी में घिसकर पिये चोबहयात के बदले है।

अन्य—लाल मिरच का बीज एक मोम में गोली बनाकर खावे, बहुत ही गुणकारक है।

अन्य—तितली वह वृक्ष है कि गेहूं के खेतों में पैदा होता है वह थोड़े जल में पांच कालीमिरचों के साथ पीसकर पिलावे, जो कै हो जावे फिर पिलावे।

हिचकी का यत्न।

जो भोजन के उपरान्त बराबर हिचकियां आवें वमन कराना चाहिये और हाथों पावों का बांधना और क्रोध भय और हर्ष का अकस्मात पैदा करना और अनजान में मुँह पर ठंढा पानी छिड़कना और छींक लाना और हिलना और श्रम करना और श्वास रोकना और कोष्ठ और कन्धों पर पछने बिना सींगी लगाना हिचकी को दूर करता है।

अन्य—हिचकी के लिये आजमाया हुआ है—कलौंजी तीन माशे पीसकर एक टंक मक्खन में मिलाकर खावे।

अन्य—काले उड़द तम्बाकू के बदले हुक्के में रखकर पिये।

अन्य—चने या अरहर का भूसा तम्बाकू के बदले हुक्के में पिये।

अन्य—खलासतुल्तिज़ारब में लिखा है कि जो मूंज हाथ से मलकर हुक्के में पिये गुण करती है।

अन्य—नारियल के बाल जलाकर उसकी भस्म पानी में मिलावे, जब राख पानी के नीचे बैठ जावे साफ पानी उसका लेकर पिये।

अन्य—मोर के पर जलाकर तीनमाशे शहद में मिलाकर खावे।

अन्य—झाड़ू का जीरा औटाकर पिये।

अन्य—छप्पर की पुरानी रस्सी हुक्के में रखकर पिये।

अन्य—हिचकी को ठहरावे—बबूल के कांटे सूखे हों या हरे लेकर आधसेर पानी में औटावे जब आधपाव शेष रहे साफ करके थोड़ा शहद मिलाकर पिये और शहद के बिना भी पीना गुण करता है।

अन्य—टाट जलाकर उसकी चार माशे भस्म पानी में मिलाकर फिर उस जल को साफ करके पिये बात की हिचकी को गुण करे जमालगोटा हुक्के में पिये।

अन्य—हींग दो तीन माशे चार बादामों की गिरी मिलाकर पीसकर पिये।

अन्य—जीरा सिरके में औटाकर पीना प्यास और हिचकी को दूर करता है।

अन्य—आंब के सूखे पत्ते चिलम में रखकर पिये।

अन्य—पुदीना शक्कर में मिलाकर चाबे।

अन्य—उस हिचकी को गुण करे जो ज्वर से हो—सिकंजबीन पानी में घोलकर पिलावे मल कै का दूर होगा या पच जावेगा।

अन्य—कमल के बीज पीसकर पीना हिचकी को दूर करता है।

अन्य—कासनी के बीज, उड़द का आटा, बूदार चमड़ा मिलाकर तम्बाकू की रीति पर पिये।

कुन्दर की टिकिया।

जो हिचकी और बात की पेचिश और भीतर के अंगों के अफरा को गुण करे—कुन्दर दो टंक, तज, पोदीना, अजवाइन, नागरमोथा, छोटी इलायची के दाने, सौंफ एक एक टंक लेकर पानी में टिकिया बनावे।

अन्य—लड़कों की हिचकी को गुण करे—नारियल शक्कर में पीसकर दे और कहा है कि जो दूध पिलानेवाले के कपड़े से एक टुकड़ा कपड़े का लेकर पानी में भिगोकर लड़के के माथे पर लगावे तो मुख्यकर हिचकी ठहर जाती है।

अन्य—रीठे को लड़के के गले में लटकावे।

प्यास की अधिकता का यत्न।

बहुधा प्यास गरमी से होती है उसका यत्न—खुरफे के बीजों का शीरा या सादी सिकंजबीन पिये या ईसबगोल का लुआब, नीलोफर के शरबत में मिलाकर दे और नींबू का शरबत और उसका रस प्यास को दूर करता है।

औषध—जो प्यास और बमन को गुण करे—पीपल की छाल जलाकर पानी में डाले, जब वह नीचे बैठ जावे उसका स्वच्छ रस लेकर पिये।

अन्य--लड़कों की प्यास के लिये जो कि गरमियों में होती है—कमलगट्टा जवकुटकर जिस बर्तन में कि लड़का पानी पीता है डाल दे और वही पानी लड़के को पिलावे और जो सब्जी कमलगट्टे के बीज में होती है पीसकर लड़के को पिलावे।

अन्य—प्यास की अधिकता को गुण करे—नीम की पत्तियां पिंडोल मिट्टी में मिलाकर गोलियां बनाकर अग्नि में डाले जब खूब गरम हो जावे पानी में ठण्ढा करे और वह पानी पिलावे और जो वह प्यास कि जिसको वैद्यक में तोंस कहते हैं हो तो जंगली कंडा जलाकर उसकी राख कांसी के बासन में डाले फिर उसमें जल मिलाकर उस बासन को प्यासे की नाभि पर रक्खे, रखते ही जलन और गरमी और प्यास दूर हो जावेगी।

अन्य—आंवला और सफेद कत्था मुख में रखना प्यास को शान्त करता है।

पक्वाशय में दूध और रुधिर के जमने का यत्न और लक्षण।

उदर का फूलना, मूर्च्छा और ठण्ढा पसीना हो कभी काँपनी आ जाती है कभी ज्वर होता है और रोग से पहिले खाना दूध का।

यत्न—अञ्जीर की लकड़ी को राख करके ताजे पानी में मिलावे, जब राख नीचे बैठ जावे उसका साफ पानी लेकर फिर उसमें राख मिलावे, इसी प्रकार सात बेर करके उसका साफ पानी लेकर पिलावे, इस जगह कै कराना अतिउत्तम है।

औशधि—उस रुधिर को जो कोष्ठ में जम गया हो पिलावे पोदीने का अरक शक्कर में मिलाकर या पोदीना सूखा पीसकर खावे।

अन्य—खुश्कदाना पानी में पीसकर खिलावे।

अन्य—कोष्ठ में रुधिर जम जाने के लिये—दो दाम राई पानी में पीसकर पिये।

अन्य—चने भूनकर खारी नोन मिलाकर सेवन करे गुण करे और कबूतर के बच्चे की हड्डी भूनकर चाबना उत्तम है।

स्वाभाव जो कोइला और मिट्टी खाने की इच्छा करने का यत्न।

कोष्ठ को साफ करे और एक दाम नानखवाह हर सुबह को खाना इस रोग के लिये उत्तम है।

जी के मतलाने और उबकाई आने का यत्न।

जी का मतलाना कै का मुकद्दम है और वह इस तरह पर है कि बमन के वास्ते प्रेरणा हो बमन वह है कि मुँह में से कोष्ठ से कोई वस्तु निकले—जब कै बहुत हो और बन्द न हो उसके यत्न और कारण और हरएक के लक्षण बड़ी पुस्तकों में लिखे हैं। सुगम रीति यह है कि थोड़ा गेरू लेकर आग में गरम करके दो तीन बेर पानी में भिगोकर वह पानी पिलावे।

गोली—जो मतली और कै को गुण करे—कपूरकचरी कूटछानकर मूँग के बराबर गोलियां बनाकर दो तीन गोलियां खावे।

अन्य—जो मतली को गुण करे—रीठे की गिरी तीन चार घड़ा पानी में भिगो दे, जब नरम हो जावे थोड़ा थोड़ा चाबे।

अन्य—बमन की अधिकता को गुण करे—मिट्टी का पुराना चिराग आग में जलावे जब आग उसकी बुझ जावे पानी में ठण्ढा करके उस जल से थोड़ा पिये वमन और उबकाई के लिये गुणदायक है।

अन्य—पुराने बमन को गुण करे—झड़बेरी के बीजों की गिरी, तुलसी की पत्तियां, मिश्री एक एक टंक कालीमिरच आधा टंक कूटछानकर पानी में मिलाकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली खावे।

रण्य—बमनाधिक्य के लिये उत्तम है—थोड़ी मक्खी की बिष्ठा गुण में मिलाकर खावे कै बन्द हो जावे।

अन्य—उस कै के लिये गुण करे जो मद्य पीने से होती है—लाल चावल साठी के पानी में भिगोकर वह पानी लेकर पिये।

अन्य—कै को गुणकारक शेखउलरईस ने कानून में लिखा है कि बादाम का रस पानी में निकालकर पिये बमन के लिये बहुत बड़ा यत्न है।

अन्य—नीम की टहनियां जिसमें पत्तियां भी हो भूभल में रक्खे जब गरम हो जावें पीसकर साफ करके पिये कै और मतली को गुण करे।

अन्य—टाट जलाकर उसकी राख पानी में डाले जब राख पानी में बै[ठ] जावे वह पानी साफ करके पिये।

अन्य—उस कै और मतली को गुण करे जो कि पित्त के कारण से हो इमली मुख में रक्खे।

अन्य—बड़े मुनक्के, खट्टा अनारदाना सात सात माशे, कालाजीरा ए[क] माशे पीसकर थोड़ा थोड़ा दे।

अन्य—कै को बन्द करे—पीपल की लकड़ी या उसकी सूखी छाल जलाक[र] उसकी राख एक तोला भर लेकर मिट्टी के बासन में ताजे पानी में मिला[वे] जब मिलाकर थिरा जावे साफ पानी लेकर पिये।

अन्य—विशेषकर कफ की कै को गुण करे—दो बताशों को घी में गर[म] करके उसमें डाले फिर निकालकर ठंढा करके एक एक बताशा एक घ[ड़ी] बाद खावे।

अन्य—बरगद की जटा जलाकर उसकी थोड़ी सी भस्म खावे कै ब[न्द] हो जावे।

इलायची की जवारिश—कै बन्द करती है और पाचक और पक्वाश[य] को बलदायक है—ऊदगरकी इलायची जो छोटी हो तो उत्तम नहीं तो ब[ड़ी] बीस मिस्काल पीसकर पाव भर शक्कर में कवाम करे जो सामर्थ्य हो [तो] पानी के बदले गुलाब मिलावे सादेतुरंज का शरबत बमन को शांत क[रे] विशेष करके पैत्तिकी बमन को तुरंज का पानी पचास मिस्काल एक से[र] शक्कर में कवाम करे।

इमली का शरबत—पैत्तिक बमन को गुण करे और कोष्ठ को बल [दे] और गरम पित्तों को नाश करे—इमली के बीज निकाल कर उसकी आध[ी]

शक्कर लेकर पानी में भिगो दे फिर साफ पानी उसका लेकर दुगुनी शक्कर में कवाम करे।

अनार का शरबत—कै को बन्द करता है—मीठे अनार का रस बराबर की शक्कर में कवाम करे फालसे का शरबत पैत्तिक बमन और उबकाई को गुण करे और पक्वाशय का बलकारक है और अनार के शरबत के बदले भी दी जाती है गरम पित्तों और रुधिर के उपद्रवों को गुण करे और स्वादिष्ट है भोजन के साथ भी खावे कालेरंग के काले फालसे को पानी और गुलाब में मलकर साफ करके दूनी मिश्री में कवाम करे।

औषधि—एक टंक बालछड़ जल में पीसकर सेवन करना कफ की कै को गुण करे।

अन्य—नागरमोथा कै को दूर करता है।

अन्य—मतली और उबकाई और हिचकी को गुण करे—हरा पोदीना आधसेर, डेढ़सेर पानी में औटावे जब आधा रहे एक सेर शक्कर में कवाम करे और एक टंक मस्तगी पीसकर मिलावे।

कालीमिरच की गोली।

जिसको मिरचा और गटका बोलते हैं कै और मतली को दूर करे और पाचक और भूख लाती है।

कालीमिरच तीन दाम, पीपल छः टंक, अनारदाना बारह टंक, जवाखार डेढ़ टंक, कूटछानकर गुड़ में गोलियां बनावे दो टंक खावे।

कलेजे के रोगों का यत्न इस्तस्का अर्थात् जलंधर।

इसके आरम्भ को सूउल्कनियां कहते हैं और उसका कारण यह है कि व्यर्थ ठण्ढा मल सम्पूर्ण जोड़ों में आ जाता है इसके तीन प्रकार हैं, लहमी जकी तबली लहमी में सम्पूर्ण अंगों पर शोथ होता है उसका कारण कलेजे की निर्बलता है और जकी में पेट बढ़ जाता है और त्वचा भारी हो जाती है और जब मलें पेट भरी हुई मशक की भांति मालूम हो और तबली में पेट बढ़ जाता है और नाभि निकल आती है और जब पेट पर हाथ मारे उससे तबले का अर्थात् ढोल का शब्द आता है लहमी बहुत होता है और इस्तस्का के बुरे प्रकारों में से है उसका यत्न यूनानी पुस्तकों में लिखा है कि जल न दे और पानी के बदले सौंफ का अरक और मकोय का अरक पिलावे और जो पानी की बहुत इच्छा हो तो जल को औटाकर ठण्ढा करके

रण्य—बमनाधिक्य के लिये उत्तम है—थोड़ी मक्खी की बिष्ठा गुण में मिलाकर खावे कै बन्द हो जावे।

अन्य—उस कै के लिये गुण करे जो मद्य पीने से होती है—लाल चावल साठी के पानी में भिगोकर वह पानी लेकर पिये।

अन्य—कै को गुणकारक शेखउलरईस ने कानून में लिखा है कि बादाम का रस पानी में निकालकर पिये बमन के लिये बहुत बड़ा यत्न है।

अन्य—नीम की टहनियां जिसमें पत्तियां भी हो भूभल में रक्खे जब गरम हो जावें पीसकर साफ करके पिये कै और मतली को गुण करे।

अन्य—टाट जलाकर उसकी राख पानी में डाले जब राख पानी में बैठ जावे वह पानी साफ करके पिये।

अन्य—उस कै और मतली को गुण करे जो कि पित्त के कारण से हो इमली मुख में रक्खे।

अन्य—बड़े मुनक्के, खट्टा अनारदाना सात सात माशे, कालाजीरा एक माशे पीसकर थोड़ा थोड़ा दे।

अन्य—कै को बन्द करे—पीपल की लकड़ी या उसकी सूखी छाल जलाकर उसकी राख एक तोला भर लेकर मिट्टी के बासन में ताजे पानी में मिलावे जब मिलाकर थिरा जावे साफ पानी लेकर पिये।

अन्य—विशेषकर कफ की कै को गुण करे—दो बताशों को घी में गरम करके उसमें डाले फिर निकालकर ठंढा करके एक एक बताशा एक घड़ी बाद खावे।

अन्य—बरगद की जटा जलाकर उसकी थोड़ी सी भस्म खावे कै बन्द हो जावे।

इलायची की जवारिश—कै बन्द करती है और पाचक और पक्वाशय को बलदायक है—ऊदगरकी इलायची जो छोटी हो तो उत्तम नहीं तो बड़ी बीस मिस्काल पीसकर पाव भर शक्कर में कवाम करे जो सामर्थ्य हो तो पानी के बदले गुलाब मिलावे सादेतुरंज का शरबत बमन को शांत कर विशेष करके पैत्तिकी बमन को तुरंज का पानी पचास मिस्काल एक सेर शक्कर में कवाम करे।

इमली का शरबत—पैत्तिक बमन को गुण करे और कोष्ठ को बल दे और गरम पित्तों को नाश करे—इमली के बीज निकाल कर उसकी आधी

शक्कर लेकर पानी में भिगो दे फिर साफ पानी उसका लेकर दुगुनी शक्कर में कवाम करे।

अनार का शरबत—कै को बन्द करता है–मीठे अनार का रस बराबर की शक्कर में कवाम करे फालसे का शरबत पैत्तिक बमन और उबकाई को गुण करे और पक्वाशय का बलकारक है और अनार के शरबत के बदले भी दी जाती है गरम पित्तों और रुधिर के उपद्रवों को गुण करे और स्वादिष्ट है भोजन के साथ भी खावे कालेरंग के काले फालसे को पानी और गुलाब में मलकर साफ करके दूनी मिश्री में कवाम करे।

औषधि—एक टंक बालछड़ जल में पीसकर सेवन करना कफ की कै को गुण करे।

अन्य—नागरमोथा कै को दूर करता है।

अन्य—मतली और उबकाई और हिचकी को गुण करे—हरा पोदीना आधसेर, डेढ़सेर पानी में औटावे जब आधा रहे एक सेर शक्कर में कवाम करे और एक टंक मस्तगी पीसकर मिलावे।

कालीमिरच की गोली।

जिसको मिरचा और गटका बोलते हैं कै और मतली को दूर करे और पाचक और भूख लाती है।

कालीमिरच तीन दाम, पीपल छः टंक, अनारदाना बारह टंक, जवाखार ढेढ़ टंक, कूटछानकर गुड़ में गोलियां बनावे दो टंक खावे।

कलेजे के रोगों का यत्न इस्तस्का अर्थात् जलंधर।

इसके आरम्भ को सूउल्कनियां कहते हैं और उसका कारण यह है कि व्यर्थ ठण्डा मल सम्पूर्ण जोड़ों में आ जाता है इसके तीन प्रकार हैं, लहमी जकी तबली लहमी में सम्पूर्ण अंगों पर शोथ होता है उसका कारण कलेजे की निर्बलता है और जकी में पेट बढ़ जाता है और त्वचा भारी हो जाती है और जब मलें पेट भरी हुई मशक की भांति मालूम हो और तबली में पेट बढ़ जाता है और नाभि निकल आती है और जब पेट पर हाथ मारे उससे तबले का अर्थात् ढोल का शब्द आता है लहमी बहुत होता है और इस्तस्का के बुरे प्रकारों में से है उसका यत्न यूनानी पुस्तकों में लिखा है कि जल न दे और पानी के बदले सौंफ का अरक और मकोय का अरक पिलावे और जो पानी की बहुत इच्छा हो तो जल को औटाकर ठण्डा करके

थोड़ा थोड़ा दे और भोजन शोरवा दे और मुंजिज और मुसिलों का सेवन करे और रोगी को गरम रेत में गरदन के नीचे तक गाड़ना गुण करता है और सूर्य की ओर पीठ करके धूप में बैठना रोग को शांत करे और जब तन्दूर ठंढा होने लगे रोगी को उसमें इतना देर बैठावे कि पसीना निकल आवे हम्माम से उत्तम है और इतना परिश्रम करना कि अच्छी तरह पसीना बदन से निकले गुण करे।

रेवन्द की टिकिया—तबली इस्तस्का को गुण करे—रेवन्द चार टंक, धुली लाख, मंजीठ, सौंफ, कासनी के बीज, बालछड़ दो दो टंक लेकर टिकिया बनावे—खूराक दो टंक, सिकंजबीन और मकोय के अरक के साथ खाय।

रेवन्द का शरबत—इस्तस्का को गुण करे—रेवन्द पांच टंक, कासनी के बीज सात टंक, कासनी की जड़ दश टंक, सौंफ, धुली लाख दो दो टंक, मिश्री पावभर लेकर शरबत बनावे, खूराक दो टंक खावे।

औषध—इस्तस्का के लिये आजमाई हुई है—लोहे का मैल पक्के बारह दाम आग में लाल करके तीन बेर उसको गौ के मूत्र में जो जनी न हो बुझावे और तीन बेर दही और तीन बेर कड़वे तेल में बुझाकर कूटछानकर दशसेर उस गौ के मूत्र में जिसने जुफ्ती न खाई हो मिलाकर लोहे की कड़ाही में डालकर चूल्हेपर रक्खे, जब सब मूत्र सूख जावे नोन की रीति पर फंकी होगी आधा टंक उससे लेकर खाया करे।

काढ़ा—लहमी इस्तस्का को जो बिना ज्वर के हो गुण करता है—अजवायन, सौफ औटाकर पिलावे।

अन्य—सूउल्कनियां को गुण करे—चने तीन दाम पावभर पानी में औटावे, जब आधा रहे साफ करके पिये।

गोली—इस्तस्का को गुण करे—मदार के हरे पत्ते पावभर, हल्दी एक दाम दोनों को पीसकर उड़द के बराबर गोलियां बनाकर प्रतिदिन चार गोली ताजे पानी से सेवन करे और एक गोली रोज अधिक करे कि सात गोली तक होजावें और बाज पुस्तकों में मदार के पत्तों का सेवन इस भांति पर लिखा है कि बयालीस मदार के पत्ते, हल्दी दो माशे, बेर की लकड़ी का कोयला पांच माशे, खूब महीन पीसकर घी खूब गरम करके उसमें मिलाकर उड़द के बराबर गोलियां बनावे, सफेद दाग के लिये एक गोली सुबह और एक सन्ध्या को खावे और कफज्वर के लिये चार गोलियां और हड़फूटन के लिये एक

गोली एक सप्ताह पर्यंत खावे और बिसूचिका के लिये दो गोली स्वभाव के बदलने के दूर करने को और फालिज के लिये एक गोली सुबह को चार दिन तक दे और इस्तस्का के लिये चार गोली से सात गोली पर्यंत सेवन करे।

गुण–जो इस्तस्का के रोगी को स्नान करने की आवश्यकता हो चाहिये कि खारी नोन पीसकर पानी में मिलाकर कई दिन वह पानी धूप में रखकर गरम करके उससे नहावे गुण करे और खारे पानी की नदी में नहाना गुण करे।

एलुवे की गोली इस्तस्का को गुण करे—एलुवा चार टंक पीले हड़ की छाल, अजवायन, कालीमिरच, बिधारा एक एक टंक कूटछानकर चने के बराबर गोलियां बनावे खूराक तीन टंक।

औषधि—सिरस की छाल औटाकर पिये अकबरनामे में लिखा है कि एक किले में समय के बीतने से अन्न वहां का पुराना हो गया और उस अन्न को किलेवालों ने खाया उससे शोथ पैदा हुआ फिर जिस मनुष्य ने सिरस की छालका सेवन किया आराम हो गया। अन्तकी यह बात हुई कि उस वृक्ष की छाल सोने मोल की होगई।

औषधि—इस्तस्का को गुण करे–हुक्के का पानी जो बहुत गन्दा हो गया हो पीना गुण करता है।

लेप—गौ का गोबर नोन में मिलाकर लगाना इस्तस्का को गुण करता है।

अन्य—गोबर जलाकर उसकी राख साढ़े तीन मिस्काल प्रति दिन खावे।

अन्य—इन्द्रायण की जड़ औटाकर पीना मल को दस्तों से दूर करता है।

औषधि—ऊंट का मूत्र पीना गुण करता है और उसकी रीति यह है कि सुबह को चार पांच दाम मूत्र में पीले हड़ की छाल तीन माशे मिलाकर और ऊँट का दूध भी बहुत गुण करता है, भोजन और जलपान के बदले इसी पर रहे अपूर्व यत्न है।

अन्य—मूली के पत्तों का पानी गुण करता है।

अन्य—लाल बकरी का मूत्र छः तोले उसमें एकदाम बालछड़ मिलाकर पीना इस्तस्का को गुण करता है।

अन्य—सूउल्कनियां को गुण करे—हरे करेले से छः टंक पानी निचोड़कर

साफ करके पिये और जो चाहे थोड़ा शहद में मिलावे, दो तीन दस्त लाकर मल को दूर करता है।

अन्य—कुकरौंधे का रस एक तोला प्रातःकाल पिये और प्रतिदिन अधिक करके दश तोले तक पहुँचावे।

जाफरान का पाक—सूउल्कनियां को गुण करता है और इस्तस्का और सख्ती और अंगों की पीड़ा को जैसे कि कलेजा और तिल्ली को गुण करे।

केशर, तज, कूठ, असारों, बालछड़, करफ्श के बीज, अनीस्तन, गुलाब के फूल, कासनी के बीज दो दो भाग, मुरमक्की, रेवन्द एक एक भाग, शहद तिगुना, खूराक एक टंक से एक मिस्काल पर्यन्त सौंफ के अरक के साथ खाय।

गोली—वैद्यों की सेवन की हुई इस्तस्का को गुण करे—शुद्ध गन्धक, पारा, हड़, बहेरा, आमला सज्जी, जवाखार, कालानोन, लाहौरीनोन, सोंठ, कालीमिरच, भुनासुहागा बराबर ले जमालगोटा दो भाग यह सम्पूर्ण औषध कूटछानकर इक्कीस बेर नीबू के रस में पीसकर सुखाकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली ऊँट के दूध में खाय।

चूर्ण—लह्मी और तबली के इस्तस्का के लिये गुणदायक—सोंठ नागरमोथा, शैतरज, सफेद जीरा, कटाई, हल्दी, गजपीपल, पीपलामूल, बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक तीन टंक गरम पामी के साथ खाय।

चूर्ण—इस्तस्का और सूउलकनियां को गुण करे—करफ्श के बीज, बालबिड़ंग, शैतरज, कालीमिरच, पीपल, पीपलामूल, सौंफ, कालानोन एक एक टंक, पांच हड़ की छाल, सोंठ दस टंक कूटछानकर खूराक दो टंक सौंफ के अरक के साथ खाय।

अन्य—तबली इस्तस्का को गुण करे—करफ्श के बीज, राजियाना, अनीसून, असारों, कड़वीकूठ, रेवन्दचीनी दो दो टंक, नागरमोथा, बालछड़ डेढ़ डेढ़ टंक, कालाजीरा तीन टंक कुटछानकर खूराक दो टंक खाय।

अन्य—यह नुस्खा मुर्जरिबात अकबरी से प्रति किया गया—मण्डवी का आटा कचनाल के पानी में खमीर करके रोटा पकाकर नोन के साथ खावे और पानी के बदले कचनाल की पत्तियां औटाकर पिये या उसका अरक निकालकर सेवन करे और सिवा कचनाल के पत्तों के काढ़े के और हाथ

मुंह धोने और नहाने में दूसरा जल सेवन न करे, जो ईश्वर चाहे तो एक सप्ताह में उसका गुण प्रकट होगा।

चूर्ण कंघी का—पहिले दिन एक माशे भर खावे दूसरे दिन दो माशे तीसरे दिन तीन माशे फिर प्रतिदिन तीन माशे खाया करे, भोजन मूंग की खिचड़ी का करे।

औषधि—इस्तस्का को गुणदायक—सफेद जीरा अधकुचला तीन भाग, कंघी अधकुचली नव भाग उसमें से एक तोला भर लेकर रात्रि को एक प्याले भर जल में भिगो दे प्रभात को औटावे, जब आधा पानी शेष रहे साफ करके गुनगुना पिये।

अन्य—पेट बढ़ जाने को गुण करे—दो दाम शहद, चार दाम पानी में मिलाकर पिये—और थोड़े दिन उसी भांति पिये और यह रोग बहुधा लड़कों को हो जाता है।

गुण—इस्तस्का वाले को गेहूं की रोटी से जौ की रोटी खाना उत्तम है और जो गेहूं की रोटी खाना चाहे तो जौ के आटे में गेहूं का आटा मिलाकर रोटी पकाकर खावे।

गोली—उस स्त्री के लिये जिसका जनने के पीछे पेट बढ़ गया हो—मिरच, पीपल, पीपलामूल, चाब, शैतरज, अशना, नागरमोथा, बायबिड़ंग, देवदारू, त्रिफला, किस्तमुरमक्की, सौंफ, गजपीपल, इन्द्रयव एक एक टंक, तुरबुद तीन टंक कूटछानकर पुराना गुड़ औषधों के बराबर मिलाकर आधे टंक के बराबर गोलियां बनाकर प्रभात को एक गोली दो सप्ताह पर्यन्त खावे।

लेप—इन्द्रायन को पानी में पीसकर लगावे पेट का बढ़ जाना जो सन्तान उत्पन्न होने के उपरांत होता है दूर हो।

लक की माजून—जो इस्तस्का और कोष्ठ की सरदी और कलेजे को गुणदायक है—धुली हुई लाख चार भाग, बालछड़, रेवन्द तीन तीन भाग, आसारों, करफ्स के बीज दो दो भाग, कड़वीकूट, कड़वे बादाम की गिरी, मिरच, सोंठ, जीरा, साजिज मस्तगी एक एक भाग, शहद तीन भाग।

औषध—जो इस्तस्का को गुण करे—बारह टीड़ी उनके हाथ पांव तोड़ करके एक दाम हब्बुल्लास पीसकर के साथ खावे।

अन्य—नील अर्थात् बस्मा, अमलतास कूटछानकर खूराक लड़कों के

लिये एक किरात से पांच किरात पर्यंत और बड़े के लिये तीन टंक पर्यंत खाय।

लक की टिकिया—इस्तस्का के लिये गुणदायक है—लाख चार भाग, रेवन्द, कासनी के बीज, खरबूजे के बीज, खीरे ककड़ी के बीज तीन तीन भाग, मजीठ, सौंफ, मकोय, अजमोद, बालछड़, तज दो दो भाग, अजवायन, कत्था एक एक भाग लेकर टिकिया बनावे, खूराक एक टंक से दो टंक पर्यन्त शरबत बजूरी के साथ खाय।

लेप—बकरी की मेंगानियां, गौ का गोबर, गोखुरू सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—नोन, बालछड़ सिरके में मिलाकर लगावे।

यरकां अर्थात् कमलबायु का यत्न।

हिन्दी के यरकां को कमलबायु वा कामला बोलते हैं और वह सौदा या पित्त के दोषों के बिना दुर्गन्ध जारी होने से त्वचा की ओर होता है जो यह रोग पित्त से हो उसको यरकां असफर बोलते हैं और जो सौदा अर्थात् किसी दोष के दग्ध होने से हो उसको यरकां असूद बोलते हैं और जिसमें दुर्गन्धि हो उसमें ज्वर हो सुगम यत्न यह है कि इमली का पानी और कासनी का रस, सादी सिकंजबीन सेवन करे, सिरके की सिकंजबीन दो भाग मिश्री तीन भाग कवाम में लावे।

अन्य—कामला को गुण करे—मलयागिरी चन्दन गुलाब हो तो उत्तम नहीं तो पानी में पांच माशे आंबाहल्दी के साथ पीसकर सात माशे शहद में खावे, भोजन एक सप्ताह पर्यन्त दाल चावल करे।

नाक में टपकाने की औषधि।

जो कामला को गुण करे—बन्दाल रात को पानी में भिगोकर प्रभात को उसका साफ पानी लेकर दो तीन बूंदें नाक में टपकावे। तिबफरीदी में लिखा है कि बकरी की मेंगनियां बाजी औषधों के साथ खाना कामला का नाशक है।

अन्य—कामला को दूर करे—लौंगसब्ज रात को तीन पाव पानी में भिगोकर रक्खे, प्रभात को उसका स्वच्छ जल लेकर पिये, भोजन दालभात करे।

अन्य—कमलबायु को गुण करे—बबूल की फली, संखाहूली, आमला दो

दो टंक, कुचलकर एक सेर शक्कर में औटावे, जब चतुर्थांश शेष रहे थोड़ी शक्कर मिलाकर साफ करके पिये।

अन्य—कमलबायु को गुण करे—कड़वी तोंबड़ी पानी में पीसकर नाक में टपकावे।

औषध—कंघी सात माशे पानी में पीसकर शहद में मिलाकर खावे भोजन दाल चावल करे।

अन्य—बिनौले दो दाम रात्रि को जल में भिगोकर प्रभात को पीसकर उसका साफ पानी लेकर लाहौरीनोन में मिलाकर पिये और खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—रीठा, गावजबां दो दाम, पावभर पानी में भिगोकर प्रभात को उसका साफ पानी पिये, जो ईश्वर चाहे एक सप्ताह में आराम हो।

अन्य—दो तीन कसौंधी की पत्तियां दो तीन मिरच के साथ पिये।

शरबत—निर्माता का बनाया हुआ कलेजे की गरमी और कामला को दूर करे—चन्दन बूरा, बड़े मुनक्के दो तोले, जिरिश्क, कासनी के बीज, खीरे ककड़ी के बीज एक एक तोला, लालनमक, इलायची के दाने दो दो टंक, मिश्री पाव भर शरबत बनावे खूराक एक तोला उचित औषधों के रसों के साथ खाय।

हिन्दी दवा—कामला को गुण करे-आजमाई हुई है चूना जवान के लिये तीन माशे तक पक्के केले की फली के टुकड़े में रखकर खिलावे ऊपर से बाकी खली खिलावे और जो लड़का हो एक माशा चूना चौथाई केले की फली काफी है।

चूर्ण—बबूल के फूल मिश्री बराबर पीसकर प्रात को एक तोला भर खावे।

चूर्ण—उस पीलाई के लिये कि कमलबायु के दूर होने के उपरान्त रहती है सात दाने कलौंजी स्त्री के दूध में पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य—नींबू का पानी आंख में टपकावे।

अन्य—मूली का अचार कि सिरके में बनाया हुआ हो खाना गुण करता है।

अन्य—कहरबा लटकाना और पीले कपड़े पहिनना कामला रोग को मुख्य करके गुण करता है।

अन्य—कामला के लिये गुणदायक है एक सप्ताह पर्यन्त सेवन करे—मेहँदी

की पत्तियां दो दाम कुचलकर रात्रि को जल में भिगोदे प्रभात को साफ जल उसका पिये ।

अन्य—मतबूख का काढ़ा कमलबायु को गुण करे ।

तिल्ली अर्थात् तिल्ली की सख्ती का यत्न ।

तिल्ली की सख्ती का कारण बहुधा गहरे रुधिर सौदावी का है और तपों में रक्षा बिना जल पीने से होती है। यह रोग कठिनता से अच्छा होता है ।

यत्न—असलीम रग की फस्द खोलना गुण करे ।

गुण—जो तहाल के रोगी के दाहने हाथ की रग असलीम पर कपड़े की बत्ती जलाकर दाग दे और एक समय पर्यन्त उसको बहने दे, बड़ा गुण देगा ।

उपाय—तिल्ली की सख्ती दूर करने के लिये—चूने की कली थोड़े रीठे की गिरी के साथ कूटकर केले की पक्की फली के साथ रखकर दाहने पहुँचे के अंदर की तरफ जोड़ पर बीच की उँगली के सामने मोटे कपड़े से एक पहर तक बँधा रक्खे, जो चूने की तेजी से वहां फफोला पड़ जावे फिर खोल डाले गुण देगा ।

अफतैमून की सिकंजबीन ।

तिल्ली को कि गरमी के तप से हो गुण करती है—अफतैमून चार तोला, अंजीर सात, कनेर की जड़ की छाल, कासनी की जड़ दो दो तोले, सँभालू के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, परसियावशान, कासनी के बीज, माईं, कशूश के बीज, मुलहठी, गुलाब के फूल, असारों दो दो तोले, गुलकन्द तिगुनी मिलाकर यथाबिधि सिकंजबीन बनावे ।

गोली—जो तिल्ली की सख्ती को दूर करे—पीली हड़ की छाल, सोंठ, शैतरज, भुनासुहागा, सज्जी सफेद, कलमीशोरा, बायबिड़ंग, सफेद जीरा, कालाजीरा, सेंधानोन बराबर ले और दुगुना गुड़ मिलाकर दो गोलियां बनाकर दो माशे से चार माशे पर्यन्त गर्म पानी के साथ खावे ।

गोली—एलुवा, हींग, सुहागा, नौसादर, सफेद, सज्जी बराबर लेकर घिकुआर के लुआब में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे. एक गोली रोज खाया करे ।

गोली—कालीमिरच, पीपल, भुनी फिटकरी, नौसादर, भुना सुहागा,

अजवायन, कटाई, खारीनोन, लाहौरीनोन, आंबाहल्दी, जवाखार बराबर कूटछानकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे ।

तुरबुद की गोली ।

पीले हड़ की छाल, एलवा, सुहागा, कालीमिरच बराबर लेकर घिकुआर के रस में चार पहर खरल करके गोलियां बनावे खूराक एक टंक खाय ।

सँभालू की टिकिया ।

उस तिल्ली के लिये जो बहुत ही गरमी से हो गुण करे—कासनी के बीज, कनेर के जड़की छाल, खीरे ककड़ी के बीजों की गिरी, कशूरू के बीज, गुलाब के फूल, माईं दो दो टंक, असारों आधा टंक, मकोय के अरक में टिकिया बनावे खूराक दो मिस्काल खाय ।

गोली—तिल्ली के वास्ते आजमाई हुई है—कलमीशोरा, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी, सोंचरनमक, सेंधानोन, पीलेहड़ की छाल, आंबाहल्दी, सादी अजवायन बराबर कूटछानकर तीन बेर नींबू के रस में तीनबेर अदरक के रस में खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे सुबह और शाम एक एक गोली खाया करे ।

चमगादर की गोली ।

गोली—तिल्ली के लिये शेखउल्रईस की मुजर्रिब अर्थात् आजमाई हुई औषधों की पुस्तक में है एक मोटा चमगादर काट के साफ करे फिर मिट्टी के बर्तन में रखकर उस पर तेज सिरका भी डालकर कपरौटी करके तंदूर में रक्खे जब जलजावे उसकी राख सिरके में मिलाकर गोलियां बनाकर हर रोज दो टंक खाया करे बहुत गुण करे ।

एलवे की गोली ।

लौंग, हिन्दी नमक, रेवन्द, खताई, कलमीशोरा, कूटछानकर एक माशे के बराबर गोलियां बनावे सुबह और शाम एक गोली मक्खन में मिलाकर निगल जावे ।

अन्य—कनेर की जड़, नौसादर, मुरमक्की बराबर घिकुवार के जल में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर प्रभात और संध्या एक एक गोली खावे ।

अन्य—सोंठ, भुनासुहागा, सेंधानोन, हींग बराबर सहँजने के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर संध्या और सुबह एक गोली खाया करे ।

अन्य—कोलंज और कोष्ठ और तिल्ली की पीड़ा को दूर करती है और अफ़रा और बद्धकोष्ठ को गुण करे—एलवा चार टंक, पीलेहड़ की छाल, अजवायन, बिधारा, कालीमिरच दश दश टंक कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर सेवन करे।

गुण—तिल्लीवाले को उचित है कि लोहे का बुझा हुआ पानी सादे पानी के बदले पिया करे।

अन्य—झाऊ की लकड़ी से प्याले बनाकर उसमें पानी पीना मुख्य करके तिल्ली को गुण करता है।

अन्य—टीड़ी का अचार खाना तिल्ली को गुण करे।

अन्य—जो खांसी न हो आंब का अचार खाना तिल्ली को काटता है चाहिये कि उसको खाया करे।

अन्य—तिल्ली को गुण करे और बात को दूर करे—हालों एक भाग, कलौंजी आधाभाग शहद मिलाकर प्रतिदिन सिकंजबीन के साथ खाया करे।

अन्य—तिल्ली को गुण करे—और क्षुधा बढ़ावे पीले हड़ की छाल, अजवायन बीस बीस टंक, लोहे का मैल तीस दाम, गुड़ औषधियों की बराबर घिकुवार के पत्ते छिले हुये आधे दाम, मिश्री औषधियों को पानी में मिलाकर लोटे में रखकर तीन सप्ताह पर्यन्त घोड़े की लीद में गाड़े फिर निकालकर साफ करके दो दो दाम सुबह और शाम खावे।

अन्य—सँभालू की जड़ कबर के जड़ की छाल बराबर के तेज सिरके में भिगो दे और रोज नया सिरका एक सप्ताह पर्यन्त बदलता रहे, फिर छाया में सुखाकर दो दाम शहद की सिकंजबीन में मिलाकर खावे।

अन्य—बात को दूर करे—कलौंजी एक भाग, हालों दो भाग, शहद में मिलाकर प्रतिदिन दो टंक एक तोले सिकंजबीन के साथ खावे।

अन्य—सरसों का तेल गुनगुना तिल्ली पर मलना उसकी सख्ती को दूर करता है।

अन्य—अजवायन जितनी खा सके प्रभात और सन्ध्या खाया करे।

अन्य—भुना सुहागा एक भाग, राई तीन भाग दोनों को महीन करके एक माशा सुबह और शाम खाया करे।

अन्य—नींबू का रस एक दाम, प्याज का रस एक दाम आपस में मिलाकर

चौदह दिन तक पिये और सिवाय नरम चीज जैसे कि खिचड़ी और दाल और चावल के और कुछ न खावे।

अन्य–नौसादर आधा दाम मूली के पानी में मिलाकर पिये और मूली और तिल बराबर पीसकर तिल्ली पर बांधे।

अन्य–चूने की कली महीन पीसकर शहद में मिलाकर तिल्ली पर मलकर अंजीर के पत्ते उसपर बांधे।

लेप–शैतरज सिरके में पीसकर लगावे, तिल्ली के शोथ को गालाता है।

अन्य–मूली के बीज पीसकर सिरके या सिकंजबीन में मिलाकर खाना तिल्ली को दूर करता है।

अन्य–करील की सूखी कोपल साढ़ेतीन मिस्काल, कालीमिरच उससे आधी कूटछानकर हररोज सुबह को पानी के साथ पिये, तिल्ली की सख्ती को दूर करता है।

अन्य–गेहूँ की भूसी और छिला हुआ लहसुन जलाकर उसकी राख सिरके में मिलाकर गुनगुना लगावे।

अन्य–प्याज और कांदा तिल्लीवाले के गले में लटकाना मुख्य करके शीघ्र गुण करता है।

अन्य–जवारिश बज तिल्ली के लिये गुण करे नुस्खा जिसका निसियान अर्थात् भूल की बिमारी के वर्णन में वर्णन हुआ गुणदायक है।

अन्य–जो तिल्लीवाला अपना या लड़के का मूत्र हररोज सुबह को तीन चुल्लूभर लेकर पिये तो तिल्ली दूर हो।

अन्य–यदि मनुष्य युवा हो छः माशे सज्जी और जो लड़का हो दो माशे गुड़ में मिलाकर जो ज्वर न हो इक्कीस दिन खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे।

फंकी–तिल्ली और बायुशूल और स्वभाव के नरम करने को गुण करे–अजवायन आध सेर, हरे घिकुआर के पत्ते बीस, त्रिफला, त्रिकुटा, पांचोंनोन, सज्जी, सफेदकटाई, तुरबुद, कालाजीरा, बच, सौंफ, अजमोद, बिधारा एक एक टंक, घिकुआर के रस में भिगोकर छाया में सुखाकर कूटछानकर रक्खे, खूराक तीन माशे तक ताजे पानी के साथ खाय।

अन्य–झाऊ की पत्तियां एक टंक सुखाकर कूटछानकर एक टंक शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य–झाऊ की पत्तिया कूटकर एक अदकियाभर पानी उसका निचाड़कर दश टंक सिकंजबीन मिलाकर खावे।

अन्य–ऊँट का दूध और मूत्र तिल्ली को दूर करता है।

अन्य–झाऊ के पत्तों का अरक तिल्ली को गुण करता है।

अन्य–नमदे का टुकड़ा सिरके में भिगोकर तिल्ली पर बांधे।

माजून—तिल्ली के लिये आजमाई हुई है कबर की जड़ की छाल, अफ्तैमून बराबर शहद में मिलाकर माजून बनाकर प्रतिदिन पांच मिस्काल खावे।

अन्य–तिल्ली की कठोरता को दूर करती है–कबाबा, पुष्करमूल, जवाःखार, पीलीहड़, हींग, लाहौरीनोन, सोंचरनोन, बायबिड़ंग, शैतरज, समन्दर झाग, तुरबुदसफेद, अजवायन बराबर कूटछानकर खूराक एक तोला सुबह और शाम को खाय।

फर्राश के पत्तों का शर्बत।

फर्राश की पत्तियां पावभर दो दिन दो सेर जल में औटावे जब तृतीयांश रहे साफ करके पावभर शक्कर में कवाम करे खूराक दो तोले।

आँतों के रोग और अतीसार का यत्न।

अतीसार कई प्रकार का होता है जो दस्त कोष्ठ अर्थात् मेदे के हों उसको खलफा अर्थात् संग्रहणी कहते हैं और जो कलेजे से हों जूसन्तारिया कहते हैं वह रुधिर का अतीसार है मांस के धोवन के सदृश दस्त आते हैं या कयाम कबदी हैं उसमें पीब निकलती है जो आंतों से हो उसको सहज और जलकुलअमआ और जहीर कहते हैं इनका विस्तार विस्तृत पुस्तकों में लिखा इस जगह थोड़ी सुगम औषधि जो अतीसार को गुण करे लिखी जाती है।

नरकचूर की जवारिश।

बात को दूर करे काट के अतीसार को गुण करती है–शक्कर सफेद पावभर नरकचूर पीसकर पांचटंक, जवारिश अर्थात् पाक बनावे खूराक दो तोले और आमले सादे की जवारिश जो कोष्ठ के रोगों में वर्णन हुई गुण करती है।

आमले की गोली–दस्तों को रोकती है कोष्ठ के अतीसार और आंतों के अतीसार को गुण करे–एक तोला आमला थोड़े से जल में भिगो दे जब नरम हो जावें कजली करके कालानोन पीसकर मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह शाम खावे।

गोली—अतीसार को गुण करे—राल, पाषाणभेद, बेलगिरी, नरकचूर, आमला, भुनी सम्मगअरबी, भुनीहड़, माई, भुने मुनक्के, अजवायन, गेहूँ, गुलनार बराबर कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनाकर प्रातः और संध्या खावे।

अनार की गोली—कच्चा अनार मिट्टी में लपेटकर भूभल में रक्खे जब पक जावे मिट्टी दूर करके अनार को कूटपीसकर आमला भुनी सम्मग-अरबी, बेलगिरी, अजवायन दो दो माशे, अफीम, नरकचूर, एक एक माशा पीसकर उसमें मिलाकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम खाया करे।

अन्य—जो काबिज और कोष्ठ के अतीसार और सख्ती को गुण करे और पाचनशक्ति को बढ़ावे—बालछड़, अजवायन, सौंफ भूनकर, सोंठ भूनकर, नागरमोथा पांच पांच टंक, गुलनार, माई, बड़ी इलायची के दाने पांच पांच टंक, हुबुल्लास छः टंक शहद या शक्कर में कवाम करे।

शिंगरफ की गोली—दस्तों को रोकती है—सुहागा एक माशा, शिंगरफ दो माशे, अफीम चार माशे कूटछानकर कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली खावे और लिखा है कि रात्रि को जो अधिक दस्त आवें यह गोली शहद में मिलाकर खावे और जो दिन को अतीसार जोर करे नींबू के रस में मिलाकर सेवन करे।

अन्य शिंगरफ की गोली—शिंगरफ, लौंग, अफीम तीनों दवा बराबर ले मिश्री एक माशा कूटछानकर चार माशे की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली।

अन्य—जो कब्ज करनेवाली और रुधिर के अतीसार और पित्त के अतीसार को गुण करती है—समाक के दाने दो टंक, माजू, अनार की छाल आधा आधा टंक, हुबुल्लास दश टंक, मुनक्के के दाने तीन टंक, सम्मग-अरबी पांच टंक कूटछानकर गोलियां बनावे, खूराक दो गोली पर्यन्त खाय।

गोली—काबिज और कफ के अतीसार को दूर करती है और पाचक है—कालीमिरच, पीपल, सोंठ, लौंग, अकरकरा एक एक टंक, अफीम दो टंक अदरक के पानी में पीसकर चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाया करे।

अन्य—गोली काबिज अतीसार को दूर करती है—रसौंत, गेरू डेढ़ डेढ़

तोले, मुरदारसंग बराबर पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक गोली संध्या को खाया करे।

अन्य—लड़कों के अतीसार को गुण करे जो ज्वर न हो तब भी गुण करती है—कत्था, गुलनार तीन तीन माशे, जहरमोहरा पीसकर, आमला सम्मगअरबी, भूनी बेलगिरी दो दो माशे, अफीम, माजू, भुनी सौंफ, सफेद-जीरा एक एक माशे, कपूर एक रत्ती कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल दे और कभी जहरमोहरा के बदले बंशलोचन मिलाते हैं और बंशलोचन अधिक भी करते हैं और जो कुछ खटका हो तो कपूर न दे।

अन्य—गोली जो बहुत ही काबिज है मुनक्के बीजों समेत सात दाने, आंब की गुठली एक, अफीम आधा माशा कूटछानकर मिलाकर सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावे।

माजू की गोली—शीघ्र ही गुणदायक है अतीसार को दूर करती है और आंतों के व्रण को गुण करती है—माजू चार टंक, अफीम दो टंक, अजवायन एक मिस्काल चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाय।

नकछिकनी की गोली—उस अतीसार को गुण करती है जो नाफ के सरक जाने से हो—नकछिकनी जलाकर अजवायन, सोंठ, बराबर कूटछान कर एक माशा गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे और घी के साथ खावे।

लेप—नाफ के सरक जाने के लिये-फिटकरी तीन टंक, माजू तीन कूट-छान कर सिरके में मिलाकर लगावे, ऊपर से जोर से पट्टी बांधें।

गोली—अतीसार को गुण करती है— सोंठ भूनकर, माईं, लोध पठानी, सफेद राल, धवई के फूल, इन्द्रजौ, मीठी, बेलगिरी, मोचरस, आंब की गुठली, भुनाखुरमा, कालीमिरच कूट छानकर गोलियां बनावे।

अन्य—भुनी भंग, बेर की पत्तियां, नरकचूर बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय खावे।

गोली—आंतों के छिलजाने और रक्तातिसार जो सुद्दे बिना हो उत्तम है—गेरू, कत्था, राल, गोंद, कतीरा, छिले कौंच के बीज, बेलगिरी कूट छान कर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे।

गोली—लड़कों के अतीसार को-गुलनार एक, इलायची, अफीम एक एक

माशा, चाकसू रसौंत, नरकचूर, सफेद जीरा, हल्दी, नीम की छाल, बकायन की कोपल, बबूल की कोपल, दो दो माशे कूटछान कर मूंग की बराबर गोलियां बनावे दो गोली तक खावे।

अन्य—लड़कों के सब्ज रंग के दस्त आने को गुण करे—बबूल की पत्तियां, लौंग, मुरदारसंग गुलनार, केसर, नीम की कोपल, सौंफ, कालाजीरा, सफेद जीरा, सोंचरनोन, तज, अजवायन, बायबिड़ंग सात सात माशे महीन पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रभात एक संध्या को खावे और कभी मुरदारसंग के बदले जहरमोहरा या बंशलोचन और कभी तज के बदले बज मिलाते हैं।

इलायची का चूर्ण—काबिल और पाचक है—भुनी सोंठ, भुनी सौंफ, बड़ी इलायची की छाल बराबर पीसकर चूर्ण बनावे एक हथेली भर खावे।

बज का चूर्ण—अतीसार और संग्रहणी को गुण करे—बज मिट्टी के कुल्हड़ में रखकर कपरौटी करके गरम तंदूर में रखे, जब ठण्ढा हो जावे निकालकर पीसकर एक टंक लेकर दो टंक शहद और कुछ नोन मिलाकर खावे, भोजन साठी के चावल दही के साथ खाय।

अन्य—अतीसार और खूनी बवासीर को बन्द करती है और पेचिस और रंग की जरदी को गुण करे—मस्तंगी, कालीमिरच, बंशलोचन, अनारदाना, आंब के बीज की गिरी पीसकर मुलहठी, माईं, धवई के फूल, माजू बराबर ले और खशखाश के पोस्ते के पानी में गोलियां बनावे, एक दाम खावे, साठी के चावलों के पानी के साथ और मूंग और चावल भोजन करे।

काली हड़ का चूर्ण—पक्वातीसार और जहीर को गुण करे—हड़ घी या बादाम के तेल में भूनकर दो तोले खशखाश का पोस्ता घी में भूनकर एक तोला कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसके बराबर शक्कर मिलावे, एक तोला प्रभात को और सात माशे शाम को खावे, निर्माता ने इस नुस्खे में सम्मग-अरबी भुनी हुई मिलाई थी बहुत गुण किया।

तज का चूर्ण—अतीसार को गुण करे—तज, गुलनार, सुपारी के फूल बराबर चूर्ण करके स्वभाव के अनुकूल जल के साथ खावे।

सौंफ का चूर्ण—कफ के अतीसार को गुण करे और कोष्ठ को बलकारक और गुदा की पवन को दूर करे सौंफ घृत में यहां तक भूने कि लाल हो

तोले, मुरदारसंग बराबर पीसकर चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक गोली संध्या को खाया करे।

अन्य—लड़कों के अतीसार को गुण करे जो ज्वर न हो तब भी गुण करती है—कत्था, गुलनार तीन तीन माशे, जहरमोहरा पीसकर, आमला सम्मगअरबी, भूनी बेलगिरी दो दो माशे, अफीम, माजू, भुनी सौंफ, सफेद-जीरा एक एक माशे, कपूर एक रत्ती कालीमिरच की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल दे और कभी जहरमोहरा के बदले बंशलोचन मिलाते हैं और बंशलोचन अधिक भी करते हैं और जो कुछ **खटका हो तो** कपूर न दे।

अन्य—गोली जो बहुत ही काबिज है मुनक्के बीजों समेत सात दाने, आंब की गुठली एक, अफीम आधा माशा कूटछानकर मिलाकर सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावे।

माजू की गोली—शीघ्र ही गुणदायक है अतीसार को दूर करती है और आंतों के व्रण को गुण करती है—माजू चार टंक, अफीम दो टंक, अजवायन एक मिस्काल चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाय।

नकछिकनी की गोली—उस अतीसार को गुण करती है जो नाफ के सरक जाने से हो—नकछिकनी जलाकर अजवायन, सोंठ, बराबर कूटछान कर एक माशा गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे और घी के साथ खावे।

लेप—नाफ के सरक जाने के लिये-फिटकरी तीन टंक, माजू तीन कूट-छान कर सिरके में मिलाकर लगावे, ऊपर से जोर से पट्टी बांधें।

गोली—अतीसार को गुण करती है- सोंठ भूनकर, माईं, लोध पठानी, सफेद राल, धवई के फूल, इन्द्रजौ, मीठी, बेलगिरी, मोचरस, आंब की गुठली, भुनाखुरमा, कालीमिरच कूट छानकर गोलियां बनावे।

अन्य—भुनी भंग, बेर की पत्तियां, नरकचूर बराबर लेकर चने की बराबर गोलियां बनाकर दोनों समय खावे।

गोली—आंतों के छिलजाने और रक्तातिसार जो सुद्दे बिना हो उत्तम है-गेरू, कत्था, राल, गोंद, कतीरा, छिले कौंच के बीज, बेलगिरी कूट छान कर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे।

गोली—लड़कों के अतीसार को-गुलनार एक, इलायची, अफीम एक एक

शा, चाकसू रसौंत, नरकचूर, सफेद जीरा, हल्दी, नीम की छाल, ब कायन
कोपल, बबूल की कोपल, दो दो माशे कूटछान कर मूंग की बराबर
लियां बनावे दो गोली तक खावे ।

अन्य—लड़कों के सब्ज रंग के दस्त आने को गुण करे—बबूल की पत्तियां,
, मुरदारसंग गुलनार, केसर, नीम की कोपल, सौंफ, कालाजीरा, सफेद
, सोंचरनोन, तज, अजवायन, बायबिड़ंग सात सात माशे महीन पीसकर
की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रभात एक संध्या को खावे और
मुरदारसंग के बदले जहरमोहरा या बंशलोचन और कभी तज के बदले
मिलाते हैं ।

इलायची का चूर्ण—काबिल और पाचक है—भुनी सोंठ, भुनी सौंफ, बड़ी
यची की छाल बराबर पीसकर चूर्ण बनावे एक हथेली भर खावे ।

बज का चूर्ण—अतीसार और संग्रहणी को गुण करे—बज मिट्टी के कुल्हड़
खकर कपरौटी करके गरम तंदूर में रखे, जब ठण्ढा हो जावे निकालकर
र एक टंक लेकर दो टंक शहद और कुछ नोन मिलाकर खावे, भोजन
के चावल दही के साथ खाय ।

अन्य—अतीसार और खूनी बवासीर को बन्द करती है और पेचिस और
जरदी को गुण करे—मस्तंगी, कालीमिरच, बंशलोचन, अनारदाना,
के बीज की गिरी पीसकर मुलहठी, माईं, धवई के फूल, माजू बराबर
र खशखाश के पोस्ते के पानी में गोलियां बनावे, एक दाम खावे, साठी
वलों के पानी के साथ और मूंग और चावल भोजन करे ।

काली हड़ का चूर्ण—पक्वातीसार और जहीर को गुण करे—हड़ घी या
के तेल में भूनकर दो तोले खशखाश का पोस्ता घी में भूनकर एक
कूटछानकर चूर्ण बनाकर उसके बराबर शक्कर मिलावे, एक तोला
को और सात माशे शाम को खावे, निर्माता ने इस नुस्खे में सम्मग-
भुनी हुई मिलाई थी बहुत गुण किया ।

न का चूर्ण—अतीसार को गुण करे—तज, गुलनार, सुपारी के फूल
चूर्ण करके स्वभाव के अनुकूल जल के साथ खावे ।

फ का चूर्ण—क़फ के अतीसार को गुण करे और कोष्ठ को बलकारक
ा की पवन को दूर करे सौंफ घृत में यहां तक भूने कि लाल हो

जावे, फिर कूटछानकर उसके बराबर शक्कर मिलावे और सात माशे ठण्ढे पानी से खावे।

अनार का चूर्ण–पैत्तिक अतीसार के लिये गुण करे–खट्टे अनार के दाने, भुना कालाजीरा पांच टंक, आमला एक मिस्काल, गूगल, धनियां पिसा हुआ चार टंक, गुलनार, सम्मगअरबी एक टंक, चूर्ण बनावे दो टंक पर्यन्त खावे।

धनिये का चूर्ण—रुधिर के अतीसार के दूर करने में जो सुद्दे बिना हो आजमाया हुआ है जामुन की गुठली जली हुई, कुनार के बीज जले हुये, बारहसिंगे के सींग जले हुये, भुनी हिलतीत अर्थात् हींग, भुनी खशखाश, भुने मुनक्के एक एक टंक, काली हड़, सौंफ, अनारदाना, धनियां, चूका के बीज, सम्मगअरबी, निशास्ता, कालाजीरा, सफेद जीरा, खुरफे के बीज, सोंठ, ईसबगोल, बारतंग, नाजबो के बीज हर एक एक टंक लेकर भूनकर खुरफे के बीज, ईसबगोल और बारतंग को साबुत रक्खे और धवई के फूल, अतीस, माई, आमला, बेलगिरी, राल, कत्था सफेद, कतीरा, कोंच के बीच की गिरी, बड़ी इलायची की छाल, नरकचूर, गुलनार आधा आधा टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे खूराक स्वभाव के अनुकूल दो मिस्काल पर्यन्त जल के साथ खाय।

चूर्ण—जो अतीसार को गुण करे–सोंठ, सौंफ, राल, भुना छुहारा, कालीहड़ तेल में भूनकर बेलगिरी बराबर लेकर चूर्ण बनावे।

चूर्ण—जो लड़कों के अतीसार को गुण करे–अनार की कली, बबूर की पत्तियां, भुनी सौंफ सब थोड़ी थोड़ी ले और खशखाश का पोस्ता जला हुआ सबके बराबर मिलावे और थोड़ा सा आयु के प्रमाण दे।

चूर्ण—धवई के फूल, आमला, बेलगिरी, इन्द्रजौ कड़वे बराबर कूटछानकर आयु और प्रकृति के अनुकूल शहद में मिलाकर चाटे।

चूर्ण—लड़कों के दस्त आने को जो दांत निकलने के समय ले आता बेलगिरी, कत्था, आमले की छाल कूटछानकर चूर्ण बनावे अपने स्वभाव के अनुकूल खावे।

चूर्ण—जो अतीसार के सब प्रकारों को गुण करे–शैतरज, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धवई के फूल बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे, एक टंक खावे।

चूर्ण–कफ के अतीसार को गुण करे–भुनीसोंठ, धवई के फूल, मोचरस, अजमोद बराबर लेकर चूर्ण बनावे, एक तोला भर खावे ।

अन्य–चूर्ण जो अतीसार को रोकता है और वैद्यों का सेवन किया हुआ है–चने भूनकर छीलकर चूहे की मेंगनियां एक एक टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे जो बलवान् अतीसार हो छः माशे नहीं तो चार माशे सेवन करे ।

अन्य–बेलगिरी, खशखाश, सोंठ, धनियां बराबर कूटछानकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवन करे ।

अन्य–लड़कों के अतीसार को गुण करे–अतीस एक माशा या कम या जियादह पानी में पीसकर दे और युवा मनुष्य को एक तोले तक प्रकृति के अनुकूल दे दस्तों को बन्द करता है और चाहिए कि थोड़ा गुलनार भी मिलावे ।

अन्य–संग्रहणी के लिये आजमाया हुआ है–भुना ईसबगोल, बेलगिरी, राल, आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज की गिरी, नमकनफ्ती, नागरमोथा, खशखाश, सोंठ सिवाय ईसबगोल के सम्पूर्ण औषध कूटछानकर मिलाकर एक हथेली भर प्रभात को खावे ।

अन्य–उस खूनी अतीसार के वास्ते जो सुद्दे के कारण से न हो–आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज, कोंच के बीज प्रकृति के अनुकूल साठी के चावल के पानी के साथ खावे ।

अन्य–बद्धकोष्ठ और उदरपीड़ा को गुणदायक है और भोजन को भी पचाता है–सौंफ दो टंक, कालाजीरा एक मिस्काल, सोंठ एक टंक तीनों औषध भूनकर अजमोद, अजवायन एक एक टंक, सूखा पोदीना, तज एक एक मिस्काल कूटछानकर चूर्ण बनाकर दो टंक से दो मिस्काल पर्यन्त दे ।

बेरों का चूर्ण ।

अतीसार का नाशक बेर हांड़ी में भरकर मुख उसका बंद करके कपरौटी करे फिर आग में रख दे जब बेर जल जावें निकाल कर एक हथेली भर हर प्रातःकाल को खावे, भोजन दही चावल या मूंग की दाल ।

अन्य–भूनी सौंफ, पुराने आंब की गुठली की गिरी बराबर ले और इनके बराबर पुरानी शक्कर मिलाकर आधा दाम खावे ।

आमले का शरबत–अतीसार को दूर करता है और इसको इलायची के दाने के साथ सेवन करे तो मतली को गुण करे और खुरफे के बीजों के

जावे, फिर कूटछानकर उसके बराबर शक्कर मिलावे और सात माशे ठण्डे पानी से खावे ।

अनार का चूर्ण–पैत्तिक अतीसार के लिये गुण करे–खट्टे अनार के दाने, भुना कालाजीरा पांच टंक, आमला एक मिस्काल, गूगल, धनियां पिसा हुआ चार टंक, गुलनार, सम्मगअरबी एक टंक, चूर्ण बनावे दो टंक पर्यन्त खावे ।

धनिये का चूर्ण—रुधिर के अतीसार के दूर करने में जो सुद्दे बिना हो आजमाया हुआ है जामुन की गुठली जली हुई, कुनार के बीज जले हुये, बारहसिंगे के सींग जले हुये, भुनी हिलतीत अर्थात् हींग, भुनी खशखाश, भुने मुनक्के एक एक टंक, काली हड़, सौंफ, अनारदाना, धनियां, चूका के बीज, सम्मगअरबी, निशास्ता, कालाजीरा, सफेद जीरा, खुरफे के बीज, सोंठ, ईसबगोल, बारतंग, नाजबो के बीज हर एक एक टंक लेकर भूनकर खुरफे के बीज, ईसबगोल और बारतंग को साबुत रक्खे और धवई के फूल, अतीस, माई, आमला, बेलगिरी, राल, कत्था सफेद, कतीरा, कोंच के बीच की गिरी, बड़ी इलायची की छाल, नरकचूर, गुलनार आधा आधा टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे खूराक स्वभाव के अनुकूल दो मिस्काल पर्यन्त जल के साथ खाय ।

चूर्ण—जो अतीसार को गुण करे–सोंठ, सौंफ, राल, भुना छुहारा, कालीहड़ तेल में भूनकर बेलगिरी बराबर लेकर चूर्ण बनावे ।

चूर्ण—जो लड़कों के अतीसार को गुण करे–अनार की कली, बबूर की पत्तियां, भुनी सौंफ सब थोड़ी थोड़ी ले और खशखाश का पोस्ता जला हुआ सबके बराबर मिलावे और थोड़ा सा आयु के प्रमाण दे ।

चूर्ण—धवई के फूल, आमला, बेलगिरी, इन्द्रजौ कड़वे बराबर कूटछानकर आयु और प्रकृति के अनुकूल शहद में मिलाकर चाटे ।

चूर्ण—लड़कों के दस्त आने को जो दांत निकलने के समय ले आता बेलगिरी, कत्था, आमले की छाल कूटछानकर चूर्ण बनावे अपने स्वभाव के अनुकूल खावे ।

चूर्ण—जो अतीसार के सब प्रकारों को गुण करे–शैतरज, नागरमोथा, लोध, इन्द्रजौ, मोचरस, बेलगिरी, धवई के फूल बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे, एक टंक खावे ।

चूर्ण–कफ के अतीसार को गुण करे–भुनीसोंठ, धवई के फूल, मोचरस, अजमोद बराबर लेकर चूर्ण बनावे, एक तोला भर खावे।

अन्य–चूर्ण जो अतीसार को रोकता है और वैद्यों का सेवन किया हुआ है–चने भूनकर छीलकर चूहे की मेंगनियां एक एक टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे जो बलवान् अतीसार हो छः माशे नहीं तो चार माशे सेवन करे।

अन्य–बेलगिरी, खशखाश, सोंठ, धनियां बराबर कूटछानकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवन करे।

अन्य–लड़कों के अतीसार को गुण करे–अतीस एक माशा या कम या जियादह पानी में पीसकर दे और युवा मनुष्य को एक तोले तक प्रकृति के अनुकूल दे दस्तों को बन्द करता है और चाहिए कि थोड़ा गुलनार भी मिलावे।

अन्य–संग्रहणी के लिये आजमाया हुआ है–भुना ईसबगोल, बेलगिरी, राल, आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज की गिरी, नमकनफ्ती, नागरमोथा, खशखाश, सोंठ सिवाय ईसबगोल के सम्पूर्ण औषध कूटछानकर मिलाकर एक हथेली भर प्रभात को खावे।

अन्य–उस खूनी अतीसार के वास्ते जो सुद्दे के कारण से न हो–आंब की गुठली की गिरी, जामुन के बीज, कोंच के बीज प्रकृति के अनुकूल साठी के चावल के पानी के साथ खावे।

अन्य–बद्धकोष्ठ और उदरपीड़ा को गुणदायक है और भोजन को भी पचाता है–सौंफ दो टंक, कालाजीरा एक मिस्काल, सोंठ एक टंक तीनों औषध भूनकर अजमोद, अजवायन एक एक टंक, सूखा पोदीना, तज एक एक मिस्काल कूटछानकर चूर्ण बनाकर दो टंक से दो मिस्काल पर्यन्त दे।

बेरों का चूर्ण।

अतीसार का नाशक बेर हांड़ी में भरकर मुख उसका बंद करके कपरौटी करे फिर आग में रख दे जब बेर जल जावें निकाल कर एक हथेली भर हर प्रातःकाल को खावे, भोजन दही चावल या मूंग की दाल।

अन्य–भूनी सौंफ, पुराने आंब की गुठली की गिरी बराबर ले और इनके बराबर पुरानी शक्कर मिलाकर आधा दाम खावे।

आमले का शरबत–अतीसार को दूर करता है और इसको इलायची के दाने के साथ सेवन करे तो मतली को गुण करे और खुरफे के बीजों के

रस के साथ बुखार को गुण करता है—आमला चार दाम कुचल करके आधासेर पानी में भिगोकर औटावे, जब आधा शेष रहे साफ करके पावभर शक्कर मिलाकर कवाम में लावे।

बेलगिरी का शर्बत—क़ाबिज और कोष्ठ को बल देता है—बेलगिरी आधपाव आधसेर जल में भिगोकर औटावे जब आधा पानी रह जावे तो आधपाव कन्द में कवाम करे और अपने स्वभाव के अनुकूल खावे।

आमले की माजून—कोष्ठ को बल दे और अतीसार को रोके और नोशदारू के बदले भी सेवन की जाती है—आमले का रस छः टंक, इलायची, नागरमोथा दो दो टंक, नरकचूर, बालछड़, बच, सम्मगअरबी एक एक टंक, बेलगिरी तीन दाम कूटछानकर तिगुने कन्द में माजू बनावे।

काढ़ा—अतीसार को गुणदायक है दो दाम नेत्रबाला तीनपाव पानी में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये और सन्ध्या को उसी काढ़ी हुई दवा को फिर डेढ़पाव पानी में औटावे जब आधा रहे साफ करके पिये, एक सप्ताह में संग्रहणी दूर होगी।

बेलगिरी का अर्क—कोष्ठ को बल देता और अतीसार को गुण करे और जहीर और आँतों के दस्तों में बारतंग के बदले है बेलगिरी सूखी या हरी को पानी में भिगो दे, प्रभात को अर्क खींचे।

जामुन का शर्बत–कै और मतली को बन्द करता है और रक्तातीसार के प्रकारों और कोष्ठ और पेचिश और बवासीर को नाश करता है पक्का जामुन निचोड़कर थोड़े गुलाब में जो हो तो उत्तम नहीं तो पानी में कवाम करे फिर चौथाई कन्द मिलाकर शर्बत बनावे और जो कवाम के अन्त में बाजी कब्ज़ करनेवाली जैसे कि बंशलोचन और चन्दन गुलाब में घिसकर मिलावे तो बलकारक हो।

काढ़ा–आजमाया हुआ दस्तों को रोकता है–धनियां, नागरमोथा, खस, सोंठ, बेलगिरी पांच पांच माशे कुचलकर डेढ़पाव पानी में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये, भोजन चावल मूंग या मसूर की दाल के साथ। जो यह दवा दो तीन दिन में गुण न करे दो सप्ताह पर्यन्त दे, जो स्वभाव में गरमी न हो सोंठ बढ़ावे।

काढ़ा–अतीसार और वह दस्त जो मेदे से आवें उसके लिये गुण करे–मसूर, गेहूँ एक एक तोला खशखाश का पोस्ता, बेलगिरी तीन तीन माशे

आधसेर जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके पिये।

काढ़ा— अतीसार के दूर करने को आजमाया हुआ है—सुगंधबाला में धवई के फूल, कनेर की छाल, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, सोंठ, लोधपठानी, गिलोय डेढ़ डेढ़ माशा लेकर एक सेर पानी में औटावे जब आधपाव रहे साफ करके पिये, इसी तरह सात दिन सेवन करे।

अन्य—बरगद का दूध नाफ में भर दे और नाफ के चारों तरफ भी लगावे।

टिकिया—अतीसार के लिये गुण करे—जामुन की गिरी, आंब की गिरी, पीलीहड़ घी में भूने जब फूल जावे बराबर पीसकर टिकिया बनावे, एक मिस्काल खावे।

लेप—आंब की छाल दही के पानी में पीसकर नाभि में चारों ओर लगावे और बाजों ने सिरके में पीसकर लेप करना लिखा है।

लेप—अतीसार को गुणदायक—आमला घी में पीसकर नाभि के गिर्द दायरा बनावे और किनारा उस दायरे का ऊँचा रक्खे फिर उसमें अदरक का रस भर दे और इसी प्रकार थोड़ी देर रहने दे जो पानी के से दस्त आते हों बन्द हो जावें—मुजर्रिबात अकबरी में लिखा है कि यह औषध सम्पूर्ण औषधों का राजा है।

औषधि—कोष्ठ के अतीसार को गुण करे—हरी बेलगिरी भूनकर थोड़ी शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे बहुत गुण करे।

लाभ—अतीसार में बमन करना दस्तों को बन्द करता है।

अन्य—पुराने अतीसार के लिए कैथे के बीज भूनकर खाना अतीसार को दूर करता है।

अन्य—दस्त बन्द करे—मूली के बीज भूनकर उसके बराबर नौ माशे शहद मिलाकर खावे।

अन्य—गूलर की कोंपल एक तोलाभर पीसकर पिये।

अन्य—आमला घी में भूनकर पानी में पीसकर नाभि के गिर्द लगावे और थोड़ी अफीम अदरक के रस में कजली करके दो तीन बूंद नाक में टपकावे।

अन्य—गूलर के वृक्ष का दूध एक माशा बराबर खावे।

अन्य—गेहूं का सत्तू कब्ज और अतीसार को दूर करता है और कोष्ठ के और पित्त के अतीसार को गुण करता है।

अन्य—पित्त के अतीसार को गुणकारक —चावलों की पीच पिये।

अन्य—दूधी हरी पीसकर एक प्याला पिये।

अन्य—पुराना पनीर लेकर इतना धोवे कि उसमें नोन का कुछ भी गुण शेष न रहे, फिर उसको भूनकर खावे।

अन्य—छिले हुये मसूर भूनकर सेवन करना अतीसार को दूर करने वाला है।

अन्य—जो जमालगोटे के खाने से अतीसार हो आधाटंक कतीरा पीसकर दही में मिलाकर खावे।

जहीर का यत्न।

इसको लौकिक में पेचिश भी बोलते हैं वह दो प्रकार का है सादिक और काबिज, सादिक वह है कि नाज के बीज या ईसबगोल या उसके सदृश कोई वस्तु खावे वैसा ही मल निकले इसमें कब्ज करनेवाली औषधों का सेवन करे और काबिज वह है कि दाने बिष्ठा में न निकलें सो जहीर काबिज में जब तक मुसिल न दे और सुद्दे दूर न हो लें कब्ज काबिज करनेवाली औषधों का सेवन न करे क्योंकि पहिले कब्ज की औषधों का देना सुद्दे और पीड़ा और भय का कारण है।

काढ़ा—काबिज जहीर को गुण करे —अमलतास पांचटंक, अधकुचली सौंफ दो टंक, खतमी के बीज, खतमी की जड़ डेढ़ डेढ़ टंक, लसोढ़े २५ यह सम्पूर्ण औषध औटाकर साफ करके अमलतास मिलाकर थोड़ा घी डालकर एक तोले भर गुलकन्द से मीठा करके पिये जो सामर्थ्य हो तो बनफ्शा, आलू-बुखारा, मुनक्के, बड़े भी मिलावे नहीं तो गरीबो को उतना ही बहुत है और दूसरे दिन नाजबो के बीज, ईसबगोल एक एक मिस्काल सेवन करे—फिर कोष्ठ को कब्ज करनेवाली चीजें और पौष्टिक द्रव्य दे।

औषधि—अतीसार और पेचिश को गुण करे—आँब की छाल लेकर उसके ऊपर की काली छाल दूर करे और अन्दर की उसकी छाल जो पीली होती है लेकर पानी में घिसकर और थोड़ा पानी उसमें मिलाकर शीघ्रही पी ले क्योंकि जो एक पल भर भी विलम्ब होगा तो जम जावेगा फिर पिया न जावेगा। इस औषधि के सेवन से तीन दिन में आराम होगा।

अन्य—उस पेचिस को गुण करे जो पित्त से हो—ईसबगोल भुना दो टंक, सम्मगअरबी, गेरू एक एक टंक, अजवायन चौथाई टंक और जो गरमी न

हो किन्तु अफरा हो—भुना हालों दो टंक, भुनी अलसी-गेरू एक एक टंक, अबहल आधा टंक, अजवायन चौथाई टंक।

अन्य—जहीरसाजिक के लिये नाजबो के बीज, सम्मगअरबी बराबर लेकर भूने और पीसकर नाजबो के बीज साबित रखकर एक तोला सफेदजीरे के रस में मिलाकर पिये।

अन्य—जहीर सादिक को दूर करे-बेर की पत्तियां एक टंक, सफेद जीरा आधा टंक पीस कर पिये।

चूर्ण—रक्तातिसार और जहीर सादिक के लिये गुण करे—राल, कत्था, बेलगिरी कोंच के बीज बराबर लेकर चूर्ण बनावे, दो टंक पर्यन्त खावे।

अन्य—आंतों के व्रण और रक्तातिसार के लिये-कतीरा बारासिंगे का सींग जलाकर बराबर लेकर चूर्ण बनावे, खूराक एक मिस्काल भर खाय।

अन्य—कफ के जहीर को गुण करे-सफेदजीरा चार माशे, अजवायन पांच माशे, अफीम दो रत्ती महीन कूटछानकर तीन खूराकें बनावे और साठी के चावल के साथ खावे और भोजन खिचड़ी खावे।

काढ़ा—जहीरसादिक के लिये श्रेष्ठ है-धवई के फूल, सेमल का गाद बराबर पानी में औटाकर साफ करके पिये और गुनगुने मीठे तेल से अमल करने से पेचिस दूर होती है, आजमाया हुआ है।

अन्य—पेचिस और रुधिर और कफातीसार को नाश करे-मरोड़फली एक दाम पानी में भिगोकर हाथ से मलकर साफ करके खावे, भोजन खिचड़ी दे—और खटाई और सलोनी चीजों से पथ्य करे।

अन्य—पेचिस को दूर करे-सांकर की फली पकाकर पके चावल के साथ खावे।

अन्य—जहीरसादिक को गुण करे-राल, सफेद शक्कर एक एक दाम, खशखाश का पोस्ता भुना एक कूटछानकर हथेली भर खावे।

चूर्ण-जहीरसादिक के लिये गुणदायक है-भुने नाजबो के बीज गेरू दोनों साबित रखकर चोका के बीज दो दो टंक, गुलनार सम्मगअरबी, निशास्ता एक एक टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे।

हड़ का चूर्ण-काबिज और जहीर को गुण करे और कोष्ठ पीड़ा को लाभदायक है-कालीहड़ कडुये तेल में भूनकर भूनी सम्मगअरबी, काला-

जीरा भुना, सौंफ तेल में भूनकर एक एक टंक, ईसबगोल साबित, हलाम की जड़ दो दो टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक चार दामखाय ।

चूर्ण—हालों का चूर्ण जहीर को गुण करे—हालों, नाजबो के बीज, ईसबगोल दो दो टंक तीनों वस्तुओं को साबित रक्खे और सम्मगअरबी, निशास्ता खतमी के बीज एक एक टंक चूर्ण बनावे और जो जहीरसादिक हो चाहिये कि तीन प्रकार के बीजों को भूने और चार टंक पर्यन्त खावे ।

अन्य—पेचिस को गुण करे—फालसे की जड़ जवकुट करके रात्रि को पानी में भिगो दे उसका लुआब सुबह लेकर एक तोला ईसबगोल के साथ खावे ।

काढ़ा—पेचिस को बहुत पीड़ा के समय गुण करे—नाजबो के बीज एक तोला पावभर गुलाब में जो सामर्थ्य हो नहीं तो आधसेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे नाजबो के बीजों के साथ पिये ।

हालों का पाक—जहीर और मरोड़ा और बवासीर को गुण करे—कालाजीरा भुना एक भाग, मस्तगी तिहाई हिस्सा यथाविधि मिश्री में क़वाम करे दो टंक खावे, जो मस्तगी के लेने की सामर्थ्य न हो कुंदर मिलावे ।

चूर्ण—जहीर को गुण करे—खतमी के बीज भुने, भुनी हुब्बाजी पांच पांच टंक, भुना निशास्ता तीन मिस्काल, सम्मगअरबी, गेरू दो दो मिस्काल चूर्ण बनावे, खूराक तीन टंक पर्यन्त खाय ।

अन्य—पेचिस को गुण करे—गेरू सम्मगअरबी, ईसबगोल, नाजबो के बीज, निशास्ता बराबर चूर्ण बनावे, तीन टंक के अनुमान खावे ।

अन्य—खून आने को गुण करे—राल, सोंठ, सौंफ, अनार की छाल, खशखाश आधाआधा टंक, शक्कर दो दाम कूटछानकर आधे दाम के बराबर ताजे पानी से हर सुबह और शाम खाया करे भोजन चावल और मसूर की दाल का करे ।

अन्य—बेलगिरी एक तोला, छुकुड़ा की छाल दो तोले, सौंफ, जंगीहड़ एक एक तोला, ईसबगोल छः माशे, मिश्री तीन तोले, हड़ों को घी में भूनकर सिवाय ईसबगोल के कूटछानकर सबको मिलावे, खूराक सात माशे से एक तोले पर्यन्त खाय ।

अन्य—जहीरसादिक के लिये—कालीहड़ भूनकर, सोंठ, भुनी सौंफ एक तोला बराबर की शक्कर मिलाकर प्रकृति के अनुकूल खावे ।

अन्य—आंतों के छिल जाने को गुण करे—बेलगिरी, कत्था, बराबर लेकर चूर्ण बनावे।

अन्य—पित्त के और रक्त के अतीसार और जहीर के लिये गुण करे—सम्मगअरबी हर रोज तीन मिस्काल तीन दिन या ग्यारह दिन तक खावे और जो अतीसार में अधिकता हो खशखाश का पोस्ता महीन पीसकर एक मिस्काल से दो मिस्काल पर्यन्त पीना आजमाया हुआ है और सम्मगअरबी मिलावे अधिक गुण करे।

गोली—अतीसार और कफ के जहीर को गुण करे—सोंठ, सौंफ, खशखाश तीनों भूनकर दो टंक कूटछानकर गुड़ और घी में गोलियां बनाकर खावे।

अन्य—जहीरसादिक के लिए—माईं, कत्था, अफीम बराबर लेकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनाकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवन करे।

अन्य—अधिक अतीसार और जहीरसादिक को नाश करे—साफ अफीम, साफ चूना बराबर लेकर मोठ या मसूर की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल एक सुबह और शाम को खावे।

अन्य—आंतों के छिल जाने और जहीरसादिक के लियें गुण करे—माजू माईं दो दो टंक, सम्मगअरबी एक टंक, अफीम आधा दाम, कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, खूराक जवान के लिये दो गोली और लड़के के लिये एक गोली दे।

अन्य—माजू चार भाग, अफीम दो भाग, अजवायन एक भाग, कूटछानकर चने या मूँग के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह खाया करे।

अन्य—जहीरसादिक और अतीसार को दूर करे—नये महुवे के वृक्ष की छाल लेकर रस उसका चार टंक के बराबर निकाल कर बर्तन में रखकर आग पर रक्खे और तीन माशे सोंठ पीसकर उसमें मिलावे, जब दो तीन उबाल खावे उतार कर गुनगुना पिये खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—खुरमा हिन्दी अर्थात् खजूर एक टंक पीसकर थोड़े दही में मिलाकर खावे।

अन्य—अनार की पत्तियां एक प्याले भर पानी में पीसकर पिये।

अन्य—कतीरा रात को पानी में भिगोदे सुबह थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

जीरा भुना, सौंफ तेल में भूनकर एक एक टंक, ईसबगोल साबित, हलाम की जड़ दो दो टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक चार दामखाय।

चूर्ण—हालों का चूर्ण जहीर को गुण करे—हालों, नाजबो के बीज, ईसबगोल दो दो टंक तीनों वस्तुओं को साबित रक्खे और सम्मगअरबी, निशास्ता खतमी के बीज एक एक टंक चूर्ण बनावे और जो जहीरसादिक हो चाहिये कि तीन प्रकार के बीजों को भूने और चार टंक पर्यन्त खावे।

अन्य—पेचिस को गुण करे—फालसे की जड़ जवकुट करके रात्रि को पानी में भिगो दे उसका लुआब सुबह लेकर एक तोला ईसबगोल के साथ खावे।

काढ़ा—पेचिस को बहुत पीड़ा के समय गुण करे—नाजबो के बीज एक तोला पावभर गुलाब में जो सामर्थ्य हो नहीं तो आधसेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे नाजबो के बीजों के साथ पिये।

हालों का पाक—जहीर और मरोड़ा और बवासीर को गुण करे—काला-जीरा भुना एक भाग, मस्तगी तिहाई हिस्सा यथाविधि मिश्री में क़वाम करे दो टंक खावे, जो मस्तगी के लेने की सामर्थ्य न हो कुंदर मिलावे।

चूर्ण—जहीर को गुण करे—खतमी के बीज भुने, भुनी हुब्बाजी पांच पांच टंक, भुना निशास्ता तीन मिस्काल, सम्मगअरबी, गेरू दो दो मिस्काल चूर्ण बनावे, खूराक तीन टंक पर्यन्त खाय।

अन्य—पेचिस को गुण करे—गेरू सम्मगअरबी, ईसबगोल, नाजबो के बीज, निशास्ता बराबर चूर्ण बनावे, तीन टंक के अनुमान खावे।

अन्य—खून आने को गुण करे—राल, सोंठ, सौंफ, अनार की छाल, खशखाश आधाआधा टंक, शक्कर दो दाम कूटछानकर आधे दाम के बराबर ताजे पानी से हर सुबह और शाम खाया करे भोजन चावल और मसूर की दाल का करे।

अन्य—बेलगिरी एक तोला, छुकुड़ा की छाल दो तोले, सौंफ, जंगीहड़ एक एक तोला, ईसबगोल छः माशे, मिश्री तीन तोले, हड़ों को घी में भूनकर सिवाय ईसबगोल के कूटछानकर सबको मिलावे, खूराक सात माशे से एक तोले पर्यन्त खाय।

अन्य—जहीरसादिक के लिये—कालीहड़ भूनकर, सोंठ, भुनी सौंफ एक तोला बराबर की शक्कर मिलाकर प्रकृति के अनुकूल खावे।

अन्य—आंतों के छिल जाने को गुण करे—बेलगिरी, कत्था, बराबर लेकर चूर्ण बनावे।

अन्य—पित्त के और रक्त के अतीसार और जहीर के लिये गुण करे—सम्मगअरबी हर रोज तीन मिस्काल तीन दिन या ग्यारह दिन तक खावे और जो अतीसार में अधिकता हो खशखाश का पोस्ता महीन पीसकर एक मिस्काल से दो मिस्काल पर्यन्त पीना आजमाया हुआ है और सम्मगअरबी मिलावे अधिक गुण करे।

गोली—अतीसार और कफ के जहीर को गुण करे—सोंठ, सौंफ, खशखाश तीनों भूनकर दो टंक कूटछानकर गुड़ और घी में गोलियां बनाकर खावे।

अन्य—जहीरसादिक के लिए—माईं, कत्था, अफीम बराबर लेकर कालीमिर्च के बराबर गोलियां बनाकर साठी के चावल के पानी के साथ सेवन करे।

अन्य—अधिक अतीसार और जहीरसादिक को नाश करे—साफ अफीम, साफ चूना बराबर लेकर मोठ या मसूर की बराबर गोलियां बनाकर स्वभाव के अनुकूल एक सुबह और शाम को खावे।

अन्य—आंतों के छिल जाने और जहीरसादिक के लिये गुण करे—माजू माईं दो दो टंक, सम्मगअरबी एक टंक, अफीम आधा दाम, कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, खूराक जवान के लिये दो गोली और लड़के के लिये एक गोली दे।

अन्य—माजू चार भाग, अफीम दो भाग, अजवायन एक भाग, कूटछानकर चने या मूंग के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह खाया करे।

अन्य—जहीरसादिक और अतीसार को दूर करे—नये महुवे के वृक्ष की छाल लेकर रस उसका चार टंक के बराबर निकाल कर बर्तन में रखकर आग पर रक्खे और तीन माशे सोंठ पीसकर उसमें मिलावे, जब दो तीन उबाल खावे उतार कर गुनगुना पिये खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—खुरमा हिन्दी अर्थात् खजूर एक टंक पीसकर थोड़े दही में मिलाकर खावे।

अन्य—अनार की पत्तियां एक प्याले भर पानी में पीसकर पिये।

अन्य—कतीरा रात को पानी में भिगोदे सुबह थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—लसोढ़े की कोपल पीसकर गोलियां बनाकर खावे ।

अन्य—सुपारी जलाकर दही में मिलाकर खावे ।

अन्य—नाजबो के बीजों को मिट्टी के बर्तन में रखकर ऊपर से दो तीन बूंदें मीठे तेल की डालकर आग पर लाल करके खावे, अतीसार की अधिकता को दूर करता है ।

अन्य—मुल्तानी मिट्टी पीसकर बिहीदाने और ईसबगोल के लुआब में मिलाकर दे ।

अन्य—सफेद जीरा दही के साथ खावे ।

अन्य—आंतों की छीलन के प्रारम्भ को गुण करे—सम्मगअरबी चार टंक सरद पानी में मिलाकर पिये, छीलन को दूर करता है ।

कूलंज का यत्न ।

यह रोग सुद्दों के बढ़ जाने से अन्तड़ी कूलों में हो जाता है इसमें गुदा की पवन और मल कठिनता से पीड़ा के साथ निकलता है ।

यत्न—जो कूलंज बात से हो—सेंक करे जिस तरह कोष्ठ की पीड़ा में उसका वर्णन हुआ है और जो बोझ या कफ से हो—तलीन अर्थात् हलका जुलाब आदि देकर मुसिल पिलावे जो पेचिश में वर्णन हुआ है कूलंज के लिये गुण करे—रेंड़ी के तेल से जो कोष्ठ की पीड़ा में वर्णन हुई लेप करे ।

गोली—कूलंज को दूर करती है और वैद्यक में लिखी गई है कि भुनी फिटकरी, अजवायन, पीपलामूल, कालीमिरच, करंजुवे की गिरी, बायबिड़ंग बराबर कूटछानकर अदरक के पानी में चार माशे की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली पीड़ा के समय खावे ।

औषधि—कूलंज के लिये गुण करे—रेंड़ी, सोये के बीज, मकोय, खतमी के बीज, बाबूना थोड़ा थोड़ा लेकर पानी में औटावे, जब आधा रहे साफ करके उसमें बैठे ।

जवारिश—प्रकृति को नरम करती है और कफ को निकालने वाली और कोष्ठ को बलदायक और कूलंज को दूर करती है—बड़े मुनक्के पावभर, मस्तगी साढ़े छः टंक, तुरबुद सफेद दश टंक कूटछानकर मुनक्के के बीज निकालकर गुलाब में पीसकर औषधियों में मिलावे, खूराक दो टंक और जो सदा सेवन करे तीन टंक तक है ।

गोली—कूलंज को गुणदायक—हिन्दी दवा का सेवन है करंजुवे की गिरी

रेंड़ी की गिरी, नकछिकनी, हींग, सोंठ बराबर पीसकर बेर के बराबर गोलियां बनावे एक गोली गुनगुने पानी से खावे।

गोली—पेट के बोझ के लिये एक गोली गरम पानी से दे और उदर पीड़ा और विसूचिका के लिये सौंफ के रस के साथ दो गोली और बद्धकोष्ठ के दूर करने को पांच गोली और दस्त लाने के लिये आठ गोलियां गरम पानी के साथ दे गुण करे, कदाचित् गोलियों के सेवन से गरमी मालूम हो तो मिश्री गुलाब में पीसकर पिये।

अन्य—शोधा जमालगोटा एक टंक, रेंड़ी की गिरी दश टंक, पीले हड़ की छाल दो टंक, पारा शुद्ध, भुना सुहागा, जवाखार, हल्दी, कालीमिरच एक एक टंक, कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे।

गोली—उदरपीड़ा को गुण करे—पीपल के पत्ते अढ़ाई पीसकर गुड़ में मिलाकर गोलियां बनाकर खावे।

अन्य—बायगोला को गुण करे—समन्दर फल की गिरी, समन्दरझाग, लाहौरीनोन, कालानोन, सज्जी, सफेद तुरबुद, जवाखार, सुहागा, पीले हड़ की छाल, पीपल, सोंठ, हींग, बायबिड़ंग ढाई ढाई टंक, अमलबेत दश टंक, कूटछानकर गोलियां बनावे, खूराक दश टंक।

अन्य—कूलंज और उसकी पीड़ा को गुणदायक—एलुवा, सुहागा, सेंधानोन, जवाखार, घिकुवार के रस में बेर की बराबर गोलियां बनावे। मुसिल की माजून—सनाय पक्की पच्चीस टंक, बनफशा, शीरखिस्त या तुरंजबीन, गुलाब के फूल, पीले हड़ की छाल, शाहतरा पांच पांच टंक, बड़े मुनक्के पाव भर, नौवशहद तिगुना खूराक तीन मिस्काल दे।

चूर्ण—जो दस्त लावे और भोजन का पाचक है—पीले हड़ की छाल, कालीहड़, लाहौरी नोन, सनाय, मक्की बराबर पीसकर नौ माशे की बराबर गरम पानी से सोने के समय खावे।

शाफा—जो दस्त लाता है—गुड़ तांबे के बरतन में आग पर रक्खे कि घुल जावे फिर नोन पीसकर मिलावे जब खूब मिल जावे ठण्ढा करके शाफा बनाकर रोज सेवन करे और केवल नोन का भी शाफा खुलासा दस्त लाता है।

अन्य—कूलंज के खोलने के वास्ते—महुये के बीजों की गिरी पानी में पीसकर शाफा बनावे।

अन्य—मोम दो टंक उसमें आधा टंक नोन मिलाकर तेल में शाफा बनावे और शाफा जब निकल आवे फिर रख दे।

अन्य—मदार की जड़ खरल करके गुदा में रखना खुलाशा दस्त लाता है और पानी में पीसकर पेट पर भी गुनगुना लेप करे।

अन्य—चूहे की मेंगनियां, सांभरनोन बराबर शक्कर मिलाकर कि मधुरी आंच पर जमाकर छुहारे की गुठली के अनुसार बत्ती बनाकर तेल में भिगो-कर गुदा में रक्खे।

अन्य शाफा—साबुन का टुकड़ा खुरमा की गुठली के सदृश बनाकर तेल में भून कर रक्खे।

काढ़ा—कूलंज को गुण करे–सोये के बीज, मेथी दो दो तोले या कम या जियादह स्वभाव के अनुसार लेकर औटाकर दो तोले घी डालकर पिये।

अन्य—कूलंज और पेट की पीड़ा को गुण करे–सोंठ, अरंड की जड़ एक एक टंक, हींग, सोंचर नोन एक एक माशे, सोंठ और अरंड की जड़ को तीन पाव जल में औटावे, जब आधपाव शेष रहे साफ करके पहिले हींग और नोन को महीन करके गोली बनाकर खा ले फिर काढ़ा पिये।

अन्य—अरंड की जड़ जलाकर उसकी राख हथेली भर खावे, वात और पेट की पीड़ा दूर हो जाती है। मुहम्मदजकरिया ने कहा है कि मैंने देखा बहुत मनुष्यों को कूलंज की बीमारी होती थी उन्होंने भेड़िये की खाल अपने सेवन में खूब की यहां तक कि उसी पर बैठते थे और सोते थे और घोड़े पर डाल कर सवार होते थे सो यह रोग होना बन्द हो गया।

अन्य—सुद्दाब का तेल अर्थात् तितली मलना कि उसका नुस्खा पीछे वर्णन हो चुका है कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

काढ़ा—उस कूलंज की पीड़ा और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये जो स्वभाव की सर्दी के साथ हो–अरण्ड की जड़ दो दाम जो हरी हो तो चार दाम लेकर आधसेर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके रेंड़ी का तेल दो तोले, हींग तीन माशे मिलाकर गुनगुना पिये।

अन्य—हालों के बीज पाँच टंक पानी में औटाकर शक्कर और थोड़ा तिलों का तेल मिलाकर पिये।

औषधि—मुख्य करके कूलंज को दूर करती है–मेंहँदी के बीज आधे मिस्काल, सौंफ के अरक या उसके रस में मिलाकर खावे।

अन्य—रियाज में लिखा है कि जो मनुष्य बारासिंगे का सींग जलाकर एक चमचा माउल असल में मिलाकर खावे तो फिर कूलंज न होगा और पीड़ा दूर होगी।

अन्य—आधा टंक मीठा तेल शक्कर में मिलाकर पानी कूलंज को गुण-दायक है।

अन्य—गुनगुना जल पीना उस कूलंज को जो निर्बलता से होवे नष्ट करता है।

अन्य—बकरी की मेंगनियां लड़की के मूत्र में औटावे फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना मले।

अन्य—साखू के पत्तों का रस निचोड़ कर उसमें पारा पीसकर नाक के गिर्द मले।

अन्य—चँबेली का तेल गरम करके रुई उसमें भिगोकर पेट पर रक्खे।

अन्य—साबुन गरम पानी में पीस कर पेट पर उसके चौगिर्द लगावे।

अन्य—हुक्का पीना कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

लेप—रेंड़ी की गिरी, एलुवा, महुये के बीजों की गिरी सब को कूटकर ...के में पकाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—लहसुन का खाना और पीसकर लगाना कूलंज की पीड़ा के लिये ...चर्यदायक गुण रखता है।

अन्य—बकरी का पित्ता गुनगुना नाभि के नीचे मलना दस्त लाता है लड़कों के बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये मुख्य करके उत्तम है।

लेप—वैद्यों का सेवित है दस्त बराबर लाता है और लड़कों के डब्बे के अति गुणदायक है—सुहागा तेलिया, तूतिया, जमाल गोटे की गिरी एक ...टंक थूहड़ के दूध में पीसकर नाफ के गिर्द लेप करे।

टिकिया—कुन्दर आंतों की पीड़ा और पेचिस को गुण करे—कुन्दर, सोये के ... सौंफ पांच पांच टंक, करफ्शा के बीज तीन टंक, अजवायन अढ़ाई टंक ...न कर पानी में टिकिया बनावे, खूराक एक मिस्काल। एक मनुष्य के ... कीड़े पड़ गये थे उसको मैंने मुसिल दिया कीड़े दूर हो गये फिर ...न हुई और यह अफरा और भोजन के न पचने के कारण कभी कभी ...दा होते थे यह माजून मैंने उसके लिये बिचारी बहुत लाभ दिया— ..., सौंफ, सातरा, अनीसून, जीरा, तुरंज की छाल दालचीनी एक एक

टंक, अजवायन आधा टंक, इलायची, धनियां चन्दन गुलाब में पीसकर दो दो टंक चार आमलों का मुरब्बा बीज निकाल कर तिगुने शहद में माजून बनावे ।

पेट के कीड़ों का यत्न ।

यह आंतों में पैदा होते हैं और इनके कई प्रकार हैं एक लम्बे सांपों के सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि उनको हुब्बुलकरा और कद्दू दाना कहते हैं तीसरे छोटे कीड़े शिर के कीड़ों के सदृश स्थिर आंतों में होते हैं । यह बहुधा मिथ्या आहार और गुदा के न धोने से लड़कों की आंतों में पैदा होते हैं ।

यत्न—एक दो दिन दूध पीकर यह गोली सेवन करे—सनाय, मक्की, गुलकंद पांच पांच तोले, पीलेहड़ की छाल, जंगीहड़ दो दो तोले, सोंठ, दाख, मुनक्का एक एक तोला शहद में गोलियां बनावे, खूराक एक तोला, धनियें की जवारिश खाना जिसका वर्णन कोष्ठ के रोग में हुआ है गुण करे ।

इतरीफल–जो कीड़ों को निकालता है–काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बायबिड़ंग, दश टंक तुरबुद खोखली करके हुब्बुलनील आधा आधा टंक कमीला कड़वीकूट हिन्दी नोन तीन तीन टंक कूटछानकर तिगुने शहद में मिलावे, खूराक चार टंक पर्यन्त खाय ।

चूर्ण—पेट के कीड़ों को मारता है और दूर करता है और भोजन को पचाता है—अजमोद, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, जवाखार पीले हड़ की छाल, पीपल, सोंठ यह सब औषधि बराबर ले, हींग भूनकर एक भाग की आधी, कूटछानकर खूराक दो टंक निहार मुँह खाय ।

कमीले की गोली—पेट के कीड़ों को दूर करने के लिये गुण करे—हींग पोदीना, बायबिड़ंग, हिंदीनोन, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे, तीन गोलियां खावे, कभी इसमें तुरबुद खोखली की हुई अधिक करते हैं ।

अन्य—बायबिड़ंग, हिन्दीनोन दो दो टंक, बनी हुई तुरबुद आधीटंक, मिश्री बराबर लेकर गोलियां बनावे, खूराक दो मिस्काल गरम पानी के साथ खाय ।

चूर्ण—हरप्रकार के कीड़ों को गुण करे—बायबिड़ंग, लाहौरी नोन, कमीला, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर आधादाम गौ के दही के साथ खावे, भोजन खिचड़ी खावे ।

दूसरी गोली—दस्त लाती है और कीड़ों को दूर करती है—कालाजीरा तीनमाशे, बायबिड़ंग, दरमना तुरकी दो दो माशे, खोखली की हुई तुरबुद, अफनैती, सोंठ, कतीरा, एलुवा एक एक माशा कूटछानकर गोलियां बनाकर खावे, खूराक एक गोली है।

काढ़ा—कीड़ों को गुण करे वैद्यक में लिखा है—खट्टे अनार की छाल, तूत की छाल दो दो तोले कुचलकर पानी में औटाकर साफ करके पिये बड़े कीड़ों और कद्दूदाने को गुण करे।

अन्य—बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावे, जब एक सकोराभर पानी रहजावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खाकर सो रहे, इसी प्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली—कोष्ठ के कीड़ों को गुण करे—करंजुवे के बीज, पलाशपापड़ा, अजवायन, कमीला, बायबिड़ंग, गुड़ बराबर लेकर गोलियां बनावे, खूराक आधा टंक।

अन्य—छोटे कीड़ों के लिये जो लड़कों की गुदा में पड़जाते हैं गुण करे—रसौत, चाकसू छिली हुई, हींग दो दो माशे, एलुवा एकमाशा, कालीमिरच आधामाशा, नींब की पत्तियां दो, कुकरौंधे के रस में महीन पीसकर जुवार के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाय।

अन्य—मुलीय, कत्थासफेद, अफीम, बेरकी पत्तियां, पुराना नारियल, बराबर लेकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को खिलावे।

अन्य—कीड़ों को गुण करे—दाख मुनक्के में उसके बीज की बराबर बायबिड़ंग भर दे जवान को बीस दाने और लड़के को पांच दानों से दश दानों तक खिलावे और उत्तम यह है कि मुनक्के निगल ले।

अन्य—बैल का सुम जलाकर उसकी राख शहद में या गुड़ में मिलाकर खाना हुब्बुलकरा को गुण करता है।

अन्य—बड़े कीड़ों को गुण करे जो लड़कों की गुदा में उत्पन्न होते हैं—शफतालू के पत्ते जलाकर कड़ुवे तेल में मिलाकर गुदा पर मले।

अन्य—काले धतूरा के पत्तों का रस, पान का रस निकालकर प्रतिदिन दो बेर ऊँगली में लगाकर गुदा के अन्दर फेरे या कपड़े की बत्ती बनाकर औषधि से भरकर गुदा में फेरे, सब कीड़ मर जावें।

अन्य शाफा—नोन से शाफा करना लड़कों के कीड़ों को मारता है।

टंक, अजवायन आधा टंक, इलायची, धनियां चन्दन गुलाब में पीसकर दो दो टंक चार आमलों का मुरब्बा बीज निकाल कर तिगुने शहद में माजून बनावे।

पेट के कीड़ों का यत्न।

यह आंतों में पैदा होते हैं और इनके कई प्रकार हैं एक लम्बे सांपों के सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि उनको हुब्बुलकरा और कद्दू दाना कहते हैं तीसरे छोटे कीड़े शिर के कीड़ों के सदृश स्थिर आंतों में होते हैं। यह बहुधा मिथ्या आहार और गुदा के न धोने से लड़कों की आंतों में पैदा होते हैं।

यत्न—एक दो दिन दूध पीकर यह गोली सेवन करे—सनाय, मक्की, गुलकंद पांच पांच तोले, पीलेहड़ की छाल, जंगीहड़ दो दो तोले, सोंठ, दाख, मुनक्का एक एक तोला शहद में गोलियां बनावे, खूराक एक तोला, धनियें की जवारिश खाना जिसका वर्णन कोष्ठ के रोग में हुआ है गुण करे।

इतरीफल–जो कीड़ों को निकालता है–काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बायबिड़ंग, दश टंक तुरबुद खोखली करके हुब्बुलनील आधा आधा टंक कमीला कड़वीकूट हिन्दी नोन तीन तीन टंक कूटछानकर तिगुने शहद में मिलावे, खूराक चार टंक पर्यन्त खाय।

चूर्ण—पेट के कीड़ों को मारता है और दूर करता है और भोजन को पचाता है—अजमोद, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, जवाखार पीले हड़ की छाल, पीपल, सोंठ यह सब औषधि बराबर ले, हींग भूनकर एक भाग की आधी, कूटछानकर खूराक दो टंक निहार मुँह खाय।

कमीले की गोली—पेट के कीड़ों को दूर करने के लिये गुण करे—हींग पोदीना, बायबिड़ंग, हिंदीनोन, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे, तीन गोलियां खावे, कभी इसमें तुरबुद खोखली की हुई अधिक करते हैं।

अन्य—बायबिड़ंग, हिन्दीनोन दो दो टंक, बनी हुई तुरबुद आधी टंक, मिश्री बराबर लेकर गोलियां बनावे, खूराक दो मिस्काल गरम पानी के साथ खाय।

चूर्ण—हरप्रकार के कीड़ों को गुण करे—बायबिड़ंग, लाहौरी नोन, कमीला, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर आधादाम गौ के दही के साथ खावे, भोजन खिचड़ी खावे।

दूसरी गोली—दस्त लाती है और कीड़ों को दूर करती है—कालाजीरा तीनमाशे, बायबिड़ंग, दरमना तुरकी दो दो माशे, खोखली की हुई तुरबुद, अफ़्नैती, सोंठ, कतीरा, एलुवा एक एक माशा कूटछानकर गोलियां बनाकर खावे, खूराक एक गोली है।

काढ़ा—कीड़ों को गुण करे वैद्यक में लिखा है—खट्टे अनार की छाल, तूत की छाल दो दो तोले कुचलकर पानी में औटाकर साफ करके पिये बड़े कीड़ों और कद्दूदाने को गुण करे।

अन्य—बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावे, जब एक सकोराभर पानी रहजावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खाकर सो रहे, इसी प्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली—कोष्ठ के कीड़ों को गुण करे—करंजुवे के बीज, पलाशपापड़ा, अजवायन, कमीला, बायबिड़ंग, गुड़ बराबर लेकर गोलियां बनावे, खूराक आधा टंक।

अन्य—छोटे कीड़ों के लिये जो लड़कों की गुदा में पड़जाते हैं गुण करे—सीत, चाकसू छिली हुई, हींग दो दो माशे, एलुवा एकमाशा, कालीमिरच आधामाशा, नींब की पत्तियां दो, कुकरौंधे के रस में महीन पीसकर जुवार बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाय।

अन्य—मुलीय, कत्थासफेद, अफीम, बेर की पत्तियां, पुराना नारियल, बरा-बर लेकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को खिलावे।

अन्य—कीड़ों को गुण करे—दाख मुनक्के में उसके बीज की बराबर बाय-बिड़ंग भर दे जवान को बीस दाने और लड़के को पांच दानों से दश दानों तक खिलावे और उत्तम यह है कि मुनक्के निगल ले।

अन्य—बैल का सुम जलाकर उसकी राख शहद में या गुड़ में मिलाकर खाना हुब्बुलकरा को गुण करता है।

अन्य—बड़े कीड़ों को गुण करे जो लड़कों की गुदा में उत्पन्न होते हैं—कचालू के पत्ते जलाकर कड़ुवे तेल में मिलाकर गुदा पर मले।

अन्य—काले धतूरा के पत्तों का रस, पान का रस निकालकर प्रतिदिन और ऊँगली में लगाकर गुदा के अन्दर फेरे या कपड़े की बत्ती बनाकर उससे भरकर गुदा में फेरे, सब कीड़े मर जावें।

अन्य शाफा—नोन से शाफा करना लड़कों के कीड़ों को मारता है।

अन्य—मोम दो टंक उसमें आधा टंक नोन मिलाकर तेल में शाफा बनावे और शाफा जब निकल आवे फिर रख दे।

अन्य—मदार की जड़ खरल करके गुदा में रखना खुलाशा दस्त लाता है और पानी में पीसकर पेट पर भी गुनगुना लेप करे।

अन्य—चूहे की मेंगनियां, सांभरनोन बराबर शक्कर मिलाकर कि मधुरी आंच पर जमाकर छुहारे की गुठली के अनुसार बत्ती बनाकर तेल में भिगोकर गुदा में रक्खे।

अन्य शाफा—साबुन का टुकड़ा खुरमा की गुठली के सदृश बनाकर तेल में भून कर रक्खे।

काढ़ा—कूलंज को गुण करे—सोये के बीज, मेथी दो दो तोले या कम या जियादह स्वभाव के अनुसार लेकर औटाकर दो तोले घी डालकर पिये।

अन्य—कूलंज और पेट की पीड़ा को गुण करे—सोंठ, अरंड की जड़ एक एक टंक, हींग, सोंचर नोन एक एक माशे, सोंठ और अरंड की जड़ को तीन पाव जल में औटावे, जब आधपाव शेष रहे साफ करके पहिले हींग और नोन को महीन करके गोली बनाकर खा ले फिर काढ़ा पिये।

अन्य—अरंड की जड़ जलाकर उसकी राख हथेली भर खावे, वात और पेट की पीड़ा दूर हो जाती है। मुहम्मदजकरिया ने कहा है कि मैंने देखा बहुत मनुष्यों को कूलंज की बीमारी होती थी उन्होंने भेड़िये की खाल अपने सेवन में खूब की यहां तक कि उसी पर बैठते थे और सोते थे और घोड़े पर डाल कर सवार होते थे सो यह रोग होना बन्द हो गया।

अन्य—सुद्दाब का तेल अर्थात् तितली मलना कि उसका नुस्खा पीछे वर्णन हो चुका है कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

काढ़ा—उस कूलंज की पीड़ा और बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये जो स्वभाव की सर्दी के साथ हो—अरण्ड की जड़ दो दाम जो हरी हो तो चार दाम लेकर आधसेर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके रेंड़ी का तेल दो तोले, हींग तीन माशे मिलाकर गुनगुना पिये।

अन्य—हालों के बीज पाँच टंक पानी में औटाकर शक्कर और थोड़ा तिलों का तेल मिलाकर पिये।

औषधि—मुख्य करके कूलंज को दूर करती है—मेंहँदी के बीज आधे मिस्काल, सौंफ के अरक या उसके रस में मिलाकर खावे।

अन्य—रियाज में लिखा है कि जो मनुष्य बारासिंगे का सींग जलाकर एक चमचा माउल असल में मिलाकर खावे तो फिर कूलंज न होगा और पीड़ा दूर होगी।

अन्य—आधा टंक मीठा तेल शक्कर में मिलाकर पानी कूलंज को गुणदायक है।

अन्य—गुनगुना जल पीना उस कूलंज को जो निर्बलता से होवे नष्ट करता है।

अन्य—बकरी की मेंगनियां लड़की के मूत्र में औटावे फिर पीसकर कपड़े पर लगाकर गुनगुना मले।

अन्य—साखू के पत्तों का रस निचोड़ कर उसमें पारा पीसकर नाक के चौगिर्द मले।

अन्य—चँबेली का तेल गरम करके रुई उसमें भिगोकर पेट पर रक्खे।

अन्य—साबुन गरम पानी में पीस कर पेट पर उसके चौगिर्द लगावे।

अन्य—हुक्का पीना कूलंज की पीड़ा को गुण करता है।

लेप—रेंड़ी की गिरी, एलुवा, महुये के बीजों की गिरी सब को कूटकर सिरके में पकाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—लहसुन का खाना और पीसकर लगाना कूलंज की पीड़ा के लिये आश्चर्यदायक गुण रखता है।

अन्य—बकरी का पित्ता गुनगुना नाभि के नीचे मलना दस्त लाता है और लड़कों के बद्धकोष्ठ के दूर करने के लिये मुख्य करके उत्तम है।

लेप—वैद्यों का सेवित है दस्त बराबर लाता है और लड़कों के डब्बे के लिये अति गुणदायक है—सुहागा तेलिया, तूतिया, जमाल गोटे की गिरी एक एक टंक थूहड़ के दूध में पीसकर नाफ के गिर्द लेप करे।

टिकिया—कुन्दर आंतों की पीड़ा और पेचिस को गुण करे—कुन्दर, सोये के बीज, सौंफ पांच पांच टंक, करफशा के बीज तीन टंक, अजवायन अढ़ाई टंक कूटछान कर पानी में टिकिया बनावे, खूराक एक मिस्काल। एक मनुष्य के मेदे में कीड़े पड़ गये थे उसको मैंने मुसिल दिया कीड़े दूर हो गये फिर मन्दाग्नि हुई और यह अफरा और भोजन के न पचने के कारण कभी कभी कीड़े पैदा होते थे यह माजून मैंने उसके लिये बिचारी बहुत लाभ दिया—पोदीना, सौंफ, सातरा, अनीसून, जीरा, तुरंज की छाल दालचीनी एक एक

टंक, अजवायन आधा टंक, इलायची, धनियां चन्दन गुलाब में पीसकर दो दो टंक चार आमलों का मुरब्बा बीज निकाल कर तिगुने शहद में माजून बनावे।

पेट के कीड़ों का यत्न।

यह आंतों में पैदा होते हैं और इनके कई प्रकार हैं एक लम्बे सांपों के सदृश होते हैं दूसरे चौड़े कि उनको हुब्बुलकरा और कद्दू दाना कहते हैं तीसरे छोटे कीड़े शिर के कीड़ों के सदृश स्थिर आंतों में होते हैं। यह बहुधा मिथ्या आहार और गुदा के न धोने से लड़कों की आंतों में पैदा होते हैं।

यत्न—एक दो दिन दूध पीकर यह गोली सेवन करे—सनाय, मक्की, गुलकंद पांच पांच तोले, पीलेहड़ की छाल, जंगीहड़ दो दो तोले, सोंठ, दाख, मुनक्का एक एक तोला शहद में गोलियां बनावे, खूराक एक तोला, धनियें की जवारिश खाना जिसका वर्णन कोष्ठ के रोग में हुआ है गुण करे।

इतरीफल—जो कीड़ों को निकालता है—काबिली हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, बायबिड़ंग, दश टंक तुरबुद खोखली करके हुब्बुलनील आधा आधा टंक कमीला कड़वीकूट हिन्दी नोन तीन तीन टंक कूटछानकर तिगुने शहद में मिलावे, खूराक चार टंक पर्यन्त खाय।

चूर्ण—पेट के कीड़ों को मारता है और दूर करता है और भोजन को पचाता है—अजमोद, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, जवाखार पीले हड़ की छाल, पीपल, सोंठ यह सब औषधि बराबर ले, हींग भूनकर एक भाग की आधी, कूटछानकर खूराक दो टंक निहार मुँह खाय।

कमीले की गोली—पेट के कीड़ों को दूर करने के लिये गुण करे—हींग पोदीना, बायबिड़ंग, हिंदीनोन, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे, तीन गोलियां खावे, कभी इसमें तुरबुद खोखली की हुई अधिक करते हैं।

अन्य—बायबिड़ंग, हिन्दीनोन दो दो टंक, बनी हुई तुरबुद आधीटंक, मिश्री बराबर लेकर गोलियां बनावे, खूराक दो मिस्काल गरम पानी के साथ खाय।

चूर्ण—हरप्रकार के कीड़ों को गुण करे—बायबिड़ंग, लाहौरी नोन, कमीला, पीलीहड़ की छाल बराबर कूटछानकर आधादाम गौ के दही के साथ खावे, भोजन खिचड़ी खावे।

दूसरी गोली—दस्त लाती है और कीड़ों को दूर करती है—कालाजीरा तीनमाशे, बायबिड़ंग, दरमना तुरकी दो दो माशे, खोखली की हुई तुरबुद, अफनैती, सोंठ, कतीरा, एलुवा एक एक माशा कूटछानकर गोलियां बनाकर खावे, खूराक एक गोली है।

काढ़ा—कीड़ों को गुण करे वैद्यक में लिखा है—खट्टे अनार की छाल, तूत की छाल दो दो तोले कुचलकर पानी में औटाकर साफ करके पिये बड़े कीड़ों और कद्दूदाने को गुण करे।

अन्य—बकायन की छाल दो तोले आठ सकोरे पानी में औटावे, जब एक सकोराभर पानी रहजावे थोड़ा गुड़ मिलाकर खाकर सो रहे, इसी प्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली—कोष्ठ के कीड़ों को गुण करे—करंजुवे के बीज, पलाशपापड़ा, अजवायन, कमीला, बायबिड़ंग, गुड़ बराबर लेकर गोलियां बनावे, खूराक आधा टंक।

अन्य—छोटे कीड़ों के लिये जो लड़कों की गुदा में पड़जाते हैं गुण करे—रसौत, चाकसू छिली हुई, हींग दो दो माशे, एलुवा एकमाशा, कालीमिरच आधामाशा, नींब की पत्तियां दो, कुकरौंधे के रस में महीन पीसकर जुवार के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली खाय।

अन्य—मुलीय, कत्थासफेद, अफीम, बेरकी पत्तियां, पुराना नारियल, बराबर लेकर मूंग की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को खिलावे।

अन्य—कीड़ों को गुण करे—दाख मुनक्के में उसके बीज की बराबर बायबिड़ंग भर दे जवान को बीस दाने और लड़के को पांच दानों से दश दानों तक खिलावे और उत्तम यह है कि मुनक्के निगल ले।

अन्य—बैल का सुम जलाकर उसकी राख शहद में या गुड़ में मिलाकर खाना हुब्बुलकरा को गुण करता है।

अन्य—बड़े कीड़ों को गुण करे जो लड़कों की गुदा में उत्पन्न होते हैं—शफतालू के पत्ते जलाकर कड़ुवे तेल में मिलाकर गुदा पर मले।

अन्य—काले धतूरा के पत्तों का रस, पान का रस निकालकर प्रतिदिन दो बेर ऊँगली में लगाकर गुदा के अन्दर फेरे या कपड़े की बत्ती बनाकर औषधि से भरकर गुदा में फेरे, सब कीड़े मर जावें।

अन्य शाफा—नोन से शाफा करना लड़कों के कीड़ों को मारता है।

अन्य—कद्दूदाने को दूर करे—पहिली रात दो मुट्ठी तिल थोड़े गुड़ में मिलाकर खावे, उसके प्रभात को चार टंक कमीला, एक टंक साबुन मिलाकर तीन गोलियां बनाकर गरम पानी से निगल जावे, सब कद्दूदाने दस्त से निकल जावें।

अन्य—दरमना तुरकी, अनार के दाने के साथ जवकुट कर प्रति प्रभात को बादाम के बराबर खावे। खुलासतुल् तिजारब ने इस औषधि को परीक्षा किया हुआ लिखा है।

अन्य—लड़कों के बड़े कीड़ों को गुण करे—अरण्ड के पत्तों का रस या भँगरे के पत्तों का रस या धतूरे की पत्तियों का रस प्रति दिन दो तीन बेर गुदा में मले।

कांच के निकल आने की औषध।

यह रोग बहुधा लड़कों को अतीसार के उपरान्त हो जाता है।

औषध—कांच के निकलने को गुण करे—पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर इसकी राख गुदापर छिड़के।

अन्य—पहिले गुदापर तेल मले, फिर लसोढ़ा जलाकर पीस कर उसपर छिड़के।

अन्य—लड़कों के कांच निकल आने को गुण करे–रोगी अपना मूत्र बासन में लेकर जब दिशा से हो आवे उस मूत्र से पहिले गुदा को धोवे फिर पानी से इस्तंजा करे तो तीन दिन में गुण करता है।

अन्य—बबूल की फली, पान, धवई के फूल औटाकर उसके काढ़े में बैठे या उसके पानी से इस्तंजा करे।

अन्य—आम की पत्तियां, जामुन की पत्तियां और उसकी छाल दोनों जवकुटकर औटाकर उस जल से शौच करे।

अन्य—जब गुदा शोथ के कारण अन्दर न जावे, कई बेर गरम पानी में बैठना और उसपर गुलरोगन मलना आराम देता है।

औषध—कांच निकलने को गुण करे—बकरी का सुम जलाकर माजू, अनार के फूल, अनार की छाल, भुनी फिटकरी बराबर कूटछानकर छिड़के।

लेप—अण्डे की सफेदी गुदापर बाहर और भीतर से लगाना पीड़ा और सूजन को गुण करता है, और बासलीक की फस्द खोलना सूजन और पीड़ा को दूर करता है।

लेप—गुदा की सूजन को गुण करे—जौ का आटा, मसूर, अण्डे की सफेदी, रोगन गुल में मिलाकर लेप करे।

चूर्ण—काँच के निकलने को और उसकी पीड़ा को गुण करता है—सोंठ, आमला एक एक टंक, धनियाँ, लाहौरीनोन, काला-नोन, दो दो टंक, कालीमिरच चार टंक, पीपलामूल बारह टंक कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक दो टंक।

बवासीर का यत्न।

यह रोग दो प्रकार का है एक वह कि गुदा के किनारे मस्सों की अधिकता होवे और उससे रुधिर निकले उसको खूनी बवासीर बोलते हैं, दूसरे वह कि गुदा में मस्से न हों और पेट में कराकर होवे और रुधिर न निकले इसको बादी बवासीर बोलते हैं।

यत्न—चूतड़ की हड्डी पर सींगी लगाना उत्तमोत्तम यत्न है और बवासीर के रुधिर को पहिले बन्द न करे परंतु जब अधिक निकले और रोगी निर्बल होजावे बन्द करदे। हकीमों ने लिखा है कनिष्ठिका और अनामिका के बीच में दाग देना बवासीर को गुण करता है और हँसली पर दाग देना बवासीर के लिये गुण करे और दाग के उपरान्त रुई पानी में भिगोकर उस पर रक्खे कि जारी रहे। हरसिंघार के बीजों की गोली बवासीर के लिये अद्वितीय गुणकारक है—हरसिंघार के बीज छीलकर एक तोला भर कालीमिरच तीन माशे कूटछानकर गोलियां बनावे, खूराक तीन माशे ठण्ढे जल के साथ खाय।

गोली—बादी बवासीर के लिये गुण करे और कब्ज नहीं करती और स्वभाव को नरम रखती है—सौंफ, पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला दो दो टंक, गूगल, रसौत चार टंक, गुँदनी के बीज एक टंक, अंजीरें, चार हड़ों को पहिले घी में भूनकर दो भाग किशमिश कूटकर उसमें मिलाकर गोलियां बनावे, अनुमान से खावे।

औषध—गाय का दूध आध सेर पिये और जब दूध का प्याला मुँह से लगावे कागजी नींबू का रस उसमें डालकर तुरंत पी ले, तीन दिन में गुण प्रकट होगा।

कुकरौंधे की गोली—यह नुस्खा वैद्यों का आजमाया हुआ है—एक सेर कुकरौंधे का रस मधुरी अग्नि पर औटावे, जब गाढ़ा हो जावे एक टंक कालीमिरच पीसकर मिलावे, फिर खरल करके जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक गोली शाम को खावे।

कंघी के पत्तों की गोली—खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—कंघी की

पत्तियां २१, कालीमिरचें २१, पानी में पीसकर सात गोलियां बनाकर एक सुबह एक शाम खावे ।

गोली—बवासीर के लिये गुण करे—कलमीशोरा, रसौत बराबर पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली प्रभात को खाया करे, लेप के लिये भी यह गोली उत्तमोत्तम औषध है ।

अन्य—खूनी और बादी बवासीर को—नींब के बीजों की गिरी, बकायन के बीजों की गिरी, गूगल, रसौत, एलुवा, कालीमिरच, गेरू, मकोय की पत्ती के रस में जंगली बेर की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह एक सन्ध्या को खावे ।

अन्य—बवासीर का रुधिर बन्द करे—रसौत सात माशे, बीजों समेत दाख मुनक्के चौदह माशे, कतीरा सात माशे, सबको कूटछानकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनावे, खूराक हर सुबह को एक गोली उसके ऊपर से दो ग्रास रोटी के घृत के साथ खावे ।

अन्य—खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—रसौत दो भाग, अनार की छाल चार भाग, गुड़ आठ भाग, कूटछानकर गोलियां बनावे, खूराक चार टंक ।

अन्य—बवासीर खूनी के लिये—सफेद सज्जी, चूना सफेद, चने भूनकर आठ आठ टंक कूटछानकर बत्तीस टंक गुड़ में मिलाकर बत्तीस ही गोलियाँ बनावे, खूराक एक गोली सुबह और शाम ।

अन्य—बादी बवासीर को गुण करे—हड़ एक टंक, कालाजीरा आधा टंक, दोनों भूनकूटकर गन्दने के जल में गोलियां बनावे, खूराक एक गोली ।

गूगल की गोली—खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला दश दश टंक, सीप और बारहसिंगे का सींग जलाकर एक एक टंक, अजवायन तीन टंक, गूगल दुगुना औषधियों को लेकर पानी में गोलियां बनावे ।

अन्य—नई कालीहड़, बहेड़ा, आमला एक एक भाग, कन्द, बराबर गुलाब या जल में पीसकर गोलियां बनावे, खूराक दो टंक खाय ।

गोली—खूनी बवासीर को गुण करे—बकायन के पत्ते पावभर, खारीनोन एकदाम पीसकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे ।

गोली—खूनी बवासीर के लिये—अंडे का छिलका जलाकर सन्दरूश,

शतरजहिन्दी पांच पांच माशे, लाल नौसादर कूटछानकर रीठे की बराबर गोलियां बनावे, खूराक छः गोली खाय।

हलवा—बवासीर के रुधिर बहने को गुण करे—मुचुकुन्द के पुष्प महीन कूटछानकर शक्कर और घृत में हलवा बनाकर एक तोला खावे।

इतरीफल—बवासीर खूनी और बादी को गुण करे—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, धनियां एक एक भाग, गूगल गंदने के जल में कजली करके तीन भाग पर्यन्त शहद में तैयार करे।

चूर्ण—बवासीर का रुधिर बन्द करे—एक नारियल के ऊपर की छाल लेकर जलावे और उसकी बराबर शक्कर मिलाकर तीन खूराक करे, जारी खून बन्द हो जावे और एक वर्ष पर्यन्त मैथुन न करे।

अन्य—बादी बवासीर को गुणदायक—बकायन के बीज की गिरी, सौंफ एक एक टंक कूटछानकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे, खूराक आधा टंक खाय।

अन्य—बवासीर का रुधिर बन्द करे—जली हुई इस्पन्द, जले हुये गेहूँ बराबर पीसकर खूराक तीन माशे पर्यन्त दो तोले घृत के साथ खाय।

अन्य—कड़ुवे इन्द्रयव जो सब कामों में मीठों से अति बलवन्त हैं बवासीर और अतीसार के लिये आजमाये हैं, प्रतिदिन छः माशे ठंढे पानी के साथ सेवन करे।

अन्य—हंकोल की जड़ कि जिसको अंकोल भी कहते हैं एक माशा, कालीमिरच इसके बराबर लेकर चूर्ण बनाकर खावे और उसका बफारा देना भी बवासीर को गुण करना है।

अन्य—कुसुम के फूल खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—कुसुम के फूल तीन माशे पानी में पीसकर हडी में मिलाकर खावे।

अन्य—मूली के वरक छीलकर छाया में सुखावे फिर कूटछानकर एक हथेली के बराबर बराबर की शक्कर मिलाकर चालीस दिन तक फांके।

कालीजीरी का चूर्ण।

खूनी और बादी बवासीर के लिये गुणदायक—कालीजीरी तीन टंक आधी कच्ची और आधी पक्की प्रतिदिन साठी के चावल के पानी के साथ एक टंक खावे।

अन्य—जंगी हड़ घी में भूनकर शक्कर मिलाकर प्रतिदिन एक तोला भर खावे।

अखरोट का चूर्ण ।

जो बवासीर के रुधिर को बन्द करता है—अखरोट की छाल जलाकर बद्धकोष्ठकारक द्रव्यों के साथ खावे ।

हुलहुल का चूर्ण ।

जो खूनी और बादी बवासीर को गुण करे—हुलहुल के बीज एक भाग शक्कर दो भाग मिलाकर दो माशे खावे ।

चूर्ण—बवासीर के रुधिर को बन्द करता है—निर्मली जलाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे ।

अन्य—इमली के चिया की राख एक माशे से दो माशे पर्यन्त दही के साथ खावे ।

अन्य—पाव भर कण्डे जलाकर उसकी भस्म घड़े में रखकर आधा घड़ा पानी उसमें डालकर आठ दिन रक्खे और प्रतिदिन घड़े को हिलाया करे, आठवें दिन पानी को हिलाकर कपड़े से छानकर मिट्टी के तगार में रक्खे और फोग उसका दूर करके छाया में सुखावे, फिर प्रतिदिन छः माशे उसमें से लेकर उसी प्रकार सात दिन पर्यन्त खावे और इस समय में मूँग की दाल चावल खिचड़ी भोजन करे और सात दिन के उपरान्त फिर खावे, और पथ्य न करे चौदह दिन में बवासीर बिल्कुल दूर हो जावेगी, सम्भोग न करे ।

करंजुवे का चूर्ण ।

करंजुवे की गिरी पीसकर एक तोला शक्कर मिलाकर खाया करे और इस औषध के सेवन में चिकना भोजन करे ।

चूर्ण—जंगली कबूतर की बीट, बबूल के फूल की जरदी बराबर लेकर महीन पीसकर एक माशा प्रभात को गुलाब मिलाकर खावे, बादी और खटाई से पथ्य करे, तीन दिन में आराम हो जावे ।

अन्य—बवासीर को गुण करे—बबूल के फूल बराबर शक्कर लेकर प्रतिदिन एक हथेली भर खावे ।

अन्य—अंधाहूली छाया में सुखाकर महीन पीसकर उससे आधी कालीमिरच पीसकर मिलाकर आधा दाम ताजे पानी के साथ खावे ।

चूर्ण—रुधिर को बन्द करता है—गेरू, खरिया मिट्टी बराबर आधा दाम लेकर दही और चावल के साथ तीन दिन पर्यन्त प्रभात को खावे ।

अन्य—जमींकन्द टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे फिर छीलकर कूट छानकर प्रतिदिन एक दाम निहार खाना गुणदायक है।

अन्य—कुड़ा की छाल, गोपीचन्दन, नागकेशर, रसौत बराबर फंकी बनाकर प्रतिदिन दो टंक खावे।

अन्य—बवासीर की पीड़ा को शांत करता है—पीले हड़ की छाल घृत में भूनकर, सौंफ, एक एक भाग कूटकर हालों के बीज साबित दो भाग मिलाकर प्रतिदिन नौ माशे एक चमचा शक्कर मिलाकर खावे।

काढ़ा—जो बवासीर को गुणदायक है—करील की जड़ छाया में सुखाकर फिर जवकुटकर तीन सेर जल में औटावे, जब आधसेर शेष रहे साफ करके पावभर इस जल में से प्रभात को और शेष सन्ध्या को पिये, सात दिन हद्द दश दिन में रुधिर बन्द हो जावेगा और बवासीर गल जावेगी।

अन्य—रुधिर को बन्द करे—धवई के फूल एक दाम एक प्याले पानी में भिगोकर ओस में रक्खे प्रभात को बिना मले छानकर पिये ऊपर से एक दाम शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—आमला, मेहँदी की पत्तियां दश दश दाम डेढ़पाव में रात्रि को भिगो दे प्रभात को साफ करके पिये।

औषध—बवासीर को गुण करे—रूसे की पत्तियां छाया में सुखाकर कूटछानकर रक्खे और चार पांच बेर प्रतिदिन गुदापर मले।

अन्य—बवासीर को गुण करे—भंग की पत्तियां, नींब की पत्तियां, बकायन की पत्तियां, इमली की पत्तियां, सँभालू की पत्तियां, नील की पत्तियां, बराबर कूट छानकर औटाकर बफारा ले।

अन्य—बन्दाल औटाकर बफारा ले।

अन्य—हाथों पावों के नाखून छीलकर जलाकर बफारा ले।

अन्य—अरहर की पत्तियां, सिरस की पत्तियां, धवई के फूल, भंग की पत्तियां, बराबर एक दाम औटाकर बफारा ले।

अन्य—भंग की पत्तियां गौ के दूध में पकाकर पहिले उसे खावे फिर पीसकर गुदा के छिद्र पर बांधे।

अन्य—गैंड़े की सींग जलाकर बफारा ले।

अन्य—कुचला जलाकर उसका धुआं ले, पीड़ा और रुधिर दूर हो।

अन्य—गिलहरी का मांस सुखाकर कूटकर सुबह और शाम थोड़ा जलाकर धुआं ले।

अन्य—अरण्ड के पत्ते जल में औटाकर बफारा ले।

अन्य—सन्दरूस का तेल मलना बवासीर को सुखाता है, मुख्य करके गन्दने के बीज मिलाकर मलना।

अन्य—जवासे के काढ़े में बैठना बवासीर को गुणदायक है।

अन्य—हुलहुल की पत्तियां औटाकर उससे शौच करे और हुलहुल का साग दही के साथ खाना बवासीर के रुधिर को बन्द करता है।

अन्य—अस्तंजा तेल बवासीर को गुणकारक है—सेंदुर चार माशे, घी एक दाम फूल के कटोरे में डालकर जैतवृक्ष की लकड़ी से कि उसके शिर पर एक दाम सीसा लगाया हो कजली करै कि सीसे का असर भी उसमें आजावे और मरहम की रीतिपर हो जावे, तब बवासीर पर मले।

वस्मे का तेल—नील हरे पत्ते के कूटकर रस निकालकर मीठे तेल में औटावे, जब तेलमात्र शेष रहे बवासीर पर मले।

गन्दने का तेल—गन्दने का रस निचोड़कर उसको एक भाग लेकर अर्धभाग मीठे तेल में औटावे कि पानी जलकर तेल रह जावे, थोड़ा यह तेल लेकर थोड़ा उसमें गूगल मिलाकर बवासीर पर लगावे।

अन्य—घी, आलू, जरदआलू के बीज की गिरी को कंद के मिलाने के बिना रोगन बादाम की सदृश तेल निकालकर बवासीर पर लगावे।

धतूरे का तेल—मीठे तेल में धतूरे का फल जलावे, जब तेल शेष रहे उसमें रुई भिगोकर बवासीर पर बांधे।

बिच्छू का तेल—पथरी और पार्श्वशूल को दूर करता है और बवासीर को गुण करता है—कई बिच्छू मीठे तेल में डालकर एक शीशी में भरकर चालीस दिवस पर्यन्त धूप में रक्खे, वह तेल लेकर बवासीर पर लगावे।

अन्य—घीदुबरा बवासीर पर मलना पीड़ा को शांति देता है।

लेप—पांच छ: तोले सीसे का एक दस्ता बनावे और एक दाम बिनौले की गिरी उससे पीसे जब एक दाम के अनुमान दस्ता भी उनके साथ पीसकर औषध मरहम सदृश हो जावे लेप करे।

अन्य—कचनाल और जामुन और मौलसिरी की छाल को पानी में औटाकर इस्तंजा करे, बवासीर को दूर करता है।

तेल—तूतिया एक माशा, मुल्तानी मिट्टी पांच माशे, संदुर दो माशे, मीठा तेल दो तोले पीसकर तेल में मिलाकर दिशा के उपरान्त अँगुली से बवासीर पर खूब मले।

अन्य—बवासीर को गुणदायक—आधपाव फिटकरी भूनकर घी में खूब हल करे और मरहम की भांति बना ले, फिर सोये के बीज पानी में पकाकर पीसकर पहिले उसको गुदा पर बांधे फिर वह मरहम रुई में लगाकर गुदा-पर रक्खे और प्रभात से सन्ध्या पर्यन्त और सन्ध्या से प्रभात तक सात दिन बराबर लंगोट कसे रहे कि सब मस्से बैठ जावेंगे।

अन्य—बवासीर को गुण करे—नरमें के पत्ते दो दाम महीन पीसे और मेहँदी आधा दाम पीसकर उसमें मिलावे और घृत में गरम करके कपड़े पर रसकर गुदा पर बांधे, बहुत गुण करे।

अन्य—बादी बवासीर को गुण करे—कुकरौंधा के पत्तों का रस बवासीर पर मले और उसके ऊपर उसके पत्ते बांधे।

अन्य—हरी कनेर की जड़ पानी में पीसकर थोड़ा मस्सों पर जो दिशा फिरते समय निकल आते हैं लगावे। यद्यपि यह औषध बहुत पीड़ा करती है परन्तु अति गुणदायक है।

अन्य—खटमल बवासीर पर मलना बहुत गुण करता है।

अन्य—आबजन बवासीर और उसकी पीड़ा को गुण करे—जवासा औटाकर उसमें बैठे जो मूत्र बन्द हो गया उसको भी खोलता है।

अन्य—ऊँट के चमड़े पर बैठना मुख्य करके बवासीर को गुण करे।

अन्य—उस हुक्के के पानी से जो पीला हो और दुर्गंधित हो शौच करना गुण करे।

अन्य—मदार के पत्तों से मिट्टी के बदले गुदा को साफ किया करे।

औषधियों की गोली।

बवासीर को गुणदायक है व मस्सों को तीन दिन में दूर करती है—शोरा—कलमी, भुनी फिटकरी पीसकर साबुन के पानी में गोलियां बनावे और दिशा से निश्चिन्त होकर प्रभात और सन्ध्या तीन दिन एक गोली गुदा में रक्खे, परंतु इस औषध से कुछ दुःख होता है।

औषध—हरे अरंड के पत्ते पीसकर गुदा पर बांधे।

अन्य —बवासीर के खून को बन्द करे—जंगली गोभी का साग पका कर खावे ।

अन्य—बवासीर की जलन को गुण करे—काई गुदा पर मले ।

अन्य—रुधिर बन्द करती है आम की कोंपल पानी में पीस छान थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—कसौंधी दो तोले के अनुमान आधपाव जल में पीस छानकर दो तीन माशे गेरू मिलाकर पिये। जामुन की कोंपल दो दाम का शीरा निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य— गेंदे की पत्तियां छः माशे से एक तोले पर्यन्त और काली मिरच दो माशे से तीन माशे पर्यन्त पीसकर पिये ।

अन्य—फर्राश एक वृक्ष है उसकी कोंपल एक टंक थोड़े जल में पीस छान-कर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य—बवासीर खूनी और वादी को गुण करे–आम के पत्ते और जामुन के पत्ते एक एक दाम, गाय का दूध पावभर, पत्तों से पानी मिलाये बिना रस निकाले जो न निकले थोड़ा दूध मिलाकर निकाले और उसमें थोड़ी शक्कर डालकर आठ दिन पर्यन्त इसी तरह पिये, खटाई और बादी से पथ्य करे ।

अन्य—खूनी और बादी बवासीर को गुण करे–छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर उँगली से लेप करे ।

अन्य–छिला हुआ चाकसू तीन टंक पीसकर डेढ़ टंक लाल शक्कर के साथ पिये ।

अन्य–खूनी बवासीर को गुण करे–बन्दाल पुराने गुड़ में मिलाकर शाफा करे, तीन दिन में गुण करे ।

अन्य–हरे आम के पत्ते मलकर तम्बाकू के बदले हुक्के में पिये ।

अन्य–कलौंजी जलाकर पीसकर मलना गुण करता है और शहद में मिलाकर गुदा में रखना भी बवासीर को गुण करे ।

अन्य–रेंड़ी का गूदा बवासीर की पीड़ा को जो वह दाह बिना हो ठहराता है ।

अन्य–मेथी का काढ़ा बवासीर को गुण करे ।

अन्य–सूखे या हरे गूलर पानी में पीसकर मिश्री में मिलाकर पीना

खूनी कै और खूनी अतीसार और खूनी बवासीर और ऋतु के रुधिर को गुण करता है।

गुले सदबर्ग का अरक।

जो बवासीर को गुण करे—पाव भर गेंदे की पंखुड़ियां दो सेर केले की जड़ के रस में रात को भिगोकर सुबह अरक खींचे, दो तोले सुबह और दो तोले शाम को पीना बवासीर रोग के दूर करने के लिये अति गुण करे।

अन्य—कांच निकलने को गुणदायक—सन के बीज जलाकर कांच पर छिड़के।

अन्य—कांच निकलने को गुणदायक—अलसी जलाकर गुदाके घाव पर छिड़के।

अन्य—बकरी का सुम या सींग या अंडे का छिलका या कागज जलाकर गुदा खुजलाकर छिड़कना घाव को गुण करे।

अन्य—लसोढ़ा जलाकर छिड़के।

अन्य—पुरानी चलनी का चमड़ा जलाकर छिड़के।

अन्य—माजू, अनार की छाल पीसकर छिड़के।

गुरदे और फुकनी के रोगों का यत्न।

पथरी और मसाने और मूत्र की फुकनी दोनों में की पीड़ा जगह से अन्तर में मालूम हो सकती है। रेत और पथरी गुरदे में लाल रंग की होती है और फुकनी में श्वेत।

यत्न—गाढ़ी चीजों से पथ्य करना आवश्यक है और प्रकृति को नरम करना इस रोग में उचित है।

अंगूर के पत्तों का शरबत।

गुरदे की पथरी को गुण करे—मुनक्के पन्द्रह टंक, गोखुरू दश टंक, परशियावसान अर्थात् हंसराज सात टंक, अधकुचले खरबूजे के बीज पांच टंक, सौंफ अधकुचली तीन टंक, अंगूर के नरम पत्ते चालीस टंक, एक रातदिन जल में भिगोवे सुबह को जोश देकर तिगुनी शक्कर में शरबत का कवाम करे।

हजरुलयहूद की फंकी।

पथरी और फुकनी को गुण करे—हजरुलयहूद तीन टंक, खरबूजे की गिरी, खीरे ककड़ी के बीज, गोखुरू और कुलथी हरएक दो दो टंक, सौंफ, अजमोद, सम्मगअरबी एक एक टंक कूटछानकर फंकी बनावे, खूराक दो दाम

चने के काढ़े के साथ और जो इन औषधियों को तिगुने शहद के साथ कवाम करे उसको माजून हजरुलयहूद कहते हैं।

गुलदाउदी की फंकी।

फुकनी को गुण करे संगसाने को गुण करे—गुलदाउदी की पंखुड़ियां साफ करके कूटछानकर बराबर की शक्कर मिला खावे और औटाकर पीना भी गुण करता है।

अन्य—जवाखार, सुहागा दो दो माशे, गोखुरू के शीरे के साथ पिये।

अन्य—नीम के पत्ते जलाकर उसका खार निकालकर दो माशे खाया करे।

अन्य—अंगूर की लकड़ी की राख छः माशे गोखुरू के शीरे के साथ खावे।

अन्य—करंजुवे की कोपल सुखाकर जलाकर उसकी दो टंक भस्म दो तोले शहद मिलाकर खावे।

अन्य—तिल की लकड़ी जलाकर उसकी दो टंक भस्म एक दाम सिरके के साथ खावे।

अन्य—जंगली कबूतर की बीट दो टंक उसके बराबर शक्कर मिलाकर पानी के साथ फांके, मुख्य करके उस कबूतर की बीट जिसको दाने के बदले अलसी खिलाई हो।

करंजुवे की गोली—फुकनी और पार्श्वशूल को गुण करे—करंजुवे की गिरी कूटछानकर एक माशे के अनुमान तीन माशे शहद के साथ प्रतिदिन खावे और एक माशा प्रतिदिन अधिक करता जावे, ग्यारहवें दिन से एक माशा कम करना शुरू करे यहां तक कि तीन माशे पहुँच जावे, पार्श्वशूल दूर हो जावेगा।

आबजन—इसके दो अर्थ हैं एक यह कि औषधि का पानी या गरम पानी सदा बड़े बर्तन जैसे कि डेग आदि में भरकर उसमें रोगी को बैठावे, दूसरे तरह कि पानी को लोटे या मशक में भरकर दूर से रोगी के अंग पर डाले। आबजन पार्श्वशूल और फुकनी को गुण करे—करम्ब के पत्ते, मूली के पत्ते, शलगम के पत्ते, तिल के पत्ते, खतमी के पत्ते, छः छः टंक पानी में औटावे जब आधा शेष रहे आबजन करे।

अन्य—कबूतर की बीट, सोये के बीज, करंजुवा, सौंफ की जड़, गोखुरू, खरबूजे की छाल, मेथी, खतमी के बीज, अशनान अर्थात् छड़ीला हरएक थोड़ा यथाविधि आबजन करे।

काढ़ा--कि संगगुरदे और मसाने को तोड़ता है-मुलहठी, कुलथी हरएक तीन टंक, सौंफ दश टंक, चार प्याले पानी में जोश दे जब एक प्याला पानी रहे साफ करके तीन माशे लाहौरीनोन और थोड़ा घी मिलाकर पिये।

अन्य—मुहम्मद जकरिया ने लिखा है कि जो अंगूर वृक्ष की कोंपल जोश करे और थोड़ी शक्कर मिलाकर हररोज पिये, सब गुरदे की बीमारियां दूर हो जावें।

अन्य--काहू चने के साथ जोश देकर उसका पानी पिये।

अन्य—जवारिश कलौंजी की जिसका नुस्खा मेदे के रोग में वर्णन हुआ संगगुरदा और दर्दगुरदा को दूर करता है।

अन्य—पत्थरफोड़ी एक वृक्ष है उसकी पत्ती एक दाम पीसछानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये, संगगुरदे को दूर करने वाली है और सूखे पत्ते हरों से कम गुण रखते हैं।

अन्य—संगगुरदे को दूर करे और मूत्र जारी करे-झाड़ के सींक के फूल दो तोले लेकर दो पहर जल में भिगोकर उसका साफ पानी लेकर उसमें खीरे ककड़ी के बीज, गोखुरू, जवासा छः छः माशे, भंग एक दो माशे पीस-छानकर मिलावे और थोड़ी शक्कर डालकर पिये।

अन्य--मूली के पत्तों का रस चार दाम निचोड़कर अजमोद तीन माशे फांककर उसी रस से निगल जावे।

अन्य संगगुरदे और मसाने को गुणदायक—पूये की पत्ती महीन पीस-कर पिये।

अन्य—चौलाई का साग खाना पथरी को गुणकारक है।

अन्य—यदि दर्दगुरदा वायु से हो तो रेंड़ी की गिरी पीसकर गुनगुनी लगावे।

आबजन—पथरी को गुणदायक—तिल की पत्ती पानी में औटाकर रोगी को उसमें बैठावे।

औषधि—उस दर्दगुरदे को गुण करे जो सरदी से हो—पांच दाने इस्पन्द के निगलना शुरू करे और हररोज पांच दाने बढ़ावे जब सौ दाने हो जावें पांच पांच दाने प्रतिदिन कम करे, पार्श्वशूल दूर हो जावेगा।

अन्य—यदि तिल के वृक्ष की कोंपल छाया में सुखाकर जलाकर दो तीन टंक खाया करे संगगुरदा दूर हो जावे।

अन्य—जवासे का अरक गुरदे की बीमारी को गुण करे ऋतु के रुधिर, की रुकावट को भी दूर करता है।

अन्य—तितली का तेल जिसका मर्दन करना शीत की पथरी और मसाने और गुरदे की पीड़ा के लिये लाभदायक है उसका नुस्खा फालिज के रोग में वर्णन हुआ।

अन्य—जालीनूस ने कहा है कि लोहे की अँगूठी या छल्ला पहिनना मुख्य करके पथरी के रोग को गुण देता है।

सूजाक का यत्न।

उसमें ऐसी ठंढी औषधियों का सेवन करे कि मूत्र लावें और सब लुआब मूत्र की चिनग को गुण करते हैं।

बीजों की गोलियां—मूत्र की चिनग को गुण करती हैं—खुरफे के बीज, सफेद खशखाश के बीज, खीरे ककड़ी के बीज, खरबूजे के बीज, तरबूज के बीजों की गिरी पांच पांच टंक, छोटा गोखुरू, सम्मगअरबी, कतीरा दो दो टंक, ईसबगोल के लुआब में गोलियां बनावे, खूराक तीन माशे।

गोली—पेशाब की चिनग के लिये—बहरोजे को गलाकर पानी में डाले और उसके बराबर कतीरा और भूने छिले चने पीसकर मिलावे और चने की बराबर गोलियां बनाकर एक गोली गोखुरू के शीरे के साथ खावे।

गोली—सूजाक को गुण करे-पियाबांसा का छोटा वृक्ष जलाकर उसकी राख कतीरे के पानी में मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनावे हर सुबह एक गोली गुलखैरू के जल से जो रात को भिगोया हो पिये नये और पुराने सूजाक को गुण करती है।

चूर्ण—सूजाक को गुणकारक—संगजराहत, राल, मिश्री दो दो तोले, तालमखाना, गोखुरू, सरयाली एक एक तोला कूटछानकर चौदह भाग करे, प्रतिदिन एक भाग बकरी के दूध की लस्सी के साथ फांके।

अन्य—सूजाक को गुण करे और पीप बन्द करे—भुनी फिटकरी, गेरू एक एक टंक, शक्कर बराबर लेकर चूर्ण बनावे और प्रतिदिन सात माशे गाय के दूध के साथ खावे।

औषधि आजमाई हुई—ठण्ढे स्वभाव के सूजाक को गुण करे—सहँजने का गोंद हरसुबह एक तोला पीसकर सात दिन दही के साथ खावे।

चूर्ण-सूजाक को नाश करे-तालमखाना, खुरफे के बीज, सरयाली, गोखुरू

काहू के बीज, संगजराहत, बराबर लेकर चूर्ण बनावे–खूराक एक तोले गाय के दूध के साथ खाय।

अन्य—सूजाक की पीप को बन्द करने के लिये–कतीरा, भंग के बीज, सरयाली, राल सफेद, काली बीजबन्द, लाल बीजबन्द, बराबर लेकर चूर्ण बनावे खूराक दो टंक।

अन्य—सूजाक को लाभ करे–हल्दी, आमला बराबर कूटछानकर उसके बराबर शक्कर मिलावे, खूराक एक तोला पानी के साथ। नवीन सूजाक को एक सप्ताह में दूर करता है और जो रह जावे तो दो महीने तक सेवन करे।

अन्य—सूजाक की पीप को जो चिनग के रह जाने के उपरान्त बाकी रहे गुण करे–राल पीसकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर तीन टंक अट्ठारह दिन तक रोज खावे।

अन्य–सूजाक को गुण करता है और पीप को नाश करता है–ढाक की कोंपल सुखाकर ढाक का गोंद, ढाक की छाल, ढाक के फूल, कूटछानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो मिस्काल हररोज दूध के साथ खावे, आजमाया हुआ है।

अन्य–सूजाक के लिये आजमाया हुआ है–शोराकलमी, लाल इलायची एक एक दाम कूटछानकर छः भाग करे एक हिस्सा सुबह और एक शाम खाया करे और चौथे दिन से इसी तरह खावे कि दो तीन दाम साठी के चावल के जल में भिगोवे और सुबह को उसके पानी के साथ तीन दिन पर्यन्त खावे।

अन्य–ताजखरूस एक वृक्ष है उसे हिन्दी में मुरग का केस कहते हैं उसके बीज एक तोला दो तोले कन्द में चूर्ण बनावे और हर सुबह बीस दिन पर्यन्त खावे।

अन्य–बरगद की कोंपल छाया में सुखाकर पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर दूध की लस्सी के साथ सुबह को सात दिन तक खावे।

औषध–दो तोले निशास्ता एक प्याले पानी में रात को घोल दे सुबह निहार पिये।

औषध–मेहँदी के पत्ते, आमला, सफेदजीरा, धनियां, गोखुरू एक एक तोला जवकुट करके रात्रि को भिगो दे, सुबह साफ करके एक तोला भर शक्कर मिलावे, पहिले तीन माशे कतीरा कूटछानकर खावे उसके ऊपर यह कल्क पिये।

अन्य—छिले चने, पाव भर टेसू के फूल, जीरा सफेद दो दो दाम सबको एक सेर जल में आठ पहर भिगोवे, आधपाव उसका पानी सुबह को और उतना ही सन्ध्या को पिये जब पानी कम होवे और डाल दे।

अन्य—फालसे की जड़ एक दाम जवकुट करके पानी में भिगो दे, सुबह मलकर साफ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—अधकुचली आम की छाल दो दाम रात को पावभर जल में भिगो-दे, सुबह को मलकर छानकर एक सप्ताह पर्यन्त पिये।

अन्य—नये सूजाक को गुणकारक—फनीशफली दो तोले रात को पानी में भिगो दे सुबह छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—नये सूजाक के लिये—सदासुहागन के वृक्ष के पत्ते एक तोला रात्रि को जल में भिगो दे, सुबह मलकर छानकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—कुहलतल्ख एक दाम जवकुट करके रात को जल में भिगो रक्खे, सुबह को उसका स्वच्छ जल लेकर आठदाम मुरमक्की रात को पानी में भिगो रक्खे, सुबह को उसका साफ पानी लेकर थोड़ी मिश्री मिलाकर पिये।

अन्य—रीठा एक तोले भर रात को भिगो रक्खे, सुबह को उसका साफ पानी लेकर पिये।

काकुंज की कुरस अर्थात् टिकिया।

सूजाक, गुरदे और मसाने के घाव को गुण देती है और मूत्र को जारी करती है—काकुंज चार टंक, खीरे ककड़ी के बीज, खुरफा, मुलहठी छिली हुई अधकुचली, खशखाश सफेद, हर एक तीन टंक, कतीरा, सम्मगअरबी, गेरू दो दो टंक, अजमोद एक टंक, अफीम आधी टंक, कूटछानकर ईसबगोल के लुआब से टिकिया बनावे, खूराक एक दाम की करे।

काढ़ा—सूजाक को गुणदायक—सांबाहूली जोश देकर पिये।

अन्य—सूजाक और मुश्किल से पेशाब उतरने को गुणकारक—कांड़र के बीज सात प्याले पानी में औटावे जब एक प्याला शेष रहे साफ करके पिये, इसी तरह तीन दिन पिये।

अन्य—सूजाक को लाभदायक—गुड़हल के फूल पहिले दिन एक बताशे के साथ खावे, इसी प्रकार चार दिन पर्यन्त एक एक अधिक करे, पांचवें दिन से एक एक कम करे, जब एक ही रहे जो ईश्वर चाहे तो सूजाक दूर हो जावेगा।

अन्य—सूजाक के लिये गुणकारक है—नीम के पत्ते, चँबेली के पत्ते औटा-
र उस गुनगुने जल में लिंग को रक्खे और उसका बफारा ले, आधघड़ी के
परांत उसमें मूत्र करे, इसी तरह हररोज तीन बेर करे।

अन्य—सूजाक को गुणदायक—सदयारा अर्थात् तुख्म ताजखरूस जिसे हिंदी
 कलगा कहते हैं तीन टंक महीन कूटकर आधसेर दूध में रात को चांदनी
 रक्खे सुबह को पिये सूजाक और प्रमेह को गुण करे और वीर्य को पुष्ट करता
, परंतु थोड़ी शक्कर मिला लेना उचित है कि शक्कर सदयारा की जुज है।

अन्य—चिनग को गुण करे—केले के वृक्ष का रस निचोड़कर पिये।

अन्य—सूजाक को दूर करे—जोंक एक हिंदी वृक्ष है जो बहुधा बरसात में
गता है उसकी पत्तियां और फल एक तोला लेकर पानी में पीस छानकर
ोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—सूजाक को गुण करे—दो बताशे लेकर उसमें बरगद का दूध भरकर
ीन दिन प्रभात के समय खावे।

अन्य—सात माशे जवाखार गाय के दही में पिये।

अन्य—गंदाबिरोजा दो रत्ती थोड़े गुण में लपेटकर खावे और उसके ऊपर
ही पानी में घोलकर पिये।

अन्य—सूजाक को गुणकारक—सिरस वृक्ष के पत्ते पानी में पीसकर अपने
वभाव के अनुकूल थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—बबूल की कोपल एक तोला, गोखुरू एक तोला, दोनों का रस
नेकालकर थोड़ी शक्कर के साथ पिये।

औषधि—गौ का दूध थोड़ी शक्कर और कतीरे के साथ सदा पीना पुरानि
ूजाक को अच्छा करता है अमल स्त्री के सूजाक को दूर करता है स्त्री एक
त्ता अपनी भग के मल से भिगोकर बच्चेदार कुतिया को तीन दिन पर्यन्त
खिलावे सूजाक को दूर करे।

पिचकारी—सूजाक के उस घाव को गुण करे कि लिङ्ग के भीतर हो।

काढ़ा तूतिया तीन माशे, फिटकरी छः माशे, आधसेर पानी में औटावे
ब आधा रह जावे शीशे में रखकर पिचकारी ले। यदि इस औषध से रुधिर
ाने लगे तो कुछ चिन्ता नहीं। जो पीड़ा अधिक हो जावे तो स्त्री के दूध की
पिचकारी ले ले। बाजे इस दवा में एक तोला सफेद कत्था भी अधिक करते हैं।

पिचकारी—मूत्र की चिनग को गुण करे—देकामाली एक तोला, तीन तोले कड़ुवे तेल में पकावे, जब खूब जल जावे साफ करके तेल से पिचकारी ले।

अन्य—सूजाक को गुण करे—कत्था, मुरदारसंग, रसौत आधा आधा दाम, भुनी तूतिया चार रत्ती यथाविधि पिचकारी ले।

अन्य—सूजाक को गुण करे—पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला एक एक टंक, सब्ज तूतिया आधा दाम सबको कूटकर रात्रि को जल में भिगोकर सुबह पिचकारी दे।

शाफा—सूजाक को गुणकारक—कत्था सफेद, मुरदारसंग, राल, सम्मगअरबी, गेरू बराबर महीन करके शाफा बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे और कभी इसमें पीड़ा की अधिकता से अफीम अधिक करते हैं और दाह की अधिकता में कपूर बढ़ाया जाता है। लिंग के व्रण को गुणकारक— सम्मगअरबी, निशास्ता स्त्री के दूध में घोलकर और ईसबगोल का लुआब यह सब लिंग के घाव को गुण करते हैं।

अन्य—तालाब की काई निचोड़कर उसका थोड़ा जल लिंग के छिद्र में टपकावे।

मूत्र के अधिक आने का यत्न।

जो मसाने की सुस्ती और सरदी की अधिकता से हो गरमी और कब्ज करने वाली औषध दे।

जवारिश—जो मूत्र को रोकनेवाली है—पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल तेल में भूनकर गुलनार, नागरमोथा दो दो मिस्काल, कुंदर, अजवायन एक एक मिस्काल शहद में जवारिश बनाये।

जवारिश—साद को भी मूत्र की अधिकता और निर्बलता और मसाने की सरदी और गर्भाशय को गुण करे और कोष्ठ और कलेजे को गरम और बात दूर करती है—नागरमोथा पांच मिस्काल पीसकर सिरके में मिलाकर तीन दिन शहद में भिगो दे और सुखाकर कूटछानकर पाव भर शक्कर में कवाम करे।

जवारिश—कुंदर मूत्र की अधिकता को गुण करे—कुंदर, गुलनार एक मिस्काल, मस्तगी एक टंक कूटछानकर शहद में मिलावे, खूराक तीन मिस्काल।

कुलींजन की जवारिश—मूत्र की अधिकता को गुण करे, इसका नुस्खा कोष्ठ की बीमारियों में वर्णन हो चुका है।

फंकी मूत्र को रोकती है—कुन्दन, नागरमोथा, काला कुलींजन, जीरा, बलूतहुबुल्लास, धनियां सिरके में भिगोकर सुखावे, और पीसकर चूर्ण बनावे, खूराक डेढ़ मिस्काल ।

अन्य—तिल दो भाग, अजवायन एक भाग लेकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर खावे या गुड़ में गोलियां बनावे, खूराक आधा दाम ।

औषधि—मूत्र की अधिकता को गुण करे—लसोढ़े के नरम पत्ते एक तोला भर लेकर उसका रस निकालकर एक तोला भर शक्कर मिलाकर पिये ।

तिला—अधिक मूत्र को नाश करे—इमली के बीज की गिरी, सहँजने के पत्ते दोनों पीसकर प्रतिदिन नाभि के नीचे लगावे ।

चूर्ण—अधिक मूत्र आने को गुण करे—सूखा सिंघाड़ा कूटछानकर शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे ।

अन्य—बबूल की कच्ची फली छाया में सुखाकर कूटछानकर घी में भूने और शक्कर मिलाकर सुबह और शाम धेला भर खाया करे ।

औषधि—सोते में मूत्र हो जाने को गुण करे—माजू एक तुख्मरैहां थोड़ी कूटछानकर खा ले ।

अन्य—कुलींजन ठण्ढे पानी के साथ खाना उत्तमोत्तम गुण रखता है ।

अन्य—सोते में पेशाब हो जाने को गुण करे—कबूतर की बीट आटे में गूंधकर रोटी पकाकर खावे ।

अन्य—नर बकरे का सींग जलाकर शहद में मिलाकर खाना अधिक मूत्र के दूर करने को उत्तम गुण रखता है, खूराक दो दाम पर्यन्त ।

मूत्र बन्द हो जाने का यत्न ।

इस रोग के उत्पन्न होने के कारण बहुत हैं यदि मूत्र का बंद होना मसाने या गुरदे की सूजन से हो पहले बासलीक फस्द खोले उसके उपरांत वह औषधि जिससे मूत्र जारी हो सेवन करे ।

औषधि—मूत्र बन्द होजाने को गुण करे—राई, कलमीशोरा एक एक माशे शक्कर बराबर मिलावे यह दो खूराक है सुबह को खावे पेशाब जारी हो जावे ।

अन्य—गेंदे की पत्तियां दो तोले पानी में रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिये ।

अन्य—चूहे की मेंगनी दो दाम पानी में पीसकर गुनगुनी नाभि के नीचे लगावे ।

अन्य—थोड़ा कपूर जलाकर लिंग के छिद्र में रक्खे मूत्र खुल जावे।

अन्य—शोराकलमी कपड़े में भिगोकर नाभि के नीचे रक्खे।

अन्य—मूत्र खोले—पारा दो माशे पिचकारी में रखकर छिद्र के अन्दर पहुँचावे तुरन्त मूत्र खुल जावे। यदि पेशाब बन्द हो जाने का कारण शोथ न हो थोड़ा शोरा लिंग के छिद्र में रक्खे मूत्र खुल जावे।

अन्य—पांच रत्ती कनूचा पीसकर पानी के साथ फांके मूत्र खुल जावे।

अन्य—भैंस के कान का मैल रोगी की नाभि के नीचे मले।

अन्य—टेसू जोश देकर नाभि के नीचे तरेड़ा दे।

लेप—तिपतिया पेड़ू पर लेप करे।

औषधि—पथरचटा अर्थात् बिषखपरे के पत्तों का रस निचोड़कर दूध में मिलाकर खावे।

अन्य—एक जूं लिंग के छिद्र में छोड़े।

अन्य—खटमल पीसकर लिंग के छिद्र में छोड़े।

अन्य—रोगी को गरम पानी में बैठावे।

अन्य—गोखुरू, खीरे ककड़ी के बीज, सौंफ, खरबूजे के बीज पानी में पीसकर पिये।

अन्य—बकरी के गुनगुने दूध में लिंग को रक्खे।

अन्य—रेवन्दचीनी सौंफ के रस में पीसकर नाभि के चारों ओर लगावे।

अन्य—सीप पीसकर नाभि के नीचे लगावे।

अन्य—रियाजुल्अदबिया में लिखा है कि अण्डे के छिलके को अंदर के परदे से साफ करके पीसकर उसकी बराबर शक्कर मिलाकर पिये।

अन्य—मूंग का दाना पानी में एक रत्ती रगड़कर पिये।

अन्य—लाहौरीनोन गुदा में रखने से मूत्र खुलता है और स्वभाव नरम करता है, पेठे के बीज पीसकर नाभि के ऊपर लगावे और कौड़ी भर कपूर खावे।

अन्य—शहतूत के रस में शोराकलमी पीसकर नाभि के नीचे लगावे।

अन्य—एक दाम इन्द्रायण की जड़ औटाकर पिये।

मूत्र के रुधिर के आने का यत्न।

फिटकरी की कुर्स अर्थात् टिकिया बनावे उसका नुस्खा यह है भुनी फिटकरी, बारासिंगे का सींग जलाया हुआ, कतीरा, गेरू, गुलनार, सम्मग-

अरबी एक एक टंक कूटछानकर टिकिया बनावे, खूराक एक मिस्काल खुरफे के बीज के शीरे के साथ और यह टिकिया सूजाक को भी गुण करती है।

औषधि–रुधिर के मूत्र के लिये आजमाई हुई है–इक्कीस दाने चाकसू के महीन कूटकर खावे उसके ऊपर चन्दनबूरे का पानी कि उसमें भिगोया हो पिये।

अन्य–जवासा पीसकर पिये गुण करेगा आबजन रुधिर के मूत्र को गुणदायक है और मूत्र की अधिकता को बन्द करता है–अनार की छाल, छिले मसूर, बबूल की पक्की फली, अलतीस, बाजरा, चन्दन हरएक थोड़ा थोड़ा लेकर पानी में औटावे जब आधा रहे उसमें बैठे।

नपुंसकता का यत्न।

अर्थात् वीर्य का कम हो जाना अधिक वीर्य आजाय रईसा अर्थात् मन ब्रह्माण्ड और कलेजे की आरोग्यता और कोष्ठ और गुरदे के बल से होता है इस जगह कई सुगम औषध इस रोग की गुणदायक वर्णन की जाती हैं।

माजून–जो वैद्यों की बनाई हुई है वीर्य को बल देती और मनी को गाढ़ा करती है और वीर्य को गर्भ के लायक करती है और स्तम्भन करती है और हर्ष करती है निंबौले, कड़की गिरी, खरबूजे के बीज, चिरौंजी, तिल, खशखाश सफेद, सेमल का मूसला, मूसली सफेद, शतावर, असगंध, सिंघाड़े का आटा, इमली के बीज छिले हुये, लसोढ़ा एक एक तोला, केवड़े के बीज, प्याज के बीज, शलगम के बीज, मूली के बीज, बहुफली, तालमखाना भुना हुआ, समुद्रशोष, मैदालकड़ी नौ नौ माशे, कुलींजन, चीनियां गोंद, नागरमोथा, तज, कोंच के बीज, छोटा गोखुरू, इन्द्रयव मीठे, बबूल की फली, कँवल की गिरी, धवई के फूल, सेमल का गोंद, बीजबन्द, मोचरस छः छः माशे, भुनी इस्पंद गुजराती, उटंगन के बीज, अकरकरा, सोंठ, पीपल, खुरासानी अजवायन तीन-तीन माशे कूटछानकर तिगुने कन्द में कवाम करे और जो बादाम की गिरी, पिस्ता, चिलगोजा और अखरोट की गिरी तोला तोला भर, भंग दो तोले इस औषध में डाले तो उत्तम है नहीं तो गरीबों के वास्ते इतना ही बहुत है, खूराक एक तोला उस दूध के साथ जिससे खुरमा जोश दी हो।

किशमिश की माजून–वीर्य को बल देती और वीर्य को पैदा और गाढ़ा करती है–मोचरस, सालिममिश्री, समुद्रशोष, कालीमूसली, सफेदमूसली,

बादाम की गिरी पांच पांच टंक, शतावर दशदाम, सोंठ, कुलींजन आधा आधा दाम, किशमिश आधसेर, कन्द एक सेर यथाविधि कवाम करे, खूराक दो तोले से तीन तोले गौ के दूध के साथ जिसमें खुरमा जोश दिया हो खाय।

मालकंगनी की माजून—वीर्य को बल देता है—मालकंगनी, अकरकरा, केवड़े के बीज, लौंग, केसर एक एक दाम, इस्पन्द सफेद आधा दाम, खशखाश सफेद पांच टंक, तिल चार दाम, मुर्ग के पांच अण्डे की जर्दी, शहद और चौगुने कन्द में यथाविधि माजून बनावे।

दूसरा नुस्खा—मालकंगनी की माजून जो हिन्द की रीति पर है—मालकंगनी भँगरे के रस में भिगोकर गाय के दूध और जल में औटावे, जब दूध सूख जावे पीसकर बराबर शक्कर लेकर माजून बनावे, आधा टंक पहिले दिन खावे और प्रतिदिन आधा टंक अधिक करके आठ टंक पर्यंत पहुँचावे और चालीस दिन पर्यंत खाया करे, बूढ़े को जवान करती है।

माजून जो बल करती है—अकरकरा, लौंग, सोंठ दो दो तोले, पच्चीस मुर्गी के अण्डे की जर्दी, एक सौ बीस टंक शहद में कवाम करे, खूराक चार दाम भोजन के पहिले खाय।

माजून—सफेद पियाज का रस एक सेर, शहद एक सेर अग्नि पर रक्खे जब कवाम होजावे तो दरीसुर्ख और सफेद सालिम मिश्री, बहमनसुर्ख और सफेद सोंठ, पियाज के बीज, मूली के बीज, गंदना, शलगम के बीज, तालमखाना, सफेद और काली मूसली एक एक सेर शाही कूटछानकर यथाविधि माजून बनावे।

पेठे की माजून—तत्काल वीर्य गिरने के वास्ते अद्वितीय है और वीर्य को भी पुष्ट करती है—खरबूजे के बीज, सफेद मूसली, पेठे की मिठाई आध आध पाव, घीकुवार के पट्ठे दो, कबाबचीनी छः माशे सबको महीन पीसकर आध सेर सफेद कन्द में कवाम करे, खूराक एक तोला।

लहसुन की माजून—शीतल स्वभाव वालों के वीर्य को बल देती है और फालिज और लकवे को गुण करती है—लहसुन को दूध में ऐसा औटावे कि दूध सूख जावे फिर उसको घी में भूने और शहद के साथ माजून बनावे। माजून—तत्काल वीर्य गिरने को गुण करती और पतले वीर्य को गाढ़ा करती है और पौष्टिक है—पीले हड़ की छाल, बहेड़ा, आमला भुना खुरमा, सालिम मिश्री, मैदालकड़ी, गोखुरू, सफेद मूसली और काली मूसली, बालछड़,

कोंच के बीज, सूखा सिंघाड़ा, कँवलगट्टे की गिरी, लसोढ़ा, मीठे इन्द्रयव, इमली के बीज की गिरी दो दो टंक, गुलनार, शहदाना, काली अजवायन, हब्बुल्लास का जीरा, धनियां, बंशलोचन, बरगद की कोंपल, मस्तगी, शाहबलूत, बीजबन्द, सरयाली, लोध, इस्पन्द भुनी एक एक टंक, तज असगन्ध, भुना तालमखाना, समुद्रशोष, चीनियांगोंद, नागरमोथा, धवई के फूल, मोचरस, शतावर, बबुल की फली, केवड़े के बीज एक एक मिस्काल, कन्द तिगुना।

कड़ का चूर्ण—वीर्य को पौष्टिक और गर्भ देनेवाला है—कड़ दो टंक, काले तिल सात टंक, खशखाश सफेद पांच टंक निबौले की गिरी, तज, इन्द्रयव मीठे चार चार दाम, मिश्री सम्पूर्ण औषधियों के बराबर, खूराक एक तोला गौ के दूध में खाय।

पीपल का चूर्ण—जो वीर्य को बल देता है— एक सेर पीपल को दो सेर दूध में औटावे, जब दूध सूख जावे पीपल को सुखाकर पीसकर प्रतिदिन एक दाम में छः दाम मिश्री मिलाकर दूध के साथ खावे।

चूर्ण—वीर्य को बल देता है और उसको पैदा करता है—सेमल का मूसला महीन पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर प्रतिदिन एक तोले भर गौ के दुग्ध के साथ खावे।

अन्य—प्रमेह के लिये अद्भुत है—गोखुरू पाँच टंक, सिंघाड़ा साठी के चावल, कँवलगट्टे की गिरी हरएक तीन टंक, तालमखाना दो टंक, मोचरस, समुद्रशोष, सरयाली, बीजबन्द एक एक टंक सम्पूर्ण औषधियों को बराबर मिलाकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोला।

अन्य—मनी को गाढ़ा करती है—कच्ची बबूल की फली, मौलसिरी की छाल, शतावर, मोचरस बराबर लेकर बराबर की शक्कर मिलाकर हथेली भर खावे।

अन्य—पतली मनी को जमाती है— बरगद की कोपल, गूलर की छाल बराबर ले और सफेद शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूध के साथ खावे।

अन्य—वीर्य की पौष्टिक—पिस्ता दो तोले, मिश्री दो तोले, पिसी हुई सोंठ छः माशे सबको मिलाकर प्रतिदिन एक तोला भर शहद में मिलाकर एक रत्ती भंग महीन पीसकर उसपर छिड़क कर तीन दिन खावे।

अन्य—तत्काल वीर्य गिरने को गुण करे—बबूल की कच्ची फली छाया में

सुखाकर, तालमखाना, चीनियांगोंद, छिलेहुये भुने चने बराबर लेकर बराबर मिश्री मिलाकर हररोज एक हथेली भर खावे।

अन्य—मनी को गाढ़ा करे और शीघ्र वीर्यपात को गुणदायक है—खिरनी के दरख्त की छाल, तज, मैदालकड़ी, सबके बराबर शक्कर मिलाकर एक तोला भर गाय के दूध से खावे।

अन्य—चीनियांगोंद, बहुफली बराबर पीसकर एक तोला भर हररोज दूध के साथ चालीस दिन तक खावे।

अन्य—वीर्य के शीघ्र गिरने को गुणकारक है—सिरस के बीज, पलाश के बीज बरावर कूटछानकर बराबर की मिश्री मिलाकर एक तोलाभर आध सेर गाय के दूध के साथ खावे, अत्यन्त गुणदायक है।

अन्य—बन्दकुशाद को गुण करे और मनी को गाढ़ा करता है—तालमखाना, सरयाली, असगन्ध नागौरी, समुद्रशोष, मोचरस बराबर कूटछानकर बराबर की शक्कर मिलाकर एक हथेली भर खावे।

गोली—पतली मनी को गाढ़ा करे और शीघ्र वीर्यपात को गुण करे-इमली के बीज तीन चार दिन पानी में भिगोदे, फिर उसकी कालीछाल दूर करके पीसकर बराबर की सफेद शक्कर मिलाकर चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक दो गोली खाया करे।

चूर्ण—प्रमेह और शीघ्र वीर्यपात को गुणकारक—बबूल की छाल, बबूल की फली, बबूल का गोंद, बबूल की कोंपल बराबर कूटछानकर शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोला भर खाय।

दूसरा चूर्ण पतली मनी को गुणदायक—गूलर के उस वृक्ष की छाल कि जिसके रेशे पृथ्वी के अन्दर हों गोखुरू, तालमखाना, कमलगट्टे की गिरी हरएक पांच तोले भर, बहुफली, मखाना, बीजबन्द, सरयाली, चीनियांगोंद, हरएक तीन तीन तोले कूटछानकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर गाय के दूध के साथ खावे।

अन्य—वीर्य के पतलेपन और जल्दी मनी गिरने को गुणकारक—कच्चे कोंच के बीज छाया में सुखाकर महीन पीसकर तीन टंक पावभर गाय के दूध के साथ औटाकर खावे।

अन्य—लिंग के छिद्र को गुण करे-समुद्रशोष, अजवायन पांच पांच दाम,

जलाने वाली इस्पन्द तीन दाम कूटछानकर सुबह और शाम एक दाम भर पानी के साथ फांके, खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य–प्रमेह को गुणदायक है–हुलहुल के बीज तीन दाम, बीजबन्द तीन दाम, तालमखाना, इन्द्रयव मीठे, छोटी गोखुरू हरएक छः दाम, लसोढ़ा चौबीस दाम, शक्कर औषधियों के बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे।

अन्य—स्तंभन के वास्ते गेंदे के बीज एक दाम उसके बराबर शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य–पतली मनी को गुणदायक है–समुद्रशोष, तालमखाना, तुख्मरहां हरएक पांच टंक कूटछानकर चूर्ण बनाकर आधादाम निहार खाया करे। खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य–वीर्य के शीघ्र गिरने को–आम का गोंद दो दाम, कालीमूसली और सफेदमूसली, मोचरस हरएक आधादाम, कोकिनार एक, भंग दो माशे, कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोला भर गाय के दूध के साथ।

अन्य–मनी को गाढ़ा करती है और मनी के बहाव और प्रमेह को गुण करे–सूखा सिंघाड़ा, चीनियां गोंद, समुद्रशोष हरएक दो दो भाग, बीजबन्द, मोचरस, तालमखाना, गोखुरू, कौंच के बीज, धनियां, मैदा लकड़ी एक भाग, काहू के बीज आधा भाग, बराबर शक्कर मिलाकर एक तोला भर खावे।

अन्य–शीघ्र वीर्यपात को गुणदायक–बरगद की कोपल, चीनियां गोंद, खिरनी की जड़ की छाल, लसोढ़ा, बहुफली, शतावर बराबर कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोलाभर गाय के दूध के साथ खाय।

दूसरा चूर्ण–प्रमेह और मनी के बहाव को गुणदायक है–बबूल की कच्ची फली ३ दाम, छोटी दुद्धी जड़ और पत्तों समेत छाया में सुखाकर पीसकर उसके बराबर कन्द मिलाकर चूर्ण बनावे।

अन्य–पतली मनी को गुणदायक और वीर्य को बल दे–ढाक के दरख्त की छाल और गोंद, गूलर के वृक्ष की छाल और गोंद, सेंमल के वृक्ष का मूसला और गोंद, मौलसिरी की छाल, भुने चने, बबूल का गोंद बराबर लेकर चूर्ण बनावे, खूराक चार टंक।

अन्य–प्रमेह को गुणकारक और वीर्य को पुष्ट करे–काली और सफेद मूसली, तालमखाना, कौंच के बीज, उटंगन के बीज, मोचरस, ऊँटकटारू

के जड़ की छाल, लाल और काला बीजबन्द, बहुफली, कमरकस, साठी के चावल, शतावर, समुद्रशोष, मीठे इन्द्रयव एक एक टंक, सिंघाड़ा डेढ़ टंक, सफेद शक्कर बराबर लेकर दो टंक गाय के दूध के साथ खावे ।

हलवा–पतली मनी को गाढ़ा करे–आमले के बीज छिले हुये, ढाक का गोंद, निशास्ता एक एक तोला भर, लाल शक्कर तीन तोले भर, घी चार तोला गरम करके निशास्ता भूनकर इमली के बीज और गोंद पीसकर मिलाकर हलवा बनावे, खूराक एक तोला से दो तोले पर्यन्त खाय ।

चूर्ण–मनी के बहने को गुणदायक–तालाब की काई फिटकरी पर रखकर आग पर चढ़ाकर जलावे और उसकी राख में बराबर शक्कर मिलाकर चार माशे हररोज खाया करे ।

अन्य–बरगद का फल सुखाकर गाय के दूध के साथ खावे पतली मनी गाढ़ी होती है ।

गोली–वीर्य के स्तम्भन के वास्ते–खशखाश, भुनी इस्पन्द, शिंगरफ, गोखुरू, कुचला जलाकर बराबर कूटछानकर उस पानी से जिसमें खशखाश का पोस्ता भिगोया हो गोलियां बनावे और चार घड़ी भोग के पहिले एक गोली खावे और ऊपर से एक प्यालाभर दूध पिये ।

गोली–अजवायन पांच माशे, कद्दू के बीजों की गिरी छः माशे, इस्पन्द नौ माशे, भंग के बीज आठ माशे, भुने चने सात माशे, अफीम तीन माशे, केसर चार रत्ती, इलायची के दाने एक माशा, खशखाश के पोस्ते दो, यह सब औषध कूटछानकर उस पानी में जिसमें पोस्ते भिगोये हों गूंदकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे, समय पर एक गोली खावे जो अधिक गर्मी करे कद्दू के बीजों और तरबूजों और खुरफे के बीजों का रस पिये ।

गोली स्तम्भन की–हकीम उलबीखां का नुस्खा–इसमें यह उत्तमता है कि अफीम नहीं है । अकरकहा एक दाम, रैहां के बीज आठ दिरम, सफेद कन्द नौ दिरम कूटछानकर गोलियां बनाकर एक दिरम खावे, लिखा है कि जब तक नींबू का पानी न पिये वीर्यपात न होगा ।

गोली—वीर्य को रोकती है—भुनी इस्पन्द, कपूर, मुरमक्की, अजवायन बराबर कूटछानकर अदरक के जल में चने की बराबर गोलियां बनाकर मैथुन से पहिले एक गोली गाय के दूध के साथ खावे ।

गोली–जो रेजे की बराबर बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे स्तम्भन करे–

खूबकलाँ सफेद, साफ की हुई मिश्री, कपूर, कालीमिरच और मेढक के शिर को खूब निचोड़े जो कुछ निकले सीप से खुरचकर उठा ले।

गोली—वैद्यक की आजमाई हुई है वीर्य को बल देती है और भोग करने के उपरान्त थकान नहीं लाती और वीर्य को रोकती है—जलाने का इस्बन्द पांच टंक आधा कच्चा आधा पक्का, पोस्ता, काले तिल दो दो दिरम, गुड़ २० दिरम, तीनों औषधि कूटछानकर पुराने गुड़ के साथ कूटे जब मिल जावे सात भाग करके हर भाग की एक गोली बनाकर रक्खे और सम्भोग के समय एक गोली खावे।

गोली—वीर्य के शीघ्र गिरने और प्रमेह को गुणकारी है—छिले इमली के बीज, छिले बबूल के बीज, तालमखाना, सेमल की बौंड़ी, छिले सिरस के बीज, उटंगन, भंग के बीज बराबर लेकर भँगरे के रस में खरल करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे, खूराक छः माशे दूध के साथ खाय।

गोली—प्रमेह को गुण करती है—धतूरे के बीज छः माशे, कालीमिरच छः माशे कूटछानकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर हर सुबह एक गोली एक तोले भर सौंफ के रस के साथ खावे जो बीमारी पुरानी न हो एक दिन में आराम होता है।

गोली—वीर्य को बल करे—ताजा केंचुवा साफ और सुखाकर छः दाम, अजवायन दो दाम कूटछानकर चार दाम गुड़ मिलाकर एक एक तोले की बराबर गोलियां बनाकर इक्कीस दिन खावे, खूराक एक गोली।

गोली पौष्टिक— कसौंधी की छाल महीन पीसकर शहद में मिलाकर गोलियां बनावे और दो दाम खाकर ऊपर से एक प्यालाभर दूध पिये।

गोली—वीर्य को बल करे—काले धतूरे के फूल सुखाकर चने की बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली।

गोली—मनी को गाढ़ा करती है और वीर्य को बल देती है—छोटी दुद्धी छाया में सुखाकर पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनावे और सुबह को एक गोली गाय के दूध में खावे।

गोली पौष्टिक—नकछिकनी, कालीमुसली, शतावर, कोंच के बीज, उटंगन के बीज, ऊँटकटारे की जड़, मालकांगनी, गुड़ बराबर कूटछानकर अदरक के रस में जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर हर रोज एक गोली गाय के दूध के साथ खावे।

गोली—सुगम उपाय-वीर्य को बल दे-गुड़, कालेतिल दो दाम, असगन्ध नागौरी चार दाम, दो दाम कच्चा दो दाम भुना कूटछानकर चौदह गोलियाँ बनाकर एक गोली प्रतिदिन खावे।

चूर्ण—जो प्रमेह को गुणदायक है—त्रिफला, बबूल के फूल, हल्दी बराबर लेकर मिश्री सबसे आधी संयुक्त करके कूटछानकर चूर्ण बनावे, तीन दिरम गाय के दूध में खावे।

चूर्ण—वीर्य को बल दे-अजवायन की भूसी आध सेर, मूली के बीज, भुने चने, जरदक के बीज, कालेतिल पाव पाव भर कूटछानकर चूर्ण बनावे और हर रोज एक तोला भर खावे।

औषधि—नकछिकनी, काली मूसली, सफेद मूसली, सोंठ बराबर लेकर चूर्ण बनाकर हर दिन आधा दिरम गाय के दूध के साथ खावे।

अण्डे का हलवा—वीर्य को ताकत दे-मुरगी का अण्डा, बताशा और दो दिरम घी लेकर खूब तल करके कोयले की आग पर रक्खे और चमचे से हिलाता रहे जब पक जावे ठण्डा करके खावे।

शकरकंद का हलवा—मनी को पैदा और गाढ़ा करता है—हरी शकरकंद खुश्क करके कूटछानकर घी और शक्कर मिलाकर हलवा बनावे बाज भुनी शकरकंद को घी में मिलाकर हलवा बनाते हैं।

सिंघाड़े का हलवा—मनी को गाढ़ा और पैदा करता है—सूखा सिंघाड़ा पीसकर शक्कर और घी में बनावे।

औषधि—लिंगछिद्र के तंग होने के वास्ते ढाक के वृक्ष की कोपल जो खुली न हों वह पतझड़ के पीछे मिलती है जितनी नरम हो कूटकर छः वर्ष के पुराने गुड़ में या जितना पुराना हो उत्तम है पीसकर अखरोट के बराबर चार दिन खावे।

अन्य—वीर्य को पौष्टिक-भुने चने की दाल उसके बराबर छिले बादाम लेकर हर सुबह और शाम खाना अति पौष्टिक है।

अन्य—जो ठण्ढे मिजाजवाला शीतऋतु में इसको खावे वीर्य में बल और आरोग्यता की रक्षा और पाचन को हर प्रकार से गुणदायक है—पारा हरदिन एक कौड़ी भर खाना शुरू करके एक दांग तक पहुँचावे और निगलकर ऊपर से यखनी पिये।

अन्य— वीर्य को बलकारक-चिलगोजे की गिरी, मीठे मुनक्के उत्तमोत्तम

औषधि है। इन दोनों को जल में एक रातदिन भिगोकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—अधिक पौष्टिक है—ऊँटकटारे के जड़ की छाल एक दाम के बराबर लेकर कुचलकर पोटली बांधकर आधसेर दूध और आधपाव पानी में डुबाले जब पानी सूखकर दूध रह जावे साफ करके मिठाई मिलाकर पिये और जो उसमें दो तीन छुहारे डाले तो अधिक बलकारक हो जावे।

अन्य—शहद उबाले और कफ उसका निकालकर मूली के बीज पीसकर उसमें मिलाकर सुबह और सोते वक्त खाया करे।

अन्य—वीर्य को बल करे—ढाक की जड़ एक पाव लेकर दो तीन सेर पानी में उबाले जब आधा पानी जलकर शेष गाढ़ा हो जावे उसमें से थोड़ा लेकर पान के साथ खाया करे।

अन्य—कफ की प्रकृतिवालों के वीर्य को बल दे—शहद, भिलावां, गाय का घी बराबर कवाम करके खूराक प्रकृति के अनुकूल दे।

अन्य—वीर्य की पुष्टि के लिये जो छः महीने खावे सब तरह से प्रभाव करे—जंगली सहँजने का वृक्ष जो नर्म और छोटा हो उसकी जड़ लेकर टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे और अजवायन की भूसी और छिले उर्द तीनों को बराबर लेकर उसके बराबर गुड़ मिलावे और अखरोट के बराबर गोलियां बनाकर हर सुबह एक गोली खावे।

अन्य—गुड़हल के फूल सुखाकर कूटकर कन्द में मीठा करके चालीस दिवस पर्यन्त दो मिस्काल रोज खाया करे।

अन्य—चार दाम असगन्ध कूटछानकर एक सेर दूध में औटावे और दश दिरम मिश्री मिलाकर दोनों समय खावे, बदन का रंग लाल हो जावे और भारी और वीर्य अधिक हो।

अन्य—जो मैथुन के उपरान्त खाय कमताकती न होवे—खैरुल्‌तिजारब में लिखा है कि जो मैथुन के अनन्तर चार दाम गुड़ खावे निर्बलता न होवे।

अन्य—वीर्य को बल करे—सिंघाड़ा हर दिन गाय के दूध में खावे।

अन्य—वीर्य को पुष्ट करे—अरण्ड की कोपल आधपाव, मांस आधसेर दो तोला पकाकर तीन दिन तक खावे।

अन्य—खशखाश दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ आधा दिरम कूटछान-कर मिलाकर चालीस दिन खावे।

अन्य—गोखुरू,शक्कर, गाय का घृत सबको कूटकर मिलाकर खाय और उसके ऊपर गाय का दूध पिये ।

अन्य—भूख और वीर्य को बल दे-आमलासार गन्धक लेकर बिसखपरे के रस में इतना खरल करे कि गाढ़ा हो जावे सो हर दिन एक चावल के बराबर पन्द्रह दिवस पर्यन्त खावे ।

अन्य—दूध चावल खाना वीर्य को पैदा करता है और चने का होला खाना उसको पुष्ट करता है ।

अन्य-मनी और अधिक खुले छिद्र को गुणदायक-एक बताशा में थोड़ी बूंदें बरगद का दूध डालकर खाया करे ।

अन्य-दो तोले बिनौले आधसेर गाय के दूध में पकाकर खावे ।

अन्य—बेर की गुठली की गिरी पुराने गुड़ में मिलाकर पीसकर खावे ।

अन्य—सर्व प्रकार के प्रमेह को गुणदायक—ईंट पुरानी कच्ची कूटछानकर एक भाग शक्कर दो भाग चूर्ण करके हररोज एक दिरम खावे ।

अन्य—मनी के बहने को गुणदायक और शीघ्र वीर्यपात को लाभ दे यदि स्त्री को खिलावे योनि संकीर्ण हो जावे—अण्डे का छिलका जितना चाहे जल में डालकर उसके अन्दर के महीन परदे को दूर करके छिलकों को बर्तन में रखकर उसमें नींबू का रस इतना डाले कि एक अंगुल छिलकों के ऊपर आजावे, फिर उस पर कुछ ढककर रख दे यहां तक कि रस छिलकों में पचजावे, तीन बेर इसी तरह करे फिर उसके छिलकों को मिट्टी की कुल्हिया में रखकर कपड़मिट्टी करके जंगली कण्डे की गजपुट अग्नि दे, जब ठण्ढा हो जावे फिर उतनी ही आग में रक्खे इस तरह तीन बेर आग देने में छिलके जलकर सफेद हो जावेंगे सो निकालकर दो रत्ती शहद में मिलाकर खावे, खटाई और बादी से पथ्य करे ।

अन्य—दूब का बौंड़ा हर सुबह को बासी जल में पीसछानकर एक सप्ताह पिये ।

चूर्ण—लिंग के छिद्र के बढ़ जाने को गुण करे-खिरनी की छाल, गोंदी की छाल, लसोढ़े की छाल, आम की छाल हर एक बराबर लेकर शक्कर बराबर मिलाकर निहार एक बहलोली पर्यंत पानी के साथ खाय ।

अन्य—वीर्य को रोके—आक के फूल, धतूरे के फूल, कालीमूसली, इस्पंद

पांच पांच टंक पीसकर घी में भूनकर पंद्रह टंक शहद में मिलाकर बराबर एक टंक के खावे और उसके ऊपर दूध पिये ।

अन्य—वीर्य को पुष्ट करे—सोंठ, पीपल, जरदक के बीज बराबर लेकर अण्डे की जरदी के साथ खावे ।

अन्य—अजवायन, कालेतिल एक एकभाग, खशखाश आधा भाग, गुड़ में मिलाकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोला ।

अन्य—खिरनी के बीज की गिरी सुखाकर तीसरा हिस्सा उसका शक्कर मिलाकर गाय के दूध के साथ खावे, वीर्य को बल देता है ।

अन्य—चाहिये कि हर सुबह को मीठा आम खावे ऊपर से गौ का दूध जिसमें दो तीन खुरमें और कुछ सोंठ में जोश दिया हो पिये, वीर्य को अधिक और शरीर को पुष्ट करता है और दिमाग को बल देता है और पका हुआ शरीफा खाना मनी को पैदा करता है और कटहल भी वीर्य को बल देता है इसी तरह कटहल के बीज भूनकर खाना गुण करता है ।

आमों का हलवा—जो वीर्य को बलकारक और मनी को पैदा करता है—मीठे आमों का रस तीन सेर, शक्कर सफेद एक सेर, गौ का घी आध सेर, शहद पावभर, सोंठ एक तोला, पीपल छः माशे, शतावर एक तोला, सालिबमिसरी, बादाम की गिरी चार-चार तोले, कुलींजन छः माशे, लाल बहमन और सफेद बहमन एक एक तोला, सेमर का मूसला एक तोला, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, सुरमे की तरह कूटकर चार तोले पहिले आम का रस और शक्कर मिलाकर दूध डालकर शरबत बनावे फिर गिरियां पीसकर घी में भूनकर शरबत में मिलावे और औषधियां बनाकर हलवा बनावे।

लहसुन का तेल ।

लिंग की सुस्ती को गुण करे—लहसुन को अलसी के तेल में औटाकर साफ करके राई, अकरकरा, नींबू के बीज, मालकंगनी हर एक थोड़ा छानकर तेल में जलाकर उस तेल से कई दिन मर्दन करे, सुस्ती दूर हो जावे ।

गुलशब्बो का तेल—वीर्य को बल देता है—गुलशब्बो लेकर तेल में मिलाव जब फूलकर कुम्हिला जावे तब बदल दे इसी प्रकार तीन बेर बदले फिर साफ करके थोड़ा अकरकरा पीसकर मिलाकर लगावे और उस पर पान बांधे ।

गोली—सुगम उपाय—वीर्य को बल दे—गुड़, कालेतिल दो दाम, असगन्ध नागौरी चार दाम, दो दाम कच्चा दो दाम भुना कूटछानकर चौदह गोलियाँ बनाकर एक गोली प्रतिदिन खावे।

चूर्ण—जो प्रमेह को गुणदायक है—त्रिफला, बबूल के फूल, हल्दी बराबर लेकर मिश्री सबसे आधी संयुक्त करके कूटछानकर चूर्ण बनावे, तीन दिरम गाय के दूध में खावे।

चूर्ण—वीर्य को बल दे—अजवायन की भूसी आध सेर, मूली के बीज, भुने चने, जरदक के बीज, कालेतिल पाव पाव भर कूटछानकर चूर्ण बनावे और हर रोज एक तोला भर खावे।

औषधि—नकछिकनी, काली मूसली, सफेद मूसली, सोंठ बराबर लेकर चूर्ण बनाकर हर दिन आधा दिरम गाय के दूध के साथ खावे।

अण्डे का हलवा—वीर्य को ताकत दे—मुरगी का अण्डा, बताशा और दो दिरम घी लेकर खूब तल करके कोयले की आग पर रक्खे और चमचे से हिलाता रहे जब पक जावे ठण्डा करके खावे।

शकरकंद का हलवा—मनी को पैदा और गाढ़ा करता है—हरी शकरकंद खुश्क करके कूटछानकर घी और शक्कर मिलाकर हलवा बनावे बाज भुनी शकरकंद को घी में मिलाकर हलवा बनाते हैं।

सिंघाड़े का हलवा—मनी को गाढ़ा और पैदा करता है—सूखा सिंघाड़ा पीसकर शक्कर और घी में बनावे।

औषधि—लिंगछिद्र के तंग होने के वास्ते ढाक के वृक्ष की कोपल जो खुली न हों वह पतझड़ के पीछे मिलती है जितनी नरम हो कूटकर छः वर्ष के पुराने गुड़ में या जितना पुराना हो उत्तम है पीसकर अखरोट के बराबर चार दिन खावे।

अन्य—वीर्य को पौष्टिक—भुने चने की दाल उसके बराबर छिले बादाम लेकर हर सुबह और शाम खाना अति पौष्टिक है।

अन्य—जो ठण्ढे मिजाजवाला शीतऋतु में इसको खावे वीर्य में बल और आरोग्यता की रक्षा और पाचन को हर प्रकार से गुणदायक है—पारा हरदिन एक कौड़ी भर खाना शुरू करके एक दांग तक पहुँचावे और निगलकर ऊपर से यखनी पिये।

अन्य—वीर्य को बलकारक—चिलगोजे की गिरी, मीठे मुनक्के उत्तमोत्तम

औषधि है। इन दोनों को जल में एक रातदिन भिगोकर थोड़ी शक्कर मिलाकर खावे।

अन्य—अधिक पौष्टिक है—ऊँटकटारे के जड़ की छाल एक दाम के बराबर लेकर कुचलकर पोटली बांधकर आधसेर दूध और आधपाव पानी में डुबाले जब पानी सूखकर दूध रह जावे साफ करके मिठाई मिलाकर पिये और जो उसमें दो तीन छुहारे डाले तो अधिक बलकारक हो जावे।

अन्य—शहद उबाले और कफ उसका निकालकर मूली के बीज पीसकर उसमें मिलाकर सुबह और सोते वक्त खाया करे।

अन्य—वीर्य को बल करे—ढाक की जड़ एक पाव लेकर दो तीन सेर पानी में उबाले जब आधा पानी जलकर शेष गाढ़ा हो जावे उसमें से थोड़ा लेकर पान के साथ खाया करे।

अन्य—कफ की प्रकृतिवालों के वीर्य को बल दे—शहद, भिलावां, गाय का घी बराबर कवाम करके खूराक प्रकृति के अनुकूल दे।

अन्य—वीर्य की पुष्टि के लिये जो छः महीने खावे सब तरह से प्रभाव करे—जंगली सहँजने का वृक्ष जो नर्म और छोटा हो उसकी जड़ लेकर टुकड़े टुकड़े करके छाया में सुखावे और अजवायन की भूसी और छिले उर्द तीनों को बराबर लेकर उसके बराबर गुड़ मिलावे और अखरोट के बराबर गोलियां बनाकर हर सुबह एक गोली खावे।

अन्य—गुड़हल के फूल सुखाकर कूटकर कन्द में मीठा करके चालीस दिवस पर्यन्त दो मिस्काल रोज खाया करे।

अन्य—चार दाम असगन्ध कूटछानकर एक सेर दूध में औटावे और दश दिरम मिश्री मिलाकर दोनों समय खावे, बदन का रंग लाल हो जावे और तैयारी और वीर्य अधिक हो।

अन्य—जो मैथुन के उपरान्त खाय कमताकती न होवे—खैरुल्तिजारब में लिखा है कि जो मैथुन के अनन्तर चार दाम गुड़ खावे निर्बलता न होवे।

अन्य—वीर्य को बल करे—सिंघाड़ा हर दिन गाय के दूध में खावे।

अन्य—वीर्य को पुष्ट करे—अरण्ड की कोपल आधपाव, मांस आधसेर दो प्याला पकाकर तीन दिन तक खावे।

अन्य—खशखाश दो तोले, शहद चार तोले, सोंठ आधा दिरम कूटछानकर मिलाकर चालीस दिन खावे।

अन्य—गोखुरू,शक्कर, गाय का घृत सबको कूटकर मिलाकर खाय और उसके ऊपर गाय का दूध पिये।

अन्य—भूख और वीर्य को बल दे—आमलासार गन्धक लेकर बिसखपरे के रस में इतना खरल करे कि गाढ़ा हो जावे सो हर दिन एक चावल के बराबर पन्द्रह दिवस पर्यन्त खावे।

अन्य—दूध चावल खाना वीर्य को पैदा करता है और चने का होला खाना उसको पुष्ट करता है।

अन्य—मनी और अधिक खुले छिद्र को गुणदायक—एक बताशा में थोड़ी बूंदें बरगद का दूध डालकर खाया करे।

अन्य—दो तोले बिनौले आधसेर गाय के दूध में पकाकर खावे।

अन्य—बेर की गुठली की गिरी पुराने गुड़ में मिलाकर पीसकर खावे।

अन्य—सर्व प्रकार के प्रमेह को गुणदायक—ईंट पुरानी कच्ची कूटछानकर एक भाग शक्कर दो भाग चूर्ण करके हररोज एक दिरम खावे।

अन्य—मनी के बहने को गुणदायक और शीघ्र वीर्यपात को लाभ दे यदि स्त्री को खिलावे योनि संकीर्ण हो जावे—अण्डे का छिलका जितना चाहे जल में डालकर उसके अन्दर के महीन परदे को दूर करके छिलकों को बर्तन में रखकर उसमें नींबू का रस इतना डाले कि एक अंगुल छिलकों के ऊपर आजावे, फिर उस पर कुछ ढककर रख दे यहां तक कि रस छिलकों में पचजावे, तीन बेर इसी तरह करे फिर उसके छिलकों को मिट्टी की कुल्हिया में रखकर कपड़मिट्टी करके जंगली कण्डे की गजपुट अग्नि दे, जब ठण्ढा हो जावे फिर उतनी ही आग में रक्खे इस तरह तीन बेर आग देने में छिलके जलकर सफेद हो जावेंगे सो निकालकर दो रत्ती शहद में मिलाकर खावे, खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—दूब का बौंड़ा हर सुबह को बासी जल में पीसछानकर एक सप्ताह पिये।

चूर्ण—लिंग के छिद्र के बढ़ जाने को गुण करे—खिरनी की छाल, गोंदी की छाल, लसोढ़े की छाल, आम की छाल हर एक बराबर लेकर शक्कर बराबर मिलाकर निहार एक बहलोली पर्यंत पानी के साथ खाय।

अन्य—वीर्य को रोके—आक के फूल, धतूरे के फूल, कालीमूसली, इस्पंद

पांच पांच टंक पीसकर घी में भूनकर पंद्रह टंक शहद में मिलाकर बराबर एक टंक के खावे और उसके ऊपर दूध पिये।

अन्य—वीर्य को पुष्ट करे—सोंठ, पीपल, जरदक के बीज बराबर लेकर अण्डे की जरदी के साथ खावे।

अन्य—अजवायन, कालेतिल एक एकभाग, खशखाश आधा भाग, गुड़ में मिलाकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोला।

अन्य—खिरनी के बीज की गिरी सुखाकर तीसरा हिस्सा उसका शक्कर मिलाकर गाय के दूध के साथ खावे, वीर्य को बल देता है।

अन्य—चाहिये कि हर सुबह को मीठा आम खावे ऊपर से गौ का दूध जिसमें दो तीन खुरमें और कुछ सोंठ में जोश दिया हो पिये, वीर्य को अधिक और शरीर को पुष्ट करता है और दिमाग को बल देता है और पका हुआ शरीफा खाना मनी को पैदा करता है और कटहल भी वीर्य को बल देता है इसी तरह कटहल के बीज भूनकर खाना गुण करता है।

आमों का हलवा—जो वीर्य को बलकारक और मनी को पैदा करता है—मीठे आमों का रस तीन सेर, शक्कर सफेद एक सेर, गौ का घी आध सेर, शहद पावभर, सोंठ एक तोला, पीपल छः माशे, शतावर एक तोला, सालिबमिसरी, बादाम की गिरी चार-चार तोले, कुलींजन छः माशे, लाल बहमन और सफेद बहमन एक एक तोला, सेमर का मूसला एक तोला, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, सुरमे की तरह कूटकर चार तोले पहिले आम का रस और शक्कर मिलाकर दूध डालकर शरबत बनावे फिर गिरियां पीसकर घी में भूनकर शरबत में मिलावे और औषधियां बनाकर हलवा बनावे।

लहसुन का तेल।

लिंग की सुस्ती को गुण करे—लहसुन को अलसी के तेल में औटाकर साफ करके राई, अकरकरा, नींबू के बीज, मालकंगनी हर एक थोड़ा छानकर तेल में जलाकर उस तेल से कई दिन मर्दन करे, सुस्ती दूर हो जावे।

गुलशब्बो का तेल—वीर्य को बल देता है—गुलशब्बो लेकर तेल में मिलाव जब फूलकर कुम्हिला जावे तब बदल दे इसी प्रकार तीन बेर बदले फिर साफ करके थोड़ा अकरकरा पीसकर मिलाकर लगावे और उस पर पान बांधे।

तेल—वीर्य को बल दे-भटकटैये की पत्तियां, कड़ुवा तेल चार चार दाम, बड़ा काला बिच्छू जो मिल जावे तो अच्छा नहीं तो जिस तरह का हो पहिले तेल को गरम करके पत्तियों की टिकिया बनाकर बिच्छू और टिकिया को उसमें डालकर जलावे, जब खूब जलजावे कपड़े से छानकर रक्खे और एक रत्ती भर पान में लगा कर लिंग पर बांधे ।

अन्य तेल—कहवा जो कि एक जीव टीड़ी के सदृश है और उसके पर नहीं होते उसको दबान और रसूल भी बोलते हैं और उससे बुलबुल को पकड़ते हैं पांच छः लेकर चार पांच दाम गाय का घी और एक दाम केसर मिलाकर बर्तन में रखकर जलावे फिर हल करके लिंग पर मले ।

ऊंटकटारे का तेल—लिंग की सुस्ती को गुण करे—ऊंटकटारे का वृक्ष जड़ टहनी और पत्तों समेत बकरी के दूध में भिगोकर पातालयन्त्र से तेल खींचकर लिंग पर मले ।

चींटियों का तेल—सौ बड़ी चींटियाँ जो बड़ी कबरों और आम के दरख्तों पर होती हैं लेकर चमेली के तेल में डालकर शीशे में भरकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर तेल लेकर मर्दन करे ।

चमेली की पत्तियों का तेल ।

स्तम्भन करनेवाला और वीर्य को बल देता है—सफेद चमेली की पत्तियां पीसकर उसका रस निकालकर मीठे तेल में जलावे, जब पानी जल जावे तेल लेकर शीशे में रक्खे, भोग के दो घड़ी पहिले लिंग पर मलकर पान बांधे । तेल—जो हाथरस वाले को गुण करे और वीर्य को बलदे—कपड़े को मदार के दूध में एक दिन रात भिगो रक्खे, फिर निकालकर सुखाकर उसमें घी लगाकर दो बत्तियां बनाकर जलावे और उसके नीचे कांसे की थाली रक्खे, जो तेल बत्ती से थाली में टपके लिंग का शिर छोड़कर मले ऊपर से पान या अरण्ड के पत्ते बाँधे ।

अन्य—चमेली की पत्तियां एक पाव, मीठा तेल एक पाव, दोनों को कड़ाही में डालकर औटावे, जब पत्तियाँ जलकर तेलमात्र रहजावे कड़वीकूठ, कच्चा सुहागा, आधी आधी बहलोली थोड़े तेल में डाले, जब मिलकर औषधियों का रंग लाल हो जावे उसी समय कड़ाही उतारकर जहर तेलिया आधी बहलोली मिलाकर तेल को फूल के बर्तन में डालकर नीम की लकड़ी से दो पहर हल करके शीशे में रक्खे और एक माशा लेकर लिंग

का शिर छोड़कर लेप करे और उसके ऊपर पान बांधे। इसी प्रकार एक सप्ताह र्यंत एकदिन बीच लेकर लगावे, परन्तु इस अवसर में मैथुन न करे।

चमेली का तेल–वीर्य को बल देता है–चमेली की पत्तियों का रस, तूरे की पत्तियों का रस, हरएक दो दाम, मीठा तेलिया, कड़वीकूठ एक म, मैनसिल आधा दाम, सुहागा एक दाम, तिलों का तेल सात दाम, षधियां पीसकर टिकिया बनाकर तेल में पानी मिलाकर उसमें जलावे ब पानी जलजावे दवायें पीसकर रक्खे और एक सप्ताह पर्यन्त मर्दन करे।

जोंक का तेल–वीर्य को बल दे–सात बड़ी जोंकें आधपाव मीठे तेल में ाकर साफ करके लिंग पर मले।

तेल–जो वीर्य को बल दे–मालकांगनी और कुचले का बुरादा, पलाश के न, जंगली कबूतर की बीट चार चार दाम, सफेद कौड़ी दो टंक, रात बकरी के दूध में भिगोकर सुबह आतशी शीशे में तेल निकालकर न करे और दूसरे नुस्ख में सफेद कौड़ी के बराबर अकरकरा भी लिखा है।

अन्य–एक बालिश्त महीन कपड़ा लेकर आधसेर धतूरे के रस में इक्कीस तक रक्खे कि रस कपड़े में सूखजावे, फिर पांच टंक तिलों के तेल में री आंच पर पकावे, उसके उपरान्त निकालकर कपड़े को लोहे की सींक टकाकर उसके नीचे थाली रक्खे और एक ओर से कपड़े में आग लगा ो कपड़े से तेल उस थाली में टपके उसको लेकर रक्खे और दो बूंदे दिन चार दिन पर्यन्त मले।

अन्य–सुगम, वीर्य को बलकारक और हथरस लगानेवाले को गुण करे– तेलिया दो दाम, मूली के बीज आध दाम, जमालगोटे की गिरी ां औषध महीन पीसकर आधपाव तिलों के तेल में खरल करके उसमें ड़ा सा लेकर सेवन करे।

अन्य–सुगम और बलकारक–छः टंक मीठा तेल मधुरी आंच पर जोश दे आधा टंक लाल हरताल पीसकर उसमें मिलावे, उसके उपरान्त सुहागा कड़वीकूठ एक एक टंक उसमें मिलावे, फिर चमेली की पत्तियों का रस र अग्नि पर रक्खे, जब पानी जलकर तेलमात्र रहे लिंगपर मले और से पान बाँधे।

अन्य–वीर्य को बल देता है और लिंग की सुस्ती को दूर करता है–लोध, री, अरण्ड के जड़ की छाल, नस, असगँध एक एक टंक, दो टंक कूट-

अन्य—गोखुरू, शक्कर, गाय का घृत सबको कूटकर मिलाकर खाय और उसके ऊपर गाय का दूध पिये।

अन्य—भूख और वीर्य को बल दे–आमलासार गन्धक लेकर बिसखपरे के रस में इतना खरल करे कि गाढ़ा हो जावे सो हर दिन एक चावल के बराबर पन्द्रह दिवस पर्यन्त खावे।

अन्य—दूध चावल खाना वीर्य को पैदा करता है और चने का होला खाना उसको पुष्ट करता है।

अन्य–मनी और अधिक खुले छिद्र को गुणदायक–एक बताशा में थोड़ी बूंदें बरगद का दूध डालकर खाया करे।

अन्य–दो तोले बिनौले आधसेर गाय के दूध में पकाकर खावे।

अन्य—बेर की गुठली की गिरी पुराने गुड़ में मिलाकर पीसकर खावे।

अन्य—सर्व प्रकार के प्रमेह को गुणदायक—ईंट पुरानी कच्ची कूटछानकर एक भाग शक्कर दो भाग चूर्ण करके हररोज एक दिरम खावे।

अन्य—मनी के बहने को गुणदायक और शीघ्र वीर्यपात को लाभ दे यदि स्त्री को खिलावे योनि संकीर्ण हो जावे—अण्डे का छिलका जितना चाहे जल में डालकर उसके अन्दर के महीन परदे को दूर करके छिलकों को बर्तन में रखकर उसमें नींबू का रस इतना डाले कि एक अंगुल छिलकों के ऊपर आजावे, फिर उस पर कुछ ढककर रख दे यहां तक कि रस छिलकों में पचजावे, तीन बेर इसी तरह करे फिर उसके छिलकों को मिट्टी की कुल्हिया में रखकर कपड़मिट्टी करके जंगली कण्डे की गजपुट अग्नि दे, जब ठण्ढा हो जावे फिर उतनी ही आग में रक्खे इस तरह तीन बेर आग देने में छिलके जलकर सफेद हो जावेंगे सो निकालकर दो रत्ती शहद में मिलाकर खावे, खटाई और बादी से पथ्य करे।

अन्य—दूब का बौंड़ा हर सुबह को बासी जल में पीसछानकर एक सप्ताह पिये।

चूर्ण—लिंग के छिद्र के बढ़ जाने को गुण करे–खिरनी की छाल, गोंदी की छाल, लसोढ़े की छाल, आम की छाल हर एक बराबर लेकर शक्कर बराबर मिलाकर निहार एक बहलोली पर्यंत पानी के साथ खाय।

अन्य—वीर्य को रोके—आक के फूल, धतूरे के फूल, कालीमूसली, इस्पंद

पांच पांच टंक पीसकर घी में भूनकर पंद्रह टंक शहद में मिलाकर बराबर एक टंक के खावे और उसके ऊपर दूध पिये।

अन्य—वीर्य को पुष्ट करे—सोंठ, पीपल, जरदक के बीज बराबर लेकर अण्डे की जरदी के साथ खावे।

अन्य—अजवायन, कालेतिल एक एकभाग, खशखाश आधा भाग, गुड़ में मिलाकर चूर्ण बनावे, खूराक एक तोला।

अन्य—खिरनी के बीज की गिरी सुखाकर तीसरा हिस्सा उसका शक्कर मिलाकर गाय के दूध के साथ खावे, वीर्य को बल देता है।

अन्य—चाहिये कि हर सुबह को मीठा आम खावे ऊपर से गौ का दूध जिसमें दो तीन खुरमें और कुछ सोंठ में जोश दिया हो पिये, वीर्य को अधिक और शरीर को पुष्ट करता है और दिमाग को बल देता है और पका हुआ शरीफा खाना मनी को पैदा करता है और कटहल भी वीर्य को बल देता है इसी तरह कटहल के बीज भूनकर खाना गुण करता है।

आमों का हलवा—जो वीर्य को बलकारक और मनी को पैदा करता है—मीठे आमों का रस तीन सेर, शक्कर सफेद एक सेर, गौ का घी आध सेर, शहद पावभर, सोंठ एक तोला, पीपल छः माशे, शतावर एक तोला, सालिबमिसरी, बादाम की गिरी चार-चार तोले, कुलींजन छः माशे, लाल बहमन और सफेद बहमन एक एक तोला, सेमर का मूसला एक तोला, सूखा सिंघाड़ा चार तोले, सुरमे की तरह कूटकर चार तोले पहिले आम का रस और शक्कर मिलाकर दूध डालकर शरबत बनावे फिर गिरियां पीसकर घी में भूनकर शरबत में मिलावे और औषधियां बनाकर हलवा बनावे।

लहसुन का तेल।

लिंग की सुस्ती को गुण करे—लहसुन को अलसी के तेल में औटाकर साफ करके राई, अकरकरा, नींबू के बीज, मालकंगनी हर एक थोड़ा कूटछानकर तेल में जलाकर उस तेल से कई दिन मर्दन करे, सुस्ती दूर हो जावे।

गुलशब्बो का तेल—वीर्य को बल देता है—गुलशब्बो लेकर तेल में मिलाव जब फूलकर कुम्हिला जावे तब बदल दे इसी प्रकार तीन बेर बदले फिर साफ करके थोड़ा अकरकरा पीसकर मिलाकर लगावे और उस पर पान बांधे।

तेल—वीर्य को बल दे-भटकटैये की पत्तियां, कड़ुवा तेल चार चार दाम, बड़ा काला बिच्छू जो मिल जावे तो अच्छा नहीं तो जिस तरह का हो पहिले तेल को गरम करके पत्तियों की टिकिया बनाकर बिच्छू और टिकिया को उसमें डालकर जलावे, जब खूब जलजावे कपड़े से छानकर रक्खे और एक रत्ती भर पान में लगा कर लिंग पर बांधे ।

अन्य तेल—कहवा जो कि एक जीव टीड़ी के सदृश है और उसके पर नहीं होते उसको दबान और रसूल भी बोलते हैं और उससे बुलबुल को पकड़ते हैं पांच छः लेकर चार पांच दाम गाय का घी और एक दाम केसर मिलाकर बर्तन में रखकर जलावे फिर हल करके लिंग पर मले ।

ऊंटकटारे का तेल—लिंग की सुस्ती को गुण करे—ऊंटकटारे का वृक्ष जड़ टहनी और पत्तों समेत बकरी के दूध में भिगोकर पातालयन्त्र से तेल खींचकर लिंग पर मले ।

चींटियों का तेल—सौ बड़ी चींटियाँ जो बड़ी कबरों और आम के दरख्तों पर होती हैं लेकर चमेली के तेल में डालकर शीशे में भरकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर तेल लेकर मर्दन करे ।

चमेली की पत्तियों का तेल ।

स्तम्भन करनेवाला और वीर्य को बल देता है—सफेद चमेली की पत्तियां पीसकर उसका रस निकालकर मीठे तेल में जलावे, जब पानी जल जावे तेल लेकर शीशे में रक्खे, भोग के दो घड़ी पहिले लिंग पर मलकर पान बांधे। तेल—जो हाथरस वाले को गुण करे और वीर्य को बलदे—कपड़े को मदार के दूध में एक दिन रात भिगो रक्खे, फिर निकालकर सुखाकर उसमें घी लगाकर दो बत्तियां बनाकर जलावे और उसके नीचे कांसे की थाली रक्खे, जो तेल बत्ती से थाली में टपके लिंग का शिर छोड़कर मले ऊपर से पान या अरण्ड के पत्ते बाँधे ।

अन्य—चमेली की पत्तियां एक पाव, मीठा तेल एक पाव, दोनों को कड़ाही में डालकर औटावे, जब पत्तियाँ जलकर तेलमात्र रहजावे कड़वीकूठ, कच्चा सुहागा, आधी आधी बहलोली थोड़े तेल में डाले, जब मिलकर औषधियों का रंग लाल हो जावे उसी समय कड़ाही उतारकर जहर तेलिया आधी बहलोली मिलाकर तेल को फूल के बर्तन में डालकर नीम की लकड़ी से दो पहर हल करके शीशे में रक्खे और एक माशा लेकर लिंग

ा शिर छोड़कर लेप करे और उसके ऊपर पान बांधे। इसी प्रकार एक सप्ताह र्यंत एकदिन बीच लेकर लगावे, परन्तु इस अवसर में मैथुन न करे।

चमेली का तेल—वीर्य को बल देता है—चमेली की पत्तियों का रस, तूरे की पत्तियों का रस, हरएक दो दाम, मीठा तेलिया, कड़वीकूठ एक म, मैनसिल आधा दाम, सुहागा एक दाम, तिलों का तेल सात दाम, पधियां पीसकर टिकिया बनाकर तेल में पानी मिलाकर उसमें जलावे पानी जलजावे दवायें पीसकर रक्खे और एक सप्ताह पर्यन्त मर्दन करे।

जोंक का तेल—वीर्य को बल दे—सात बड़ी जोंकें आधपाव मीठे तेल में ाकर साफ करके लिंग पर मले।

तेल—जो वीर्य को बल दे—मालकांगनी और कुचले का बुरादा, पलाश के , जंगली कबूतर की बीट चार चार दाम, सफेद कौड़ी दो टंक, रात बकरी के दूध में भिगोकर सुबह आतशी शीशे में तेल निकालकर करे और दूसरे नुस्ख में सफेद कौड़ी के बराबर अकरकरा भी लिखा है।

अन्य—एक बालिश्त महीन कपड़ा लेकर आधसेर धतूरे के रस में इक्कीस तक रक्खे कि रस कपड़े में सूखजावे, फिर पांच टंक तिलों के तेल में ी आंच पर पकावे, उसके उपरान्त निकालकर कपड़े को लोहे की सींक टकाकर उसके नीचे थाली रक्खे और एक ओर से कपड़े में आग लगा ो कपड़े से तेल उस थाली में टपके उसको लेकर रक्खे और दो बूंदे दिन चार दिन पर्यन्त मले।

अन्य—सुगम, वीर्य को बलकारक और हथरस लगानेवाले को गुण करे— तेलिया दो दाम, मूली के बीज आध दाम, जमालगोटे की गिरी ी औषध महीन पीसकर आधपाव तिलों के तेल में खरल करके उसमें ड़ा सा लेकर सेवन करे।

न्य—सुगम और बलकारक—छः टंक मीठा तेल मधुरी आंच पर जोश दे ाधा टंक लाल हरताल पीसकर उसमें मिलावे, उसके उपरान्त सुहागा कड़वीकूठ एक एक टंक उसमें मिलावे, फिर चमेली की पत्तियों का रस र अग्नि पर रक्खे, जब पानी जलकर तेलमात्र रहे लिंगपर मले और ा पान बाँधे।

न्य—वीर्य को बल देता है और लिंग की सुस्ती को दूर करता है—लोध, ी, अरण्ड के जड़ की छाल, नस, असगँध एक एक टंक, दो टंक कूट-

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पीस कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूंद लिंग के छिद्र में टपकावे और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे। बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है।

लाभ–बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और यह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती है।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुँघची की दाल, हरताल एक एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी–वीर्य को बल करे–महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल में भिगो रक्खे।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में तीन बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर भैंस के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगा-कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन बांधे।

अन्य–वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जावे

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है—मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे—काले जवान मुर्ग जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है—मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते ...त का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य पुष्ट करता है—एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो और उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर ... तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में ...ावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके ... शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

तेल—वीर्य को बल दे–भटकटैये की पत्तियां, कड़ुवा तेल चार चार दाम, बड़ा काला बिच्छू जो मिल जावे तो अच्छा नहीं तो जिस तरह का हो पहिले तेल को गरम करके पत्तियों की टिकिया बनाकर बिच्छू और टिकिया को उसमें डालकर जलावे, जब खूब जलजावे कपड़े से छानकर रक्खे और एक रत्ती भर पान में लगा कर लिंग पर बांधे ।

अन्य तेल—कहवा जो कि एक जीव टीड़ी के सदृश है और उसके पर नहीं होते उसको दबान और रसूल भी बोलते हैं और उससे वुलबुल को पकड़ते हैं पांच छः लेकर चार पांच दाम गाय का घी और एक दाम केसर मिलाकर बर्तन में रखकर जलावे फिर हल करके लिंग पर मले ।

ऊंटकटारे का तेल—लिंग की सुस्ती को गुण करे—ऊंटकटारे का वृक्ष जड़ टहनी और पत्तों समेत बकरी के दूध में भिगोकर पातालयन्त्र से तेल खींचकर लिंग पर मले ।

चींटियों का तेल—सौ बड़ी चींटियाँ जो बड़ी कबरों और आम के दरख्तों पर होती हैं लेकर चमेली के तेल में डालकर शीशे में भरकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर तेल लेकर मर्दन करे ।

चमेली की पत्तियों का तेल ।

स्तम्भन करनेवाला और वीर्य को बल देता है—सफेद चमेली की पत्तियां पीसकर उसका रस निकालकर मीठे तेल में जलावे, जब पानी जल जावे तेल लेकर शीशे में रक्खे, भोग के दो घड़ी पहिले लिंग पर मलकर पान बांधे ।

तेल—जो हाथरस वाले को गुण करे और वीर्य को बलदे—कपड़े को मदार के दूध में एक दिन रात भिगो रक्खे, फिर निकालकर सुखाकर उसमें घी लगाकर दो बत्तियां बनाकर जलावे और उसके नीचे कांसे की थाली रक्खे, जो तेल बत्ती से थाली में टपके लिंग का शिर छोड़कर मले ऊपर से पान या अरण्ड के पत्ते बाँधे ।

अन्य—चमेली की पत्तियां एक पाव, मीठा तेल एक पाव, दोनों को कड़ाही में डालकर औटावे, जब पत्तियाँ जलकर तेलमात्र रहजावे कड़वीकूठ, कच्चा सुहागा, आधी आधी बहलोली थोड़े तेल में डाले, जब मिलकर औषधियों का रंग लाल हो जावे उसी समय कड़ाही उतारकर जहर तेलिया आधी बहलोली मिलाकर तेल को फूल के बर्तन में डालकर नीम की लकड़ी से दो पहर हल करके शीशे में रक्खे और एक माशा लेकर लिंग

का शिर छोड़कर लेप करे और उसके ऊपर पान बांधे। इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यंत एकदिन बीच लेकर लगावे, परन्तु इस अवसर में मैथुन न करे।

चमेली का तेल—वीर्य को बल देता है—चमेली की पत्तियों का रस, धतूरे की पत्तियों का रस, हरएक दो दाम, मीठा तेलिया, कड़वीकूठ एक दाम, मैनसिल आधा दाम, सुहागा एक दाम, तिलों का तेल सात दाम, औषधियां पीसकर टिकिया बनाकर तेल में पानी मिलाकर उसमें जलावे जब पानी जलजावे दवायें पीसकर रक्खे और एक सप्ताह पर्यन्त मर्दन करे।

जोंक का तेल—वीर्य को बल दे—सात बड़ी जोंकें आधपाव मीठे तेल में जलाकर साफ करके लिंग पर मले।

तेल—जो वीर्य को बल दे—मालकांगनी और कुचले का बुरादा, पलाश के बीज, जंगली कबूतर की बीट चार चार दाम, सफेद कौड़ी दो टंक, रात को बकरी के दूध में भिगोकर सुबह आतशी शीशे में तेल निकालकर मर्दन करे और दूसरे नुस्ख में सफेद कौड़ी के बराबर अकरकरा भी लिखा है।

अन्य—एक बालिश्त महीन कपड़ा लेकर आधसेर धतूरे के रस में इक्कीस दिन तक रक्खे कि रस कपड़े में सूखजावे, फिर पांच टंक तिलों के तेल में मधुरी आंच पर पकावे, उसके उपरान्त निकालकर कपड़े को लोहे की सींक में लटकाकर उसके नीचे थाली रक्खे और एक ओर से कपड़े में आग लगा दे, जो कपड़े से तेल उस थाली में टपके उसको लेकर रक्खे और दो बूंदे प्रतिदिन चार दिन पर्यन्त मले।

अन्य—सुगम, वीर्य को बलकारक और हथरस लगानेवाले को गुण करे—मीठा तेलिया दो दाम, मूली के बीज आध दाम, जमालगोटे की गिरी सम्पूर्ण औषध महीन पीसकर आधपाव तिलों के तेल में खरल करके उसमें से थोड़ा सा लेकर सेवन करे।

अन्य—सुगम और बलकारक—छः टंक मीठा तेल मधुरी आंच पर जोश दे और आधा टंक लाल हरताल पीसकर उसमें मिलावे, उसके उपरान्त सुहागा फिर कड़वीकूठ एक एक टंक उसमें मिलावे, फिर चमेली की पत्तियों का रस डालकर अग्नि पर रक्खे, जब पानी जलकर तेलमात्र रहे लिंगपर मले और ऊपर से पान बाँधे।

अन्य—वीर्य को बल देता है और लिंग की सुस्ती को दूर करता है—लोध, फिटकरी, अरण्ड के जड़ की छाल, नस, असगंध एक एक टंक, दो टंक कूट-

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पीस-कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूँद लिंग के छिद्र में टपकावे और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे। बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे, जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है।

लाभ—बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और यह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती है।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुंघची की दाल, हरताल एक एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी–वीर्य को बल करे–महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल में भिगो रक्खे।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में तीन बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर भैंस के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगा-कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन बांधे।

अन्य–वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जावे

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है—मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे—काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है—मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते बहुत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है—एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में जलावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

भर लिंग पर मलकर बरगद या लसोंढ़े के पत्ते उस पर बांधे जो ईश्वर चाहे तो आराम होगा।

अन्य—वीर्य को बलदायक—सफेद घुंघची, अकरकरा, बीरबहूटी प्रत्येक सवातीन माशे, संखिया एक माशे, दो आतशी शराब में तीन दिन खरल करके रात्रि को लिंग पर लगाकर उस पर पान कच्चे तागे से बांधकर सो रहे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त बांधे, इस अवसर में सम्भोग न करे।

अन्य—वीर्य को बल करे—मनुष्य के कान का मैल, सुवर की चरबी मिलाकर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करे।

अन्य—वीर्य को बल दे—सफेद कनेर के जड़ की छाल बरावर गधे के मूत्र में पीसकर लिंग पर मले और बाजे इसमें थोड़ा शिगरफ भी डालते हैं उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बांधे कि सूख जावे।

लेप—वीर्य को बलदे—जहर तेलिया, आंबाहल्दी, मैदा लकड़ी आधा आधा दाम अलग अलग कूटछानकर तीन पुड़िया बना कर एक पुड़िया ताजे पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़कर लिंगपर लगावे ऊपर से पान लपेटकर सारे दिन बांधा रक्खे दूसरे और तीसरे दिन भी इसी तरह करे चौथे घी धोकर लिंग पर लेप करे।

अन्य—एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर पहिले घृत को लोहे के बर्तन में गरम करके जीती जोंक उसमें डालदे जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुँचे उतारकर सेंमल का गोंद एक टंक मैदे के सदृश महीन पीसकर उसमें मिलावे और नीम की लकड़ी से चार पहर रगड़कर लिंग पर लगावे और जो बड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावे।

अन्य—वीर्य को बलदे—कनेर की जड़, धतूरे के जड़ की छाल, धतूरे की जड़, भंग के जड़ की छाल, मदार की छाल बराबर लेकर छाया में सुखाकर कूटकर धतूरे के पत्ते के रस में बेर के बराबर गोलियां बनावे और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीसकर लिंग पर लगाकर सुखाकर भोग करे।

अन्य—सफेद सरसों, कड़वी कूठ, बड़ी कटाई का फल, असगंध की जड़ बराबर ले और कूटछानकर पानी में मिलाकर लिंग पर मले जब सूखने लगे छुड़ा डाले तीन चार दिन इसी तरह करे लिंग बढ़ जावे जो सरसों सफेद न मिलें तो पीले काफी हैं।

अन्य—केंचुवा एक तोला, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर पर्यन्त खरल करके थोड़ा लेकर मले उसके ऊपर कनेर के पत्ते या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य—इस्पन्द, रेंड़ी की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूटछानकर चमेली के तेल में खरल करके दोनों समय इस तरह पर लिंग पर मले कि सुबह को धूप में और शाम को निर्वात बन्द मकान में बैठकर लगावे, जो जाड़ों के दिन हों तो अँगीठी जलाकर आगे रख ले और हरबेर अँगीठी पर हाथ सेंककर नाभि के नीचे से रानतक मर्दन करे, मर्दन का कम से कम अवसर पांच घड़ी है। यह रीति साहब जादुलगरीब की आजमाई हुई तक से है।

लेप-जो कि बहुत मजा देता है—ताजीबीरबहूटी उसके बराबर भिड़ का छत्ता लेकर तिलों के तेल में कजली करके लेप करे।

अन्य—पारा तीन दाम, गाय के बारह पित्ते आधसेर भँगरे के रस में लोहे की कड़ाही में लोहे के दस्ते से एक पैसा उसपर लगाकर छः दिवस-पर्यन्त कजली करे, जब गाढ़ा हो जावे जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोलकर लगावे।

लेप-स्तम्भन करता है—खुश्की में रहने वाले मेढक को साये में सुखाकर उसके सिर और पांव काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे, समय पर लिंग पर सुपारी छोड़कर लेप करे।

अन्य—जो लिंग की सुस्ती को दूर करे-असगंध, गजपीपल, कड़वी कूठ समान पीसकर गौ के मक्खन में मिलाकर पन्द्रह दिन पर्यन्त हररोज दो बेर मले और गरम पानी से धोवे और दूसरे नुस्खे में गजपीपल के बदले दाल-चीनी लिखी है और एक पुस्तक में लिखा है कि एक बड़ा मेढक जो कुयें में रहता हो लेकर उसकी गुदा सी दे और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खे जब सूख जावे मेढक का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बँध गयी निकाल ले और मैथुन के समय मुख में रक्खे वीर्यपात न होगा।

अन्य—गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम पानी से धोवे पन्द्रह दिवस इसी प्रकार सेवन करे।

कर पानी में टिकिया वनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ करके मले ।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पीस कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूँद लिंग के छिद्र में टपकावे और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे । बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे, जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे ।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है ।

लाभ—बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और यह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती है ।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुँघची की दाल, हरताल एक एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे ।

पट्टी–वीर्य को बल करे—महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल में भिगो रक्खे ।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में तीन बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर भैंस के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगाकर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन बांधे ।

अन्य—वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जावे

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है–मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे–काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है–मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है–एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में जलावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

भर लिंग पर मलकर बरगद या लसोंढ़े के पत्ते उस पर बांधे जो ईश्वर चाहे तो आराम होगा।

अन्य—वीर्य को बलदायक—सफेद घुंघची, अकरकरा, बीरबहूटी प्रत्येक सवातीन माशे, संखिया एक माशे, दो आतशी शराब में तीन दिन खरल करके रात्रि को लिंग पर लगाकर उस पर पान कच्चे तागे से बांधकर सो रहे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त बांधे, इस अवसर में सम्भोग न करे।

अन्य—वीर्य को बल करे—मनुष्य के कान का मैल, सुवर की चरबी मिलाकर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करे।

अन्य—वीर्य को बल दे—सफेद कनेर के जड़ की छाल बराबर गधे के मूत्र में पीसकर लिंग पर मले और बाजे इसमें थोड़ा शिंगरफ भी डालते हैं उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बांधे कि सूख जावे।

लेप—वीर्य को बलदे—जहर तेलिया, आंबाहल्दी, मैदा लकड़ी आधा आधा दाम अलग अलग कूटछानकर तीन पुड़िया बना कर एक पुड़िया ताजे पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़कर लिंगपर लगावे ऊपर से पान लपेटकर सारे दिन बांधा रक्खे दूसरे और तीसरे दिन भी इसी तरह करे चौथे घी धोकर लिंग पर लेप करे।

अन्य—एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर पहिले घृत को लोहे के बर्तन में गरम करके जीती जोंक उसमें डालदे जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुँचे उतारकर सेंमल का गोंद एक टंक मैदे के सदृश महीन पीसकर उसमें मिलावे और नीम की लकड़ी से चार पहर रगड़कर लिंग पर लगावे और जो वड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावे।

अन्य—वीर्य को बलदे—कनेर की जड़, धतूरे के जड़ की छाल, धतूरे की जड़, भंग के जड़ की छाल, मदार की छाल बराबर लेकर छाया में सुखाकर कूटकर धतूरे के पत्ते के रस में बेर के बराबर गोलियां बनावे और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीसकर लिंग पर लगाकर सुखाकर भोग करे।

अन्य—सफेद सरसों, कड़वी कूठ, बड़ी कटाई का फल, असगंध की जड़ बराबर ले और कूटछानकर पानी में मिलाकर लिंग पर मले जब सूखने लगे छुड़ा डाले तीन चार दिन इसी तरह करे लिंग बढ़ जावे जो सरसों सफेद न मिलें तो पीले काफी हैं।

अन्य—केंचुवा एक तोला, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर पर्यन्त खरल करके थोड़ा लेकर मले उसके ऊपर कनेर के पत्ते या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य—इस्पन्द, रेंड़ी की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूटछानकर चमेली के तेल में खरल करके दोनों समय इस तरह पर लिंग पर मले कि सुबह को धूप में और शाम को निर्वात बन्द मकान में बैठकर लगावे, जो जाड़ों के दिन हों तो अँगीठी जलाकर आगे रख ले और हरबेर अँगीठी से हाथ सेंककर नाभि के नीचे से रानतक मर्दन करे, मर्दन का कम से कम अवसर पांच घड़ी है। यह रीति साहब जादुलगरीब की आजमाई हुई पुस्तक से है।

लेप—जो कि बहुत मजा देता है—ताजीबीरबहूटी उसके बराबर भिड़ का छत्ता लेकर तिलों के तेल में कजली करके लेप करे।

अन्य—पारा तीन दाम, गाय के बारह पित्ते आधसेर भँगरे के रस में लोहे की कड़ाही में लोहे के दस्ते से एक पैसा उसपर लगाकर छः दिवस-पर्यन्त कजली करे, जब गाढ़ा हो जावे जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोलकर लगावे।

लेप—स्तम्भन करता है—खुश्की में रहने वाले मेढक को साये में सुखाकर उसके सिर और पांव काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे, समय पर लिंग पर सुपारी छोड़कर लेप करे।

अन्य—जो लिंग की सुस्ती को दूर करे—असगंध, गजपीपल, कड़वी कूठ महीन पीसकर गौ के मक्खन में मिलाकर पन्द्रह दिन पर्यन्त हररोज दो बेर मले और गरम पानी से धोवे और दूसरे नुस्खे में गजपीपल के बदले दाल-चीनी लिखी है और एक पुस्तक में लिखा है कि एक बड़ा मेढक जो कुयें में रहता हो लेकर उसकी गुदा सी दे और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खे जब सूख जावे मेढक का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बँध जावेगी निकाल ले और मैथुन के समय मुख में रक्खे वीर्यपात न होगा।

अन्य—गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम पानी से धोवे, पन्द्रह दिवस इसी प्रकार सेवन करे।

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ़ करके मले ।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पीस कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूंद लिंग के छिद्र में टपकावे और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे। बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे ।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है ।

लाभ—बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और यह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती है ।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुंघची की दाल, हरताल एक एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे ।

पट्टी–वीर्य को बल करे–महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल में भिगो रक्खे ।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में तीन बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर गौ के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगा-कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन बांधे ।

अन्य–वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जावे

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है-मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे-काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है-मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है-एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जंब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में जलावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर
करके मले ।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली
तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पी
कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूँद लिंग के छिद्र में टपक
और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे । बाम मछली के
बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटा
जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे ।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल
जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है ।

लाभ—बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और
हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा कर
हैं वही इस रोग को गुण करती है ।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुँघची की दाल, हरताल
एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बना
तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लि
पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे ।

पट्टी–वीर्य को बल करे—महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोवे
सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े
अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्ख
मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो
दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल
भिगो रक्खे ।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में ती
बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर
के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगा
कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर ती
दिन बांधे ।

अन्य–वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अ
पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जा

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है-मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे-काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है-मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है-एक मारू बेंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बेंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में मिलावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

भर लिग पर मलकर बरगद या लसोंढ़े के पत्ते उस पर बांधे जो ईश्वर चा तो आराम होगा।

अन्य—वीर्य को बलदायक—सफेद घुंघची, अकरकरा, बीरबहूटी प्रत्ये सवातीन माशे, संखिया एक माशे, दो आतशी शराब में तीन दिन खरल करे रात्रि को लिग पर लगाकर उस पर पान कच्चे तागे से बांधकर सो रहे इस प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त बांधे, इस अवसर में सम्भोग न करे।

अन्य—वीर्य को बल करे—मनुष्य के कान का मैल, सुवर की चरबी मिला कर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करे।

अन्य—वीर्य को बल दे—सफेद कनेर के जड़ की छाल बराबर गधे मूत्र में पीसकर लिंग पर मले और बाजे इसमें थोड़ा शिंगरफ भी डालते उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बांधे कि सूख जावे।

लेप—वीर्य को बलदे—जहर तेलिया, आंबाहल्दी, मैदा लकड़ी आधा आध दाम अलग अलग कूटछानकर तीन पुड़िया बना कर एक पुड़िया ताजे पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़कर लिगपर लगावे ऊपर से पान लपेटकर सारे दिन बांधा रक्खे दूसरे और तीसरे दिन भी इसी तरह करे चौथे घी धोकर लिंग पर लेप करे।

अन्य—एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर पहिले घृत को लोहे के बर्तन में गरम करके जीती जोंक उसमें डालदे जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुँचे उतारकर सेंमल का गोंद एक टंक मैदे के सदृश महीन पीसकर उसमें मिलावे और नीम की लकड़ी से चार पहर रगड़कर लिंग पर लगावे और जो वड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावे।

अन्य—वीर्य को बलदे—कनेर की जड़, धतूरे के जड़ की छाल, धतूरे की जड़, भंग के जड़ की छाल, मदार की छाल बराबर लेकर छाया में सुखाकर कूटकर धतूरे के पत्ते के रस में बेर के बराबर गोलियां बनावे और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीसकर लिंग पर लगाकर सुखाकर भोग करे।

अन्य—सफेद सरसों, कड़वी कूठ, बड़ी कटाई का फल, असगंध की जड़ बराबर ले और कूटछानकर पानी में मिलाकर लिंग पर मले जब सूखने लगे छुड़ा डाले तीन चार दिन इसी तरह करे लिंग बढ़ जावे जो सरसों सफेद न मिलें तो पीले काफी हैं।

अन्य—केंचुवा एक तोला, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर पर्यन्त खरल करके थोड़ा लेकर मले उसके ऊपर कनेर के पत्ते या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य—इस्पन्द, रेंड़ी की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूटछानकर चमेली के तेल में खरल करके दोनों समय इस तरह पर लिंग पर मले कि सुबह को धूप में और शाम को निर्वात बन्द मकान में बैठकर लगावे, जो जाड़ों के दिन हों तो अँगीठी जलाकर आगे रख ले और हरबेर अँगीठी से हाथ सेंककर नाभि के नीचे से रानतक मर्दन करे, मर्दन का कम से कम अवसर पांच घड़ी है। यह रीति साहब जादुलगरीब की आजमाई हुई पुस्तक से है।

लेप-जो कि बहुत मजा देता है—ताजीबीरबहूटी उसके बराबर भिड़ का छत्ता लेकर तिलों के तेल में कजली करके लेप करे।

अन्य—पारा तीन दाम, गाय के बारह पित्ते आधसेर भँगरे के रस में लोहे की कड़ाही में लोहे के दस्ते से एक पैसा उसपर लगाकर छः दिवस-पर्यन्त कजली करे, जब गाढ़ा हो जावे जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोलकर लगावे।

लेप-स्तम्भन करता है—खुश्की में रहने वाले मेढक को साये में सुखाकर उसके सिर और पांव काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे, समय पर लिंग पर सुपारी छोड़कर लेप करे।

अन्य—जो लिंग की सुस्ती को दूर करे—असगंध, गजपीपल, कड़वी कूठ महीन पीसकर गौ के मक्खन में मिलाकर पन्द्रह दिन पर्यन्त हररोज दो बेर मले और गरम पानी से धोवे और दूसरे नुस्खे में गजपीपल के बदले दाल-चीनी लिखी है और एक पुस्तक में लिखा है कि एक बड़ा मेढक जो कुयें में रहता हो लेकर उसकी गुदा सी दे और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खे जब सूख जावे मेढक का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बँध जावेगी निकाल ले और मैथुन के समय मुख में रक्खे वीर्यपात न होगा।

अन्य—गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम पानी से धोवे, पन्द्रह दिवस इसी प्रकार सेवन करे।

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर
करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली
तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध
कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूंद लिंग के छिद्र में टप
और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे। बाम मछली के
बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औट
जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल
जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है।

लाभ–बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और
हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा क
हैं वही इस रोग को गुण करती है।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुँघची की दाल, हरताल
एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बना
तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर
पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी–वीर्य को बल करे–महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगो
सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े
अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्ख
मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो
दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल
भिगो रक्खे।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में ती
बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर
के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगा
कर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर ती
दिन बांधे।

अन्य–वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद आध
पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जा

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है—मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे—काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है—मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है—एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में मिलावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पीस कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूंद लिंग के छिद्र में टपकावे और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे। बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता हैं।

लाभ–बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और यह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती है।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुँघची की दाल, हरताल एक एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी–वीर्य को बल करे–महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल में भिगो रक्खे।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में तीन बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर भैंस के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगाकर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन बांधे।

अन्य–वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जावे

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है-मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे-काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करे और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है-मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है-एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे केंचुवे तेल में मिलावे जब केंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

कर पानी में टिकिया बनावे और आधपाव तिलों के तेल में जलाकर साफ करके मले।

अन्य–लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करे–तिलों का तेल, बाम मछली का तेल आठ टंक, असगंध ग्यारह टंक, लालमिरच एक टंक, यह सम्पूर्ण औषध पीस कर तिलों के तेल में मिलाकर रक्खे और एक बूंद लिंग के छिद्र में टपकावे और जो छिद्र बहुत तंग हो नीम का तेल टपकावे। बाम मछली के तेल बनाने की यह रीति है कि बाम मछली को टुकड़े टुकड़े करके पानी में औटावे जितनी चिकनाई पानी पर आवे उसका सेवन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में लिखा देखा कि कई भिड़ों को मीठे तेल में जलाकर वह तेल लिंग पर मले बहुत ही बल देता है।

लाभ—बन्दकुशाद अर्थात् लिंग के छिद्र बढ़ जाने को कहते हैं और यह हिन्दू वैद्यों के विचार में कठिन यत्न है और जो चीज वीर्य को गाढ़ा करती हैं वही इस रोग को गुण करती है।

तेल–वीर्य को बलदायक–लाल और सफेद घुंघची की दाल, हरताल एक एक दाम, बकरी के दूध में खरल करके चने के बराबर गोलियां बनाकर तीन दिन सुबह और शाम आतशी शीशे में रखकर तेल निकालकर लिंग पर मर्दन करे और ऊपर से पान बांधे।

पट्टी–वीर्य को बल करे—महीन कपड़ा थूहर के दूध में तीन बेर भिगोकर सुखावे और तीन बेर प्याज के रस में भिगोकर सुखावे, फिर कपड़े को अलसी के तेल में एक रात दिन भिगोदे, फिर लिंग का शिर छोड़कर मक्खन मलकर ऊपर से यह पट्टी चार घड़ी पर्यंत बांधे रक्खे, जो आवश्यक हो तो दूसरे दिन भी यही क्रिया करे और कपड़े को हर बार अलसी के तेल में भिगो रक्खे।

पट्टी–कपड़ा आंबाहल्दी में रंगकर सुखावे, फिर धतूरे के रस में तीन बेर, फिर मदार के दूध में तीन बेर भिगोकर छाया में सुखावे, फिर भैंस के घृत में मधुरी आंचपर भूने, आवश्यकता पड़ने पर पट्टी पर शहद लगाकर हीरा हींग एक रत्ती के बराबर पीसकर उस पर छिड़ककर तीन दिन बांधे।

अन्य—वीर्य को बलकारक–मदार का दूध आधपाव, साफ शहद अढ़ाई पाव कड़ाही में डालकर लोहे के दस्ते से इतना घोटे कि कवाम बंध जावे

और कड़ाही लस के कारण दस्ते के साथ जमीन से उठ आने लगे, फिर चार माशे अफीम डालकर हल करे, जब खूब मिल जावे उस औषध को चीनी के बर्तन में रक्खे और आवश्यकता के समय लिंग का शिर छोड़ यह तेल मले और उस पर पान लपेटकर गजी की पट्टी से लपेटकर एक पहर बैठा रहे, फिर पट्टी दूर करके गौ का घी इक्कीस बेर धोकर लिंग पर मले और तीन दिवस पर्यंत यही क्रिया करे।

लेप—वीर्य की निर्बलता को गुणकारक और हथरस लगानेवाले को भी अच्छा है–मदार का दूध उसके बराबर गौ का घी मिलाकर बारह पहर खरल करके एक रत्ती भर लिंग पर लगावे और बाजे इसमें शहद भी डालते हैं और बाजों ने लिखा है कि दो दाम मदार के दूध में एक दाम घी मिला कर जलावे और लकड़ी से खूब हल करे जब दूध जलकर तेल-मात्र आ रहे छानकर दो आतशी शराब मिलाकर खरल करके रक्खे और लिंग के शिर को छोड़कर मर्दन करके ऊपर से लसोढ़े के पत्ते बांधे और एक पहर के पीछे खोल डाले।

अन्य—हथरस लगानेवाले और नपुंसक को गुण करे–काले जवान मुर्ग को जिसने जुफ्ती न की हो काटकर उसका रुधिर लेकर उसके बराबर जवान गधे का रुधिर मिलाकर लिंग पर लेप करें और हवा दे, जब वह सूख जावे इसी प्रकार तीन बेर बराबर लेप करे, पहिले जलन पैदा होगी दूसरी बेर दाह कम होगी तीसरी बेर बिलकुल जलन कम हो जावेगी और भोग की इच्छा अधिक होगी उस दिन मैथुन न करना चाहिये फिर भोग करे।

लेप—जो वीर्य को बल देता है–मूली के बीज, बिनौला हरएक दो भाग, अकरकरा, कड़वीकूठ एकएक भाग महीन पीसकर लगावे।

लेप—कि उसको शाहलेप कहते हैं लौंडेबाज और हथरस लगाने के वास्ते अमृत का गुण रखता है और लिंग के टेढ़ेपने को दूर करता है और वीर्य को पुष्ट करता है–एक मारू बैंगन जो दरख्त में पककर पीला हो गया हो लेकर उसमें सात पीपलें छोड़कर लटकावे जब बैंगन सूख जावे आधसेर मीठे तेल में उसे औटावे, जब तेल औट जावे सात तोले सूखे कैंचुवे तेल में मिलावे जब कैंचुवे जलजावें लहसुन छीलकर उसमें डाले फिर खरल करके एक शीशे में रक्खे और प्रतिदिन पन्द्रह दिन पर्यन्त हर रोज एक माशा

भर लिंग पर मलकर बरगद या लसोंढ़े के पत्ते उस पर बांधे जो ईश्वर चाहे तो आराम होगा।

अन्य—वीर्य को बलदायक—सफेद घुंघची, अकरकरा, बीरबहूटी प्रत्येक सवातीन माशे, संखिया एक माशे, दो आतशी शराब में तीन दिन खरल करके रात्रि को लिंग पर लगाकर उस पर पान कच्चे तागे से बांधकर सो रहे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त बांधे, इस अवसर में सम्भोग न करे।

अन्य—वीर्य को बल करे—मनुष्य के कान का मैल, सुवर की चरबी मिलाकर तीन दिन खरल करके सात दिन लेप करे।

अन्य—वीर्य को बल दे—सफेद कनेर के जड़ की छाल बराबर गधे के मूत्र में पीसकर लिंग पर मले और बाजे इसमें थोड़ा शिंगरफ भी डालते हैं उसके ऊपर अरण्ड के पत्ते बांधे कि सूख जावे।

लेप—वीर्य को बलदे—जहर तेलिया, आंबाहल्दी, मैदा लकड़ी आधा आधा दाम अलग अलग कूटछानकर तीन पुड़िया बना कर एक पुड़िया ताजे पानी में खूब मिलाकर सुपारी और सीवन छोड़कर लिंगपर लगावे ऊपर से पान लपेटकर सारे दिन बांधा रक्खे दूसरे और तीसरे दिन भी इसी तरह करे चौथे घी धोकर लिंग पर लेप करे।

अन्य—एक बड़ी जोंक जो तालाब में होती है गौ का घी पाव भर पहिले घृत को लोहे के बर्तन में गरम करके जीती जोंक उसमें डालदे जब जोंक का पेट फट जावे और इसके फटने का शब्द कान में पहुँचे उतारकर सेंमल का गोंद एक टंक मैदे के सदृश महीन पीसकर उसमें मिलावे और नीम की लकड़ी से चार पहर रगड़कर लिंग पर लगावे और जो वड़ी जोंक न मिले सात छोटी जोंकें तेल में जलावे।

अन्य—वीर्य को बलदे—कनेर की जड़, धतूरे के जड़ की छाल, धतूरे की जड़, भंग के जड़ की छाल, मदार की छाल बराबर लेकर छाया में सुखाकर कूटकर धतूरे के पत्ते के रस में बेर के बराबर गोलियां बनावे और समय पर एक गोली अपने मूत्र में पीसकर लिंग पर लगाकर सुखाकर भोग करे।

अन्य—सफेद सरसों, कड़वी कूठ, बड़ी कटाई का फल, असगंध की जड़ बराबर ले और कूटछानकर पानी में मिलाकर लिंग पर मले जब सूखने लगे छुड़ा डाले तीन चार दिन इसी तरह करे लिंग बढ़ जावे जो सरसों सफेद न मिलें तो पीले काफी हैं।

अन्य—केंचुवा एक तोला, गौ का घी दो तोले मिलाकर दो पहर पर्यन्त खरल करके थोड़ा लेकर मले उसके ऊपर कनेर के पत्ते या अरण्ड के पत्ते बांधे।

अन्य—इस्पन्द, रेंड़ी की गिरी, पीले सरसों तीन तीन दाम कूटछानकर चमेली के तेल में खरल करके दोनों समय इस तरह पर लिंग पर मले कि सुबह को धूप में और शाम को निर्वात बन्द मकान में बैठकर लगावे, जो जाड़ों के दिन हों तो अँगीठी जलाकर आगे रख ले और हरबेर अँगीठी से हाथ सेंककर नाभि के नीचे से रानतक मर्दन करे, मर्दन का कम से कम अवसर पांच घड़ी है। यह रीति साहब जादुलगरीब की आजमाई हुई पुस्तक से है।

लेप—जो कि बहुत मजा देता है—ताजीबीरबहूटी उसके बराबर भिड़ का छत्ता लेकर तिलों के तेल में कजली करके लेप करे।

अन्य—पारा तीन दाम, गाय के बारह पित्ते आधसेर भँगरे के रस में लोहे की कड़ाही में लोहे के दस्ते से एक पैसा उसपर लगाकर छः दिवस-पर्यन्त कजली करे, जब गाढ़ा हो जावे जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर आवश्यकता पर थूक में घोलकर लगावे।

लेप—स्तम्भन करता है—खुश्की में रहने वाले मेढक को साये में सुखाकर उसके सिर और पांव काटकर महीन पीसे फिर एक जायफल और दो माशे केसर मिलाकर गोलियां बनावे, समय पर लिंग पर सुपारी छोड़कर लेप करे।

अन्य—जो लिंग की सुस्ती को दूर करे—असगंध, गजपीपल, कड़वी कूठ महीन पीसकर गौ के मक्खन में मिलाकर पन्द्रह दिन पर्यन्त हररोज दो बेर मले और गरम पानी से धोवे और दूसरे नुस्खे में गजपीपल के बदले दाल-चीनी लिखी है और एक पुस्तक में लिखा है कि एक बड़ा मेढक जो कुयें में रहता हो लेकर उसकी गुदा सी दे और दो तीन टंक पारा उसके मुख में डालकर रक्खे जब सूख जावे मेढक का पेट फाड़कर पारे को कि गोली बँध जावेगी निकाल ले और मैथुन के समय मुख में रक्खे वीर्यपात न होगा।

अन्य—गौ का पित्ता शहद में मिलाकर लिंग पर मले और गरम पानी से धोवे, पन्द्रह दिवस इसी प्रकार सेवन करे।

अन्य—मजा देता है—जंगली कबूतर की बीट और उसकी चरबी और लाहौरी नोन और शहद यह चारों वस्तु बराबर लेकर पीसकर लिंग पर मले और भोग करे बड़ा मजा पावेंगे।

लेप—बहुत मजा दे—मारूबैंगन मिट्टी में लपेटकर भूभल में रक्खे, फिर मिट्टी दूर करके बैंगन का पानी निचोड़कर छानकर कई पीपलें तीन दिन पर्यन्त उसी पानी में भिगोवे, चौथे दिन निकालकर सुखाकर महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करके मैथुन करे।

अन्य—वीर्य को बलदायक—कनेर के जड़ की छाल महीन पीसकर भटकटैये के रस में खरल करके कई दिन लेप करे।

अन्य—टेढ़े लिंग के वास्ते जो हथरस लगाने से होवे गुण करे—पहिले तिलों का तेल लिंग में मले फिर हालों पीसकर गुनगुना लेप करे फिर ऊपर पान या अरण्ड का पत्ता लपेटकर उसके गिर्द गिर्द खपाचे रखकर पट्टी से दृढ़ बांधे और एक पहर के पीछे खोलकर गुनगुने पानी से धोवे, सात दिन के सेवन से टेढ़ापन दूर हो जावेगा।

अन्य—लिंग के स्थूल होने के वास्ते हर रात को ताजे दूध से लिंग को मलकर सूखे केंचुवे पीसकर उस पर मला करे।

अन्य—कायफल भैंस के दूध में पीसकर लेप करके सारी रात बांध रक्खे, सुबह गरम जल से धोवे कई दिन यही क्रिया करे।

अन्य—रीठे की छाल, अकरकरा बराबर तेज शराब में खरल करके सिवाय लिंग के शिर के मले और उसके ऊपर पान लपेटे, इस प्रकार कई दिन सेवन करने से गुण मालूम होगा।

अन्य—वीर्य को बलकारक—कमलगट्टे का जीरा, उत्तम शहद खूब महीन पीसकर मिलाकर सुपारे के सिवाय लिंग पर मले, ऊपर से कपड़ा लपेट और दोपहर के पीछे दूर करके गरम पानी से धोवे और फिर इसी तरह करे।

अन्य—लिंग को बड़ा करता है—दो टंक इन्द्रजव भैंस के ताजे दूध में भिगोकर चार पहर उसको पीसकर गुनगुना लिंग पर मले ऊपर से कपड़ा लपेटकर सो रहे सुबह गरम पानी से धोवे कई दिन बराबर यही क्रिया करे।

अन्य—लिंग को सख्त करे—उटंगन के बीज कूटछानकर लिंग पर हर रोज दो बेर लेप करे, कई बेर यही सेवन करे।

लेप—स्तंभन और लिंग के सख्त होने को गुण करे—असगन्ध की जड़ जव-
कर काले धतूरे के रस में बीस बेर भिगोकर सुखावे फिर पीसकर रक्खे,
य पर थूक में हल करके लिंग पर मले और एक पहर के पीछे मैथुन
और भोग के उपरांत गौ का घी लिंग पर मले ।

अन्य—चमेली के तेल में राई पीसकर लिंग पर लगावे ।

अन्य—अकरकरा दो भाग जंगली प्याज का रस दश भाग पीसकर लिंग
लगावे ।

अन्य—गांजा रेंड़ी के तेल में खरल करके फिर लत्ते पर लपेटकर बांधे,
ड़ा ढीलता है परंतु वीर्य को बल देता है और हथरसवाले को गुण
ता है ।

अन्य—हुलहुल के बीज दो भाग उसकी छाल एक भाग महीन कूटछानकर
तेल में चार पहर खरल करके लगावे ।

अन्य—लौंग, समन्दर फल की गिरी एक एक शहद में पीसकर लगावे ।

रेंड़ी का तेल—हथरसवाले के वास्ते—मीठा तेल, रेंड़ी की गिरी, पाव भर
ों को औटाकर हल करके शीशी में रक्खे और रोज मला करे । हथर-
ले को बहुत गुण करे ।

अन्य—जंगली कबूतर की बीट की सफेदी, चमेली के तेल में पीसकर
करे ।

अन्य—लिंग के खड़े होने और सख्ती होने के लिये गुण करे—इस्पन्द चमेली
ल में पीसकर लगावे ।

अन्य—चमगादर का लहू लिंग पर मले वीर्य में अधिक बल होवे ।

अन्य—सूसमार अर्थात् गोह का गूह लगाना वीर्य को बल देता है ।

अन्य—सर्प की चरबी और मछली और जंगली सुअर की चरबी बकरी
त्र में तीन दिन खरल करके लेप करे ।

अन्य—रोहू मछली की चरबी मलना गुण करता है ।

अन्य—चूहे की मेंगनियां शहद में मिलाकर लिंग पर लगाना वीर्य को
देता है ।

अन्य—छोटी कटाई का फल बीज दूर करके पीसकर लिंग पर लगावे
उस पर अरंड के पत्ते बांधे ।

अन्य—पारा एक दाम, शहद दो दाम दोनों को लोहे के पात्र में लोहे के

दस्ते से हल करे जब एक जात हो जावे कपड़े पर लपेटकर लिंग पर लपेटे जब खड़ा हो जावे दवा को दूर करके सम्भोग करे और एक रोहू का मगज इसमें डाले उत्तम है और लेप करने के उपरांत बँगला पान गरम करके कच्चे तागे से उस पर लपेटे, इसका सात दिन सेवन करना उचित है।

अन्य–असारों, बकरी के ताजे दूध में पीसकर सदा लिंग पर लगाना वीर्य को बल देता है।

अन्य–लिंग की सख्ती के वास्ते मूली के बीज दशटंक मीठे तेल में औटा कर दोनों समय लिंग पर मले, सुस्ती दूर करता है।

अन्य–मुरदारसंग, मुरगी के पित्ते में पीसकर लिंग पर लगाकर स्त्री के पास जावे तो वीर्यपात न हो स्त्री बँध जावेगी।

अन्य–हींग गौ के पित्ते में हल करके गोली बनाकर आतशी शीशे में तेल निकाले वह तेल मले।

अन्य–मजे के वास्ते स्त्री के शिर के केश जलाकर उसकी राख चमेली के तेल में मिलाकर लिंगपर लगावे और मैथुन करे और जो कबूतर की बीट की सफेदी भी मिलावे बहुत गुण करेगा।

अन्य—वीर्य के स्तम्भन के वास्ते गुण करे–थूहर का दूध, गौ का दूध दोनों बराबर लेकर सारे दिन धूप में रक्खे, रात को तेल में मले जब सूख जावे दो घड़ी के पीछे मैथुन करे।

अन्य—काले धतूरे की पत्तियों का रस निकालकर दोनों टखनों पर लगावे जब सूख जावे भोग करे।

अन्य स्तम्भन—कपूर, कटाई के जीरे के साथ शहद में पीसकर छोटे जीरे के बराबर शाफा बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे, एक साइत के पीछे मैथुन करे स्तम्भन करता है और लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करता है।

अन्य–हींग खाली शहद में पीसकर जीरे के सदृश बत्तियां बनाकर एक बत्ती लिंगके छिद्र में रक्खे और एक घण्टे के पीछे मैथुन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में देखा है कि कौंच की जड़ उगली के शिर पोर के बराबर भोग के समय मुख में रक्खे, जब तक मुख में रहेगी वीर्यपात न होगा।

अन्य–स्तम्भन को गुण करे–ऊँट के बाल की रस्सी बनाकर रान पर बांधे।

अन्य—लिखा है कि फिटकरी कमर में बाँधना स्तम्भन को गुण करता है।

अन्य—लिखा है कि इतवार को घोड़े और खच्चर की पूँछ का एक एक बाल लेकर पीली कौड़ी में छिद्र करके इन दोनों बालों में पिरोवे और दहने बाजू पर बाँधकर सम्भोग करे वीर्यपात न होगा।

अन्य—लिखा है कि छछूंदर का खुसिया चमड़े में रखकर यन्त्र बनाकर कमर में बांधे जबतक कमर में रहेगा वीर्यपात न होगा जब उसको पेट की तरफ लावेंगे वीर्य गिर जावेगा।

अन्य—कुचला दो आतशी शराब में पीसे और नख पर गाढ़ा गाढ़ा लेप करे, सूखजाने के उपरांत भोग करे स्तम्भन करता है।

अन्य—करंजुवे की पत्तियों का रस निकालकर हथेलियों और तलवों में मलकर चार घड़ी के पीछे भोग करे एक पुस्तक में लिखा है कि स्तम्भन करता है।

यन्त्र—मुख्य करके वीर्य को रोकता है-कुत्ता जिस मादा से जुफ्ती करे और कुकरघण्ट हो जावे नरकुत्ते की दुम काटकर चालीस दिन जमीन में गाड़ दे, जब दुम गलकर हड्डियां शेष रहें उसको तागे में पिरोकर अपने बालों में बांधकर भोग करे।

लाभ—भोग करने में चाहिये कि मजे की तरफ मन न लगावे किन्तु और बातों का विचार रक्खे, जब जाने कि वीर्यपात हुआ चाहता है ठहर जावे एक पल के पीछे फिर आरम्भ करे, इसीतरह वीर्यपात के समय क्रिया करता जावे और उत्तम यह है कि एक नियत संख्या से जैसे पांच या सात से प्रारम्भ करके हरदफा एक विषम संख्या बढ़ाता जावे ? दूसरी बात यह जाने कि मनी निकलती है छिगुनियां और बीच की उँगली से वह रग जो अंडकोष के नीचे और गुदा के बीच में है जोर से पकड़ ले मनी फिर जावेगी इसी तरह हरबेर करे और उत्तम यह है कि जब भोग करने बैठे एँड़ी से वह रग दबाये रक्खे।

स्तम्भन की गोली—शिंगरफ, मोचरस, अफीम चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, एक गोली भोग के पहिले खावे।

यन्त्र—लिखा है कि ऊँट की हड्डी में छिद्र करके जिसके शिरहाने रख दे वीर्यपात न हो।

दस्ते से हल करे जब एक जात हो जावे कपड़े पर लपेटकर लिंग पर लपेटे, जब खड़ा हो जावे दवा को दूर करके सम्भोग करे और एक रोहू का मगज इसमें डाले उत्तम है और लेप करने के उपरांत बँगला पान गरम करके कच्चे तागे से उस पर लपेटे, इसका सात दिन सेवन करना उचित है।

अन्य–असारों, बकरी के ताजे दूध में पीसकर सदा लिंग पर लगाना वीर्य को बल देता है।

अन्य–लिंग की सख्ती के वास्ते मूली के बीज दशटंक मीठे तेल में औटाकर दोनों समय लिंग पर मले, सुस्ती दूर करता है।

अन्य–मुरदारसंग, मुरगी के पित्ते में पीसकर लिंग पर लगाकर स्त्री के पास जावे तो वीर्यपात न हो स्त्री बँध जावेगी।

अन्य–हींग गौ के पित्ते में हल करके गोली बनाकर आतशी शीशे में तेल निकाले वह तेल मले।

अन्य–मजे के वास्ते स्त्री के शिर के केश जलाकर उसकी राख चमेली के तेल में मिलाकर लिंगपर लगावे और मैथुन करे और जो कबूतर के बीट की सफेदी भी मिलावे बहुत गुण करेगा।

अन्य—वीर्य के स्तम्भन के वास्ते गुण करे–थूहर का दूध, गौ का दूध दोनों बराबर लेकर सारे दिन धूप में रक्खे, रात को तेल में मले जब सूख जावे दो घड़ी के पीछे मैथुन करे।

अन्य—काले धतूरे की पत्तियों का रस निकालकर दोनों टखनों पर लगावे जब सूख जावे भोग करे।

अन्य स्तम्भन—कपूर, कटाई के जीरे के साथ शहद में पीसकर छोटे जीरे के बराबर शाफा बनाकर लिंग के छिद्र में रक्खे, एक साइत के पीछे मैथुन करे स्तम्भन करता है और लिंग के छिद्र बढ़ जाने को गुण करता है।

अन्य–हींग खाली शहद में पीसकर जीरे के सदृश बत्तियां बनाकर एक बत्ती लिंगके छिद्र में रक्खे और एक घण्टे के पीछे मैथुन करे।

अन्य–मैंने एक पुस्तक में देखा है कि कौंच की जड़ उगली के शिर पोर के बराबर भोग के समय मुख में रक्खे, जब तक मुख में रहेगी वीर्यपात न होगा।

अन्य–स्तम्भन को गुण करे–ऊँट के बाल की रस्सी बनाकर रान पर बांधे।

अन्य—लिखा है कि फिटकरी कमर में बाँधना स्तम्भन को गुण करता है।

अन्य—लिखा है कि इतवार को घोड़े और खच्चर की पूँछ का एक एक बाल लेकर पीली कौड़ी में छिद्र करके इन दोनों बालों में पिरोवे और दहने बाजू पर बांधकर सम्भोग करे वीर्यपात न होगा।

अन्य—लिखा है कि छछूंदर का खुसिया चमड़े में रखकर यन्त्र बनाकर कमर में बांधे जबतक कमर में रहेगा वीर्यपात न होगा जब उसको पेट की तरफ लावेंगे वीर्य गिर जावेगा।

अन्य—कुचला दो आतशी शराब में पीसे और नख पर गाढ़ा गाढ़ा लेप करे, सूखजाने के उपरांत भोग करे स्तम्भन करता है।

अन्य—करंजुवे की पत्तियों का रस निकालकर हथेलियों और तलवों में मलकर चार घड़ी के पीछे भोग करे एक पुस्तक में लिखा है कि स्तम्भन करता है।

यन्त्र—मुख्य करके वीर्य को रोकता है—कुत्ता जिस मादा से जुफ्ती करे और कुकरघण्ट हो जावे नरकुत्ते की दुम काटकर चालीस दिन जमीन में गाड़ दे, जब दुम गलकर हड्डियां शेष रहें उसको तागे में पिरोकर अपने बालों में बांधकर भोग करे।

लाभ—भोग करने में चाहिये कि मजे की तरफ मन न लगावे किन्तु और बातों का विचार रक्खे, जब जाने कि वीर्यपात हुआ चाहता है ठहर जावे एक पल के पीछे फिर आरम्भ करे, इसीतरह वीर्यपात के समय क्रिया करता जावे और उत्तम यह है कि एक नियत संख्या से जैसें पांच या सात से प्रारम्भ करके हरदफा एक विषम संख्या बढ़ाता जावे ? दूसरी बात यह जाने कि मनी निकलती है छिगुनियां और बीच की उँगली से वह रग जो अंडकोष के नीचे और गुदा के बीच में है जोर से पकड़ ले मनी फिर जावेगी इसी तरह हरबेर करे और उत्तम यह है कि जब भोग करने बैठे एँड़ी से वह रग दबाये रक्खे।

स्तम्भन की गोली—शिगरफ, मोचरस, अफीम चार माशे, सुहागा एक माशे पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, एक गोली भोग के पहिले खावे।

यन्त्र—लिखा है कि ऊँट की हड्डी में छिद्र करके जिसके शिरहाने रख दे वीर्यपात न हो।

अण्डवृद्धि का यत्न–जो दाहिने अंड में शोथ हो बायें हाथ की रग असलीम को दागे और जो बायें अंड में शोथ हो दाहने हाथ की रग असलीम को दाग दे, अंडकोष की सूजन और पीड़ा दूर होगी। असलीम एक रग है छिगुनियां और उसके पास की उंगली के बीच में उसको रेशमी कपड़ा जलाकर दागे और दागने की रीति बहुधा लोग जानते हैं कि अपने हाथ पाँव दागा करते हैं।

औषध—वैद्यक की–अंडों के बढ़ जाने को गुणदायक–ढाक के जड़ की छाल छाया में सुखाकर महीन पीस छानकर सात माशे ताजे पानी से फांके, नाभि की पीड़ा को भी गुण करे।

चूर्ण–अंड के लिये–कुन्दर बायबिड़ंग, पुरानी ईंट बराबर कूटछानकर दो दाम घी के साथ खावे, जो पहिले दिन के होजावे अंडे अपनी दशा पर आ जावेंगे।

काढ़ा—अंडवृद्धि को गुणकारक–पांच टंक हबुल्लास, तीसटंक जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके दस टंक घृत मिलाकर गुनगुना खड़े होकर पिये।

औषध—अंडवृद्धि को गुणकारक–भुना सुहागा छः रत्ती पीसकर पुराने गुड़ में मिलाकर तीन गोलियां बनावे एक गोली हर सुबह खावे उसके ऊपर थोड़ा घृत पिये, भोजन मलीदा बे नमक।

लेप–अंड के शोथ को गुणकारक–ऊँट की मेंगनी और थोड़ी हल्दी औटावे, जब गाढ़ी हो जावे पीसकर गुनगुना पोते पर लगावे।

अन्य—ठण्ढे पोते की सूजन को गुणदायक–खुरमे की गुठली का आटा खतमी के बीज सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य–पोते की सूजन और उसकी खुजली को गुण करे–आधपाव भंग, आधसेर जल में औटावे जब आधा शेष रहे उस जल में पोते को धोवे और उसकी वस्तु का लेप करे।

अन्य—बकरी की मेंगनी जलाकर अजवाइन खुरासानी उसके बराबर लेकर पानी में पीसकर गुनगुना लगावे।

लेप–मैनफल के बीच, नाजबो के पत्ते के रस में पीसकर लेप करे।

अन्य—अरंड की जड़ सिरके में पीसकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—कोयल्ट के वृक्ष कूटछानकर गुनगुने लगावे।

अन्य—सूजन और पोते की पीड़ा को गुण करे– भँगरा, चूहे की मेंगनी, नकछिकनी बराबर ले और खासन के बीज दुगुने ले अरंड के पत्ते के रस में पीसकर लेप करे।

अन्य—लड़कों के पोते बढ़ने के लिये गुण करे–अरहर पानी में पीसकर गुनगुना लगावे।

औषध—गरम पोते की सूजन को गुणदायक–भँग को पानी में भिगोकर पोतों को जब तक हो सके उसमें रक्खे, दो बेर इसी तरह करे और उसकी वस्तु पोते पर बांधे।

लेप—पोते की गरम सूजन को गुण करे– छिले मसूर, अनार की छाल बराबर पानी में पकावे जब गल जावे पीसकर लेप करे।

अन्य—पोते की ठंढी सूजन को गुण करता है–रेंड़ी का गूदा पीसकर गरम करके रोज दो तीन बेर लगावे, पोते का बड़ा होना दूर हो जावेगा।

लेप—माजूफल, असगंध पानी में पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—नरकचूर पीसकर गुनगुना लेप करके उसके ऊपर पान के पत्ते बांधे।

औषध—पोते की ठण्ढी सूजन को गुण करे–मरवावृक्ष के पत्ते और टहनी को कूटकर रोटी बनाकर पोते पर बांधे, सूजन दूर हो जावेगी और पीड़ा को भी गुण करे।

लाभ—पोते की गरमसूजन का यत्न साफन की फस्द है और खुरासानी अजवाइन और जौ का आटा और कद्दू की लकड़ी और धनियें की पत्तियों का रस और काई और लाल चंदन का लेप करना और जो शीत से सूजन हो मेथी, अलसी के बीज शहद में लेप करे।

तरेड़ा—गरम और पोते की पीड़ा को गुण करे– टेसू के फूल औटाकर उसके पानी से तरेड़ा करे और उसका फोग गुनगुना बांधे।

लेप—पोते की चोट को गुण करे–थोड़ी हल्दी पीसकर अण्डे की जरदी में मिलाकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—पोते की सख्ती को गुण करे–सफेदजीरा, कालीमिरच पानी में पीसकर पकावे और लेप करे।

अन्य—पोते की सख्ती को गुण करे– पित्ता, जीरा, शहद में मिलाकर लगावे।

लेप–पोते की खुजली को गुण करे– सिरस वृक्ष की छाल पीसकर लेप करे।

अन्य—पोते की सूजन को गुणदायक—नाजबो जल में पीसकर लेप करे।

अन्य—पोते और लिंग के व्रण को गुण करे—जलाया हुआ गेंगटा, अंगूर की लकड़ी की राख, व्रण को थूक से भिगोकर उस पर छिड़के।

अन्य—पोते के घाव को गुण करे—कीकर की छाल जवकुटकर पानी में औटाकर व्रण को उससे धोया करे।

अन्य—लिंग के व्रण को गुण करे—कमीला तिलों के तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य—चाकसू महीन पीसकर व्रणों पर छिड़के।

लेप—नाभि के ऊँचे होने के लिये—जो नाभि ऊँची होजावे इस ओषधि से मुख्य दशा पर आ जावे और वह ऊँचान कृत्रिम होती है जाता रहता है-अजवाइन कूटछानकर मुरगे के अंडे की सफेदी में मिलाकर लेप करे और उसके ऊपर शीशे का टुकड़ा बांधे।

उन रोगों का यत्न जो मुख्य स्त्रियों के होते हैं स्त्री के बांझ न होने का यत्न।

जिस स्त्री को यह रोग हो उसको अरबी में अकीया और उर्दू में बांझ कहते हैं, और बांझ होना उन्हीं कारणों से होता है कि गर्भ को दूर करते हैं इस प्रकार के बांझ होने को मजाजी अर्थात कृत्रिम बोलते हैं यह साध्य है, और कभी यह रोग किसी कारण बिना होता है बाजे दरख्तों के सदृश कि वे नहीं फलते यह मुख्य बांझपन है इसका यत्न नहीं और बांझपन के कारण कभी मर्दों में होते हैं और कभी स्त्रियों में इसकी परीक्षा की रीति यों लिखी है कि बाकले या गेहूँ या जौ के सात दाने अलग अलग मिट्टी के नये बर्तन में रक्खे एक बर्तन में मर्द दूसरे में स्त्री सात दिन पर्यन्त मूत्र करे जिसके मूत्र से वह दाने उगें वह बांझ होने का कारण नहीं है और जिसके मूत्र से दाने न उगें उसी में बांझ होने का विकार मौजूद है या स्त्री पुरुष अलग अलग प्याले में पानी भरकर अपना अपना वीर्य उसमें डालें जिसका वीर्य पानी में बैठजावे उसकी ओर बांझपना नहीं है या स्त्री पुरुष अलग अलग काहू या कद्दू की जड़ में मूत्र करें सो जिसके मूत्र से वृक्ष सूखजावे बांझपन उसी की ओर होगा। अब थोड़ी ओषधि बांझपने की लिखी जाती हैं।

चूर्ण—गर्भ होने के वास्ते गुण करे—हाथीदांत का बुरादा कूटछानकर मिश्री बराबर मिलाकर रक्खे जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो नौ माशे

सात दिन पर्यन्त खावे सात दिवस के उपरांत पुरुष से मैथुन करे तीन दिन में गर्भ स्थिर हो जावे ।

अन्य—गर्भ के लिये कायफल कूटछानकर बराबर शक्कर मिलाकर ऋतु के उपरांत तीन दिन पर्यन्त एक हथेली भर खावे, भोजन दूध चावल फिर मैथुन करावे ।

अन्य—असगन्ध कूटछानकर ऋतु के प्रारम्भ के पहिले एक टंक से दो टंक पर्यंत खावे, भोजन दूध चावल और निश्चिन्त होने के उपरान्त भोग करावे ।

गोली—गर्भ को गुण करे—मुरमक्की, नौसादर बराबर पीसकर चार-चार तोले के अनुमान गोलियां बनावे, स्त्री ऋतु में एक गोली रोज खावे निश्चिन्त होने के उपरान्त भोग करे ।

औषध—गर्भ पर नियत है—हाथी का मूत्र भोग के पहिले या भोग के समय स्त्री को पिलावे बांझपने को गुण करे ।

अन्य—पियाबांसे की जड़ आधा टंक पानी में पीसकर थोड़ा गाय के दूध के साथ पुरुष खावे और स्त्री को तीन दिन पर्यन्त खिलावे उसके पीछे भोग करे—बांझपने को गुण करे ।

अन्य—काले धतूरे के फूल पीसकर शहद और घी में मिलाकर खिलाये।

अन्य—एक समुद्रफल थोड़े दही के साथ निगल ले मुख्य गुण करता है ।

अन्य—करंजुवे की गिरी स्त्री के दूध में पीसकर बत्ती रक्खे ।

शाफा—थोड़े सरसों पीसकर ऋतु के तीन दिन पीछे शाफा करे गर्भवती हो जावे ।

अन्य—अजवाइन एक हथेली भर कई दिन पर्यंत खावे ।

अन्य—गर्भ रहने को सहायता देता है—बाज की बीट कपड़े में लगाकर बत्ती करके जब स्त्री ऋतु से निश्चिन्त हो भग में रक्खे, और लिखा है कि थोड़ा शहद मिलाकर खिलावे मुख्य करके गर्भ स्थित करे ।

अन्य—कबूतर की बीट ऋतु के उपरान्त भग में रक्खे ।

गर्भवती के यन्त्र का वर्णन ।

गर्भवती स्त्री को फस्द और मुसिल से मुख्य चौथे महीने के पहिले और सातवें महीने के पीछे पथ्य करना उचित है और पछने और ऋतु के रुधिर निकलवाने और भय की बातों और भयानक शब्द से प्रति समय पथ्य

करना चाहिये और दो महीने के पीछे भोग न करना चाहिये और उचित है कि भोजन बहुत न करे और अजीर्ण से डरा करे और गर्भवती अति प्रसन्नचित्त हो और उसकी क्षुधा शुद्ध हो और उसको कोई रोग दौरान और शिर पीड़ा और मतली के सदृश न हो और उसको दाहने तरफ बोझ मालूम हो और दाहिनी छाती बड़ी हो और कुचों पर सुरखी मालूम हो अवश्य करके लड़का जनेगी–और जिस स्त्री को बेटी का गर्भ होगा उसमें उसके विपरीत चिन्ह पाये जावेंगे और उसका शिर भारी और मुख का पीला रंग और तेजरहित मुख होगा और भूख कम और आलस्य अधिक और कुच पतले और दूध भी पतला होगा और निद्रा बहुत आवेगी और चलने में पहिले दाहिना पांव उठावेगी और खड़े होने के समय दाहिना हाथ टेककर उठेगी और हकीमों ने यह भी लिखा है कि गर्भवती हाथ पर जूंरखकर उस पर अपना दूध दुहे जो जूं उस दूध में हिले उदर में लड़का होने का चिन्ह है और जो न हिले और मर जावे लड़की होने की निशानी है और यह भी लिखा है कि चुकन्दर के पत्ते सुखाकर गर्भवती स्त्री की नाक में फूंके जो छींक आवे तो लड़की जो न आवे तो लड़का जनेगी।

वह औषधियां जो गर्भ को गिरने न दें।

बाजी स्त्रियों की आदत है उनका गर्भ शुरू में गिर पड़ता है लाल कपड़े में लाल तागे से जो कुसुम में रँगा हो एक करंजुवा बांधकर नौ महीने पर्यन्त कमर पर बांधे रक्खे और कहरबाशमई और दरूनज अकरवी भी कमर पर बांधना गुण करता है।

अन्य–वह सूत कि कुँवारी लड़की ने काता हो स्त्री के शिर से पांव के नख पर्यन्त नापकर उसको इक्कीस तार का बनावे और काले धतूरे की जड़ लेकर इसको सात टुकड़े करके उस तागे में जुदा-जुदा बांधकर स्त्री की कमर में बांधे।

अन्य–जमुर्रद की अँगूठी बायें हाथ में पहिनना गर्भवती के ऋतु के रुधिर के बहने को बन्द करता है।

लेप–गर्भवती स्त्री के भग की खुजली और दाह के लिये खतमी के बीज, मुल्तानी मिट्टी, मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अन्य–भीमसेनी कपूर, गुलाब में पीसकर भग में मले।

लाभ–कहरबा कमर पर बांधना गर्भ के गिरने को रक्षा करता है और

मेदे पर लटकाना तुखमें को गुण करे और गर्दन पर कमलबायु को गुण करता है और छाती पर रखना मन को गुण करता है और ताऊन❀ को दूर करता है यह सब गुण इन औषधियों में मुख्य करके हैं।

औषधि—गर्भवती स्त्रियों को क्षुधा के उपद्रव के दूर करने को गुण करे—बड़ी इलायची दश टंक छः मिस्काल कन्द के साथ पीसकर तीन माशे रोज खिलावे।

कठिनता से प्रसूति होने का यत्न

गर्भवती स्त्री के निकट जनने के समय सुगन्धित वस्तु न जाने दे और चार मिस्काल अमलतास के छिलके पानी में औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना कठिनता से प्रसूति को आश्चर्यदायक गुण करता है और घोड़े के सुम की धूनी भी गुण करती है। बाजे हकीमों ने लिखा है कि थोड़ी घोड़े की लीद कबूतर की बीट के साथ पानी में घोलकर स्त्री को खिलाना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

सर्प की केंचुल का बफारा मुर्दा लड़के को तुरन्त निकालता है।

गाजर के बीजों का बफारा भी सुगमता से प्रसूति करता है।

बाबूने के पुष्प नौ माशे थोड़े पानी में औटाकर शहद आवश्यकता के अनुकूल मिलाकर पिलावे गुण करे।

औषधि—यदि गर्भ की दशा में ऋतु का रुधिर जारी हो जावे तो गूलर की जड़ जवकुटकर औटाकर पिलावे।

चूर्ण—प्रसूति के लिये गुण करे—नीलोफर, मुलहठी, रगड़ा हुआ चन्दन, घिसी हुई मिश्री बराबर चूर्ण बनावे और साठी के चावल भिगोकर उसके जल से एक हथेली भर खावे।

क्रिया—मुख्य करके प्रसूति को गुण करे—मकनातीस पत्थर बायें हाथ में लेना आजमाया हुआ है।

अन्य—सुगमता से प्रसूति के लिये—करंजुवा चमड़े में रखकर बाईं पिंडली पर बाँधे, थोड़ी हींग खाना प्रसूति को गुण करता है और प्रसूति की पीड़ा के समय मनुष्य के शिर के बालों की धूनी लेना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

❀ वह फोड़ा है जो अंडों या छातियों या बगल के नीचे निकला करता है।

मनुष्य के केश जलाकर उसकी राख गुलाब में मिलाकर स्त्री के शिर पर मलना मुख्य करके प्रसूति को गुण करे।

लाल कपड़े में नोन बांधकर स्त्री की बाईं ओर लटकावे, मुख्य करके प्रसूति की कठिनता को दूर करे।

सर्प की केंचुल स्त्री के चूतड़पर बांधना और उसकी धूनी देना प्रसूति की सुगमता को गुण देता है।

चकमाक का पत्थर लत्ते में लपेटकर स्त्री की रान पर बांधना मुख्य करके प्रसूति की कठिनता को गुण करे और इसी प्रकार बारहसिंगे का सींग बांधना सुगमता से प्रसूति करता है।

गिद्ध का पर स्त्री के पांव के नीचे रखना प्रसूति को गुण करे और जो सरफोंका की जड़ स्त्री की कमर में बांधे शीघ्र ही निकाल दे।

जीते सर्प के दांत स्त्री के गले में लटकाना प्रसूति की सुगमता को गुण करता है।

अन्य—प्रसूति की सुगमता को गुणदायक—इन्द्रायण की जड़ पीसकर गौ के घी में मिलाकर भग में दे।

औषध—उस मुरुल को ठहराती है जो प्रसूति के उपरान्त गर्भाशय में होता है—दो दाम खरबूजे की छाल सुखाकर सौंफ के अरक में पीसकर पिये।

अन्य—पुराना खापरा खाना गुणकारी है।

अन्य—सातर औटाकर पिये।

अन्य—माजून बरशाशा एक हिबा भर मीठे जल में पीना गुण करता है।

अन्य—असूल का शरबत गुण करता है।

अन्य—बच का काढ़ा गुणदायक है।

अन्य—खशखाश का पोस्ता पिलाना गुण करता है।

उन ओषधियों का वर्णन कि स्त्री को बांझ करें।

हाथी का ताजा लेंड़ निचोड़कर एक तोला शहद में मिलाकर तीन दिन पर्यंत ऋतु के होने के पीछे पिये और हाथी के लेंड़ से बत्ती को भिगोकर भग में रखना स्त्री को बांझ करता है।

ओषध—स्त्री को बांझ करे—नौसादर फिटकरी पानी में पीसकर ऋतु के पीछे भग में रख ले।

अन्य—यदि प्रतिदिन सुबह को एक लौंग निगले गर्भ न रहे।

अन्य—इस्पंदनागौरी जलाकर ऋतु के दिनों के उपरान्त खावे।

अन्य—यदि लिंग के शिर में मीठा तेल और नोन मलकर सम्भोग करे वीर्य को गर्भाशय न लेगा।

अन्य—शाफा जो स्त्री को बांझकर दे–बावची मीठे तेल में पीसकर ऋतु के पीछे शाफा करे।

औषध —हल्दी पीसकर ऋतु के समय खावे और ऋतु के दिन हो चुकने पर तीन दिवस पर्यन्त खावे गर्भ न रहेगा।

अन्य—स्त्री को बांझ कर दे–चमेली की जड़ और गुलेचीनियां का जीरा बराबर पीसकर छाया में सुखाकर ऋतु के प्रारम्भ में तीन दिन तक खावे और उसके ऊपर एक घूंट जल पिये।

काढ़ा---जो गर्भ को न रहने दे –फर्राश वृक्ष की छाल और गुड़ औटाकर पिये।

अन्य—कालीमिरच सम्भोग के उपरांत भग में रखना गर्भ न रहने दे।

औषध--जो एक मिस्काल नील स्त्री खावे तो गर्भ न रहेगा।

अन्य कालीजीरा, काबिली हड़ के बीज, नागेसर, नरकचूर, कलोंजी, कायफल हरएक पांच टंक कूटछानकर गोलियां बनावे, ऋतु के समय से स्त्री सातदिन पर्यंत एक एक गोली खावे।

अन्य—लिखा है कि चमेली की एक कली जो स्त्री निगले एक वर्ष पर्यंत गर्भ न रहे।

अन्य—रेंड़ी की एक गूदी निगल जावे तो एक वर्ष पर्यन्त गर्भ न रहे और दो निगले तो दो वर्ष पर्यन्त न रहे।

अन्य–खाने का नोन भग में रखना गर्भ न रहने दे।

अन्य–चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर भग में रखना गर्भ को न रहने दे।

दूसरा उपाय जो गर्भ न रहने दे–स्त्री अपनी रान सम्भोग के समय ऊँची न करे और पुरुष वीर्यपात होने के समय अपना लिंग बाहर निकाल ले और इस बात का ध्यान रक्खे कि अपने वीर्यपात होने के साथ स्त्री की रज न छूटे और स्त्री वीर्यपात होने के पीछे शीघ्र उठ खड़ी होकर छींके।

अन्य–मुख्य करके गर्भ न रहने दे–लड़के का जो दांत पहिले गिरे और

करना चाहिये और दो महीने के पीछे भोग न करना चाहिये और उचित है कि भोजन बहुत न करे और अजीर्ण से डरा करे और गर्भवती अति प्रसन्नचित्त हो और उसकी क्षुधा शुद्ध हो और उसको कोई रोग दौरान और शिर पीड़ा और मतली के सदृश न हो और उसको दाहने तरफ बोझ मालूम हो और दाहिनी छाती बड़ी हो और कुचों पर सुरखी मालूम हो अवश्य करके लड़का जनेगी–और जिस स्त्री को बेटी का गर्भ होगा उसमें उसके विपरीत चिन्ह पाये जावेंगे और उसका शिर भारी और मुख का पीला रंग और तेजरहित मुख होगा और भूख कम और आलस्य अधिक और कुच पतले और दूध भी पतला होगा और निद्रा बहुत आवेगी और चलने में पहिले दाहिना पांव उठावेगी और खड़े होने के समय दाहिना हाथ टेककर उठेगी और हकीमों ने यह भी लिखा है कि गर्भवती हाथ पर जूं रखकर उस पर अपना दूध दुहे जो जूं उस दूध में हिले उदर में लड़का होने का चिन्ह है और जो न हिले और मर जावे लड़की होने की निशानी है और यह भी लिखा है कि चुकन्दर के पत्ते सुखाकर गर्भवती स्त्री की नाक में फूंके जो छींक आवे तो लड़की जो न आवे तो लड़का जनेगी।

वह औषधियां जो गर्भ को गिरने न दें।

बाजी स्त्रियों की आदत है उनका गर्भ शुरू में गिर पड़ता है लाल कपड़े में लाल तागे से जो कुसुम में रँगा हो एक करंजुवा बांधकर नौ महीने पर्यन्त कमर पर बांधे रक्खे और कहरबाशमई और दरूनज अकरवी भी कमर पर बांधना गुण करता है।

अन्य–वह सूत कि कुँवारी लड़की ने काता हो स्त्री के शिर से पांव के नख पर्यन्त नापकर उसको इक्कीस तार का बनावे और काले धतूरे की जड़ लेकर इसको सात टुकड़े करके उस तागे में जुदा-जुदा बांधकर स्त्री की कमर में बांधे।

अन्य–जमुर्रद की अँगूठी बायें हाथ में पहिनना गर्भवती के ऋतु के रुधिर के बहने को बन्द करता है।

लेप–गर्भवती स्त्री के भग की खुजली और दाह के लिये खतमी के बीज, मुल्तानी मिट्टी, मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अन्य–भीमसेनी कपूर, गुलाब में पीसकर भग में मले।

लाभ–कहरबा कमर पर बांधना गर्भ के गिरने को रक्षा करता है और

मेदे पर लटकाना तुखमें को गुण करे और गर्दन पर कमलबायु को गुण करता है और छाती पर रखना मन को गुण करता है और ताऊन❀ को दूर करता है यह सब गुण इन औषधियों में मुख्य करके हैं।

औषधि—गर्भवती स्त्रियों को क्षुधा के उपद्रव के दूर करने को गुण करे—बड़ी इलायची दश टंक छः मिस्काल कन्द के साथ पीसकर तीन माशे रोज खिलावे।

कठिनता से प्रसूति होने का यत्न

गर्भवती स्त्री के निकट जनने के समय सुगन्धित वस्तु न जाने दे और चार मिस्काल अमलतास के छिलके पानी में औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना कठिनता से प्रसूति को आश्चर्यदायक गुण करता है और घोड़े के सुम की धूनी भी गुण करती है। बाजे हकीमों ने लिखा है कि थोड़ी घोड़े की लीद कबूतर कीं बीट के साथ पानी में घोलकर स्त्री को खिलाना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

सर्प की केंचुल का बफारा मुर्दा लड़के को तुरन्त निकालता है।

गाजर के बीजों का बफारा भी सुगमता से प्रसूति करता है।

बाबूने के पुष्प नौ माशे थोड़े पानी में औटाकर शहद आवश्यकता के अनुकूल मिलाकर पिलावे गुण करे।

औषधि—यदि गर्भ की दशा में ऋतु का रुधिर जारी हो जावे तो गूलर की जड़ जवकुटकर औटाकर पिलावे।

चूर्ण—प्रसूति के लिये गुण करे—नीलोफर, मुलहठी, रगड़ा हुआ चन्दन, घिसी हुई मिश्री बराबर चूर्ण बनावे और साठी के चावल भिगोकर उसके जल से एक हथेली भर खावे।

क्रिया—मुख्य करके प्रसूति को गुण करे—मकनातीस पत्थर बायें हाथ में लेना आजमाया हुआ है।

अन्य—सुगमता से प्रसूति के लिये—करंजुवा चमड़े में रखकर बाईं पिंडली पर बाँधे, थोड़ी हींग खाना प्रसूति को गुण करता है और प्रसूति की पीड़ा के समय मनुष्य के शिर के बालों की धूनी लेना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

---

* वह फोड़ा है जो अंडों या छातियों या बगल के नीचे निकला करता है।

करना चाहिये और दो महीने के पीछे भोग न करना चाहिये और उचित है कि भोजन बहुत न करे और अजीर्ण से डरा करे और गर्भवती अति प्रसन्नचित्त हो और उसकी क्षुधा शुद्ध हो और उसको कोई रोग दौरान और शिर पीड़ा और मतली के सदृश न हो और उसको दाहने तरफ बोझ मालूम हो और दाहिनी छाती बड़ी हो और कुचों पर सुरखी मालूम हो अवश्य करके लड़का जनेगी—और जिस स्त्री को बेटी का गर्भ होगा उसमें उसके विपरीत चिन्ह पाये जावेंगे और उसका शिर भारी और मुख का पीला रंग और तेजरहित मुख होगा और भूख कम और आलस्य अधिक और कुच पतले और दूध भी पतला होगा और निद्रा बहुत आवेगी और चलने में पहिले दाहिना पांव उठावेगी और खड़े होने के समय दाहिना हाथ टेककर उठेगी और हकीमों ने यह भी लिखा है कि गर्भवती हाथ पर जूंरखकर उस पर अपना दूध दुहे जो जूं उस दूध में हिले उदर में लड़का होने का चिन्ह है और जो न हिले और मर जावे लड़की होने की निशानी है और यह भी लिखा है कि चुकन्दर के पत्ते सुखाकर गर्भवती स्त्री की नाक में फूंके जो छींक आवे तो लड़की जो न आवे तो लड़का जनेगी।

वह औषधियां जो गर्भ को गिरने न दें।

बाजी स्त्रियों की आदत है उनका गर्भ शुरू में गिर पड़ता है लाल कपड़े में लाल तागे से जो कुसुम में रँगा हो एक करंजुवा बांधकर नौ महीने पर्यन्त कमर पर बांधे रक्खे और कहरबाशमई और दरूनज अकरवी भी कमर पर बांधना गुण करता है।

अन्य—वह सूत कि कुँवारी लड़की ने काता हो स्त्री के शिर से पांव के नख पर्यन्त नापकर उसको इक्कीस तार का बनावे और काले धतूरे की जड़ लेकर इसको सात टुकड़े करके उस तागे में जुदा-जुदा बांधकर स्त्री की कमर में बांधे।

अन्य—जमुर्रद की अँगूठी बायें हाथ में पहिनना गर्भवती के ऋतु के रुधिर के बहने को बन्द करता है।

लेप—गर्भवती स्त्री के भग की खुजली और दाह के लिये खतमी के बीज, मुलतानी मिट्टी, मकोय की पत्तियों के रस में पीसकर लगावे।

अन्य—भीमसेनी कपूर, गुलाब में पीसकर भग में मले।

लाभ—कहरबा कमर पर बांधना गर्भ के गिरने को रक्षा करता है और

मेदे पर लटकाना तुखमें को गुण करे और गर्दन पर कमलबायु को गुण करता है और छाती पर रखना मन को गुण करता है और ताऊन❀ को दूर करता है यह सब गुण इन औषधियों में मुख्य करके हैं।

औषधि-गर्भवती स्त्रियों को क्षुधा के उपद्रव के दूर करने को गुण करे-बड़ी इलायची दश टंक छः मिस्काल कन्द के साथ पीसकर तीन माशे रोज खिलावे।

कठिनता से प्रसूति होने का यत्न

गर्भवती स्त्री के निकट जनने के समय सुगन्धित वस्तु न जाने दे और चार मिस्काल अमलतास के छिलके पानी में औटाकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पिलाना कठिनता से प्रसूति को आश्चर्यदायक गुण करता है और घोड़े के सुम की धूनी भी गुण करती है। बाजे हकीमों ने लिखा है कि थोड़ी घोड़े की लीद कबूतर की बीट के साथ पानी में घोलकर स्त्री को खिलाना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

सर्प की केंचुल का बफारा मुर्दा लड़के को तुरन्त निकालता है।

गाजर के बीजों का बफारा भी सुगमता से प्रसूति करता है।

बाबूने के पुष्प नौ माशे थोड़े पानी में औटाकर शहद आवश्यकता के अनुकूल मिलाकर पिलावे गुण करे।

औषधि—यदि गर्भ की दशा में ऋतु का रुधिर जारी हो जावे तो गूलर की जड़ जवकुटकर औटाकर पिलावे।

चूर्ण-प्रसूति के लिये गुण करे-नीलोफर, मुलहठी, रगड़ा हुआ चन्दन, घिसी हुई मिश्री बराबर चूर्ण बनावे और साठी के चावल भिगोकर उसके जल से एक हथेली भर खावे।

क्रिया-मुख्य करके प्रसूति को गुण करे-मकनातीस पत्थर बायें हाथ में लेना आजमाया हुआ है।

अन्य-सुगमता से प्रसूति के लिये-करंजुवा चमड़े में रखकर बाईं पिंडली पर बाँधे, थोड़ी हींग खाना प्रसूति को गुण करता है और प्रसूति की पीड़ा के समय मनुष्य के शिर के बालों की धूनी लेना प्रसूति की कठिनता को गुण करता है।

* वह फोड़ा है जो अंडों या छातियों या बगल के नीचे निकला करता है।

मनुष्य के केश जलाकर उसकी राख गुलाब में मिलाकर स्त्री के शिर पर मलना मुख्य करके प्रसूति को गुण करे।

लाल कपड़े में नोन बांधकर स्त्री की बाईं ओर लटकावे, मुख्य करके प्रसूति की कठिनता को दूर करे।

सर्प की केंचुल स्त्री के चूतड़पर बांधना और उसकी धूनी देना प्रसूति की सुगमता को गुण देता है।

चकमाक का पत्थर लत्ते में लपेटकर स्त्री की रान पर बांधना मुख्य करके प्रसूति की कठिनता को गुण करे और इसी प्रकार बारहसिंगे का सींग बांधना सुगमता से प्रसूति करता है।

गिद्ध का पर स्त्री के पांव के नीचे रखना प्रसूति को गुण करे और जो सरफोंका की जड़ स्त्री की कमर में बांधे शीघ्र ही निकाल दे।

जीते सर्प के दांत स्त्री के गले में लटकाना प्रसूति की सुगमता को गुण करता है।

अन्य—प्रसूति की सुगमता को गुणदायक—इन्द्रायण की जड़ पीसकर गौ के घी में मिलाकर भग में दे।

औषध—उस मुख्ल को ठहराती है जो प्रसूति के उपरान्त गर्भाशय में होता है—दो दाम खरबूजे की छाल सुखाकर सौंफ के अरक में पीसकर पिये।

अन्य—पुराना खापरा खाना गुणकारी है।

अन्य—सातर औटाकर पिये।

अन्य—माजून बरशाशा एक हिबा भर मीठे जल में पीना गुण करता है।

अन्य—असूल का शरबत गुण करता है।

अन्य—बच का काढ़ा गुणदायक है।

अन्य—खशखाश का पोस्ता पिलाना गुण करता है।

उन ओषधियों का वर्णन कि स्त्री को बांझ करें।

हाथी का ताजा लेंड़ निचोड़कर एक तोला शहद में मिलाकर तीन दिन पर्यंत ऋतु के होने के पीछे पिये और हाथी के लेंड़ से बत्ती को भिगोकर भग में रखना स्त्री को बांझ करता है।

ओषध—स्त्री को बांझ करे—नौसादर फिटकरी पानी में पीसकर ऋतु के पीछे भग में रख ले।

अन्य—यदि प्रतिदिन सुबह को एक लौंग निगले गर्भ न रहे।

अन्य—इस्पंदनागौरी जलाकर ऋतु के दिनों के उपरान्त खावे।

अन्य—यदि लिंग के शिर में मीठा तेल और नोन मलकर सम्भोग करे वीर्य को गर्भाशय न लेगा।

अन्य—शाफा जो स्त्री को बांझकर दे—बावची मीठे तेल में पीसकर ऋतु के पीछे शाफा करे।

औषध—हल्दी पीसकर ऋतु के समय खावे और ऋतु के दिन हो चुकने पर तीन दिवस पर्यन्त खावे गर्भ न रहेगा।

अन्य—स्त्री को बांझ कर दे—चमेली की जड़ और गुलेचीनियां का जीरा बराबर पीसकर छाया में सुखाकर ऋतु के प्रारम्भ में तीन दिन तक खावे और उसके ऊपर एक घूंट जल पिये।

काढ़ा—जो गर्भ को न रहने दे—फर्राश वृक्ष की छाल और गुड़ औटाकर पिये।

अन्य—कालीमिरच सम्भोग के उपरांत भग में रखना गर्भ न रहने दे।

औषध—जो एक मिस्काल नील स्त्री खावे तो गर्भ न रहेगा।

अन्य कालीजीरा, काबिली हड़ के बीज, नागेसर, नरकचूर, कलोंजी, कायफल हरएक पांच टंक कूटछानकर गोलियां बनावे, ऋतु के समय से स्त्री सातदिन पर्यंत एक एक गोली खावे।

अन्य—लिखा है कि चमेली की एक कली जो स्त्री निगले एक वर्ष पर्यंत गर्भ न रहे।

अन्य—रेंड़ी की एक गूदी निगल जावे तो एक वर्ष पर्यन्त गर्भ न रहे और दो निगले तो दो वर्ष पर्यन्त न रहे।

अन्य—खाने का नोन भग में रखना गर्भ न रहने दे।

अन्य—चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर भग में रखना गर्भ को न रहने दे।

दूसरा उपाय जो गर्भ न रहने दे—स्त्री अपनी रान सम्भोग के समय ऊँची न करे और पुरुष वीर्यपात होने के समय अपना लिंग बाहर निकाल ले और इस बात का ध्यान रक्खे कि अपने वीर्यपात होने के साथ स्त्री की रज न छूटे और स्त्री वीर्यपात होने के पीछे शीघ्र उठ खड़ी होकर छींके।

अन्य—मुख्य करके गर्भ न रहने दे—लड़के का जो दांत पहिले गिरे और

जमीन पर न गिरने पावे उसको लेकर इतवार के दिन चांदी से मढ़कर स्त्री भुजा पर बांधे।

अन्य—चूके के बीज बाई भुजा पर बांधे गर्भ न रहने दे।

अन्य—जो मेढक की हड्डी स्त्री अपने निकट रक्खे गर्भ न रहे।

अन्य—जो स्त्री सर्प का दांत अपने पास रक्खे गर्भ न रहे।

अन्य—काकुंज के सातदाने ऋतु के दिनों के पीछे स्त्री निगल ले।

अन्य—थूहर की लकड़ी छाया में सुखाकर जलाकर उसकी एक माशा भर राख लेकर बराबर की शक्कर मिलाकर इक्कीस दिन तक हर रोज खावे।

अन्य—मनुष्य के कान का मैल एक दाना बाकले के बराबर लेकर काले रंग के पशमीने में बांधकर स्त्री की गर्दन में लटकावे, जबतक गले में रहे गर्भ न रहने दे।

शाफा—सहँजने के बीज महीन पीसकर गौ के घी और शहद में मिलाकर ऋतु के उपरांत शाफा करे।

लाभ—लिखा है कि स्त्री यदि अपने पुत्र के मूत्र पर मूत्र करे तो कभी गर्भ न रहे, मुख्य करके गुण करता है।

ओषधि—यदि स्त्री हर महीने में थोड़ा खच्चर का मूत्र पिये तो कभी गर्भं न रहे।

अन्य—गर्भ न रहने दे और गर्भाशय की पीड़ा को जो भोग के उपरान्त रहे दूर करे—माजू महीन पीसकर उसमें रुई भिगोकर गोला बनाकर भोग से पहिले गर्भाशय के मुख पर्यन्त पहुँचावे।

गर्भ गिराने की औषधि।

इन्द्रायण निचोड़कर उसमें रुई डुबोकर भग में रक्खे।

शाफा—जो गर्भ को गिरावे कड़ुई तोरई बीजों समेत पीसकर शाफा करे।

शाफा—साबुन शाफे के सदृश बनाकर गर्भाशय के मुख में रक्खे या उसको कड़ुवे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर गर्भाशय के मुख में रक्खे।

अन्य—मुरमक्की गुण में लपेटकर खावे और पटोल पीसकर शाफा करे।

काढ़ा—जो पेट से लड़का निकालने के वास्ते अद्भुद औषध है—बथुवे के बीज डेढ़ तोला आध सेर जल में औटावे जब आधा पानी शेष रहे छानकर पिये।

चूर्ण—जो गर्भ को गिरावे— अम्ननान एक टंक चूर्ण करके फांके।

शाफा—जो गर्भ को गिरावे और ऋतु के रुधिर को जारी करे—एलवा, बन्दाल, मुर बराबर लेकर तेज शराब में खरल करके शाफा करे।

काढ़ा—जो लड़के का नाल, झिल्ली गर्भाशय से निकालता है—सहजने के वृक्ष की छाल गुड़ के साथ औटाकर पिये।

अन्य—गर्भ को गिराता है—जंगली कबूतर की बीट और गाजर के बीज बराबर लेकर वफारा दे।

दूसरा शाफा—गर्भ को गिरावे—मुनमुन जो गेहूँ में होता है और एलवा बराबर लेकर शाफा करे।

लेप—गर्भ गिराने में सहायता करता है—ऊँटकटारे की जड़ पानी में पीसकर स्त्री के उदर पर लेप करे।

अन्य—गुड़हल का फूल पानी में पीसकर नाभि पर उसके चारो ओर लगावे।

अन्य—बफारा जो गर्भ कोगिराता है—गन्धक, मुरमक्की, हींग, गूगल पीसकर बफारा ले, जो इसमें गाय का पित्ता भी मिलावे तो अधिक बलवान हो जावे।

बफारा—जीते और मुर्दे बच्चे को उदर से निकाले और गर्भ को गिरावे—घोड़े की लीद स्त्री अपने आगे जलाये और बफारा ले।

अन्य—अनार की छाल का वफारा भी गुण करता है।

औषध—जो लड़का गिरावे—बिसखपरे की जड़ छः अंगुल काटकर उसको एक तरफ महीन बनावे और एलुवा गाय के पित्ते में पीसकर इसको महीन तरफ में खूब लगाकर सुखाकर गर्भ के मुख पर्यन्त पहुँचावे और उसके दूसरी ओर एक तागे से दृढ़ बांध दे इसी तरह दो चार दिन रक्खे कि बच्चा गिर जावे।

औषधि—शोरा आधा दाम निहारमुँह खावे गर्भ गिर जावे।

शाफा—अरण्ड की नरम टहनी रेंड़ी के तेल में भिगाकर शाफा करे।

बफारा—गधे के सुम और गूह का बफारा ले।

औषधि—गर्भ को गिरावे—मेथी, हल्दी, फिटकरी एक एक दाम, तूतिया, भड़भूंजे के छप्पर का धुआं आधा आधा दाम कूटछानकर पानी में मिलाकर शाफा बनाकर सुखावे, पहिले चिकनी और नरम करने वाली चीजें जैसे कि घी और पुदीने की पट्टी गर्भाशय में लगावे फिर सुबह और शाम वही शाफा रक्खे और गर्भ के गिरने के उपरांत घी में एक लता भिगोकर भग

में रखना उचित है कि पीड़ा दूर हो जावे और गर्भ के गिर जाने के उपरांत भी गोखुरू छः माशे, खरबूजे के बीज, सौंफ एक एक तोला औटाकर छानकर मिश्री मिलाकर पिये और भोजन कुछ न करे और पानी के बदले कपास की हरी कलियां और बांस की हरी गांठें चार चार दाम पानी में औटाकर पिलाया करे।

अन्य—काढ़ा—गाजर के बीज, सोये के बीज, मेथी छः छः टंक दो सेर जल में औटावे जब एक सेर शेष रहै मलकर छानकर दो सप्ताह पर्यन्त इसी प्रकार पिये गर्भ गिर जावे।

अन्य—आजमाया हुआ—एलुवा, बिसखपरे की जड़, तूतिया, खिरनी के बीज, महुवे के बीज बराबर कूटछानकर बत्ती करके रक्खे।

शाफा—गर्भ के गिरने को आजमाया हुआ है—अरण्ड की [illegible] एक दाम, एलवा चार माशे, खिरनी के बीज की गिरी चार माशे महीन पीसकर शाफा बनाकर सुबह और शाम गर्भाशय के मुख में रक्खा करे।

अन्य—गर्भ गिराने के वास्ते—चूके की लकड़ी कि मशहूर लकड़ी है उसे बहुधा ऊँटों की खारिश के वास्ते लगाते हैं एक भाग उसमें से लेकर पानी में घिसे और तीन भाग रसौत मिलाकर छुहारे की गुठली के बराबर शाफा बनावे और शाफा करके गर्भाशय के मुख में रक्खे दो या तीन दिन में गर्भ गिर जावेगा और जो गर्भाशय के मुख के इर्दगिर्द दाने पड़ जावें उसमें घृत लगावे।

काढ़ा—अखरोट की छाल, बिनौला, मूली के बीज, गाजर के बीज, सोये के बीज, कलौंजी बराबर लेकर जवकुटकर दुगुना गुड़ मिलाकर स्वभाव के अनुसार लेकर जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे पिलावे।

भग के संकीर्ण करने का यत्न।

बैंगन सुखाकर पीसकर भग में रक्खे।

चूर्ण—भग की तंगी के लिये—ढाक की कलियां छाया में सुखाकर बराबर की शक्कर मिलाकर तीन टंक रोज खाया करे, चौदह दिन में भग तंग हो जावेगी।

शाफा—मदार की जड़ स्त्री अपने मूत्र में पीसकर शाफा करे चार घड़ी के पीछे पुरुष के पास जावे पुरुष उस पर मोहित हो जावे।

अन्य—केंचुवे सुखाकर स्त्री अपनी भग में मले कोई मनुष्य उससे जीत न पावे।

अन्य—तंगी के लिये—बबूल की छाल, झड़बेरी की छाल, मौलसिरी की छाल, कचनार की छाल, असार की छाल बराबर लेकर थोड़े जल में औटाकर उस जल से शौच करे और औटाते समय एक सफेद कपड़ा उसमें डाल दे जब रंगीन हो जावे कपड़ा भग में रक्खे।

चूर्ण—ढाक की कोंपल छाया में सुखावै और कूटछानकर उसके बराबर मिश्री मिलाकर आधे टंक से दो टंक पर्यन्त खावे, सात दिन में तंगी का गुण प्रकट होगा।

अन्य—सूखी बीरबहूटी घी से पीसकर मले।

अन्य—भग को तंग करे--गेंदे की छाल जलाकर उसकी राख मले।

अन्य—जाहीजूही के फूल कूटछानकर भग में रक्खे।

अन्य—बकायन के वृक्ष की छाल सुखाकर पीस छानकर भग में रक्खे बहुत गुण करे।

अन्य—खट्टा पालक के बीज कूटछानकर भग में रक्खे।

अन्य—उस तरी को दूर करे जो गर्भाशय से बहती है—मौलसिरी की छाल सुखाकर कूटछानकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर हर सुबह एक हथेली भर ताजे पानी से फांके।

अन्य—इमली के बीज की गिरी कूटछानकर सुबह और शाम भग में मला करे।

अन्य—समन्दरझाग, हड़ के बीज की गिरी बराबर लेकर पीसकर भग में रक्खे तंग हो जावे।

अन्य—भग के संकीर्ण होने के वास्ते आजमाई हुई है और इससे उत्तम कोई औषध नहीं है—चीनियां गोंद छः माशे महीन पीसे और दो तोले फिटकरी भूने और भूनते वक्त पानी में वही चीनियांगोंद मिलाकर उस पर छिड़के ठण्ढा होने के पीछे पीसे, फिर थोड़ा गुलधावा मिलाकर दूसरी बेर पीसकर भग में रक्खे—आश्चर्यदायक लाभ देवे।

अन्य—तंगी के वास्ते गुण करे—कचनार की कली एक दाम, अनार की छाल, मोचरस, पांच-पांच माशे, बबूल की फली कच्ची सुखाकर चार, माजूफल एक, महीन पीसकर कपड़े में छानकर सेवन करे।

सुहाग सोंठ

यह वैद्यों का नुस्खा है स्त्रियों की कमर की ताकत के वास्ते-सोंठ आध आव, घी तीन पाव, गौ के दूध में औटावे, जब गाढ़ा हो जावे तब खरबूजे के बीज की गिरी, चिरौंजी, निशास्ता, सिंघाड़ा दो-दो तोले, असगन्ध, सफेद मूसली, मोचरस, गोंद नागौरी, इलायची के दाने, शतावर दो-दो तोले, तेजपात, चन्दन पीसकर, तज, गुलधावा नौ-नौ माशे, गोखुरू पीपल, कालीमिरच, बालछड़, नागरमोथा, कोंच के बीजों की गिरी, चीनियां गोंद छः छः माशे कूटछानकर शक्कर में माजून बनावे।

स्त्री के ऋतु के रुधिर के अधिक बहने का यत्न।

यदि नियत दिवसों में न हो उसको इस्तखासा बोलते हैं, इस रोग में छातियों के नीचे सिंगी लगाना बहुत गुणदायक है,

औषध—जो ऋतु के रुधिर को बन्द कर दे—बकायन की कोंपल एक तोला भङ्ग की तरह घोटकर रस निकालकर पिये।

अन्य—जो रुधिर को बन्द कर दे—कपास के फूल जलाकर उसकी राख एक-एक हथेली भर पानी के साथ फांके।

अन्य—सरयाला जलाकर उसकी राख एक हथेली भर फांके।

अन्य—कुड़ा की छाल सात माशे कूटछानकर थोड़ी शक्कर के साथ पानी से फांके।

चूर्ण—ऋतु के अधिक रुधिर को बन्द करता है—मसूर, अरहर, उड़द दो-दो तोले, साठी के चावल एक तोला सब को जलाकर महीन पीसकर चूर्ण बनाकर एक हथेली भर खावे।

चूर्ण—जो रुधिर को बन्द करे—चने जलाये हुये, तज, लोध बराबर पीसकर बराबर शक्कर मिलाकर एक हथेली भर फांके।

अन्य—ऋतु के रुधिर के बन्द करने के लिये—मालती के फूल, शक्कर-तरी छः छः माशे मिलाकर खावे।

अन्य—राल पीसकर शक्कर के साथ चूर्ण बनाकर खावे।

अन्य—संगजराहत, गेरू बराबर लेकर चूर्ण बनावे, खूराक छः माशे सुबह को ठण्डे जल से फांके।

अन्य—छोटी दुद्धी छाया में सुखाकर कूटछानकर हर सुबह एक हथेली भर खावे।

अन्य–इस्तखासा दूर करने के लिये–लाख के दाने, शक्कर बराबर पीसकर एक हथेली भर जल से खावे।

अन्य–असगन्ध कूटछानकर मिश्री बराबर मिलाकर एक तोला भर पानी से फांके।

अन्य–बबूल का गोंद भूनकर, गेरू बराबर पीसकर हर सुबह दो मिस्काल खावे।

अन्य ऋतु के रुधिर की अधिकता को गुण दायक— हरसिंगार की सात कोंपलें पानी में पीस छानकर पिये।

अन्य–मुलतानी मिट्टी को पानी में भिगोकर उसका साफ जल पिये।

काढ़ा–जो ऋतु के अधिक रुधिर को गुण करे–सूखी धनियां एक हथेली भर औटाकर छानकर कई दिन खावे।

अन्य–कचनार की कलियां, हरा गूलर, खुरफे का साग, मसूर की दाल और पटसन के फूल पकाकर लाल चावल के भात के साथ खाना ऋतु के रुधिर को रोकता है।

सुपारी पाक।

जो ऋतु के रुधिर और भग की तरी को दूर करने के वास्ते गुण करे–गौ का दूध पांच सेर, सुपारी चिकनी पावभर कूटछानकर दूध में मधुरी अग्नि पर औटावे जब पकजावे आधसेर शक्कर डालकर कवाम करे-फिर छोटी बड़ी माई पक्के अढ़ाई अढ़ाई दाम, पक्की सुपारी के फूल, धवई के फूल पक्के पांच पांच दाम, ढाक का गोंद आधपाव सबको सुरमें की भांति महीन कूटछानकर जब कवाम ठण्ढा होने लगे औषध उसमें मिलावे और साफ बर्तन में रखकर आवश्यकता के अनुकूल एक दाम से तीन दाम पर्यन्त खावे।

टिकिया—जो रुधिर की अधिकता को बन्द करदे–रसौत, बबूल का गोंद, राल एक एक माशा, सुपारी अढ़ाई माशे पीसछानकर पानी में एक माशे के बराबर टिकिया बनावे, दो तीन टिकया खावे।

अन्य—जो रुधिर को बन्द करे—गधे की लीद सुखाकर पोटली में बांधकर भग में रक्खे।

अन्य—बकरी की मेंगनी सूखी पीसकर पोटली बनाकर गर्भाशय के मुख के निकट रक्खे, जो उसमें थोड़ा कुन्दर मिलावे तोअधिक गुण करेगा।

अन्य—रुधिर को रोके-अनार की छाल औटाकर एक तोला भर पिये।

अन्य—ऋतु के अधिक रुधिर आने के लिये आजमाया हुआ है—जीरा भुना और कच्चा लाल चावलों की पीच में पीसकर भग में रक्खे ।

ऋतु के रुधिर के बन्द हो जाने का यत्न ।

यदि शरीर में रुधिर के कम होने के कारण हो जावे कोई हानि नहीं और जो किसी और कारण से बन्द हो तो यत्न करना चाहिये—साफन की फस्द ऋतु के दिनों के पहिले खोलना रुधिर को खोलता है ।

काढ़ा—जो रुधिर को जारी करे—तोंबा सुर्ख, मंजीठ, मेथी, गाजर के बीज, सोये के बीज, मूली के बीज, अजवाइन, सौंफ, तितली की पत्तियां, गुड़ बराबर मिलाकर औटाकर पिये ।

अन्य—रुधिर को खोलने के वास्ते नरमे अर्थात् कपास के पत्ते और फूल आधपाव, सेर भर जल में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे साफ करके चार दाम गुड़ मिलाकर पिये ।

काढ़ा जो गर्भ को गिरादे और रुधिर जारी करे—अखरोट की छाल, मूली के बीज, अमलतास की छाल, परसियावसान, बायाबिड़ंग, जवकुटकर हर एक नौ माशे ले, और गुड़ औषधियों से दुगुना ले, सबको मिलाकर औटाकर पिये, कुछ लोग कलौंजी और नरमे की छाल भी मिलाते हैं ।

काढ़ा—रुधिर जारी करने के वास्ते—अधकुचली नीम की छाल दो तोले, अधकुचली सोंठ चार माशे, गुड़ दो तोले, डेढ़पाव जल में औटावे जब आध पाव जल शेष रहे छानकर पिये ।

काढ़ा—कमर की पीड़ा के लिये जो ऋतु में स्त्री को होती है गुण करे—सोंठ, बायाबिड़ंग आधा दाम, गुड़ दो दाम औटाकर पिये ।

कल्क—जो रुधिर को जारी करे—काले तिल, गोखरू एक एक तोला रात को जल में भिगोदे सुबह को रस निकालकर थोड़ी शक्कर मिला कर पिये ।

चूर्ण—रुधिर जारी करे—मूली के बीज, गाजर के बीज, मेथी कूटछांनकर एक हथेली भर गुनगुने पानी से फांके ।

अन्य—मँजीठ पीसकर एक हथेली भर फांके ।

अन्य—कलौंजी की जवारिश स्त्री के ऋतु का रुधिर और मूत्र लाती है और गर्भाशय की पीड़ा को दूर करती है ।

बत्ती—ऋतु के रुधिर को आराम से जारी करे—गुड़ घृत में मिला-

कर किसी बर्तन में आग पर रक्खे जब बत्ती बनाने के योग्य होजावे थोड़ा बिरोजा सूखा पीस मिलाकर बत्ती बनाकर गर्भाशय के मुख में पहुँचावे।

अन्य—जो नख का धुवां स्त्री कई बेर ले रुधिर जारी हो जावे।

अन्य—गंदेबिरोजे का धुवां भी रुधिर जारी करता है।

लेप—गर्भवती स्त्रियों के नले की पीड़ा को गुण करे—कालीजीरी दो दाम, रेंड़ी का गूदा आधपाव, सोंठ एक दाम सबको औटाकर पीसकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—गर्भाशय को तरी से साफ करे—मुरमक्की, लौंग बराबर कूटछानकर लत्ते में बांधकर सुबह और शाम गर्भाशय के मुख में पहुँचावे तीन दिन में साफ करे।

अन्य—गर्भाशय की तरी को सुखावे—अजमोद, बायबिड़ंग, सूखा गंदाबिरोजा एक एक भाग, सोये के बीज लाहौरीनोन आधा आधा हिस्सा, शहद मिलाकर उसमें रुई भिगोकर गर्भाशय पर्यन्त पहुँचावे।

अन्य—बायबिड़ंग, समुद्रझाग एक एक भाग, गंदाबिरोजा सूखा, लाहौरीनोन दो दो भाग, कूटछानकर कपड़े में बांधकर भग में रक्खे।

अन्य—उस गर्भाशय की पीड़ा को जो शीत से हो गुण करे—तिल मीठे तेल में पीसकर गुनगुना नाभि के नीचे लेप करे।

अन्य—गंदाबिरोजा, लौंग, बायबिड़ंग, लाहौरीनोन, नरकचूर थोड़ा थोड़ा लेकर मीठे तेल में पीसकर उसमें रुई भिगोकर रक्खे गर्भाशय को तरी से साफ करता है।

अन्य—गर्भाशय के व्रण को गुण करे—पहिले शहद से शाफा करे कि पीब और मल दूर हो जावे फिर माजू जल में औटाकर उस जल से भिगोकर शाफा करे कि सूख जावे और कुछ भी तरी भग में न रहे।

अन्य—हल्दी महीन पीसकर घृत में मिलाकर उसमें रुई भिगोकर शाफा बनावे और गर्भाशय पर्यन्त पहुँचावे गर्भाशय के शोथ को बिल्कुल नष्ट करे और बहुत गुण करे।

केसर का तेल—गर्भाशय की सख्ती को गलावे—पचास मिस्काल केसर साढ़े तीन रत्ती ले मीठे तेल में डाल कर पांच दिवस पर्यन्त रहने दे और हर रोज हिलाया मिलाया करे फिर सेवन करे।

शूल रोग का यत्न ।

वजे मुफासिल जोड़ों की पीड़ा को कहते हैं और नकरस पांव की उँगलियों की पीड़ा का नाम है और वजे उज्जहर पीठ और कमर की दर्द को कहते हैं और अरकुन्निसा को हिन्दी में रांघन कहते हैं और वह पीड़ा है कि चूतड़ से शुरू होती है और पांव की उँगलियों पर्यन्त पहुँचती है यद्यपि यह सब रोग बराबर मुंजिज और मुसिल के बिना नहीं जाते हैं परन्तु थोड़ी औषध सुगम कि जो गुणदायक है गरीबों के वास्ते लिखी जाती है—फस्द जो सब रोगों को नाश करे इन रोगों में बहुत गुण करे फस्द के पीछे जो दवा सेवन करे शीघ्र गुण करेगी। काढ़ा मुंजिज वजह वजे मुफासिल को गुण करे—सौंफ, कासनी के बीज, मकोय, परसियावसान दो दो टंक,सौंफ की जड़, कासनी की जड़, मुलहठी, कबर की जड़ दो दो मिस्काल, बाबूने के फूल, गुलकन्द तीन तोले औटाकर पिये।

चूर्ण—सोरंजान का चूर्ण जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और दोषों को निकाले मल के पकाने के उपरांत पांच दिन पर्यन्त सेवन करे—मीठा सोरंजान दश टंक, सनाय सात टंक, पीले हड़ की छाल चार टंक, तुरबुद सफेद खोखली की हुई तीन टंक बादाम की गिरी तीन टंक, मेंहदी के पत्ते दो टंक, केसर एक दाम कूटछानकर चूर्ण बनावे कंद औषधियों के तोल से आधी ले खूराक पांच टंक पर्यन्त ।

चीते की गोली—जो मुसिल है और जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—एलुवा दश टंक, पीले हड़ की छाल पांच टंक, बनाई हुई तुरबुद, सोरंजान, गूगल दो दो टंक सोंठ, चीत, राई, हिन्दी नोन, इन्द्रायन का परदा, मँजीठ एक एक दाम, अजवाइन, पीपल, कालीमिरच हर एक आधा टंक, कन्द तीन टंक, कूटछानकर गोलियाँ बनावे खूराक तीन टंक स्वभाव के अनुकूल यह गोलियां ठण्ढे स्वभाव वालों के योग्य हैं।

गूगल की गोली—जो जोड़ों के दर्द और घुटने और पीठ की पीड़ा को गुण करे—गूगल एक भाग, गुड़ दो भाग, बेर की बराबर गोलियां बनावे एक गोली थोड़े घृत के साथ निगल लिया करें इसका सेवन मुसिल लेने के पीछे चाहिये।

गोली—मुंसिल के उपरांत सेवन की जाती है जोड़ों की पीड़ा और कमर के दर्द और पीठ को गुण करे—काली और सफेद मूसली, पीपल, अजवाइन, पीपलामूल एक एक दाम, शतावर, विधारा, सोंठ, असगन्ध दो दो टंक

कूटछानकर गुड़ में मिलाकर जंगली बेर की बराबर गोलियां बनावे, खूराक स्वभाव के अनुकूल।

गोली–सम्पूर्ण शरीर की पीड़ा को जिसको हड़फूटन बोलते हैं गुणकरे–पीले हड़ की छाल, कालीहड़, सौंफ, कालीमिरच, पीपल, करंजुवे की गिरी, कालीजीरी एक एक भाग, दाख मुनक्के पांच भाग, कूटछानकर गोलियां बनावे, खूराक दो टंक।

शिगरफ की गोली–जोड़ों की पीड़ा और आतशक को गुण करे–शिगरफ, हल्दी, अजमोद, अकरकरा, नीम के पत्ते, अजवाइन, सम्भालू के पत्ते, इन्द्रायन की जड़, सरफोंका, असगन्ध, पाढ़ी, कालीमिरच, बकायन की जड़, मदार की जड़, भिलावाँ बराबर कूटछानकर बराबर गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे, खूराक एक टंक।

अन्य–शिगरफ, पारा, अफीम दो दो दांग, अजवाइन पांच दांग, भिलावें की टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़ पांच दांग, पारा और शिंगरफ मिलाकर पीसकर औषधियों को कूटछानकर अदरक के रस में खरल करके गोलियां बनावे और एक गोली खावे, इस बात का विचार रखना चाहिये कि शिंगरफ की गोली और पारे की गोली और सम्मुलफार के खाने के दिनों में खटाई, बादी, मांस और नोन से पथ्य करे और चावल दूध या चटनी या गेहूँ की रोटी बिना नोन के बहुत घी डालकर या चावल और दही खाया करे।

काढ़ा–वैद्य की रीति से कमर की पीड़ा को गुण करे–अंजीर की जड़ की छाल, सोंठ, धनियां बराबर लेकर जवकुट कर दश दाम लेकर एक रत्ती ले जल में रात को भिगोकर सुबह को औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर पिये।

हलुवा–कमर की पीड़ा को गुण करे–सोंठ, रेंड़ी की गिरी छः छः दाम, घी और शक्कर बारह बारह दाम गाय का दूध आध सेर पहिले रेंड़ी की गिरी पीसकर घी में भूने फिर दूध में मिलाकर औटावे जब गाढ़ा हो जावे शक्कर डालकर हलुवा बनावे, खूराक स्वभाव के अनुकूल खावे। चारदाना–जोड़ों की पीड़ा और कफ वात के रोगों को गुण करे–हालों, अजवाइन, कलौंजी, मेथी बराबर लेकर सुबह को एक चुटकीभर अर्थात् तीन

उँगलियों से जितनी उठे फांककर पानी के घूंट से निगल जावे। इस नुसखे को हातिमबदन कहते हैं।

माजून—जोड़ों की पीड़ा को सोरंजान दशटंक, सनाय पांच टंक, सोंठ, असारों, सफेद जीरा दो दो टंक, शहद सबके बराबर लेकर माजून बनावे, खूराक दो मिस्काल गरम जल से खाय।

औषध—कमर और जोड़ों की पीड़ा को जो गरमी से हो गुण करे—धनियां एक टंक, कन्द तीन टंक मिलाकर खावे और तीन टंक खशखाश, तीन टंक कन्द के साथ भी गुण करे।

चारदाना—जो ठंढी बीमारियों में सेवन करते हैं—मालकंगनी, पँवार के बीज, बावची, हालों बराबर मिलाकर रक्खे तीन माशे सुबह को पानी के साथ निगल जावे। यह औषध सफेद दाग को भी गुण करती है।

औषध—जोड़ों की पीड़ा और बाई की पीड़ा को गुण करे और कफ की निवृत्तिकारक और आरोग्यता की देनेवाली है—मालकंगनी लेकर पहिले दिन एक दाना निगले और हररोज एक दाना बढ़ाया करे जब सौ दाने तक पहुँचे एक एक कम करे इस अवसर कमी और जियादती में यह रोग नाश हो जावेगा और क्षुधा अधिक होगी, जो जियांदा करने के दिनों में गरमी मालूम हो अधिक न करे किन्तु उसी समय से एक एक कम करे।

अन्य—कमर की पीड़ा को गुण करे—करील की लकड़ी जलाकर दो माशे थोड़े घृत के साथ खावे।

अन्य—हाथ पांव के रहजाने को गुण करे और सदा के कब्ज को दूर करता है और जिस मनुष्य को कौलंजी हो उसको बहुत गुण करे—रेंड़ी छीलकर निगल जावे पहिले दिन एक दाना दूसरे दिन दो दाने इसी तरह एक एक अधिक करते रहें जब सात दाने तक पहुँचे एक एक दाना हररोज कम करें।

अन्य—बाई की पीड़ा को गुण करे—हररोज एक माशा भर रवासन के बीज खावे।

अन्य—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—खशखाश का पोस्ता अपने स्वभाव और बल के बराबर पानी में भिगो दे और इतना पिये कि नशा न हो।

अन्य—कलमीशोरा दो माशे, कतीरा छः रत्ती, एक दाम शहद में मिलाकर तीन दिन खावे और दो माशे मीठेतेल में मिलाकर कमर पर लगावे।

अन्य—शक्कर और खोपरा खाना कमर की पीड़ा को गुणदायक है।

अन्य—महुवे के बीज का तेल जो कोल्हू से निकालते हैं और घी की तरह पीला निकलता है जोड़ों पर मलना बाई की पीड़ा और जोड़ों की पीड़ा आदि को और शीत के रोगों को गुण करे।

अन्य—कमर की पीड़ा को गुण करे—रेंड़ी, लाहौरीनोन, मैदा लकड़ी एक एक तोला, हींग छः माशे, गेहूँ का आटा आधपाव सबको साथ पीसकर रोटी पकावे जब एक तरफ रोटी पक जावे पीड़ा की जगह पर बांधे।

फलवे का तेल—कन्द के वृक्ष के सदृश जरदी माइल होता है जो पहाड़ से लाते हैं उसको मुसिल के उपरान्त मलना जोड़ों की पीड़ा और बादी और कफ और शीत की पीड़ा को गुण करता है।

सम्भालू का तेल—उसका मलना जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—सम्भालू कूटकर उसका रस निचोड़कर उसकी बराबर मीठातेल में मिलाकर औटावे जब पानी जल जावे और तेलमात्र रहे छानकर गुनगुना पीड़ा पर मले और सम्भालू के पत्ते गरम करके उसपर बांधे।

बेदअंजीर का तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—अरण्ड की जड़ दो सेर आठ सेर जल में औटावे जब दो सेर रहे रेंड़ी के तेल में डालकर इतना औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहे मर्दन करें।

अन्य—जोड़ों की पीड़ा को गुणदायक—अलसी का तेल, सरसों का तेल, तिलों का तेल आध आध पाव, धतूरे के वृक्ष का रस कि पत्ती फल और जड़ समेत निकाला हो इन सब तेलों में डालकर मधुरी अग्नि पर जोश दे जब रस जलकर तेल शेष रहे छानकर पीड़ा पर मले उस पर अरण्ड या मदार के पत्ते बांधे।

मदार का तेल— वात को पचाता है और उसका मर्दन जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—अधकुचली मदार की जड़ कड़ुवे तेल में जलावे जब जलकर नीचे बैठ जावे तेल छानकर मले और केवल मदार के पत्ते गरम करके घुटनों की पीड़ा पर बांधना भी गुण करता है।

तेल—जोड़ों की पीड़ा और फालिज को जिसे बाई ने पकड़ा हो गुणदायक है—मीठा तेल पावभर, लहसुन आधपाव, भिलावें चार, लहसुन छिला हुआ और भिलावाँ मीठे तेल में जलावे जब राख हो जावे फिर छानकर सेवन करे और हवा से पथ्य करे।

इस्पन्द का तेल--कमर और पिंडली और पहलू की पीड़ा और रांघन को गुण करे–इस्पन्द मीठे तेल में जलावे और छानकर सेवन करे और बाजों के विचार में इस्पन्द के तेल की यह रीति है–इस्पन्द आठ दाम, सोंठ दो दाम रात को पानी में भिगो दे सुबह को आध सेर तिलों के तेल में औटावे जब पानी इस्पन्द और सोंठ जलकर तेल मात्र रहे छानकर मर्दन करे और बाजे इसमें कड़वी कूठ मिलाकर मलते हैं और बावची के तेल का मर्दन जो फालिज में बर्णन हुआ रांघन को गुण करे।

गोली–जोड़ों और पांव की उँगलियों की और रांघन की अधिक पीड़ा को गुण करे–चीत, अफीम दो दो टंक, काहू के बीज, अजवाइन दश-दश टंक कूटछानकर चिलगोजे की गिरी के बराबर गोलियां बनावे और एक गोली खावे।

अजवाइन का तेल–जो गठिया को गुण करता है–अजवाइन पीसकर मीठे तेल में मिलाकर मले।

तम्बाकू का तेल– जोड़ों के दर्द के वास्ते–तम्बाकू आध सेर, तिलों का तेल पावभर, तम्बाकू तोड़कर आधसेर पानी में रात को भिगोवे सुबह तम्बाकू का पानी तिलों के तेल में मिलाकर मधुरी अग्नि पर औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे साफ करके मले।

नाजबो का तेल–घुटने की पीड़ा को गुण करे– नाजबो की पत्तियों का पानी दो भाग, मीठा तेल एक भाग लेकर औटावे जब तेल रह जावे एक तोला भर चने का पानी जिसमें जीरा पकाया हो मिलाकर पिये और जोड़ पर भी मले।

चोबचीनी का तेल–जोड़ों की पीड़ा और पीठ की पीड़ा और उस पीड़ा को जो आतशक से पैदा हो गुण करे–अधकुचली चोबचीनी, मीठातेल दश दश मिस्काल पांच सेर जल में औटावे जब पानी जल जावे साफ करके सेवन करे।

चमगादर का तेल–जोड़ों की पीड़ा और बदन की ऐंठन और फालिज और कांपनी को गुण करे–चमगादर बड़ा मोटा मीठे तेल में औटावे जब चमगादर गल जावे साफ करके सेवन करे और इस तेल को लिंग के छिद्र में टपकाना मूत्र को भी जारी करता है।

मेहँदी का तेल–जोड़ों की पीड़ा को गुण करे–मेहँदी की पत्तियां चार

दाग पानी में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके आधा सेर मीठे तेल के साथ जलाकर सेवन करे।

तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—निर्माता का बनाया हुआ है मेहँदी के पत्ते, सम्हालू, नाजबो के पत्ते, धतूरे के पत्ते, मदार के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, मकोय के पत्ते बराबर लेकर उनका रस निकालकर और पत्तों की बराबर तिलों का तेल डालकर औटावे और इस्पन्द एक तोला, सोये के बीज एक तोला, अजवाइन छः माशे मिलावे जब यह औषध जलकर तेलमात्र रहे साफ करके पहिले अफीम दो माशे तेल में मिलावे फिर सोरंजान कड़वी एक तोला भर मिलाकर सेवन करे।

सोंठ का तेल—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और हवा को पचावे—अदरक का पानी चार भाग, मीठा तेल आधा भाग मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल रहे साफ करके गुनगुना मर्दन करे।

केवड़े का तेल—पीठ और जोड़ों की पीड़ा को गुण करे और ढीले जोड़ को सख्त करे—केवड़े का फूल मीठे तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रखकर मर्दन करे।

तितली का तेल—मलना पीठ और जोड़ों की पीड़ा को गुण करे।

बफारा—कंधे की पीड़ा के वास्ते—करंजुवा औटाकर बफारा ले और पत्ते बांधे और हवा से बचा रहे जिसको सर्दी पकड़ ले यह बफारा गुण करता है सिरस के पत्ते, सम्हालू के पत्ते सहँजने के पत्ते पानी में औटाकर बफारा ले और औषधियों को पानी से निकालकर जोड़ पर बांधे और हवा से बचा रहे।

बफारा—जोड़ों में गांठ पड़ जाने में और हर जोड़ की पीड़ा को गुण करे—सम्हालू की पत्तियां, सोये के बीज, इस्पन्द औटाकर बफारा ले।

औषध—जोड़ों की पीड़ा को गुण करे—धतूरे के पत्ते गरम करके बांधे।

लेप—पीठ और घुटने की पीड़ा को गुण करे—मैदा लकड़ी पीसकर गुनगुनी बांधे।

अन्य—घुटने की पीड़ा के वास्ते नींब की कोंपल और उसके अन्दर की छाल पीसकर उसका गहरा पानी लेकर गुनगुना लेप करे।

लेप—जोड़ों की पीड़ा और घुटने की पीड़ा और पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुण करे—नरमें की पत्तियां मीठे तेल में पीसकर लगावे।

अन्य–घुटने और जोड़ और कमर की पीड़ा को गुण करे–बिनौला कूट-कर थोड़े पानी में औटावे जब गल जावे पीसकर टिकिया बनाकर एक दिन मेंदो बेर जोड़ पर गुनगुना बांधे कई दिन में पीड़ा दूर हो जावे।

लेप—जोड़ की पीड़ा को गुण करे—गाय का ताजा गोबर सिरके में पका कर पीड़ा की जगह और सूजन पर बांधे।

लेप—घुटने की पीड़ा को गुण करे–कनेर की पत्तियां औटाकर कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य—बकरी की मेंगानियां दो भाग, जौ का आटा एक भाग, सिरके और अरण्ड के तेल में मिलाकर लेप करे।

लेप—पांव की उँगलियों की गरम पीड़ा को गुणदायक—बजरकुतूना सिरके में पकाकर लेप करे।

अन्य—गरम पांव की उँगलियों को गुणदायक है—काई लगावे और इसी प्रकार जौ का आटा और खतमी कूटछानकर लेप करना और शहद में मिला-कर लगाना ठंढे पांव की उँगलियों की पीड़ा को लाभ देता है।

अन्य—घुटने की पीड़ा को गुण करताहै—सहँजने के बीज पीसकर गुन-गुने लेप करे जो पुरानी घुटने की पीड़ा दूर हो जावे।

अन्य—कांटेदार थूहर को फाड़कर पीड़ा की जगह पर एक रात दिन बांधे रक्खे और कई दिन इसी प्रकार सेवन करे।

लेप—जोड़ों की पीड़ा के लिये छिलेतिल बाबूना एक एक तोला रेंड़ी की गिरी छ: माशे पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—सरकण्डे की जड़, सोंठ पीसकर मीठे तेल में मिलाकर गुनगुना मले और जो सरकण्डे की जड़ न हो तो नरकुल की जड़ काफी है।

लेप—पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुणकारक—अरण्ड के पत्ते औटा-कर पीसकर लेप करे।

अन्य—शिरपीड़ा को ठहरावे—लोबान पीसकर लगाकर सेंक करे पीड़ा दूर हो जावे।

लेप—घुटने की पीड़ा और रांघन को गुणदायक—साबुन मेहँदी में मिला-कर पानी में पीसकर लेप करे और बाजों ने इन्द्रायण मिलाना भी लिखा है।

लेप—घुटने की पीड़ा को गुण करे—मेहँदी की पत्तियां अरण्ड की पत्ती पीसकर गुनगुनी घुटने पर बांधे।

औषध–जो कमर और पीठ की पीड़ा को गुण करे–हुलहुल की छाल
सके ऊपर की स्याही दूर करके अन्दर की छाल लेकर छाया में सुखाकर
टकर पकावे और उसके बराबर शक्कर मिलाकर निहार मुँह पांच टंक
ौंफ के रस के साथ खावे ।

अन्य–पांव की उँगलियों की पीड़ा को गुण करे–बकरी की मेंगनियां
हद में मिलाकर लगावे ।

औषध–रांघन को गुण करे–सोंठ पाव भर महीन कूटछानकर उसमें
क तोला पारा खूब मिलाकर उससे थोड़ा लेकर मर्दन करे ।

लेप–बाई की पीड़ा को गुण करे–सहँजने की पत्तियां पानी में पीसकर
गुनी लेप करे ।

औषध–जोड़ की पीड़ा को जो शीत से होवे गुण करे–सोंठ, कायफल,
गन्ध बराबर पीसकर मर्दन करे ।

अन्य–उस कमर की पीड़ा को गुण करे जो कफ और वात से हो–रेड़ी,
हीरीनोन, मैदालकड़ी एक एक तोला, हींग छः माशे, गेहूँ का आटा आध-
सबको कूटछान मिलाकर रोटी बनावे, एक तरफ रोटी को तवे पर
कर गुनगुनी पीड़ा की जगह पर बांधे ।

लेप–पीड़ा और सूजन को गुण करे–अजवाइन कूटछान शहद में मिलाकर
करे ।

लेप–एँड़ी और तलुवे की पीड़ा को गुण करे–मसूर सिरके में पकाकर
ुना लेप करे ।

शरीर के प्रकट रोगों का वर्णन और आतशक का यत्न ।

यह रोग जले हुये मल से पैदा होता है चाहिये कि मुंजिज के उपरांत
र को कई बेर जले हुये दोषों से साफ करे और इस रोग का बहुधा
विषैली वस्तु है ठंढाई बहुत हानि करती है उससे गठिया हो जाता है
इलाज की रीति से रोगी मर जाता है चाहिये कि पहिले मुसिल ले
और औषध का सेवन करे ।

मुसिल–जो बिना खेद के मल को निकाले और आतशक को गुण करे–
गन्धक, आमलासार एक एक माशे, गेरू आधा माशा, जमाल गोटे की
सब्जी निकालकर तीन माशे, पहिले पारे और गन्धक को मिलाकर
करे फिर सम्पूर्ण औषध डालकर पानी में खरल करके टिकिया बना-

कर बर्तन में रखकर उसमें जल भरकर अग्नि पर रख दे जब सूख जावे निकालकर तीन रत्ती भर आधसेर दूध के साथ खावे।

दूसरा मुसिल—कफ और पित्त के मल को अच्छी तरह निकाले—पारा-आमलासार गन्धक एक एक टंक, सुहागा, चीत, कालीमिरच, सोंठ तीन तीन टंक, जमालगोटे की गिरी सब्जी दूर करके ग्यारह टंक, बासी पानी में एक पहर खरल करे, खूराक एक रत्ती से दो रत्ती पर्यन्त मिश्री के शरबत के साथ खाय।

गोली—मुसिल आतशक के लिये बनी हुई—जमालगोटा एक टंक, आमला चार टंक कूटछानकर नींबू के पानी में सात पहर खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक कौड़ी से तीन कौड़ी पर्यन्त रोगी के स्वभावानुकूल। अन्य लोगों का नुस्खा—बना जमालगोटा और काली हड़ एक एक भाग, आटा दो भाग, नीबू के पानी में खरल करके बंदूक की गोली के बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय।

अन्य—शोधी गंधक, शोधपारा, सुहागा, सोंठ, कालीमिरच, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर कूटछानकर गाय के दूध में पीसकर दो रत्ती की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली जल के साथ और गोली खाकर जितना जल पिये उतना ही मल गिरे, भोजन दही चावल का करे।

इन्दरायण का शरबत।

जो सौदावी मल को निकाले और आतशक वालों को गुणकारक है—इन्दरायण की छाल टुकड़े टुकड़े करके दो भाग दश हिस्से जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके औषध की तोल के बराबर शक्कर मिलाकर कवाम करे, खूराक बारह टंक से बीस टंक पर्यन्त करे।

औषध—आतशक के लिये—चाहिये कि पहले तीन दिन मुंजिज पिलाकर मुसिल दे—शहतरे के पत्तों का शीरा दो टंक, सौंफ डेढ़ टंक, गुलकन्द दो तोले मिलाकर पिये, चौथे दिन हब्बुलनील भूनकर कूटछानकर बराबर की शक्कर मिलाकर तीन दिन खावे, फिर यह हुक्का पिलावे—आधा दाम शिंगरफ महीन पीसकर एक दाम अफीम में मिलाकर नौ टिकियां बनावे और तीन दिन एक टिकिया सुबह एक दोपहर एक शाम को तम्बाकू की रीति पर बेर के कोयलों से मिट्टी के हुक्के में नरकुल के नैचे से पिये, जब टिकिया खूब जलजावे उसको कोयले सहित उसी हुक्के के अन्दर डाल दे और तीन

क्के से न निकाले और उसी हुक्के में पिया करे, भोजन केवल भूने चने की अलोनी रोटी तीन दिन तक, फिर चौथे दिन नरम खिचड़ी एक खावे उसके पीछे इख्तियार है कदाचित मुँह आये कचनार की छाल र कुल्ली करे।

ल—आतशक के वास्ते इन्द्रायन की जड़ आधपाव कूटकर दो सेर जल वे जब आध सेर शेष रहे मलकर साफ करके आध सेर रेंड़ी के तेल कर मधुरी अग्नि में औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे रक्खे और प्रभात को एक दाम के बराबर लेकर गौ के दूध में र पिये, भोजन मूँग की खिचड़ी दो तीन दिन में रोग दूर हो जावे ह दवा अतीसार के मल को निकालती है।

क—आतशक को गुण करे—बन्दाल के फल दो आध पाव जल में भिगो उसका साफ पानी पिये।

षध—आतशक को गुणकारक—दश टंक कोंच की पत्ती, पचास टंक पीसकर निहार सात दिन पर्यन्त खावे।

र्ग—आतशक के वास्ते आजमाया हुआ है—कटीला कूटछानकर पहिले माशा दूसरे दिन दो माशे इसी प्रकार हर रोज एक माशा अधिक त दिन पर्यन्त खावे फिर छोड़ दे, इसके असर से एक बेर कै और वेंगे और सिवाय खटाई के और कुछ इसमें पथ्य नहीं है।

म—आतशक को गुण करे—मदार की लकड़ी का कोयला पीसकर के उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो दाम घृत में मिलाकर सात वे, भोजन कलिया।

—आतशक को गुणदायक—अब्बासी के बीज जिसका पुष्प लाल हो वाहें भूनकर उसकी छाल दूर करके उसकी गिरी कूटछानकर की शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे और हररोज एक दाम ठण्ढे जल

—रसकपूर नौ माशे, इक्कीस कालीमिरचें कूटछानकर चूर्ण बनाकर करे एक भाग निकालकर छः भाग एक सुबह एक शाम बकरी के दूध के साथ खावे, भोजन सात दिन पर्यन्त दूध चावल फीके से नार की छाल, माजू, चमेली की पत्तियां, इस्पन्द के काढ़े से

कर बर्तन में रखकर उसमें जल भरकर अग्नि पर रख दे जब सूख जावे निकालकर तीन रत्ती भर आधसेर दूध के साथ खावे ।

दूसरा मुसिल—कफ और पित्त के मल को अच्छी तरह निकाले—पारा-आमलासार गन्धक एक एक टंक, सुहागा, चीत, कालीमिरच, सोंठ तीन तीन टंक, जमालगोटे की गिरी सब्जी दूर करके ग्यारह टंक, बासी पानी में एक पहर खरल करे, खूराक एक रत्ती से दो रत्ती पर्यन्त मिश्री के शरबत के साथ खाय ।

गोली—मुसिल आतशक के लिये बनी हुई—जमालगोटा एक टंक, आमला चार टंक कूटछानकर नींबू के पानी में सात पहर खरल करके चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक कौड़ी से तीन कौड़ी पर्यन्त रोगी के स्वभावानुकूल । अन्य लोगों का नुस्खा—बना जमालगोटा और काली हड़ एक एक भाग, आटा दो भाग, नीबू के पानी में खरल करके बंदूक की गोली के बराबर गोलियां बनावे खूराक एक गोली खाय ।

अन्य—शोधी गंधक, शोधपारा, सुहागा, सोंठ, कालीमिरच, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर कूटछानकर गाय के दूध में पीसकर दो रत्ती की बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली जल के साथ और गोली खाकर जितना जल पिये उतना ही मल गिरे, भोजन दही चावल का करे ।

इन्द्रायण का शरबत ।

जो सौदावी मल को निकाले और आतशक वालों को गुणकारक है—इन्द्रायण की छाल टुकड़े टुकड़े करके दो भाग दश हिस्से जल में औटावे जब तृतीयांश शेष रहे साफ करके औषध की तोल के बराबर शक्कर मिलाकर कवाम करे, खूराक बारह टंक से बीस टंक पर्यन्त करे ।

औषध—आतशक के लिये—चाहिये कि पहले तीन दिन मुंजिज पिलाकर मुसिल दे—शहतरे के पत्तों का शीरा दो टंक, सौंफ डेढ़ टंक, गुलकन्द दो तोले मिलाकर पिये, चौथे दिन हब्बुलनील भूनकर कूटछानकर बराबर की शक्कर मिलाकर तीन दिन खावे, फिर यह हुक्का पिलावे—आधा दाम शिंगरफ महीन पीसकर एक दाम अफीम में मिलाकर नौ टिकियां बनावे और तीन दिन एक टिकिया सुबह एक दोपहर एक शाम को तम्बाकू की रीति पर बेर के कोयलों से मिट्टी के हुक्के में नरकुल के नैचे से पिये, जब टिकिया खूब जलजावे उसको कोयले सहित उसी हुक्के के अन्दर डाल दे और तीन

दिन हुक्के से न निकाले और उसी हुक्के में पिया करे, भोजन केवल भूने चने या चने की अलोनी रोटी तीन दिन तक, फिर चौथे दिन नरम खिचड़ी एक दो दिन खावे उसके पीछे इख्तियार है कदाचित मुँह आये कचनार की छाल औटाकर कुल्ली करे।

तेल—आतशक के वास्ते इन्द्रायन की जड़ आधपाव कूटकर दो सेर जल में औटावे जब आध सेर शेष रहे मलकर साफ करके आध सेर रेंड़ी के तेल में मिलाकर मधुरी अग्नि में औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र शेष रहे शीशे में रक्खे और प्रभात को एक दाम के बराबर लेकर गौ के दूध में मिलाकर पिये, भोजन मूँग की खिचड़ी दो तीन दिन में रोग दूर हो जावे और यह दवा अतीसार के मल को निकालती है।

कल्क—आतशक को गुण करे—बन्दाल के फल दो आध पाव जल में भिगो दे सुबह उसका साफ पानी पिये।

औषध—आतशक को गुणकारक—दश टंक कौंच की पत्ती, पचास टंक जल में पीसकर निहार सात दिन पर्यन्त खावे।

चूर्ण—आतशक के वास्ते आजमाया हुआ है—कटीला कूटछानकर पहिले दिन एक माशा दूसरे दिन दो माशे इसी प्रकार हर रोज एक माशा अधिक करके सात दिन पर्यन्त खावे फिर छोड़ दे, इसके असर से एक बेर कै और दस्त आवेंगे और सिवाय खटाई के और कुछ इसमें पथ्य नहीं है।

अन्य—आतशक को गुण करे—मदार की लकड़ी का कोयला पीसकर साफ करके उसके बराबर शक्कर मिलाकर दो दाम घृत में मिलाकर सात दिन खावे, भोजन कलिया।

अन्य—आतशक को गुणदायक—अब्बासी के बीज जिसका पुष्प लाल हो जितना चाहें भूनकर उसकी छाल दूर करके उसकी गिरी कूटछानकर बराबर की शक्कर मिलाकर चूर्ण बनावे और हररोज एक दाम ठण्ढे जल से खावे।

अन्य—रसकपूर नौ माशे, इक्कीस कालीमिरचें कूटछानकर चूर्ण बनाकर सात भाग करे एक भाग निकालकर छः भाग एक सुबह एक शाम बकरी या गाय के दूध के साथ खावे, भोजन सात दिन पर्यन्त दूध चावल फीके से फिर कचनार की छाल, माजू, चमेली की पत्तियां, इस्पन्द के काढ़े से

गरगरा अर्थात् कुल्ली करे फिर बकरे का शिर और पांव औटाकर कुल्ली करे।

अन्य—पीले हड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, काबिली हड़, लाल मिरच दो-दो मिस्काल, पारा सात मिस्काल, शक्कर सोलह मिस्काल कूट-छानकर खूराक बनाकर सेवन करे।

अन्य—आतशक दूर करे—पीले हड़ की छाल, काली हड़ की छाल, भुना तूतिया, जली पीली कौड़ी बराबर लेकर नींबू के रस के साथ लोहे के बर्तन में सोलह पहर खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर हर रोज एक गोली पान में पंद्रह दिवस पर्यन्त खावे और थोड़ी गोली को पीस-कर कागज पर रख घाव पर लगावे जो मुँह आवे कचनाल की छाल औटाकर कुल्ली करे।

गोली—आतशक को नाश करे—हरी तुलसी की पत्तियां चार टंक, सब्ज तूतिया एक दाम पीसकर बेर के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सुबह को गरम पानी के साथ भोजन बे घी की खिचड़ी खाय।

संखिये की गोली—आतशक के लिये—कत्था, संखिया, इलायची के दाने, खड़ियामिट्टी बराबर ले जो हो सके तो गुलाब नहीं तो पानी में खूब पीस-कर जुवार के बराबर गोलियां बनाकर बारह दिन तक रोज एक गोली खावे जो निर्बलता सूचित हो एक दिन बीच देकर खावे भोजन गहरी चीज और बादी और चौपायों के मांस और खटाई से बिल्कुल पथ्य रक्खे और नोन भी कम खावे और गेहूँ की रोटी और गाय का घी और मूँग की दाल खावे।

गोली—आतशक की नाशकारक—मदार की जड़ पांच टंक, कालीमिरच अढ़ाई दाम कूटछानकर गुड़ में मिलाकर जुवार के बराबर गोलियां बना-कर एक सुबह एक शाम खावे खटाई और बादी से पथ्य करे।

दूसरी गोली—कालीहड़ चार दाम, कालीमिरच एक दाम, सब्ज तूतिया चौथाई दाम, कागजी नींबू के रस में खरल करके जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक सुबह और एक शाम कागजी नींबू के रस के साथ चालीस दिन निगल जाया करे भोजन मूंग की दाल और जो गोली खाने के समय कण्ठ में जलन मालूम हो थोड़ा दही खा ले और

बाजे नुस्खों में जंगी हड़ वीस तोला, तूतिया एक तोला भर लिखा है और कालीमिरच नहीं है ।

संखिये की गोली—संखिया एक टंक, कत्था पांच टंक, भँगरे के पानी में चने की बराबर गोलियां बनाकर पहिले दिन एक गोली सुबह और एक शाम खावे और जो हवा ठण्ढी और रोगी बलवन्त हो तीसरे दिन दो गोली सुबह और दो शाम चौदह दिन पर्यन्त इसी तरह खावे और यदि सम्भव हो इक्कीस दिन पर्यन्त सेवन करे और जो रोगी निर्बल और वायु गरम हो तो एक गोली सुबह और एक शाम खावे और जो गोलियों के खाने से मतली और कै होवे पान बहुत खावे और खूब परहेज करे ।

पारे की गोली—गुदा के व्रण और आतशक को गुण करे–पारा अढ़ाई टंक, मस्तगी, लाल शक्कर तीन-तीन टंक, कुन्दर पांच टंक, शिगरफ दो टंक पहिले पारे को थूक में मिलाकर उँगली से खूब साने कि टुकड़े उसके अलग हो जावें फिर आधी शक्कर उसमें डालकर मले जब पारा शक्कर में मिलकर खूब मिल जावे थोड़ा थूक और बाकी शक्कर डालकर खूब मले इसी तरह से हर दवा अलग कूटछानकर गुड़ औषधियों की बराबर लेकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक टंक हर रोज एक सप्ताह पर्यन्त खावे ।

दूसरी गोली—पारे की, आतशक के वास्ते–पारा, कत्था, बायबिड़ंग, अजवाइन, कालीमिरच, महुवे के फूल एक-एक भाग कूटछानकर औषधियों के बराबर लेकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली सुबह और एक शाम को जल के साथ खावे, भोजन गेहूँ की रोटी ।

अन्य—पारा, अकरकरा, अजवाइन, मोचरस छ: छ: माशे मिलावे सात माशे गुड़, औषधियों के बराबर तिल मिलावे कि तौल के बराबर कूटछानकर गुड़ में मिलाकर चौदह गोलियां बनावे, एक गोली सुबह और एक गोली शाम दही के साथ खावे ।

अन्य—जोड़ों की पीड़ा के वास्ते जो आतशक के कारण होवे गुणदायक और आतशक को भी गुण करे–पारा, खुरासानी, अजवाइन, भिलावाँ की टोपी दूर करके, अजमोद, इस्पन्द तीन तीन माशे, गुड़ दो दाम कूटछानकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर हररोज एक सुबह एक शाम कंठ में रखकर पानी से इस तरह से निगल जावे कि दांतों पर न पहुँचे, भोजन

खिचड़ी और दाल पके चावल और गेहूँ की रोटी, खटाई और बादी से पथ्य करे, पांच दिन में रोग दूर हो जावे और मुँह आवे कुल्ली करे मुसिल के पीछे खाना अधिक गुण करे।

अन्य—आतशक को गुण करे—हरे रूसे की जड़ की छाल पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर घृत के साथ खावे।

अन्य—आतशक दूर करे—अजवाइन की भूसी, सरसों, कालीमिरच एक एक दाम कूटछानकर गोलियां बनाकर खावे, इस औषध में कुछ पथ्य नहीं है।

गोली—आतशक को गुण करे—सादी अजवाइन खुरासानी, भिलावाँ बराबर एक दाम लेकर भँगरे के रस में कजली करके सुखावे और उसके बराबर गुड़ मिलाकर एक दाम के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज एक सप्ताह बहुत दो सप्ताह तक खावे और जो मुँह आवे कचनार की छाल से कुल्ली करे।

शिगरफ की गोली—आतशक और जोड़ों की पीड़ा को जो आतशक के कारण हो गुण करे—शिगरफ, अफीम, पारा दो-दो दांग, अजवाइन पांच दाग, भिलावाँ टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़ पांच दांग, पारा और शिगरफ मिलाकर सम्पूर्ण औषध कूटछानकर मिलावे और सम्पूर्ण औषधियों को अदरक के रस में खरल करके सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावे।

पारे की गोली—आतशक को गुणकारक—पापड़िया कत्था एक बहलोली भर, पारा चार माशे, तीन बरस का पुराना गुड़ तीन बहलोली, तीनों औषध पीस मिलाकर सात गोलियां बनाकर सेवन करे।

अन्य—आतशक को गुण करे और वीर्य को बलकारक भी है—पारा, गन्धक, हरताल, सुहागा एक एक टंक, कालीमिरच दो टंक, कूटछानकर नींबू के रस में मिलाकर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय।

अन्य—आतशक को गुण करे—पारा, अजवाइन, काली मूसली दो दो टंक, भिलावाँ एक टंक, गुड़ सोलह टंक, ग्यारह गोलियां बनाकर हर रोज एक गोली दही के साथ खावे।

काढ़ा—आतशक के वास्ते अजमाया हुआ है मुँह नहीं लाता और परहेज़

भी इसमें नहीं है जो परहेज करे तो कलिया भात खावे शीघ्र ही आतशक को खो देता है—कचनार की छाल, इन्द्रायन की जड़, बबूल की फली, छोटी कटाई जड़ और पत्तों समेत, पुराना गुड़ आध आध पाव, तीन सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहे साफ करके शीशे में रक्खे और सात खुराक करे ईश्वर चाहे शीघ्र ही रोग नाश हो जावेगा।

अन्य—सिरस की छाल, बबूल की छाल, नींबू की छाल सवा सेर सबको सात लोटे जल में औटावे जब लोटा भर शेष रहे साफ करके शीशे में रक्खे और हर रोज आध पाव पिये और एक सप्ताह पर्यन्त चने की रोटी भोजन करे।

औषध—आतसक को गुणदायक—बरगद के पत्ते जलाकर उसकी राख दो कौड़ी के बराबर पान में खावे आतशक जो शेष रही हो दूर हो जावे।

अन्य—हुलहुल की पत्तियां पीसकर भंग की तरह पिये और उसका फोग व्रण पर बांधे।

अन्य—आतशक को गुण करे—बरगद की छाल, हरफारेबड़ी की छाल पांच टंक, कालीमिरच तीन टंक, पचास दाम पानी में पीसकर चौदह दिन तक खावे।

अन्य—हंसराज जो एक घास है पत्ते, बीज, डाली और जड़ समेत जलाकर उसकी छः माशे भर राख हर रोज एक तोला भर शहद या गुड़ मिलाकर सात दिन पर्यन्त खावे।

अन्य—आतशक को गुणदायक—कसौंधी की पत्तियां पांच टंक, कालीमिरच एक टंक दोनों को पीसकर पिये और बिना नोन भोजन करे।

अन्य—आतशक को गुणदायक—रोग के प्रारम्भ में बड़ी कंघी के वृक्ष की पत्तियां एक दाम लेकर पानी में भिगोकर उसका जल बीस दिन पर्यन्त पिये।

बफारा—आतशक को गुण करे—खुरासानी अजवाइन अढ़ाई माशे, शिंगरफ पांच माशे तूतिया दो रत्ती, अकरकरा पांच माशे, मदार की छाल दश माशे कूटछानकर बेर की लकड़ी की आग पर रखकर उसका धुंवां ले।

बफारा—आतशक—खुरासानी अजवाइन, झूँझर की फली, अकरकरा, मुरदारसंग एक माशा पीसकर बेर की लकड़ी से जलाकर धुंवां ले।

हुक्का—आतशक दूर करे—सिंगरफ, सब्जतूतिया अढ़ाई अढ़ाई दाम,

खिचड़ी और दाल पके चावल और गेहूँ की रोटी, खटाई और बादी से पथ्य करे, पांच दिन में रोग दूर हो जावे और मुँह आवे कुल्ली करे मुसिल के पीछे खाना अधिक गुण करे।

अन्य—आतशक को गुण करे—हरे रूसे की जड़ की छाल पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर घृत के साथ खावे।

अन्य—आतशक दूर करे—अजवाइन की भूसी, सरसों, कालीमिरच एक एक दाम कूटछानकर गोलियां बनाकर खावे, इस औषध में कुछ पथ्य नहीं है।

गोली—आतशक को गुण करे—सादी अजवाइन खुरासानी, भिलावाँ बराबर एक दाम लेकर भँगरे के रस में कजली करके सुखावे और उसके बराबर गुड़ मिलाकर एक दाम के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली रोज एक सप्ताह बहुत दो सप्ताह तक खावे और जो मुँह आवे कचनार की छाल से कुल्ली करे।

शिगरफ की गोली—आतशक और जोड़ों की पीड़ा को जो आतशक के कारण हो गुण करे—शिगरफ, अफीम, पारा दो-दो दांग, अजवाइन पांच दाग, भिलावाँ टोपी दूर करके सात दांग, पुराना गुड़ पांच दांग, पारा और शिगरफ मिलाकर सम्पूर्ण औषध कूटछानकर मिलावे और सम्पूर्ण औषधियों को अदरक के रस में खरल करके सात गोलियां बनाकर एक गोली रोज खावे।

पारे की गोली—आतशक को गुणकारक—पापड़िया कत्था एक बहलोली भर, पारा चार माशे, तीन बरस का पुराना गुड़ तीन बहलोली, तीनों औषध पीस मिलाकर सात गोलियां बनाकर सेवन करे।

अन्य—आतशक को गुण करे और वीर्य को बलकारक भी है—पारा, गन्धक, हरताल, सुहागा एक एक टंक, कालीमिरच दो टंक, कूटछानकर नींबू के रस में मिलाकर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय।

अन्य—आतशक को गुण करे—पारा, अजवाइन, काली मूसली दो दो टंक, भिलावाँ एक टंक, गुड़ सोलह टंक, ग्यारह गोलियां बनाकर हर रोज एक गोली दही के साथ खावे।

काढ़ा—आतशक के वास्ते अजमाया हुआ है मुँह नहीं लाता और परहेज़

भी इसमें नहीं है जो परहेज करे तो कलिया भात खावे शीघ्र ही आतशक को खो देता है—कचनार की छाल, इन्द्रायन की जड़, बबूल की फली, छोटी कटाई जड़ और पत्तों समेत, पुराना गुड़ आध आध पाव, तीन सेर पानी में औटावे जब चतुर्थांश रहे साफ करके शीशे में रक्खे और सात खुराक करे ईश्वर चाहे शीघ्र ही रोग नाश हो जावेगा।

अन्य—सिरस की छाल, बबूल की छाल, नींबू की छाल सवा सेर सबको सात लोटे जल में औटावे जब लोटा भर शेष रहे साफ करके शीशे में रक्खे और हर रोज आध पाव पिये और एक सप्ताह पर्यन्त चने की रोटी भोजन करे।

औषध—आतसक को गुणदायक—बरगद के पत्ते जलाकर उसकी राख दो कौड़ी के बराबर पान में खावे आतशक जो शेष रही हो दूर हो जावे।

अन्य—हुलहुल की पत्तियां पीसकर भंग की तरह पिये और उसका फोग व्रण पर बांधे।

अन्य—आतशक को गुण करे—बरगद की छाल, हरफारेबड़ी की छाल पांच टंक, कालीमिरच तीन टंक, पचास दाम पानी में पीसकर चौदह दिन तक खावे।

अन्य—हंसराज जो एक घास है पत्ते, बीज, डाली और जड़ समेत जलाकर उसकी छः माशे भर राख हर रोज एक तोला भर शहद या गुड़ मिलाकर सात दिन पर्यन्त खावे।

अन्य—आतशक को गुणदायक—कसौंधी की पत्तियां पांच टंक, कालीमिरच एक टंक दोनों को पीसकर पिये और बिना नोन भोजन करे।

अन्य—आतशक को गुणदायक—रोग के प्रारम्भ में बड़ी कंघी के वृक्ष की पत्तियां एक दाम लेकर पानी में भिगोकर उसका जल बीस दिन पर्यन्त पिये।

बफारा—आतशक को गुण करे—खुरासानी अजवाइन अढ़ाई माशे, शिगरफ पांच माशे तूतिया दो रत्ती, अकरकरा पांच माशे, मदार की छाल दश माशे कूटछानकर बेर की लकड़ी की आग पर रखकर उसका धुंवां ले।

बफारा—आतशक—खुरासानी अजवाइन, झूंझर की फली, अकरकरा, मुरदारसंग एक माशा पीसकर बेर की लकड़ी से जलाकर धुंवां ले।

हुक्का—आतशक दूर करे—सिंगरफ, सब्जतूतिया अढ़ाई अढ़ाई दाम,

बायबिड़ंग पांच माशे मदार की जड़ की छाल दश माशे, जो स्वभाव बलवान् हो बीस माशे कूटपीसकर छः टिकियां बनावे और पानी बिना हुक्के में बेर की लकड़ी की आग से तम्बाकू के सदृश पिये और उसका धुंवां व्रण पर ले और उसका गुल कि राख के सदृश होजावे थूक में मिलाकर तीन दिन सुबह शाम घाव पर मले, भोजन रोटी घृत शक्कर के साथ, चाहिये कि इस औषध के सेवन के पहिले जुलाब ले।

अन्य—शिंगरफ, अकरकरा, नीम का गोंद, माजू, सुहागा एक एक दाम सम्पूर्ण औषध जवकुटकर सात पुड़ियां बनाकर एक पुड़िया चिलम में रखकर बेर की अग्नि से पिये जब उसका एक तरफ जल जावे उसकी दूसरी तरफ जलाकर पिये यदि इस अवसर में कै आवै कुछ हानि नहीं, इस तरह एक दिन में दो तीन पुड़ियां सुबह दोपहर, शाम को सेवन करे और उसकी राख घाव पर छिड़के, भोजन मोहनभोग करे शक्करतरी के साथ तीन रोज यह क्रिया करे बहुत है, जो मुंह आये चमेली की पत्तियां औटाकर कुल्ली करे।

औषध—आतशक को गुणकारक—करंजुवे की हरी पत्तियां, नीम की पत्तियां पन्द्रह पन्द्रह माशे, कालीमिरचें साढ़े सात माशे, पत्तियों का रस निकालकर चोबचीनी चार माशे पीसकर छिड़के इसी तरह सात दिन पिये, भोजन में नोन न खावे।

अन्य—गरमी को गुण करे—शिंगरफ, फिटकरी, इस्पन्द अजवाइन एक एक टंक सबको पीसकर आधा आधा टंक दोनों समय चिलम में रखकर तम्बाकू के सदृश बेर की अग्नि से पिये और बन्द मकान में जहां बदन को हवा न पहुँचे रहे, तेल और नोन से पथ्य करे और सूखी रोटी खावे।

अन्य—आतशक को दूर करे—स्त्री की ऋतु से रुधिर का कपड़ा जलाकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर बेर की बराबर गोलियां बनावे, हर रोज सुबह को एक गोली खावे भोजन चावल या रोटी—नोन, खटाई से पथ्य करे।

अन्य—आतशक के लिये—रसकपूर, शिंगरफ छः छः माशे, सब्ज तूतिया साढ़े तीन माशे, सफेद मोम दो दाम, गाय का घी चार दाम, कपड़ा चार गिरह, नीम की पत्तियों की टिकिया—पहले टिकिया को तेल में पकाकर दूर करे फिर मोम डाले जब वह गल जावे बर्तन को नीचे उतारकर रसकपूर डालकर हलकरे फिर सिंगरफ पीसकर मिलावे फिर तूतिया डालकर मोम जमा करके छः बत्तियां बनावे और अपने को चादर से छिपाकर एक बत्ती

लेकर बेर की लकड़ी की आग से धुवां ले भोजन तीन दिवस पर्यन्त दूध चावल खावे।

मरहम—आतशक को गुण करे—रसकपूर, काशगरी सफेदा हर एक सात माशे, छोटी इलायची के दाने साढ़े तीन माशे घृत में हल करके मरहम बनावे।

मरहम—कत्था दो माशे, संग जराहत एक माशा, तूतिया एक चने के बराबर, जलीछालिया एक, घी आवश्यकता के अनुकूल लेकर एक सौ एक बेर धोवे फिर ओषधियों में मिलाकर मरहम बनाकर घाव में रक्खे, जो पीली कौड़ी जलाकर मिलावे उत्तम है।

अन्य—इक्कीस मदार के पत्ते, सरसों का तेल आधपाव, सात सात पत्ते तीन बेर तेल में जलाकर राख करे, फिर मोम छः टंक मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य—आतशक को गुण कारक—कीमुख्त जलाकर, तूतिया, पीली कौड़ी जलाकर, बराबर कूटछानकर छिड़के।

अन्य—कत्था सफेद, पुरानी सुपारी अढ़ाई अढ़ाई दाम, जंगार एक दाम सम्पूर्ण ओषधियों को एक दाम जल में पीस कर कागज पर लगाकर जलावे और उसकी राख लेकर घाव पर छिड़के।

अन्य—पुराने जूते का चमड़ा, मसूर, चने जलाकर पीसकर छिड़के।

अन्य—पीलीहड़, सुहागा, आमला सबको जलाकर पीसकर घावपर बांधे।

कोढ़ का यत्न।

यह रोग सौदावी है जब दृढ़ हो जाता है आराम नहीं होता आरम्भ में फस्द और मुसिल लेना उचित है चाहिये कि हर महीने में मुसिल ले और खेद चिन्ता और जागने से पथ्य करे और जो खुश्की अधिक हो तो चीजें कि असली रतूबत को पचाती हैं उनसे पथ्य करे और कोढ़ी के लिये उत्तमोत्तम भोजन बकरी का दूध है। बच्छनाग की माजून—यह नुस्खा कोढ़ी के लिये वैद्यों का जारी किया हुआ है—कालीहड़, चीता दश दश टंक, कालीमिरच पांच टंक, बच्छनाग अढ़ाई टंक कूटछानकर गाय के घी में भूनकर दुगुना शहद मिलाकर माजून बनावे, खूराक एक मिस्काल है दो टंक पर्यन्त या एक मिस्काल खाय।

लाभ—हिन्दूओं का आजमाया हुआ है जो हरतालका कुश्ता चालीस दिन

खाना कोढ़ को गुण करता है—हरतालके मारने की यह रीति है—हरताल एकदाम, करंजुवा, फिटकरी दो दो दाम पहिले आधे करंजुवे की गिरी अधकुचली करके सकोरे में रक्खे उस पर आधी फिटकरी कूटकर बिछावै फिर उसपर हरताल डाले बाकी आधी करंजुवे की गिरी और फिटकरी कूटकर हरतालपर बिछा दे और कपरौटी करके सात सेर जंगली कंडे में रखकर आग दे जब ठण्ढा हो जावे निकालकर आधीरत्ती हररोज पान में खाय, पचास दिन में रोग नाश हो जावे।

दूसरी रीति—एकदाम हरताल अंडे की सफेदी में मिलाकर गोली बनाकर सकोरे में रक्खे ऊपरसे एक सकोरा ढांककर कपरौटी करके सुखावे और चार पहर आग में रक्खे कुश्ता हो जावेगा।

नीम का चूर्ण—कोढ़ को गुण करे—पुरानी नीमके फूल, पत्तियां, फल छाल, जड़ आध आध सेर, कालीमिरच, पीलेहड़ की छाल बहेड़े की छाल, आमला, बावची पाव पाव भर कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक दो टंक से चार टंक पर्यन्त मंजीठ के काढ़े के साथ चार महीने पर्यन्त सेवन करे, मांस, नोन और गरम चीजों से पथ्य करे।

पारे की गोली—कोढ़ को गुणकारक और आजमाई हुई है—पारा दो टंक, संखिया एक टंक, कुन्दर छः टंक, रेवबन्दचीनी तीन टंक, बबूल का गोंद दो टंक पारे को कुश्ता करके सम्पूर्ण औषधियों को नींबू के रस में खरल करे फिर कुश्ता और सात बहेड़े के पत्ते उसमें मिलाकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खावे, खटाई से पथ्य करे।

काढ़ा—कोढ़ को गुणदायक—शाहतरा, असगंध, ब्रह्मदण्डी, पीलीहड़ की छाल बराबर लेकर दो तोले की बराबर रातको पानी में भिगोकर सुबह मलकर साफ करके पिये।

चूर्ण—कोढ़ और रुधिर के वेग को गुण करे—हिंगोट की छाल कूटछानकर हर सुबह एक तोला पानी के साथ खावे, खटाई बादी और नोन से पथ्य करे, दो सप्ताह में अच्छी तरह गुण करेगा।

काढ़ा—कोढ़ को गुण करे—चने की भूसी आधपाव सेर भर जल में भिगोकर सुबह मलकर छानकर इसी रीति से एक महीना उन्नीस दिन पर्यन्त पिये, चावल, दूध, दही और जो चीज सफेद हो और खटाई से भी पथ्य करे

मांस और गुड़ और शक्कर जो इनमें से मिल जावे खावे जो कुछ रोग बाकी रहजावे और थोड़े दिन पिये ।

औषध—कोढ़ को गुण करे—पानी की मस्ती के वक्त नीम के वृक्ष से टपकता है लेकर शरीर में मले ।

अन्य—सरफोंके के अरक का सेवन करना कोढ़ को गुण करे ।

अन्य—नींबू के फूलों का अरक कोढ़ को गुण करे ।

अन्य—कोढ़ को गुण करे— विजयसार की लकड़ी एक दाम कूटकर पानी में भिगोकर हररोज इसीतरह से चालीस दिन पिये ।

अन्य—मेहँदी की पत्तियां तीन मिस्काल रात को पानी में भिगो दे, सुबह मलकर साफ करके थोड़ी शक्कर मिलाकर इसी तरह से चालीस दिन तक पिये ।

औषध—कोढ़ को गुण करे—सिरसकी पत्तियां पक्की एकदाम, कालीमिरचें दो माशे हररोज पानी में पीसकर चालीस दिन पिये ।

अन्य—कोढ़ को गुण करे—बबूल की छाल दो दाम अधकुचली करके पानी में भिगो दे सुबह मलकर साफ करके हररोज इसी तरह से पिये ।

शीशम का शरबत ।

रुधिर के उपद्रव के सम्पूर्ण रोगों, कोढ़ और गरमी को गुण करे—शीशम का बुरादा पावभर नदी के तीन सेर जल में आठ पहर भिगोकर सुबह औटावे जब आधा शेष रहे तीन पाव शक्कर में कवाम करे, खूराक छः तोले हर सुबह और शाम इस रीति से कि शीशम की लाल लकड़ी का बुरादा आधा दाम लेकर आधपाव जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके वही शरबत मिलाकर पिलावे चालीस दिन इसी प्रकार सेवन करे, खटाई दूध दही और तरकारी आदि से पथ्य करे ।

औषध—कोढ़ को गुण करे—समन्दरफल दरख्त की छाल कूटछानकर हर सुबह एक तोला भर पानी के साथ तीन दिन खावे और तीन दिन नागा करे। इसी प्रकार इक्कीस दिवस पर्यन्त खावे और इस अवसर में मूंग की दाल और खिचड़ी भोजन करे पहिले दिनों में कै होगी कई दिनों के पीछे कै आना बन्द हो जावेगा ।

औषध—नीम की पत्तियों का नोन कोढ़ खुजली और दाद को गुण करे ।

लाभ—बहुत कोढ़ वालों को देखा है कि रोग में शुरू उन्होंने अफीम और पोस्ता खाने की आदत डाली रोग शान्त हो गया।

शरबत—झाऊ की जड़ का काढ़ा इस रोग को दूर करने में लाल गंधक का काम करता है और साहब तजकिरै दाऊदी ने आजमाकर लिखा है कि यह औषध कोढ़ और सफेद दाग को गुण करे—नीम की पत्तियां और उसके बराबर काले तिल, लाहौरी नोन लेकर पुराना गुड़ सब औषधियों की बराबर मिलाकर हररोज पांच टंक खावे।

शिर के गंज का यत्न।

वह शिर का व्रण है जो पीव और खुरंट के साथ होता है इस रोग की उत्पत्ति सौदा से है लड़कपन में जो तरी अधिक होती है जवानी के शुरू पर्यन्त अपना बल करती है।

यत्न—जोंकें लगाना गुणकारी है।

औषध आजमाई हुई—आमला जलाकर पावभर, खशखाश का पोस्ता जला हुआ आध पाव, मेहँदी, कमीला चार चार दाम, तूतिया, भुना सुहागा, भुजवे के छप्पर का धुवां, भट्टी की राख एक एक दाम कूटछानकर सरसों के तेल में मिलाकर लेप करे—पत्तों का तेल, गंज को गुणदायक—बिसखपरे के पत्ते, फर्राश के पत्ते, नीम के पत्ते, चमेली के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, बकायन के पत्ते और फल दो दो तोले पीसकर टिकिया बनाकर पाव भर मीठे तेल में जलावे फिर एक माशा तूतिया, मेहँदी की पत्तियां, मुरदारसंग, भुना सुहागा, जली हल्दी, कत्था बावची, आमला जला हुआ, कालीमिरच छः माशे पीसकर तेल में जला कर नीम की लकड़ी से हल करके सेवन करे।

गधे की लीद का तेल।

शिर के गंज को गुण करे–गधे की लीद आधी सूखी गढ़े में रखकर थोड़े थोड़े कोयले डालकर जलावे और उसके ऊपर कांसे की ऐसी थाली जिसके कि किनारे उलटे हुये हों इस तरह इस गढ़े पर रक्खे कि किनारे उसके दो उंगल उठे रहें कि लीद का बुखार उस थाली में जमा हो उसको लेकर मले।

अन्य—गंज को गुण करे–सररानी आधी भुनी आधी कच्ची पीसकर कडुवे तेल में मिलाकर लगावे।

औषध–शिर के गंज को गुण करे—मेहँदी की पत्तियां चार तोला, बावची मुरदारसंग, कमीला, कत्था, सुहागा दो दो तोले, तूतिया तीन माशे कूटछानकर कड़ुवे तेल में मिलाकर मले।

लेप—शिर के गंजे को गुण करे—हल्दी छः दाम, तूतिया सब्ज तीन दाम, आध पाव मीठे तेल में जलाकर पीसकर लेप करे।

लेप—काबिली हड़ की छाल, कत्था, जीरा, कायफल एक एक टंक, तूतिया सब्ज आधा टंक कूटछानकर लेप करे।

औषध–लड़कों के शिर के गंज और उन फोड़े और फुन्सियों को जो लड़कों के शिर पर पैदा होते हैं गुण करे—कमीला, कत्था, गेरू, शोरा, तूतिया एक एक भाग, मुरदारसंग, कालीमिरच दो भाग, मेहँदी की पत्तियां चार भाग, सरसों के तेल को गरम करके उसमें मिलाकर सेवन करे।

लेप—शिर के गंज को गुण करे—अरण्ड की कोंपल कूटकर थोड़ा नोन मिलाकर लेप करे।

औषध—शिर के गंज को गुण करे–पुराने जूते का तला जलाकर कड़ुवा तेल मिलाकर सेवन करे।

अन्य—तम्बाकू का गुल पीसकर कड़ुवे तेल में मिलाकर लगावे।

आम के अचार का तेल।

जो एक वर्ष भर का हो लेकर शिर के गंज पर लगावे।

अन्य–घोड़े का सुम जलाकर मीठे तेल में मिलाकर शिर पर मले।

बकायन के फल का तेल।

बकायन के फल की गिरी जवकुटकर कड़ुवे तेल में जलाकर साफ करके शिर के गंज पर सेवन करे।

फर्राश का तेल।

शिर के गंज को गुण करे—फर्राश के पत्ते पीसकर टिकिया करके कड़ुवे तेल में जलाकर साफ करके मले।

लेप—धनियां सिरके में पीसकर लगाना शिर के गंज को गुण करता है।

अन्य—चुकन्दर के पत्ते पीसकर लगाना गुण करे।

अन्य—बकरी की मेंगनियां लगाना शिर के गंज, फैलनेवाले और पीबवाले घाव को गुण करे।

बरस व बहकअबैस अर्थात् सफेद दाग का यत्न ।

इन दोनों में अन्तर यह है कि बरस उन सफेद दागों को कहते हैं जो प्रकट में त्वचा में पैदा होते हैं और मांस और त्वचा के भीतर घुसे होते हैं और बहकअबैस सफेदी पतली गोल है—बरस से आरोग्यता नहीं होती है और बहक में जो शुरू में यत्न किया जावे नष्ट हो जाता है ।

यत्न—मुंजिज के उपरान्त कफ के मलका जुलाब दे और दूध इत्यादि और ठण्ढी चीजों से परहेज करना चाहिये ।

गोली—जंगली अंजीर की छाल तेंतीस टंक, चीत सोलह टंक, गन्धक पन्द्रह टंक, काली हड़, धनियां छः टंक, कूटछान कर गाय के बच्चे के मूत में मिलाकर औटावे जब गाढ़ा होजावे पीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर एक महीना बीस दिन तक हररोज एक सुबह एक शाम खावे ।

गोली—सफेद दागको गुणदायक और बालों को सफेद नहीं होने देती है—छिली बावची बनाई हुई, कठूमर की जड़ की छाल, नीम की जड़ की छाल, नीम की डाली की छाल बराबर लेकर कूटछानकर रक्खे और कत्थे की लकड़ी के टुकड़े टुकड़े करके एक हिस्सा अष्टगुण जल में औटावे जब आधा शेष रहे साफ करके उक्त औषध उसमें खमीर करे और गोलियां बनाकर एक टंक से डेढ़ टंक पर्यंत खावे । बावची के बनाने की यह रीति है—कि बावची को लालरंग वाली गाय के मूत्र में जो जनी न हो इक्कीस दिन भिगो रक्खे फिर निकालकर उसकी छाल दूर करके छाया में सुखावे ।

गोली—सफेद दाग को गुण करे—बनी हुई बावची, काले तिल बराबर लेकर शहद में मिलावे और तीन तीन माशे की गोलियां बनाकर सुबह और शाम एक गोली खाया करे ।

गोली—सफेद दाग को गुण करे—अजमोद, बावची, पवांड़ के बीज, कमलगट्टा बराबर लेकर शहद या गुड़ मिलाकर गोलियां बनावे, खूराक दो टंक ।

गोली—सफेद दाग को गुणदायक—गेरू, गंधक बावची बराबर महीन पीसकर अदरक के रस में रीठे के बराबर गोलियां बनावे और एक गोली जवकुटकर आधपाव जल में रात्रि को भिगो दे सुबह को उसका साफ पानी पिये और फोग उसका शरीर पर मलकर धूप में बैठे, खटाई और बादी से पथ्य करे और इसी प्रकार सदा सेवन करता रहे ।

औषध—बरस और बहक को गुण करे—काले धतूरे के बीज दो टंक आधे कच्चे आधे पक्के भुने, चीता दो टंक, कालीमिरच दो टंक कूटछानकर हररोज दो रत्ती भर खावे, भोजन एक समय दूध चावल का करे।

घूंस का तेल।

बरस को गुण करे—एक घूंस पकड़कर पेट चीरकर उसका मैल दूर करे और सौ बहलोली मीठे तेल में औटावे जब तृतीयांश रहे उसमें लत्ता भिगोकर रात्रि को दाग की जगह पर रखकर बांध दे और सुबह को धो डाले इसी प्रकार पचास दिन पर्यन्त सेवन करे लाभ होगा।

गोली—कसीस काली पांच टंक, तेल पन्द्रह टंक, बावची तीन सेर नीम की सूखी पत्तियां आधसेर, कुन्दर काली डेढ़सेर कूटछानकर गोलियां बनाकर हररोज एक गोली खावे।

नीम का चूर्ण—बरस को गुण करे—नीम के फल, फूल और पत्तियां बराबर पीसकर दो माशे खाना शुरू करके छः माशे तक पहुँचाकर चालीस दिन सेवन करे।

अन्य—बरस को गुणकरे—मुंडी एक भाग, समुद्रशोष आधा भाग कूटछान कर चूर्ण बनावे, खूराक एक माशे से नौ माशे पर्यन्त खांय।

अन्य—सफेद दाग को गुणदायक—बावची आधसेर, नोन तीन पाव कूटछानकर एक हथेली भर खावे, भोजन सिवाय चने की रोटी के और कुछ न खावे।

अन्य—सफेद दाग को गुण करे—सफेद गूलर की छाल, लालाके बीज दोनों बराबर कूटछानकर पानी से चालीस दिन पर्यन्त फांके।

औषध—बरस को गुण करे—अजमोद पहिले दिन चार माशे फिर एक एक माशा रोज अधिक करके सुबह को ठंढे पानी से फांके यहां तक कि आठ माशे तक पहुँचे जो दो महीने में गुण न मालूम हो तीसरे महीने बायबिड़ंग एक माशाभर मिलाकर खावे और खटाई और बादी से पथ्य करे लिखा है कि चने की रोटी या चने भूनकर खाना आजमाया हुआ है सिवाय इसके और कुछ न खावे।

अन्य—अजमोद दो भाग, गेरू एक भाग कूटछानकर दो माशे भर खावे भोजन बे नमक और घी के रोटी खावे।

लेप—बरस को गुण करे—बावची, पँवार, गेरू लेकर कूटछानकर अदरक के रस में गोलियां बनाकर दो सप्ताह पर्यन्त मलकर धूप में बैठा करे।

अन्य—पलाशपापड़ा तीन टंक, कच्चा तूतिया तीन माशे, कत्था सफेद एक तोला महीन कूटछानकर नींबू के रस में खरल करके गोलियां बनाकर लगाया करे और यह गोली दाद को भी गुणदायक है।

लेप—कलौंजी सिरके में पीसकर लगाना बहक और बरस को गुण करे—तरातेजे के बीज सिरके में पीसकर लेप करना बहक और बरस को गुण करे।

अन्य—कुन्दश शहद में मिलाकर लगाना बहक, बरस और दाद को गुण करता है।

अन्य—मालकंगनी गौ के मूत्र में इक्कीस दिन भिगोकर उसका तेल निकालकर बरस पर लगावे।

अन्य—नौसादर शहद में मिलाकर बरस और बहक पर मलना गुणकारी है।

अन्य—बरस को गुण करे—कलौंजी नौ टंक, बावची तीन टंक, धतूरे के बीज डेढ़ टंक, मदार के पत्ते आठ पीसकर सफेद दाग पर लगावे।

अन्य—बहक को गुण करे—कुन्दश, मूली के बीज सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—बकरी के गुरदे को टुकड़े टुकड़े करके उस पर गन्धक छिड़ककर कबाब करे जो पानी उससे टपके उसको बहक सफेद और बरस पर मले।

बरस को गुण करे—इमली के बीज छिले हुये, बावची दोनों बराबर खूब पीसकर आठ दिन तक लकड़ी से दाग की जगह पर मले।

अन्य—जंगली अंजीर की जड़, बावची, सुहागा, इमली ताजे पानी में पीसकर चालीस दिन तक लेप करे।

लेप—हरताल, सज्जी आधा आधा दाम कूटछानकर मूत्र में मिलाकर दाग पर लगावे।

अन्य—सफेद बहक को गुण करे—हल्दी, आंबाहल्दी, आमला, लाख, गंधक आमलासार, पवाँर के बीज बराबर गन्धक छाछ कूटछानकर निर्मल पानी में मिलाकर बहक पर लगावे।

अन्य—सफेद दाग को गुण करे—मँजीठ, चीत, तेल, गेरू बराबर कूटछान, कर सिरके में मिलाकर लगावे।

लेप—मूली के बीज दश भाग, कुंदश कूठ दो दो भाग पुराने सिरके में मिलाकर लेप करे ।

लेप—बरस को गुण करे—मूली के बीज, चीत, कुलींजन, आमला बराबर सिरके में मिलाकर लगावे ।

अन्य—बरस को गुण करे—यह नुस्खा किताब गंजआबादआवद से नकल किया गया है—सज्जी, चूने की कली बराबर पीसकर जिस जगह कि सफेद दाग हो लेप करे जब सूख जावे सख्त कपड़े से छीलकर दूर करे और फिर लगावे इस तरह थोड़े दिनों के सेवन में उस जगह की खाल दूर होकर क दाग पड़ जावेगा फिर उस जगह पर मीठा तेल मले कि उसका असली ग हो जावे ।

लेप—बरस को गुण करे—बावची दही में तीन दिन पर्यंत भिगो दे फिर खाकर आतशी शीशे में तेल निकाले और थोड़ा नौसादर पीसकर तेल में मिलाकर दाग को छीलकर उस पर मले ।

अन्य—केंचुवा एक बर्तन में बन्द करके एक महीने तक रक्खे इस अवसर राख हो जावेगा उसको लेकर बरस पर लगावे ।

अन्य—बरस को गुण करे—काला बिच्छू मारकर सुखाकर सिरके में पीस- र बरस पर लगावे ।

अन्य—होठों की सफेदी को गुण करे—अंधाहूली की जड़ पानी में घिसकर प करे ।

अन्य—तम्बाकू के बीजों का कोल्हू में तेल निकालकर मर्दन करे थोड़े नों में दाग असली रंग पर आ जावे ।

अन्य—बरस को गुण करे—केले के पीले पत्ते कड़ुवे तेल में जलाकर मुर- रसंग मिलाकर मले ।

अन्य—सिरस के बीजों का तेल निकाल कर बरस पर मले ।

अन्य—बैंगन सादे का तेल बरस को गुण करे—बैंगन पानी में पकाकर ब गल जावे उसका साफ पानी लेकर मीठे तेल में मिलाकर फिर औटावे ब पानी जलकर तेलमाल रहे सेवन करे ।

अन्य—छुहारे का तेल बरस को गुण करे—एक छुहारा सरसों के तेल में जलाकर हल करके रक्खे रात को दाग पर मलकर कोयलों की आग से के जब गरम हो जावे इसी तरह से थोड़े दिन सेवन करे । बाजी पुस्तकों में

लिखा है कि खुरमें की गुठली निकालकर साफ करके तेल में जलाकर थोड़ा शिगरफ मिलावे इस तेल को छाजन की जगह और नासूर पर भी मलना गुण करे ।

नारू का यत्न ।

वह एक दाना है जब फूट जावे तो उसके अंदर से तागा निकलता है ।

अन्य–मल को शरीर से साफ करे और नारू के गिर्द जोंकें लगावे और गरम पानी में तेल डालकर जोश किया हो तरेड़ा करे कि तागा सुगमता से निकले और रक्षा करे कि टूट न जावे ।

औषध–नारू को गुण करे—पहिले नारू और सूजन को गुनगुना तेल मलकर मदार के पत्तों से सेंक करे और वही गुनगुने पत्ते सूजन पर बांधे ।

औषध—नारू के लिये गुणदायक है–सफेद बिसखपरे की जड़ उसके पत्तों के रस में पीसकर नारू पर बाँधे बाजे और थोड़ी सोंठ भी अधिक करते हैं ।

लेप–नारू को गुण करे–जमालगोटा पीसकर लेप करे या कलौंजी दही में पकाकर लेप करे ।

औषध—जो केंचुवा सूखा नारूवाले को खिलावे शीघ्रही सुखाता है ।

अन्य—आधादाम सुहागा गुलरोगन में हल करके तीन दिन खावे और इस अवसर में चिकना भोजन खावे ।

अन्य—नारू को गुण करे–प्याज एक गिरह, लहसुन एक गिरह, थोड़ा साबुन, भिलावाँ एक, राई आधा दाम, कूटछान कर टिकिया बनाकर नारू पर एक दिन रात बांधे तीन दिन में तागा बिल्कुल निकल आवेगा ।

औषध–नारू को गुण करे–राल एक दाम, साबुन दो दाम, अफीम दश माशे कूट पीसकर आठ दाम तिलों के तेल में पकाकर मरहम की सदृश करके पान पर लगाकर बांधे और सुबह और शाम मरहम बदल दिया करे तीन दिन में आराम हो जावे ।

लेप—नारू को गुण करे—मोठ का आटा चार दाम थोड़ी हींग मिलाकर पीसकर खमीर करके नारू पर बाँधे ।

अन्य—चौलाई की जड़ पीसकर नारू पर बाँधे ।

गोली—नारू के लिये गुण करे—जंगली कबूतर की बीट दो दाम, गुड़ दो दाम, कूटपीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनाकर रक्खे रोज एक गोली खावे ।

औषध—नारू को गुण करती है–कबूतर का पर दो चावल के बराबर गुड़ में मिलाकर खावे ।

अन्य—सात दाने बकायन के हररोज निगल जावे ।

अन्य—एलुवा पहिले दिन आधादाम, दूसरे दिन एक दाम, तीसरे दिन एक मिस्काल भर खावे और ऊपर से भी लगावे ।

औषध—पीले हड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, सोंठ, केला बराबर हररोज दो टंक, छः टंक शहद मिलाकर खावे और दूध भी बहुत खाना गुण करता है ।

रक्तपित्त का यत्न उसको सुर्खबादा भी बोलते हैं ।

यह रोग बहुधा लड़कों को होता है इसका कारण बहुत गर्मी और रुधिर का जोश है ।

यत्न—धायको साफ करने वाली और रक्तशोधक औषध पिलावे ।

गोली—लड़कों के रक्तपित्त को गुण करे–धमासा, रक्तचन्दन, ब्रह्मदण्डी, नीलकण्ठी तीन-तीन माशे, बकायन की पत्तियां, नीम की पत्तियां पांच-पांच, मेहँदी की पत्तियां पाँच माशे, धनियां तीन माशे, कालीमिरच, मुल्तानी मिट्टी एक एक माशा, मेहँदी की पत्तियां और धनियां पानी में भिगोकर सुबह उसके पानी में सब औषध पीसकर चने के बराबर गोलियां बनावे, भोजन मूंग की दाल और चावल बेनोन खावे, खटाई और बादी से पथ्य करे ।

अन्य–लड़कों के रक्त पित्त को गुणकरे–रसौत, कालीमिरच, अफीम, नीम की पत्तियां, चाकसू की गिरी, पेठे के बीज बराबर कूटछानकर बाजरे के बराबर गोलियां बनाकर एक गोली लड़के को उसकी धाय के दूध में मिलाकर दे ।

औषध–लड़कों के रक्तपित्त को गुण करे–मिकन कि एक बूटी है दो दाम लेकर पानी में पीसकर पावभर आटे में मिलाकर रोटी पकावे फिर उसमें घी मलकर दूध पिलानेवाली को खिलावे आश्चर्यदायक गुण करे ।

अन्य—सरफोंका औटाकर लड़के को पिलावे ।

अन्य—रसौत एक चने की बराबर लड़के को खिलावे ।

काढ़ा—लड़कों के खून के उपद्रव और रक्तपित्त को गुण करे–रक्तचन्दन, मेहँदी, धनियां चार-चार टंक, गुलमोसफर दो टंक जवकुटकर सात खूराक

करे और एक खूराक आधपाव जल में भिगोकर सुबह जोश देकर पिये और फोग उसका रात को औटाकर पिये और उसका फोग शरीर में मलकर गरम पानी से धो डाले सात दिन इसी तरह सेवन करे, भोजन गेहूँ की रोटी और घी नमक न खावे।

दाद का इलाज।

यह रोग सौदावी रोग है त्वचा पर फैलता है रुधिर से भी उत्पन्न होता है प्रारम्भ में उसका यत्न कि जब तक मांस के अन्दर न घुसे सुगम है और जब मांस में घुस जावे तो जब तक जोंक और पछने और तेज औषधियों का सेवन न करे दूर नहीं होता है।

औषध—राल, गन्धक, सुहागा, खुरासानी अजवाइन कूटछानकर पानी से गोलियां बनाकर दाद को खुजलाकर उस पर लगावे।

लेप—दाद को गुण करे—मुरदारसंग, गन्धक, नौसादर, सुहागा, माजू, कालीमिरच, सफेद कत्था, अफीम, चीनियांगोंद कूटछानकर गोलियां बनावे और नींबू के रस में पीसकर लेप करे।

अन्य—माजू एक भाग, चूना डेढ़ भाग, माजू महीन चूने में हल करके थोड़े पानी में मिलावे जब थिरा जावे पानी लेकर दाद को खुजलाकर उस पर मले।

लेप—दाद को खुजलाकर उस पर घी मलकर चूना उस पर लगावे।

औषध—दाद को गुणदायक—मदार के फूल, पवाँर के बीज कूटछानकर खट्टे दही में मिलाकर मर्दन करे और जो खट्टा दही न मिले पानी काफी है।

लेप—इमली के बीज नींबू के रस में पीसकर मले।

अन्य—सूखा सिंघाड़ा नींबू के रस में पीसकर लगावे।

अन्य—हरसिंघार की पत्तियां पीसकर लगावे।

अन्य—अब्बासी की पत्तियां नोन के साथ पीसकर मले।

अन्य—हल्दी जलाकर पीसकर चूने और पान में मिलावे फिर पानी में हल करके दाद को खुजलाकर लगावे।

अन्य—नींबू का रस हररोज दो बेर दाद को खुजला करके मले।

अन्य—पालकजूही की जड़ नींबू के रस में घिसकर मले और उसकी पत्ती भी मलना गुण करे।

अन्य—कलौंजी सिरके में पीसकर मले ।

लेप—पलासपापड़ा, कत्था पीसकर लगावे ।

अन्य—कसौंधी की की जड़ नींबू के रस में घिसकर लेप करे ।

अन्य—गेहूँ का चोया गुनगुना मले और चोये के निकालने की यह रीति
ई कि गेहूँ धोकर रात्रि को हवा में रक्खे सुबह गेहूँ को साफ पत्थर पर
खकर एक लोहे का टुकड़ा आग में लाल करके गेहूँ के उपर रखकर दबावे
ो कुछ उसमें से कालारंग निकले उसको गरम लेकर दाद पर मले ।

अन्य—आजमाई हुई है दाद को गुण करे—आमला, लाल चन्दन,
ीनियांगोंद, राल, सुहागा, कत्था बराबर पानी में पीसकर दाद को खुजला-
कर मले ।

अन्य—दाद और खुश्क खुजली और तर खुजली को गुण करे—पवाँर के
ीज पानी में भिगो दे जब सड़ जावें पीसकर मले फिर गरम पानी से
हावे ।

लेप—दाद को गुण करे—रियह को कपड़े में छानकर पानी में पीसकर
गावे ।

अन्य—अमलतास की पत्तियां दाद पर मले या उसकी कच्ची फली की
ारी निकालकर पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य—दाद को गुणदायक—मूली के बीज, नींबू के रस में खरल करके
ोलियां बनाकर लगाया करे ।

अन्य—मूली के बीज शरीफे की पत्तियों के रस में पीसकर गोलियां बना
र लगावे ।

लेप—कुचला सिरके में पीसकर लगावे ।

लेप—दाद और खुजली को गुण करे—सज्जी एक दाम कूटछानकर दो
ाम गाय का घी सौ बेर धोकर उसमें मिलाकर लेप करे ।

औषध—दाद और खुजली को गुण करे—हराममग्ज मले ।

अन्अ—दाद को गुण करे—अंजीर का दूध मले ।

लेप—दाद को गुण करे—चन्दन, सुहागा, अफीम तीनों औषध बराबर
कर नींबू के रस में पीसकर दाद को किसी खरखरी चीज से खुजलाकर
ले ।

अन्य—मैनसिल पानी में पीसकर लगावे ।

लेप–सरेश मले लिखा है कि जबतक दाद अच्छा नहीं हो सरेश नहीं छूटता है।

अन्य–पारा सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य–मेहँदी सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य–मुरमक्की सिरके में पीसकर लेप करे।

लेप–नीम की पत्तियां दही में पीसकर लगावे।

लेप–पवांर के बीज एक भाग, सज्जी दो भाग, जवाखार चार भाग, कांजी के पानी में पीसकर अरना भैंसे के गोबर के उपले से दाद को खुजलाकर उसपर इतनी देर लगाये रहे कि सूख जावे दो तीन दिन में दूर होवे।

अन्य–सिंदूर, गन्धक, हल्दी, कालीमिरच, सुहागा बराबर लेकर घृत में मिलाकर हररोज चार पांच बेर लेप करे।

अन्य–पवांर के बीज, आमला, कत्था, दही के पानी में पीसकर दाद को खुजलाकर लेप करे।

अन्य–पारा, गन्धक, आमलासार, तूतिया, सुहागा, नींबू के रस में हल करके दाद को खुजला कर लगावे।

तर और खुश्क खुजली का यत्न।

जोकि यह रोग प्रकट त्वचा पर उत्पन्न होता है त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मल बहुधा कफकारी है और सूखी खुजली में सौदा की अधिकता है।

यत्न–हफ्तअन्दाम की फस्द ले और भोग और गरम चीजें जैसे कि बैंगन और मिरच और कड़ुवे तेल और नोनवाली चीजों आदि से पथ्य करे और हररोज शाहतरा का इतरीफल खावे।

औषध–पीलीहड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, जंगीहड़, सरफोंके की पत्तियां, अफीम दो दो टंक, शाहतरे के पत्ते दश टंक कूटछानकर गाय के घी में भूनकर तिगुनी शक्कर मिलावे, खूराक दो तोले।

अन्य–खारिश को गुण करे–नीम की कोंपल दो तोले भर लेकर पानी में पीसकर पन्द्रह दिन पर्यंत पिये इसी प्रकार सरफोंका का पानी गुण रखता है।

अन्य—तर खुजली को गुण करे–कड़ुवा चिरायता, शाहतरा, जंगीहड़ तीनों औषध तोला भर लेकर रात को पानी में भिगो दे सुबह को पीसकर साफ करके पिये।

अन्य–खुजलीको गुण करे–गन्धक, आंबाहल्दी, बावची हर एक आधा दाम, शाहतरा एक दाम सबको तीन भाग करके एकभाग उसमें से रात को पानी में भिगोवे सुबह उसका साफ पानी पिये और उसका फोग कड़ुवे तेल में मिलाकर बदन पर मलकर गरम पानी से धोवे।

अन्य—इमली को भिगोकर कई दिन सेवन करना तर खुजली और खुश्क खुजली को गुण करे उसका नुस्खा मतली के रोग में वर्णन हो चुका है।

अन्य—खारिश को गुण करे–अधकुचली कालीहड़ बीस टंक, अफतैमून पांच टंक, आधसेर गरम जल में भिगो दे सुबह साफ करके दश टंक शक्कर मिलाकर दो बेर करके पिये।

अन्य–मोजिज में खुश्क खुजली के लिये लिखा है कि हररोज एक सौ तीन टंक दूध और आधी उसकी सिकंजबीन मिलाकर पीना गुण करे और यह औषध शेखुलरईस के विचार में भी आजमाई हुई है परन्तु इतनी औषध देहातियों के योग्य है और लोगों के लिये इतनी खूराक बहुत भूख लानेवाली और अग्नि मन्दकारक है।

गन्धक का तेल—तर और खुश्क खुजली और दाद को गुण करे–गंधक, मदार के दूध में दो दिन खरलकरके टिकिया बनाकर छाया में सुखावे फिर बर्तन में डालकर पानी भरकर चार पहर मधुरी आंच पर जोश दे जितना तेल पानी पर आवे उसको लेकर सेवन करे और बाजे गंधक को पीलीटंक के मदार के दूध में पकाकर दो दिन खरल करते हैं।

औषध—खुजली को गुण करे—सब्ज तूतिया, तम्बाकू सूखी एक एक टंक कमीला दो टंक, सफेद चीनी चार टंक, कड़ुवे तेल में मिलाकर तीन दिन लगावे।

मुरमक्की की गोली—तर खुजली को गुण करे—और कफ और पित्त को निकालती है—पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल आमला, बायबिड़ंग छिला हुआ एक एक भाग, तुरबुद, खोखली दो भाग, कूटछानकर पानी में मिलाकर गोलियां बनावे खूराक तीन टंक और कदाचित अधिक दस्त चलाने स्वीकार हो दश टंक खावे।

तेल—तर खुजली को गुण करे–तीन तोले मैनशिल महीन पीसकर एक-

लेप—सरेश मले लिखा है कि जबतक दाद अच्छा नहीं हो सरेश नहीं छूटता है।

अन्य—पारा सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—मेहँदी सिरके में पीसकर लगावे।

अन्य—मुरमक्की सिरके में पीसकर लेप करे।

लेप—नीम की पत्तियां दही में पीसकर लगावे।

लेप—पवांर के बीज एक भाग, सज्जी दो भाग, जवाखार चार भाग, कांजी के पानी में पीसकर अरना भैसे के गोबर के उपले से दाद को खुजलाकर उसपर इतनी देर लगाये रहे कि सूख जावे दो तीन दिन में दूर होवे।

अन्य—सिंदूर, गन्धक, हल्दी, कालीमिरच, सुहागा बराबर लेकर घृत में मिलाकर हररोज चार पांच बेर लेप करे।

अन्य—पवांर के बीज, आमला, कत्था, दही के पानी में पीसकर दाद को खुजलाकर लेप करे।

अन्य—पारा, गन्धक, आमलासार, तूतिया, सुहागा, नींबू के रस में हल करके दाद को खुजला कर लगावे।

तर और खुश्क खुजली का यत्न।

जोकि यह रोग प्रकट त्वचा पर उत्पन्न होता है त्वचा के रोगों में गिना जाता है और तर खुजली का मल बहुधा कफकारी है और सूखी खुजली में सौदा की अधिकता है।

यत्न—हफ्तअन्दाम की फस्द ले और भोग और गरम चीजें जैसे कि बैंगन और मिरच और कड़ुवे तेल और नोनवाली चीजों आदि से पथ्य करे और हररोज शाहतरा का इतरीफल खावे।

औषध—पीलीहड़ की छाल, काबिलीहड़ की छाल, बहेड़े की छाल, आमला, जंगीहड़, सरफोंके की पत्तियां, अफीम दो दो टंक, शाहतरे के पत्ते दश टंक कूटछानकर गाय के घी में भूनकर तिगुनी शक्कर मिलावे, खूराक दो तोले।

अन्य—खारिश को गुण करे—नीम की कोंपल दो तोले भर लेकर पानी में पीसकर पन्द्रह दिन पर्यंत पिये इसी प्रकार सरफोंका का पानी गुण रखता है।

अन्य—तर खुजली को गुण करे—कड़ुवा चिरायता, शाहतरा, जंगीहड़
नों औषध तोला भर लेकर रात को पानी में भिगो दे सुबह को पीसकर
फ करके पिये ।

अन्य—खुजलीको गुण करे—गन्धक, आंबाहल्दी, बावची हर एक आधा
म, शाहतरा एक दाम सबको तीन भाग करके एकभाग उसमें से रात को
नी में भिगोवे सुबह उसका साफ पानी पिये और उसका फोग कड़ुवे तेल में
लाकर बदन पर मलकर गरम पानी से धोवे ।

अन्य—इमली को भिगोकर कई दिन सेवन करना तर खुजली और खुश्क
जली को गुण करें उसका नुस्खा मतली के रोग में वर्णन हो चुका है ।

अन्य—खारिश को गुण करे—अधकुचली कालीहड़ बीस टंक, अफतैमून
च टंक, आधसेर गरम जल में भिगो दे सुबह साफ करके दश टंक शक्कर
लाकर दो बेर करके पिये ।

अन्य—मोजिज में खुश्क खुजली के लिये लिखा है कि हररोज एक सौ
न टंक दूध और आधी उसकी सिकंजबीन मिलाकर पीना गुण करे और
ई औषध शेखुलरईस के विचार में भी आजमाई हुई है परन्तु इतनी
षध देहातियों के योग्य है और लोगों के लिये इतनी खूराक बहुत भूख
नेवाली और अग्नि मन्दकारक है ।

गन्धक का तेल—तर और खुश्क खुजली और दाद को गुण करे—गंधक,
ार के दूध में दो दिन खरलकरके टिकिया बनाकर छाया में सुखावे फिर
न में डालकर पानी भरकर चार पहर मधुरी आंच पर जोश दे जितना तेल
ी पर आवे उसको लेकर सेवन करे और बाजे गंधक को पीलीटंक के मदार
दूध में पकाकर दो दिन खरल करते हैं ।

औषध—खुजली को गुण करे—सब्ज तूतिया, तम्बाकू सूखी एक एक टंक
ीला दो टंक, सफेद चीनी चार टंक, कड़ुवे तेल में मिलाकर तीन दिन
ावे ।

मुरमक्की की गोली—तर खुजली को गुण करे—और कफ और पित्त को
ालती है—पीलेहड़ की छाल, बहेड़े की छाल आमला, बायबिड़ंग छिला
ा एक एक भाग, तुरबुद, खोखली दो भाग, कूटछानकर पानी में मिलाकर
लियां बनावे खूराक तीन टंक और कदाचित अधिक दस्त चलाने स्वीकार
दश टंक खावे ।

तेल—तर खुजली को गुण करे—तीन तोले मैनशिल महीन पीसकर एक-

सेर गाय के घी में मिलाकर औटावे जब धुवां बंद हो जावे एक तगार में जल भरकर औषधों को तेल समेत उसमें डाले जब ठण्ढा हो जावे पानी के ऊपर से तेल लेकर मले।

औषध—खुजली को गुण करे—पावभर कड़ुवे तेल को खूब जोश करे और मदार के हरे पत्ते इक्कीस लेकर एक एक पत्ता उसमें डाले जब सब पत्ते जलकर राख हो जावें उतारकर थोड़ा मैनशिल पीसकर उसमें मिलावे और शीशे में रखकर खुजली पर मले दो तीन दिन में दूर हो जावे। खुजली को गुण करे—कटहल का मूसला, जौ पुराना जो कीड़ों का खाया हुआ न हो, कोयलों की आग पर जलाकर महीन पीसे फिर कड़ुवे तेल में मिलाकर मले और तीन चार घड़ी के पीछे ठण्ढे पानी से धोवे और जाड़ों में यह दवा लगाकर गुनगुने पानी से नहावे।

औषध—खारिश को गुणदायक—तूतिया, पारा, कालीमिरच तीन तीन माशे, बन्दूक की बारूद एक दाम, चार दाम घी में मिलाकर मले और एक पहर के पीछे गरम पानी और बेसन से धोवे।

औषधि—खुजली को गुण करे—मदार का दूध जमाकर सुखावे फिर जलाकर कड़ुवा तेल मिलाकर शरीर पर मले और और चार घड़ी के पीछे नहावे।

औषध—खुजली को गुण करे—सहँजने की जड़ कड़ुवे तेल में जलाकर साफ करके बदन पर मले—पीली हरताल का तेल दाद और खुजली को गुण करे—पीली हरताल एक भाग, मीठा तेल दो भाग, पहिले तेल को औटावे जब लाल हो जावे हरताल पीसकर थोड़ा थोड़ा उसमें डालकर लकड़ी के चिमटे से हिलावे और आग नरम करे जब तेल की रंगत मोर के सदृश हो जावे और तेल में आग लगलग जावे उस समय डेगची को बंद करदे कि शोला तेल से बुझ जावे इसी तरह से डेगची को पांचबेर खोले बन्द करदे फिर ठण्ढा करके शीशे में रक्खे और आवश्यकता पर मलकर धूप में बैठे और गरम पानी से नहावे।

तेल—खुजली के लिये—पवाँर के बीज एक सेर, गन्धक एक दाम, एक सेर गाय का दूध और पावभर घी मिलाकर औटावे जब दूध जलकर तेलमात्र आय रहे साफ करके मले।

कालीदवा—दानों के के लिये—घुंघची, आमला, कालीमिरच एक तोला,

तूतिया एक भाग, कड़ुवा तेल आवश्यकता के अनुकूल, पहिले घुंघची को तेल में जलावे फिर हड़, आमला, तूतिया जुदा जुदा जलाकर कालीमिरच को कूटछानकर तेल में मिलाकर दानों पर मले।

औषधि—तर और खुश्क खुजली को गुण करे—कनेर की बीस पत्तियां पावभर तिलों के तेल में जलाकर मले।

पवांर का तेल—खुजली को गुण करे—पवांर के बीज एकसेर, गन्धपक्की एक दाम, जवकुटकर दो सेर गाय के दूध और पाव भर घी में पकावे जब दूध जलकर तेल रह जावे साफ करके मले।

औषधि—खुजली को गुण करे—पालक के बीज खशखाश के बीज के बराबर लेकर पानी में पीसकर बदन पर मले फिर गरम पानी से नहावे दो तीन दिन में आराम हो जावे।

औषधि—खुजली को गुण करे—बन्दूक की बारूद कड़ुवे तेल में मिलाकर बदन में मलकर धूप में बैठे फिर नहावे।

अन्य—बरगद के पत्ते और थूहर की लकड़ी सूखी जो जमीन में पड़ी हो और खशखाश का पोस्ता बराबर लेकर जलाकर उसकी राख कड़ुवे तेल में मिलाकर मले और थोड़ी देर धूप में बैठकर गरम पानी से नहावे।

अन्य—शोराकलमी कड़ुवे तेल में मिलाकर मले।

अन्य—मेहँदी और गुलरोगन सिरके में मिलाकर बदनपर मले।

अन्य—साबुन पानी में पीसकर लगावे फिर नहावे।

अन्य—तर खुजली और खुश्क को गुण करे—सुहागा, चम्बेली का तेल, गुलाब और नींबू के रस में मिलाकर मले और बाजे इसमें थोड़ा सा कपूर भी डालते हैं।

अन्य—गन्धक दो टंक, पारा, भुना तूतिया आधा आधा टंक, गौ के घी में जो इक्कीस बेर धोया गया हो मिलाकर मले और दो घड़ी के पीछे ठण्ढे पानी से नहावे।

अन्य—अफीम तिलों के तेल में जलाकर मले।

अन्य—सेंदुर, आमलासार गंधक, मुरदारसंग, तूतिया, एक एक दाम सबको महीन पीसकर चार तोले गाय के घी में मिलाके मले।

अन्य—गुनगुने पानी से रोज नहाना तर और खुश्क खारिश को नाश करे।

अन्य—खुजली को गुण करे—सब्ज तूतिया, आमलासार गंधक, कपूर एक एक दाम, गाय का घी धोकर तीन तोले औषधि महीन कूटकर हररोज मलकर दो घड़ी धूप में बैठे फिर नहावे।

बगल की दुर्गन्धि का यत्न।

शरीर को मल से शुद्ध करे।

औषधि—बगल की बास दूर करे—चना पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—जामुन की छाल और पत्ती पानी में औटाकर उससे बगल को धोवे।

अन्य—झाऊ की पत्ती पीसकर मले फिर गरम पानी से धोवे।

अन्य—मुरदारसंग पीसकर मले गुण करे।

हाथ पांव में अधिक पसीना निकलने का यत्न जिसको शीत बोलते हैं।

यत्न—मूंग जलाकर पीसकर मले।

औषधि—बैंगन, खशखाश का पोस्ता अधकुचला पानी में औटाकर उससे हाथ पांव धोवे।

अन्य—शीत को गुण करे—कुल्थी, पीली कौड़ी जलाकर जुदा जुदा महीन पीसकर मले।

अन्य—काले धतूरे के बीज जलाकर महीन पीसकर एक माशा भर हररोज एक सप्ताह पर्यन्त खावे।

अन्य—बेर की पत्तियां पीसकर मले।

अन्य—बबूल की सूखी पत्तियां पीसकर हाथ पांव पर मले।

अन्य—नील की छाल पानी में औटाकर उसका बुखार लेकर उसके गुनगुने पानी से धोवे इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त सेवन करे।

अन्य—बालछड़ लगाना शीत को गुण करे।

अन्य—ऊँटकटारे की जड़ सुखाकर पीसकर एक तोला भर शहद मिलाकर सात दिन खावे।

अन्य—फिटकरी में हल करके मले।

अन्य—पुष्करमूल पीसकर हथेली और तलवे पर मले।

गोली—शीत को गुण करे—शिंगरफ, पेठे के बीजों की गिरी एक एक टंक पीली कौड़ी जली हुई तीन टंक, कालीमिरच पांच टंक, छाकूटनकर दो टंक

खट्टा चूक मिलाकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सुबह एक शाम खाय।

उँगलियों के फूलने और उनकी खुजली का यत्न।

यह रोग हवा की सरदी से हो जाता है।

यत्न—गेहूँ की भूसी और नोन औटाकर धोवे।

अन्य—शलगम या चुकन्दर के काढ़े या उस जल से जिसमें मसूर और मटर औटाया हो धोये।

व्रण का यत्न—जिस जखम में पीब निकले उसको करा बोलते हैं और जिस व्रणपर चालीस दिन बीत जावें वह नासूर कहलाता है।

औषिध—घाव को सुखावे पैरा कि एक घास है नदी के किनारे उगती है उससे चटाई बनाते हैं उसको जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के जो सिरके में भिगोकर नासूर पर रक्खे गुण करती है।

अन्य—पीब के घाव को सुखावे-कनेर की पत्तियां सूखी पीसकर छिड़के या संगजराहत पीसकर छिड़के-स्त्री के ऋतु का कपड़ा जलाकर घाव पर छिड़के।

अन्य—गधे का मांस खाल सहित जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के दो दिन में मांस भर आवे।

अन्य—सिरस की छाल सूखी पीसकर छिड़के।

अन्य—मुरगी का पर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य—घाव को गुण करे-कछुवे का शिर जलाकर उसकी राख लेकर पहिले घाव में मीठा तेल लगावे फिर वह राख छिड़के तीन दिन में आराम होवे।

औषिध—घाव को साफ करे- साबुन पानी में पीसकर थोड़ा गेरू मिला-कर मरहम की रीति पर बनाकर सेवन करे कभी गेरू के बदले चावल मिलाते हैं।

अन्य—घाव से भरा हुआ मांस दूर करे और खेद न दे-भुनी फिटकरी महीन पीसकर छिड़के।

औषधि-घाव को भर दे-असगंध नागौरी महीन पीसकर घाव पर छिड़के।

घाव की गुणकारक -घियातोरई की पत्ती घाव पर बांधना लाभ करे।

अन्य—कंघी की पत्ती पीसकर घाव पर बांधना शीघ्र गुण करे, परन्तु साबुत बांधना बहुत गुणदायक है।

अन्य—सरू की पत्तियां जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य—हल्दी महीन पीसकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य—माजू जलाकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य—कुन्दर पीसकर छिड़कना बुरे घाव को दूर करता है।

अन्य—फैलनेवाले घाव को गुणकारक-कमल और बरगद के पत्ते बराबर जलाकर उसकी राख तेल में मिलाकर घावपर टपकावे।

अन्य—फफोले और घाव के सुखाने में अद्वितीय है-कपूर चौथाई भाग, भुने रैहां अर्थात् नाजबो के बीज आधा भाग, प्याज का छिलका जलाकर एक भाग, बाल जलाकर दो भाग, सब को पीसकर छिड़के। गोली और गजेबी घाव को जिसमें छिद्र होते हैं गुण करे—बेलगिरी, कत्था, सब्ज तूतिया बराबर लेकर गोलियां बनाकर लगावे।

औषधि—गुड़ घाव पर बांधना शीघ्र पीब को साफ करता है।

अन्य—मसूर जलाकर भैंस के दूध में मिलाकर सुबह और शाम लगावे।

तेलों के नुस्खे-तेल घाव के भर लाने के लिये आश्चर्यदायक प्रभाव रखता है-सँभालू के पत्ते, फर्राश के पत्ते, चमेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते एक एक टंक, मीठा तेल आधा सेर, पत्तों को पीसकर, तेल में मिलाकर जलावे और चिमटे से खूब हल करके आग से उतारकर फिर चिमटे से हिलावे जब थिरा जावे साफ तेल लेकर सेवन करे।

अन्य—घाव के भरने के लिये करंजुवे के पत्ते, नीम के पत्ते एक एक दाम, टिकिया बनाकर मीठे तेल में भूने जब काली हो जावे तूतिया एक माशा भर पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य—घाव को शीघ्र भरकर अच्छा करे-गूलर एक दाम, हल्दी एक गांठ, सिन्दूर चार माशे, पहिले तेल में नीम की पत्तियों की टिकिया बनाकर जलावे फिर हल्दी जलावे फिर गूगल, सिंदूर मिलाकर सेवन करे।

पत्तों का तेल-हर प्रकार के घाव को गुणदायक-मीठा तेल एक सेर कड़ाही में डालकर जोश दे फिर नीम की पत्तियों की टिकिया आधपाव, कनेर की पत्तियों की टिकिया पावभर, मोम आठ दाम, बकायन की पत्तियों

की टिकिया पांच टंक, तेल में डालकर जलावे जब जलकर काली होजावे तेल को साफ करके घाव पर टपकावे।

नीम का तेल–घाव को गुण करे नीम की पत्तियाँ पीसकर टिकिया बना कर तेल में जलावे जब काली होजावे साफ करके रक्खे और यह तेल सादा है कान की पीड़ा को भी गुण करता है और जो घाव पर टपकावे कमीला, कत्था एक एक तोला महीन पीसकर मिलावे कि घाव को भरे और पीब निकालने की इच्छा हो तो थोड़ा तूतिया डाले कमीले का तेल घाव भरने में अद्वितीय है थोड़े दिनों में अच्छा करता है कमीला दश टङ्क तीनबेर महीन खरल करके दश टङ्क कड़ुवे तेल में मिलाकर कपड़े में छानकर आवश्यकता पर उसमें रुई भिगो के घाव पर रक्खे और कई बूंदें टपकावे।

भिलावें का तेल—बहुत घावों को गुण करे–यहां तक कि चौपायों के जखमों को भी गुण करे–सात भिलावें आधपाव तिलों के तेल में जलाकर—साफ करके दो टंक संगजराहत पीसकर मिलाकर मुरगी के पर से लेकर जखम पर लगावे–कौंच के बीजों का तेल घाव और नासूर को गुणदायक है छिलेहुये कौंच के बीज दो दाम महीन पीसकर टिकिया करके आध पाव मीठे तेल में जलाकर साफ करके घाव पर टपकावे और बाजों ने लिखा है कि मीठे तेल के बदले कड़ुवा तेल मिलावे।

कुचले का तेल–नासूर को भरता है और घाव को गुण करता है–कालीमिरच साढ़े तीन माशे, तूतिया एक चने के बराबर, पांच कुचले, कड़ुवा तेल पांच टंक पक्का–थोड़ी नीम की पत्तियां, अजवाइन एक दाम, कमीला दो दाम, पहिले तेल को कड़ाही में औटावे और नीम की पत्तियों की टिकिया बनाकर उसमें जलावे जब काली होजावे निकालकर साफ करके सम्पूर्ण औषधि जुदा जुदा पीस छान तोलकर तेल में जलावे फिर छानकर चीनी या शीशे के बर्तन में रक्खे और रुई उसमें भरकर घाव या नासूर पर रक्खे जब सूख जावे फिर भिगो दे।

तेल–घाव के भरने के वास्ते–मुलहठी छीलकर पानी और तेल में औटावे जब पानी जलकर तेलमात्र रहजावे साफ करे और हूहजूह के साथ लाल करके सेवन करे।

अन्य–सब घावों को गुण करे–यहां तक कि चौपाये के घाव को भी गुणकरे–मीठातेल पावभर, नीम की कोंपल, अरण्डी की कोंपल दो दो

अन्य—कंघी की पत्ती पीसकर घाव पर बांधना शीघ्र गुण करे, परन्तु साबुत बांधना बहुत गुणदायक है।

अन्य—सरू की पत्तियां जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य—हल्दी महीन पीसकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य—माजू जलाकर छिड़कना घाव को सुखाता है।

अन्य—कुन्दर पीसकर छिड़कना बुरे घाव को दूर करता है।

अन्य—फैलनेवाले घाव कौ गुणकारक–कमल और बरगद के पत्ते बराबर जलाकर उसकी राख तेल में मिलाकर घावपर टपकावे।

अन्य—फफोले और घाव के सुखाने में अद्वितीय है–कपूर चौथाई भाग, भुने रैहां अर्थात् नाजबो के बीज आधा भाग, प्याज का छिलका जलाकर एक भाग, बाल जलाकर दो भाग, सब को पीसकर छिड़के। गोली और गजेबी घाव को जिसमें छिद्र होते हैं गुण करे—बेलगिरी, कत्था, सब्ज तूतिया बराबर लेकर गोलियां बनाकर लगावे।

औषधि—गुड़ घाव पर बांधना शीघ्र पीब को साफ करता है।

अन्य—मसूर जलाकर भैंस के दूध में मिलाकर सुबह और शाम लगावे।

तेलों के नुस्खे–तेल घाव के भर लाने के लिये आश्चर्यदायक प्रभाव रखता है–सँभालू के पत्ते, फराश के पत्ते, चमेली के पत्ते, धतूरे के पत्ते एक एक टंक, मीठा तेल आधा सेर, पत्तों को पीसकर, तेल में मिलाकर जलावे और चिमटे से खूब हल करके आग से उतारकर फिर चिमटे से हिलावे जब थिरा जावे साफ तेल लेकर सेवन करे।

अन्य—घाव के भरने के लिये करंजुवे के पत्ते, नीम के पत्ते एक एक दाम, टिकिया बनाकर मीठे तेल में भूने जब काली हो जावे तूतिया एक माशा भर पीसकर मिलाकर सेवन करे।

अन्य—घाव को शीघ्र भरकर अच्छा करे–गूलर एक दाम, हल्दी एक गांठ, सिन्दूर चार माशे, पहिले तेल में नीम की पत्तियों की टिकिया बनाकर जलावे फिर हल्दी जलावे फिर गूगल, सिंदूर मिलाकर सेवन करे।

पत्तों का तेल–हर प्रकार के घाव को गुणदायक–मीठा तेल एक सेर कड़ाही में डालकर जोश दे फिर नीम की पत्तियों की टिकिया आधपाव, कनेर की पत्तियों की टिकिया पावभर, मोम आठ दाम, बकायन की पत्तियों

की टिकिया पांच टंक, तेल में डालकर जलावे जब जलकर काली होजावे
तेल को साफ करके घाव पर टपकावे ।

नीम का तेल–घाव को गुण करे नीम की पत्तियाँ पीसकर टिकिया बना
कर तेल में जलावे जब काली होजावे साफ करके रक्खे और यह तेल सादा
है कान की पीड़ा को भी गुण करता है और जो घाव पर टपकावे कमीला,
कत्था एक एक तोला महीन पीसकर मिलावे कि घाव को भरे और पीब
निकालने की इच्छा हो तो थोड़ा तूतिया डाले कमीले का तेल घाव भरने
में अद्वितीय है थोड़े दिनों में अच्छा करता है कमीला दश टङ्क तीनबेर
महीन खरल करके दश टङ्क कड़ुवे तेल में मिलाकर कपड़े में छानकर आव-
श्यकता पर उसमें रुई भिगो के घाव पर रक्खे और कई बूंदें टपकावे ।

भिलावें का तेल—बहुत घावों को गुण करे–यहां तक कि चौपायों के
जखमों को भी गुण करे—सात भिलावें आधपाव तिलों के तेल में जलाकर—
साफ करके दो टंक संगजराहत पीसकर मिलाकर मुरगी के पर से लेकर
जखम पर लगावे–कोंच के बीजों का तेल घाव और नासूर को गुणदायक
है छिलेहुये कोंच के बीज दो दाम महीन पीसकर टिकिया करके आध पाव
मीठे तेल में जलाकर साफ करके घाव पर टपकावे और बाजों ने लिखा है
कि मीठे तेल के बदले कड़ुवा तेल मिलावे ।

कुचले का तेल–नासूर को भरता है और घाव को गुण करता है–काली-
मिरच साढ़े तीन माशे, तूतिया एक चने के बराबर, पांच कुचले, कड़ुवा तेल
पांच टंक पक्का—थोड़ी नीम की पत्तियां, अजवाइन एक दाम, कमीला दो
दाम, पहिले तेल को कड़ाही में औटावे और नीम की पत्तियों की टिकिया
बनाकर उसमें जलावे जब काली होजावे निकालकर साफ करके सम्पूर्ण
औषधि जुदा जुदा पीस छान तोलकर तेल में जलावे फिर छानकर चीनी
या शीशे के बर्तन में रक्खे और रुई उसमें भरकर घाव या नासूर पर रक्खे
जब सूख जावे फिर भिगो दे ।

तेल–घाव के भरने के वास्ते–मुलहठी छीलकर पानी और तेल में औटावे
जब पानी जलकर तेलमात्र रहजावे साफ करे और हूहजूह के साथ लाल
करके सेवन करे ।

अन्य–सब घावों को गुण करे—यहां तक कि चौपाये के घाव को भी
गुणकरे—मीठातेल पावभर, नीम की कोंपल, अरण्डी की कोंपल दो दो

दाम, पत्तों को तेल में जलाकर साफ करके राल दो दाम, कमीला एक दाम महीन पीसकर मिलाकर घाव पर टपकावे, कदाचित् मरा हुआ मांस अधिक होवे एक माशा भर तूतिया मिलावे।

अन्य–घाव के भरने के लिये अद्वितीय है और आतशक के घाव को दूर करे–भिलावाँ, कोंच के बीज एक एक दाम, खुरासानी अजवाइन, मुरदारसंग तीन तीन माशे, तूतिया दो माशे, तिलों का तेल आधपाव, पहिले तेल को आग पर रक्खे जब औटे उसमें भिलावाँ डालकर जलावे फिर कोंन्च के बीज और अजवाइन एक एक बेर करके डाले फिर तूतिया फिर मुरदारसंग पीसकर मिलावे और आग से उतारकर खूब हल करे जब दूध के सदृश हो जावे जो घाव नाजुक जगह में हो तेल छानकर टपकावे नहीं तो बे छाने सेवन करे और यह तेल नासूर को भी गुण करता है।

कुचले का तेल–उकौता और शिर के गंज आदि को लाभ दे–आठ कुचले मीठे तेल में जलाकर सेवन करे।

हर प्रकार के व्रणों के मरहमों का वर्णन।

मरहम–प्याज, साबुन, सफेद कत्था चार चार दाम, नीम की पत्तियां ग्यारह, मीठा तेल चार दाम, पहिले प्याज और साबुन को टुकड़े टुकड़े करके तेल में जलावे फिर नीम की पत्तियां जलाकर मिलावे फिर कत्था पीसकर डाले और थोड़ा कपड़ा जलाकर मिलावे फिर खरल करके सेवन करे।

कोंच का मरहम–यह वैद्यों का नुस्खा है जो घाव को जल्दी भरता है–मीठातेल पाव भर लोहे के बर्तन में गरम करके उतार ले फिर कोंच की गिरी पीसकर मिलावे और नीम के पत्ते और नरमे के पत्तों की टिकिया बनाकर चार दाम मोम गरम करके तेल में मिलाकर सेवन करे।

मरहम जो पानी से बनता है और चिकनाई उसमें नहीं है और जल का संसर्ग मरहम के सेवन के समय कुछ खराबी नहीं लाता और सर्व प्रकार के पीब के व्रणों को गुण करे यहां तक कि नासूर को अच्छा करे–गूगल, पारा एक एक टंक, रसौत दो टंक, पहिले गूगल और रसौत को पानी में हल करे फिर पारा मिलाकर पीसकर सेवन करे।

दूसरा मरहम–जो पानी से तैयार होता है जखमों और नासूर को गुण करे–राल, घी आध आध पाव, कत्था, फिटकरी, सब्ज तूतिया छः छः

मिस्काल, राल और तेल को थोड़े पानी से दो घड़ी हाथों से मलकर औषधि कूटछानकर मिलावे।

अमरती की गोली—मुरदारसंग, अमरत एक-एक दाम, कत्था, राल, मोम सात-सात माशे घी आधपाव, घी को खूब दाग करके मुरदारसंग पीसकर उसमें डाले जब जल जावे उतारकर राल और मोम मिलावे फिर अमरत और कत्था पीस मिलाकर सेवन करे सब जखमों और फोड़ों को गुण करे।

अमरत की गोली—संगमरमर की गर्द, तूतिया, कत्था सफेद, पीली कौड़ी कूटछानकर घृत में मिलावे और सुरखी के लिये थोड़ा महावर मिलाकर गोलियां बनावें।

मरहम—सब प्रकार के घाव को गुण करे और घाव को जल्दी भर लाता है—राल साढ़े तीन माशे, शिंगरफ एक माशे, मुरदारसंग एक माशे, छिले कोंच साढ़े तीन माशे, सरसों का तेल दो दाम, पहिले कोंच को तेल में जलावे फिर नीम की पत्तियों की टिकिया उसमें जलाकर साफ करके दवायें हल करे।

मरहम—बिवाई को गुण करे—राल एक दाम, घी एक दाम, मोम पाव दाम, घी दाग करके मोम उसमें मिलावे फिर राल डाल पाँवों को खूब धोकर मरहम घाव में भर दे और दो चार बेर सेवन करे।

अन्य—सब प्रकार के घाव को गुण करे—कीमुख्त जला हुआ, सुपारी जली हुई, हड़ के बीज जले हुये, मदार की कोंपल जली हुई, मुरदारसंग, कत्था आधा-आधा दाम, घी गरम करके दवायें मिलाकर मरहम बनावे।

मरहम—सब प्रकार के जखमों को गुण करे—जाड़ों के मौसम में घी दो दाम गरमियों में एक दाम लेकर तूतिया एक माशे, मोम सफेद एक दाम, सिंदूर पाव दाम मिलाकर यथाविधि मरहम बनावे।

मरहम—आतशक, नासूर और घाव को गुण करे—सरसों का तेल एक दाम, जंगार चार माशे, संगजरात एक दाम, मोम एक दाम लेकर मरहम बनावे।

मरहम—सब जखमों को गुणकारक और आजमाया हुआ है—राल, हिरमिजीमिट्टी छः छः माशे, तूतिया सब्ज दो रत्ती, मीठे तेल में खरल करके मरहम तय्यार करे।

मरहम—सब जखमों और आतशक के घाव को गुणदायक है—मोम, राल,

दाम, पत्तों को तेल में जलाकर साफ करके राल दो दाम, कमीला एक दाम महीन पीसकर मिलाकर घाव पर टपकावे, कदाचित् मरा हुआ मांस अधिक होवे एक माशा भर तूतिया मिलावे।

अन्य—घाव के भरने के लिये अद्वितीय है और आतशक के घाव को दूर करे—भिलावाँ, कोंच के बीज एक एक दाम, खुरासानी अजवाइन, मुरदारसंग तीन तीन माशे, तूतिया दो माशे, तिलों का तेल आधपाव, पहिले तेल को आग पर रक्खे जब औटे उसमें भिलावाँ डालकर जलावे फिर कोंच के बीज और अजवाइन एक एक बेर करके डाले फिर तूतिया फिर मुरदारसंग पीसकर मिलावे और आग से उतारकर खूब हल करे जब दूध के सदृश हो जावे जो घाव नाजुक जगह में हो तेल छानकर टपकावे नहीं तो बे छाने सेवन करे और यह तेल नासूर को भी गुण करता है।

कुचले का तेल—उकौता और शिर के गंज आदि को लाभ दे—आठ कुचले मीठे तेल में जलाकर सेवन करे।

हर प्रकार के व्रणों के मरहमों का वर्णन।

मरहम—प्याज, साबुन, सफेद कत्था चार चार दाम, नीम की पत्तियां ग्यारह, मीठा तेल चार दाम, पहिले प्याज और साबुन को टुकड़े टुकड़े करके तेल में जलावे फिर नीम की पत्तियां जलाकर मिलावे फिर कत्था पीसकर डाले और थोड़ा कपड़ा जलाकर मिलावे फिर खरल करके सेवन करे।

कोंच का मरहम—यह वैद्यों का नुस्खा है जो घाव को जल्दी भरता है—मीठातेल पाव भर लोहे के बर्तन में गरम करके उतार ले फिर कोंच की गिरी पीसकर मिलावे और नीम के पत्ते और नरमे के पत्तों की टिकिया बनाकर चार दाम मोम गरम करके तेल में मिलाकर सेवन करे।

मरहम जो पानी से बनता है और चिकनाई उसमें नहीं है और जल का संसर्ग मरहम के सेवन के समय कुछ खराबी नहीं लाता और सर्व प्रकार के पीब के व्रणों को गुण करे यहां तक कि नासूर को अच्छा करे—गूगल, पारा एक एक टंक, रसौत दो टंक, पहिले गूगल और रसौत को पानी में हल करे फिर पारा मिलाकर पीसकर सेवन करे।

दूसरा मरहम—जो पानी से तैयार होता है जखमों और नासूर को गुण करे—राल, घी आध आध पाव, कत्था, फिटकरी, सब्ज तूतिया छः छः

मिस्काल, राल और तेल को थोड़े पानी से दो घड़ी हाथों से मलकर औषधि कूटछानकर मिलावे।

अमरती की गोली—मुरदारसंग, अमरत एक-एक दाम,कत्था, राल, मोम सात-सात माशे घी आधपाव, घी को खूब दाग करके मुरदारसंग पीसकर उसमें डाले जब जल जावे उतारकर राल और मोम मिलावे फिर अमरत और कत्था पीस मिलाकर सेवन करे सब जखमों और फोड़ों को गुण करे।

अमरत की गोली—संगमरमर की गर्द, तूतिया, कत्था सफेद, पीली कौड़ी कूटछानकर घृत में मिलावे और सुरखी के लिये थोड़ा महावर मिलाकर गोलियां बनावें।

मरहम—सब प्रकार के घाव को गुण करे और घाव को जल्दी भर लाता है—राल साढ़े तीन माशे, शिगरफ एक माशे, मुरदारसंग एक माशे, छिले कोंच साढ़े तीन माशे, सरसों का तेल दो दाम, पहिले कोंच को तेल में जलावे फिर नीम की पत्तियों की टिकिया उसमें जलाकर साफ करके दवायें हल करे।

मरहम—बिवाई को गुण करे—राल एक दाम, घी एक दाम, मोम पाव दाम, घी दाग करके मोम उसमें मिलावे फिर राल डाल पाँवों को खूब धोकर मरहम घाव में भर दे और दो चार बेर सेवन करे।

अन्य—सब प्रकार के घाव को गुण करे—कीमुख्त जला हुआ, सुपारी जली हुई, हड़ के बीज जले हुये, मदार की कोंपल जली हुई, मुरदारसंग, कत्था आधा-आधा दाम, घी गरम करके दवायें मिलाकर मरहम बनावे।

मरहम—सब प्रकार के जखमों को गुण करे—जाड़ों के मौसम में घी दो दाम गरमियों में एक दाम लेकर तूतिया एक माशे, मोम सफेद एक दाम, सिंदूर पाव दाम मिलाकर यथाविधि मरहम बनावे।

मरहम—आतशक, नासूर और घाव को गुण करे—सरसों का तेल एक दाम, जंगार चार माशे, संगजरात एक दाम, मोम एक दाम लेकर मरहम बनावे।

मरहम—सब जखमों को गुणकारक और आजमाया हुआ है—राल, हिरमिजीमिट्टी छः छः माशे, तूतिया सब्ज दो रत्ती, मीठे तेल में खरल करके मरहम तय्यार करे।

मरहम—सब जखमों और आतशक के घाव को गुणदायक है—मोम, राल,

कत्था एक तोला, मोम को थोड़े तेल में टिघलाकर पहिले राल को पीसकर मिलावे और तीन जोश देकर कत्था डालकर हल करके चार माशे कपूर पीसकर मिलावे फिर औटाकर उतार ले और जो पुराने पीब वाले घाव पर सेवन करे थोड़ी सुपारी जलाकर मिलावे।

मरहम—राल एक भाग, मोम आधा भाग, तेल चार भाग, औषधि लेकर यथाविधि मरहम बनावे।

मरहम—हड्डी के टूट जाने के लिये—पक्की ईंट महीन पीसकर थोड़े दूध में मिलावे और चावलों को उसमें पकाकर तीन सप्ताह पर्यन्त खावे, हड्डी उसी तरह दुरुस्त हो जावे।

मरहम—बहुत से जखमों को गुण करे—जंगीहड़, कमीला एक एक मिस्काल, सब्ज तूतिया आधा मिस्काल कूटछानकर थोड़े तेल में पीसकर मरहम बनावे।

मरहम—घाव को गुण करे, यह नुस्खा अंगरेजों का है—मोम एक दाम, भुनी फिटकरी दो माशे, सिंदूर दो माशे, मुरदारसंग चार माशे, तूतिया दो रत्ती, घी दो दाम, तेल और मोम को दाग करके आग से उतार कर औषधि उसमें हल करे।

तेल—घाव के भरने को गुण करे—रेंड़ी का तेल पाव भर, अरण्ड की कोंपल का रस पाव भर दोनों को औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र रहे एक दाम पत्थर का चूना मिलाकर घाव में लगावे और चूना चार प्रकार का होता है एक पत्थर का, दूसरा घोंघे का, तीसरा सीप का, चौथा कंकर का।

मरहम—घाव के भरने के वास्ते अतिश्रेष्ठ है—पुरानी रुई जलाकर उसकी राख छः बहलोली भर लेकर, तीन बहलोली मोम और उसके बराबर बच खुरासानी और गाय का घी पांच बहलोली, तूतिया दो रत्ती, पहिले घी और मोम को एक बर्तन में गरम करे और उसमें रुई की राख डाले। फिर बच मिलावे फिर तूतिया भूनकर पीसकर मिलावे और मरहम बनाकर सेवन करे।

मरहम—जख्म के भरने के लिये—कत्था सफेद, मुरदारसंग, संगजराहत एक एक दाम, राल छः दाम, कम्मल का टुकड़ा चौथाई गज जलाकर घी सात दाम यह सम्पूर्ण औषधि महीन करके घी में मिलाकर मरहम बनावे।

मरहम—भगंदर को गुण करे अर्थात् वह फोड़ा जो फोते और गुदा के

ीच में हौड़–जला हुआ कीमुख्त, पपड़िया कत्था, संगजराहत, मोम हरएक
ृक दाम भर, गौ का घी कि सौ बेर पानी से धोया हुआ हो, मोम घी में
टेघलाकर ठण्ढा करके औषधियों को मिलावे ।

मरहम—फोड़े के जखम को गुण करे–तूतिया एक माशा, मुरदारसंग दो
ाशे, कत्था सफेद चार माशे, राल आठ माशे, कमीला सोलह माशे, मोम
ाफूरी ग्यारह माशे, गाय का घी बत्तीस माशे, पहिले घी धोकर हाथ से
ाले फिर औषधियां मिला कर हाथ से मलकर मरहम बनावे ।

मरहम सफेद—घाव सुखाने के वास्ते–कपूर साढ़े तीन माशे, सफेद मोम
ृक दाम, मीठा तेल एक दाम, सफेदा दो दाम पहिले तेल को गरम करके
ोम डाले और साफ करके मधुरी अग्नि पर रक्खे फिर उतार कर ठण्डा
रके सेवन करे ।

उन दानों का यत्न जो बरसात में पैदा होते हैं ।

मसूर के छिलके और आमला जलाकर उसके बराबर मेहँदी, कमीला,
ोड़ा तूतिया भूना थोड़े तेल में मिलाकर पीसकर दानों पर मले ।

अन्य—आतशक के चटके पीबवाले घाव के लिये–फिटकरी, तूतिया, मुर-
ारसंग, सुहागा एक एक माशे, कमीला, बावची, पँवाड़ के बीज, पारा
ऊ हरएक आधा माशा, जली कालीमिरच तीन माशे, पांच जले हुये
चले सम्पूर्ण ओषधि महीन कूटछानकर आध पाव घृत में खरल करके
वन करे ।

औषधि–उकौते के वास्ते–जली कौड़ी, जला हुआ तूतिया, जली हुई हल्दी,
राबर नींबू के रस में खरल करके लेप करे ।

औषधि—उकौते को गुणदायक–जली हुई सुपारी, जली हुई हल्दी, जली
ई बावची एक एक दाम, मेहँदी, कत्था, भुना सुहागा, भुनी फिटकरी हर
क आधा दाम, मसूर की दाल जली हुई, खशखाश का पोस्ता जला हुआ
ीन तीन दाम, कालीमिरच चौथाई दाम सब महीन कूटछानकर सरसों के
ल में मिलावे और पहिले तीन दिन बराबर ढाक के पत्ते गरम करके
कौते पर बांधे तीन दिन पश्चात् यह तेल लगावे गुणकारक और आजमाया
आ है ।

औषधि—उकौते को गुण करे–बावची कूटछानकर पहिले उकौते में सरसों

का तेल मले उस पर यह औषधि उकौते को गुणदायक—घास दूब, चिरौंजी महीन पीसकर उकौते पर लगावे।

औषधि—उकौते को गुणदायक—कटहल की पत्ती घी में भिगोकर उकौते को पीठ की तरफ से बांधे।

अन्य—महुवे के पत्ते मीठे तेल में भिगोकर गुनगुने उकौते पर बांधे और चार घड़ी के उपरान्त खोलकर दूसरे पत्ते बांधे।

अन्य—गेरू, भुना सुहागा बराबर चमेली के तेल में हलकरके चार-चार बेर लेप करे।

अन्य—करील की लकड़ी का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर मले।

अन्य—भिलावाँ मीठे तेल में मिलाकर खूब हल करे और थोड़ा तूतिया भूनकर महीन पीसकर उसमें मिलाकर लेप करे।

अन्य—उकौते के लिये—तूतिया, कालीमिरच, चूने की बरी, सुहागा एक-एक दाम मेहँदी की पत्तियाँ दो दाम, कड़ुवा तेल चार दाम औषधि महीन पीसकर तेल में औटाकर मिलाकर कई दिन लेप करे।

अन्य—सिंदूर, कालीमिरच, सुपारी, तूतिया, सफेद कत्था, सफेद कौड़ी जलाकर कुचला बराबर लेकर दुगुने तेल में मिलाकर सेवन करे।

अन्य—साबुन, चूना इकट्ठा पीसकर लगावे।

अन्य—उकौते के लिये सिंदूर महीन पीसकर रात को नींबू के रस में भिगो दे सुबह मलकर उकौते को कंडे से छीलकर उस पर लगावे।

अन्य—उकौते को गुण करे—कुचला साढ़े सात दाम, फिटकरी साढ़े तीन दाम घृत में हल करके लेप करे।

अन्य—उस उकौते के घाव को गुण करे जो पांव में होता है—अलसी की खली, तालाब की मिट्टी दोनों बराबर पानी में पीसकर लेप करे जब सूखने लगे कमीला तेल में हल करके मले।

अन्य—खली और नदी की रेत बराबर लेकर पानी में मिलावे और उससे एक टुकड़ा मोटा बनाकर सुबह से शाम तक बांधे तीन चार दिन में आराम हो जावे।

नासूर का यत्न।

प्योटन की जड़ पानी में घिसकर नासूर पर रक्खे या उससे बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे कई दिन में अच्छा हो जावे।

औषधि–नासूर के लिये–पुराना कम्मल जलाकर सब्ज तूतिया कूटछानकर बराबर नासूर पर छिड़के ।

अन्य—नासूर को गुण करे—कनखजूरा जलाकर उसकी राख नासूर पर रक्खे ।

औषधि–पुराने नासूर को गुण करे–सर्प की केंचुल जलाकर उसकी राख बरगद के दूध में मिलाकर उससे रुई भिगोकर नासूर पर रक्खे दश दिन के पीछे उठाले ।

औषध—नासूर को गुण करे–गाय के सुम की राख जूती के तले की राख बराबर लेकर एक छिपकली सरसों के तेल में जलाकर उसमें राख हल करके कई बूंद नासूर पर टपकावे ।

औषधि—नासूर को गुण करे—इमली के बीज पानी में भिगोकर छील डाले फिर उसको पानी में पीसकर उससे बत्ती भरके नासूर पर रक्खे इससे पीड़ा होती है परन्तु जल्दी अच्छा हो जाता है और बाजे कौड़ी भी जलाकर पीसकर मिलाते हैं ।

औषधि–नासूर और भगन्दर को गुणकरे–गूलर के दूध से फाया भिगोकर घावपर रक्खे और एक समय तक यही क्रिया करे ।

अन्य—नासूर को गुण दायक है—समुद्रशोष जलाकर उसकी राख नासूर में भरे ।

अन्य नासूर की पीड़ा को दूर करता है–रुई मदार के दूध में भिगोकर छाया में सुखावे फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलावे और उससे काजल पारकर नासूर पर लगावे ।

अन्य–अरण्ड की कोंपल जो कच्ची और नरम हो पानी में हल करके मेहँदी के सदृश मले ।

अन्य—चिड़िया की बीट महीन पीसकर नासूर पर लेप करे ।

अन्य–नासूर को गुण करे–कण्डे की राख महीन पीसछानकर हथेली पर रखकर नासूर पर बांधे ।

अन्य—मकड़ी का जाला कपड़े में साफ करके शराब में भिगोकर नासूर पर रक्खे ।

अन्य—नासूर को गुण करे–गिलोय, हल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जल जावे पीसकर लेप करे ।

का तेल मले उस पर यह औषधि उकौते को गुणदायक--घास दूब, चिरौंजी महीन पीसकर उकौते पर लगावे ।

औषधि—उकौते को गुणदायक—कटहल की पत्ती घी में भिगोकर उकौते को पीठ की तरफ से बांधे ।

अन्य—महुवे के पत्ते मीठे तेल में भिगोकर गुनगुने उकौते पर बांधे और चार घड़ी के उपरान्त खोलकर दूसरे पत्ते बांधे ।

अन्य—गेरू, भुना सुहागा बराबर चमेली के तेल में हलकरके चार-चार बेर लेप करे ।

अन्य—करील की लकड़ी का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर मले ।

अन्य—भिलावाँ मीठे तेल में मिलाकर खूब हल करे और थोड़ा तूतिया भूनकर महीन पीसकर उसमें मिलाकर लेप करे ।

अन्य—उकौते के लिये—तूतिया, कालीमिरच, चूने की बरी, सुहागा एक-एक दाम मेहँदी की पत्तियाँ दो दाम, कड़ुवा तेल चार दाम औषधि महीन पीसकर तेल में औटाकर मिलाकर कई दिन लेप करे ।

अन्य—सिंदूर, कालीमिरच, सुपारी, तूतिया, सफेद कत्था, सफेद कौड़ी जलाकर कुचला बराबर लेकर दुगुने तेल में मिलाकर सेवन करे ।

अन्य—साबुन, चूना इकट्ठा पीसकर लगावे ।

अन्य—उकौते के लिये सिंदूर महीन पीसकर रात को नींबू के रस में भिगो दे सुबह मलकर उकौते को कंडे से छीलकर उस पर लगावे ।

अन्य—उकौते को गुण करे—कुचला साढ़े सात दाम, फिटकरी साढ़े तीन दाम घृत में हल करके लेप करे ।

अन्य—उस उकौते के घाव को गुण करे जो पांव में होता है—अलसी की खली, तालाब की मिट्टी दोनों बराबर पानी में पीसकर लेप करे जब सूखने लगे कमीला तेल में हल करके मले ।

अन्य—खली और नदी की रेत बराबर लेकर पानी में मिलावे और उससे एक टुकड़ा मोटा बनाकर सुबह से शाम तक बांधे तीन चार दिन में आराम हो जावे ।

नासूर का यत्न ।

प्योंटन की जड़ पानी में घिसकर नासूर पर रक्खे या उससे बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे कई दिन में अच्छा हो जावे ।

औषधि—नासूर के लिये—पुराना कम्मल जलाकर सब्ज़ तूतिया कूटछान-र बराबर नासूर पर छिड़के।

अन्य—नासूर को गुण करे—कनखजूरा जलाकर उसकी राख नासूर पर रखे।

औषधि—पुराने नासूर को गुण करे-सर्प की केंचुल जलाकर उसकी राख रगद के दूध में मिलाकर उससे रुई भिगोकर नासूर पर रक्खे दश दिन के छे उठाले।

औषध—नासूर को गुण करे—गाय के सुम की राख जूती के तले की राख राबर लेकर एक छिपकली सरसों के तेल में जलाकर उसमें राख हल करके ई बूँद नासूर पर टपकावे।

औषधि—नासूर को गुण करे—इमली के बीज पानी में भिगोकर छील ले फिर उसको पानी में पीसकर उससे बत्ती भरके नासूर पर रक्खे सेे पीड़ा होती है परन्तु जल्दी अच्छा हो जाता है और बाजे कौड़ी भी लाकर पीसकर मिलाते हैं।

औषधि—नासूर और भगन्दर को गुणकरे—गूलर के दूध से फाया भिगोकर वपर रक्खे और एक समय तक यही क्रिया करे।

अन्य—नासूर को गुण दायक है—समुद्रशोष जलाकर उसकी राख नासूर भरे।

अन्य नासूर की पीड़ा को दूर करता है-रुई मदार के दूध में भिगोकर ाया में सुखावे फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलावे और ससे काजल पारकर नासूर पर लगावे।

अन्य—अरण्ड की कोंपल जो कच्ची और नरम हो पानी में हल करके हँदी के सदृश मले।

अन्य—चिड़िया की बीट महीन पीसकर नासूर पर लेप करे।

अन्य—नासूर को गुण करे—कण्डे की राख महीन पीसछानकर हथेली पर बकर नासूर पर बांधे।

अन्य—मकड़ी का जाला कपड़े में साफ करके शराब में भिगोकर नासूर र रक्खे।

अन्य—नासूर को गुण करे—गिलोय, हल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जल ावे पीसकर लेप करे।

अन्य—नासूर को लाभ करे–करीले की कोंपल एक माशे, मुरदारसंग एक रत्ती, बरगद का दूध एक बूंद पानी के साथ पत्थर पर पीसकर लेप करके ऊपर से एक बूंद बरगद के दूध का टपकावे।

औषधि—नासूर के लिये छोटी कटाई का फल कूटछानकर पानी में मिलाकर उससे फाया भिगोकर नासूर पर बांधे।

अन्य—नासूर और अकला को गुण करे—घोड़े का सुम जलाकर अलसी के तेल में मिलाकर नासूर में लगावे कदाचित् नासूर अंग के भीतर होवे दही में मिलाकर नासूर के भीतर रक्खे।

अन्य—जिस हुक्के में सुलफा पीते हैं उसका पानी तीन दिन न बदले, जब पानी पर जाला पड़ जावे उस जाले को लेकर नासूर पर लगावे।

अन्य—नासूर को गुण करे–बिषखपड़े की जड़, मेहँदी के पत्ते, फराश के पत्ते, नरमे के पत्ते, नीम के पत्ते, जैंत के पत्ते, बेर के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, राल दो दो दाम, मीठा तेल एक सेर, पहिले बिषखपड़े की जड़ टुकड़े करके तेल में जलावे फिर पत्तों की टिकिया बनाकर तेल में जलावे और छान के मिलाकर हल करे।

अन्य–नासूर के वास्ते–सफेद मोम, बच खुरासानी एक एक दाम, मीठा तेल पाव भर पहिले तेल को गरम करके उसमें बच जलावे और साफ करके मोम मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–चरचटे की पत्तियां पीसकर उसमें कपड़ा भिगोकर बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे और उसका थोड़ा सा रस नासूर में टपकावे शीघ्र गुण करे।

अन्य–अखरोट की गिरी, मोम, मीठा तेल बराबर लेकर मरहम बनावे।

अन्य–नासूर को गुण करे–गूगल भैंस या गाय के मूत्र में हल करके बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे।

उन औषधियों का वर्णन जो रुधिर को बन्द करती है।

बलगार का कपड़ा जला हुआ, दराई जली हुई, भूना हुआ सुहागा, हल्दी महीन पीसकर कण्डे की राख ईन औषधियों को जिस जगह कि रुधिर जारी हो बांधे रुधिर बन्द करे।

अन्य—घोड़े की लीद बांधे और अण्डे का छिलका लेकर अन्दर का परदा उसका निकालकर सुखाकर महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–संगमरमर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–फेफड़ा जिस जानवर का चाहे सुखाकर जलाकर उसकी राख घाव पर बांधे।

अन्य–भुना तूतिया महीन पीसकर घाव में भर दे।

अन्य–माजू जलाकर घाव पर छिड़के।

अन्य–मूँगा महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–ताजी काई का लेप करे।

अन्य–कुंदर पीसकर छिड़के।

अन्य–रूई जलाकर छिड़के।

आग से जल जाने का यत्न।

इमली की छाल पीसकर गाय के घृत में मिलाकर मले।

अन्य–बरगद की कोंपल गाय के दही में पीसकर मले।

अन्य–अरण्ड के पत्तों का रस मले।

अन्य–धवई के फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य–अण्डे की सफेदी मीठे तेल में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य–दावात की सियाही लगावे।

अन्य–अनार की पत्तियां पीसकर लगावे।

अन्य–सीप घिसकर अण्डे की सफेदी में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य–जो शरीर जलकर सफेद हो गया हो हड़, बहेड़ा, आमला पानी में पीसकर लगाना असली रंग पर लाता है।

पुराने छप्पर की घास पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य गेहूँ या जौ का आटा पानी में हल करके लगावे।

अन्य–जल जाने के पीछे जब दाग रह जावे जामुन की पत्ती पीसकर लेप करे।

अन्य—बेर की कोंपल दही में मिलाकर कई बेर मले गुण दे।

अन्य–हींग पानी में हल करके लगाना मुख्य करके गुणदायक है।

अन्य—झड़बेरी की पत्तियां मीठे तेल में लगाकर मले।

अन्य—माजू जले हुये को गुण करे–जो सब चमड़ा जलकर गिर पड़ा हो उसी समय आराम देता है–राल महीन पीसकर मीठे गरम तेल में डाले जब पिघल जावे मिलाकर लेप करे।

का तेल मले उस पर यह औषधि उकौते को गुणदायक—घास दूब, चिरौंजी महीन पीसकर उकौते पर लगावे।

औषधि—उकौते को गुणदायक—कटहल की पत्ती घी में भिगोकर उकौते को पीठ की तरफ से बांधे।

अन्य—महुवे के पत्ते मीठे तेल में भिगोकर गुनगुने उकौते पर बांधे और चार घड़ी के उपरान्त खोलकर दूसरे पत्ते बांधे।

अन्य—गेरू, भुना सुहागा बराबर चमेली के तेल में हलकरके चार-चार बेर लेप करे।

अन्य—करील की लकड़ी का कोयला सरसों के तेल में मिलाकर मले।

अन्य—भिलावाँ मीठे तेल में मिलाकर खूब हल करे और थोड़ा तूतिया भूनकर महीन पीसकर उसमें मिलाकर लेप करे।

अन्य—उकौते के लिये—तूतिया, कालीमिरच, चूने की बरी, सुहागा एक-एक दाम मेहँदी की पत्तियाँ दो दाम, कड़ुवा तेल चार दाम औषधि महीन पीसकर तेल में औटाकर मिलाकर कई दिन लेप करे।

अन्य—सिंदूर, कालीमिरच, सुपारी, तूतिया, सफेद कत्था, सफेद कौड़ी जलाकर कुचला बराबर लेकर दुगुने तेल में मिलाकर सेवन करे।

अन्य—साबुन, चूना इकट्ठा पीसकर लगावे।

अन्य—उकौते के लिये सिंदूर महीन पीसकर रात को नींबू के रस में भिगो दे सुबह मलकर उकौते को कंडे से छीलकर उस पर लगावे।

अन्य—उकौते को गुण करे—कुचला साढ़े सात दाम, फिटकरी साढ़े तीन दाम घृत में हल करके लेप करे।

अन्य—उस उकौते के घाव को गुण करे जो पांव में होता है—अलसी की खली, तालाब की मिट्टी दोनों बराबर पानी में पीसकर लेप करे जब सूखने लगे कमीला तेल में हल करके मले।

अन्य—खली और नदी की रेत बराबर लेकर पानी में मिलावे और उससे एक टुकड़ा मोटा बनाकर सुबह से शाम तक बांधे तीन चार दिन में आराम हो जावे।

नासूर का यत्न।

प्योटन की जड़ पानी में घिसकर नासूर पर रक्खे या उससे बत्ती भिगोकर नासूर पर रक्खे कई दिन में अच्छा हो जावे।

औषधि–नासूर के लिये–पुराना कम्मल जलाकर सब्ज़ तूतिया कूटछान-कर बराबर नासूर पर छिड़के ।

अन्य—नासूर को गुण करे—कनखजूरा जलाकर उसकी राख नासूर पर रक्खे ।

औषधि–पुराने नासूर को गुण करे–सर्प की केंचुल जलाकर उसकी राख बरगद के दूध में मिलाकर उससे रुई भिगोकर नासूर पर रक्खे दश दिन के पीछे उठाले ।

औषध—नासूर को गुण करे–गाय के सुम की राख जूती के तले की राख बराबर लेकर एक छिपकली सरसों के तेल में जलाकर उसमें राख हल करके कई बूँद नासूर पर टपकावे ।

औषधि—नासूर को गुण करे—इमली के बीज पानी में भिगोकर छील डाले फिर उसको पानी में पीसकर उससे बत्ती भरके नासूर पर रक्खे इससे पीड़ा होती है परन्तु जल्दी अच्छा हो जाता है और बाजे कौड़ी भी जलाकर पीसकर मिलाते हैं ।

औषधि–नासूर और भगन्दर को गुणकरे–गूलर के दूध से फाया भिगोकर घावपर रक्खे और एक समय तक यही क्रिया करे ।

अन्य—नासूर को गुण दायक है—समुद्रशोष जलाकर उसकी राख नासूर में भरे ।

अन्य नासूर की पीड़ा को दूर करता है–रुई मदार के दूध में भिगोकर छाया में सुखावे फिर उसकी बत्ती बनाकर सरसों के तेल में जलावे और उससे काजल पारकर नासूर पर लगावे ।

अन्य–अरण्ड की कोंपल जो कच्ची और नरम हो पानी में हल करके मेहँदी के सदृश मले ।

अन्य—चिड़िया की बीट महीन पीसकर नासूर पर लेप करे ।

अन्य–नासूर को गुण करे–कण्डे की राख महीन पीसछानकर हथेली पर रखकर नासूर पर बांधे ।

अन्य—मकड़ी का जाला कपड़े में साफ करके शराब में भिगोकर नासूर पर रक्खे ।

अन्य—नासूर को गुण करे–गिलोय, हल्दी कूटकर तेल में औटावे जब जल जावे पीसकर लेप करे ।

अन्य—नासूर को लाभ करे—करीले की कोंपल एक माशे, मुरदारसंग एक रत्ती, बरगद का दूध एक बूंद पानी के साथ पत्थर पर पीसकर लेप करके ऊपर से एक बूंद बरगद के दूध का टपकावे।

औषधि—नासूर के लिये छोटी कटाई का फल कूटछानकर पानी में मिलाकर उससे फाया भिगोकर नासूर पर बांधे।

अन्य—नासूर और अकला को गुण करे—घोड़े का सुम जलाकर अलसी के तेल में मिलाकर नासूर में लगावे कदाचित् नासूर अंग के भीतर होवे दही में मिलाकर नासूर के भीतर रक्खे।

अन्य—जिस हुक्के में सुलफा पीते हैं उसका पानी तीन दिन न बदले, जब पानी पर जाला पड़ जावे उस जाले को लेकर नासूर पर लगावे।

अन्य—नासूर को गुण करे—बिषखपड़े की जड़, मेहँदी के पत्ते, फराश के पत्ते, नरमे के पत्ते, नीम के पत्ते, जैत के पत्ते, बेर के पत्ते, अरण्ड के पत्ते, राल दो दो दाम, मीठा तेल एक सेर, पहिले बिषखपड़े की जड़ टुकड़े करके तेल में जलावे फिर पत्तों की टिकिया बनाकर तेल में जलावे और छान के मिलाकर हल करे।

अन्य—नासूर के वास्ते—सफेद मोम, बच खुरासानी एक एक दाम, मीठा तेल पाव भर पहिले तेल को गरम करके उसमें बच जलावे और साफ करके मोम मिलाकर मरहम बनावे।

अन्य—नासूर को गुण करे—चरचटे की पत्तियां पीसकर उसमें कपड़ा भिगोकर बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे और उसका थोड़ा सा रस नासूर में टपकावे शीघ्र गुण करे।

अन्य—अखरोट की गिरी, मोम, मीठा तेल बराबर लेकर मरहम बनावे।

अन्य—नासूर को गुण करे—गूगल भैंस या गाय के मूत्र में हल करके बत्ती बनाकर नासूर में रक्खे।

उन औषधियों का वर्णन जो रुधिर को बन्द करती है।

बलगार का कपड़ा जला हुआ, दराई जली हुई, भूना हुआ सुहागा, हल्दी महीन पीसकर कण्डे की राख ईन औषधियों को जिस जगह कि रुधिर जारी हो बांधे रुधिर बन्द करे।

अन्य—घोड़े की लीद बांधे और अण्डे का छिलका लेकर अन्दर का परदा उसका निकालकर सुखाकर महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–संगमरमर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–फेफड़ा जिस जानवर का चाहे सुखाकर जलाकर उसकी राख घाव पर बांधे।

अन्य–भुना तूतिया महीन पीसकर घाव में भर दे।

अन्य–माजू जलाकर घाव पर छिड़के।

अन्य–मूँगा महीन पीसकर छिड़के।

अन्य–ताजी काई का लेप करे।

अन्य–कुंदर पीसकर छिड़के।

अन्य–रूई जलाकर छिड़के।

आग से जल जाने का यत्न।

इमली की छाल पीसकर गाय के घृत में मिलाकर मले।

अन्य–बरगद की कोंपल गाय के दही में पीसकर मले।

अन्य–अरण्ड के पत्तों का रस मले।

अन्य–धवई के फूल जलाकर सरसों के तेल में मिलाकर लेप करे।

अन्य–अण्डे की सफेदी मीठे तेल में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य–दावात की सियाही लगावे।

अन्य–अनार की पत्तियां पीसकर लगावे।

अन्य–सीप घिसकर अण्डे की सफेदी में मिलाकर लगाना गुण करे।

अन्य–जो शरीर जलकर सफेद हो गया हो हड़, बहेड़ा, आमला पानी में पीसकर लगाना असली रंग पर लाता है।

पुराने छप्पर की घास पीसकर सरसों के तेल में मिलाकर लगावे।

अन्य गेहूँ या जौ का आटा पानी में हल करके लगावे।

अन्य–जल जाने के पीछे जब दाग रह जावे जामुन की पत्ती पीसकर लेप करे।

अन्य–बेर की कोंपल दही में मिलाकर कई बेर मले गुण दे।

अन्य–हींग पानी में हल करके लगाना मुख्य करके गुणदायक है।

अन्य–झड़बेरी की पत्तियां मीठे तेल में लगाकर मले।

अन्य–माजू जले हुये को गुण करे–जो सब चमड़ा जलकर गिर पड़ा हो उसी समय आराम देता है–राल महीन पीसकर मीठे गरम तेल में डाले जब पिघल जावे मिलाकर लेप करे।

अन्य—मेहँदी की पत्तियां पानी में पीसकर लेप करे और मक्खन के साथ लगाना दूसरा गुण रखता है।

लेप करने की दवाइयां।

जब कोई वस्तु किसी अंग पर गिर पड़े उसको जरबा बोलते हैं और सकता वह है कि आप ही अंग किसी वस्तु पर गिरे—कदाचित् उसके कारण शोथ या ज्वर हो पहिले शोथ या ज्वर का यत्न फस्द, पछने और नरम करनेवाली वस्तुओं से करे।

गोली—चोट को गुण करती है—पीपल की पत्तियां इक्कीस पीसकर गुण में मिलावे और गोलियां बनाकर सात दिन खावे।

औषधि—चोट को गुण करे—बारहसिंगे का सींग पानी में घिसकर पिये।

अन्य—कच्चा बैंगन शक्कर के साथ खावे और थोड़ी सौंफ की जड़ पीसकर पिये।

अन्य—खरियामिट्टी एक टंक आधपाव पानी में हल करे जब मिट्टी बैठ जावे पानी साफ करके पिये।

चूर्ण—चोट को गुण करे और पीड़ा बिल्कुल खो दे—नोन छः माशे, शक्कर सफेद छः माशे चूर्ण बनाकर खावे।

औषधि—हजरतयहूद आधे माशे से एक माशे पर्यन्त खाना मोमियाई के बराबर प्रभाव रखता है।

गोली—चोट के वास्ते बहुत गुण करे, यहां तक कि चौपाये की चोट को गुण करे—गेहूँ जलाकर उसके बराबर गुड़ मिलाकर खूब पीसकर थोड़ा थोड़ा घी में मिलावे, खूराक डेढ़ तोले तक तीन दिन खाने से चोट और पीड़ा बिल्कुल नष्ट हो और इस औषध को मोमियाई हिन्दी बोलते हैं।

दवा—चोट और शरीर में रुधिर जम जाने को गुण करे—एक माशा फिटकरी पीसकर चार तोले घी में भूने जब फिटकरी घी में जम जावे ऊपर के घी को लेकर उसमें शक्कर और मैदा मिलाकर हलवा बनाकर खावे और उसी हलवे की एक गोली बनाकर वह फिटकरी उसमें रखकर तीन दिन लगावे मोमियाई से उत्तम है।

लेप—बचियार की लकड़ी पानी में घिसकर गुनगुनी लगावे।

अन्य—चोट और मोच को गुण करे—सहँजन की पत्तियां बराबर मीठे तेल में पीसकर लेप करके धूप में बैठे।

औषधि—मांदगी को गुण करे-जिस तेल को चाहे गुनगुना करके नाखूनों पर मले।

अन्य—चोट को गुणदायक और टूटे हुये जोड़ को असली हालत पर लाता है—रेंडी की गिरी, कालेतिल जुदा जुदा कूटकर मीठे तेल में मिलाकर लेप करे।

औषधि—चोट और मोच को गूण करे—तिल की खली कूटकर गरम पानी में डाले जब घुल जावे महीन कपड़े में लेप करके जोड़ पर रक्खे।

अन्य—मांदगी को गुड़दायक—मीठा तेल गरम तलुओं पर मले और जंगली कण्डों की आग से सेंक करे और पांव ऊँचे रक्खे।

औषधि—चोट को गूण करे—साबुन पानी में पीसकर गरम करके मले और जिस जोड़ में हवा लगी हो उसको भी गुणदायक है और साबुन में हल्दी मिलाकर लेप करे गुण करे।

औषधि—चोट और उस गांठ को जो चोट के कारण पड़ गई हो गुण करे—पुराने नारियल की गिरी जो कड़वी न हो कूटकर चार भाग हल्दी महीन करके मिलावे और थोड़ा पोटली बांधकर गरम करके दो तीन घड़ी सेंक करे फिर चोट और वरम की जगह पर बांध दे दो तीन दिन में आराम हो जावे।

औषधि—चोट को गुण करे—हल्दी, मैंदालकड़ी, गेहूँ का मैदा आध-आध पाव, सज्जीलोटन एक दाम, मीठा तेल पाव भर पहिले तेल को गरम करे और मैंदा उसमें भूने फिर औषधि जुदी-जुदी महीन करके पहिले सज्जी फिर मैंदा लकड़ी फिर हल्दी मिला कर थोड़ा पानी डालकर पकावे जब पानी जल जावे गरम लेकर सेंक करे इसको लिपड़ी बोलते हैं।

औषधि—चोट और मोच को चाहे ताजी हो या पुरानी अद्वितीय गुण-दायक है—अशना दो दाम, सोंठ और कुचला टुकड़े-टुकड़े करके हांडी में एक सेर पानी के साथ डालकर सरपोश बन्द करके औटावे जब तृतीयांश जल शेष रहे पहिले बफारा ले फिर जोड़ को इस पानी से धोकर दवा का फोग पीसकर गुनगुना बांधे तीन दिन में बिल्कुल आराम हो जावे।

औषधि—मोच को जल्दी आराम देती है—पहिले जोड़ को गुनगुने पानी

से धोवे फिर अंडे की जरदी और थोड़ा गेरू मिलाकर गुनगुना लेप करे- और जोड़ को आग से सेंके कि दवा सूख जावे।

बहुत मोटाई का इलाज।

यह रोग कई कारणों से पैदा होता है, स्त्रियों के स्वभाग में अधिक है और मर्दों के स्वभाव में कम है।

यत्न—शरीर में रुधिर की अधिकता हो तो फस्द ले नहीं तो कफ के मुसिल दे और वह औषधियां जो शरीर को सुखाती और दुबला करती हैं सेवन करे।

चूर्ण—शरीर को दुबला करने के लिये धुली हुई लाख दो टंक, काला- जीरा, अजवाइन हर एक चार टंक, खूराक एक टंक, दो तोले सिकंजबीन सादी के साथ।

अन्य—चन्दरस एक माशा, दो तोले सिकंजबीन और पानी के साथ मिला- कर पिये भोजन में सिरका और मसूर और जौ की रोटी खावे शरीर को दुबला कर दे और बबूल की छाया में बैठना मुख्य करके शरीर को दुबला करता है रांगे की अँगूठी पहिनना मुख्य करके शरीर को क्षीण करता है और चीजें कड़वी और खट्टी और दवायें गरम और खुश्क खाना और भूखा रहना और मोटे कपड़े पहिनना और पृथ्वी पर सोना और सरदी में नंगा होना शरीर को दुबला करता है।

शरीर के अधिक क्षीण होने का यत्न।

जो कि अधिक दुबला होना भी एक रोग है इस वास्ते थोड़ी सुगम औष- धियां मोटा करने के लिये लिखी जाती हैं।

औषधि—जो मुख्य करके स्त्री के शरीर को मोटा करे—असगंध, काली- मूसली, सफेदमूसली, बराबर लेकर गोदुग्ध में पकावे जब दूध सूख जावे सुखाकर पीसकर उसके बराबर शक्कर मिलाकर हर रोज सात टंक गाय के दूध के साथ खावे।

अन्य—रोटी दूध के साथ खाना बदन को मोटा करता है।

औषध—बदन को मोटा करने के लिये मीठे बादाम की गिरी, निशास्तां, कतीरा शक्कर बराबर मिलाकर एक तोले भर दूध के साथ खावे।

जवारिश—बदन की तय्यारी के वास्ते यह सुगम औषध हरबी सगीर से प्रति की गई है—कालीमिरच, सोंठ हरएक दश टंक, पीपल तीस टंक, छिले

तिल, अखरोट की गिरी हरएक पचास टंक, शक्कर दो सेर, शहद आवश्यकता के अनुसार यथाविधि माजून बनावे खूराक एक मिस्काल की करे।

मुहासों का यत्न।

यदि बहुत निकलें और मुँह को दुःख दें सरेरू की फस्द खोले और जुलाब के उपरांत ठंढी औषधियों के लेप को सेवन करे।

यत्न—अमलतास के वृक्ष की छाल, अनार, लोध, आंबाहल्दी, नागरमोथा बराबर पीसकर उबटन के सदृश मुँह पर मले और सूखने के पीछे धो डाले।

औषधि—मुहासे को गुणकारक—बेर की गुठली की गिरी, मुलहठी, कूठ बराबर पानी में पीसकर मुँह पर मले।

अन्य—जवासा पानी में औटाकर उससे मुँह धोवे।

अन्य—खुरफे के बीज पीसकर गाय के दूध में उबटना बनाकर सेवन करे।

अन्य—नरकचूर, समुद्रझाग पानी में पीसकर उबटना बनावे।

अन्य—सफेद घुँघची की गिरी, लाहौरी नोन पीसकर कुचला भिगोकर उसके जल में मिलाकर लेप करे।

अन्य—नरकचूर पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—पींली कौड़ी पीसकर नीम के रस में भिगो दे जब रस सूख जावे और डाले जब वह भी सूख जावे पीसकर सुबह और शाम मले मुख को साफ करता है।

मुख का रंग बराबर हो जानें का यत्न।

जो कलेजे और तिल्ली और कोष्ठ के उपद्रव से हो उन अंगों का यत्न न करे और जो चीजें रंग को खराब करती हैं जैसे कि बैंगन और जीरा और सिरका न खावे और अधिक भोग, चिन्ता, खेद, गरम हवा और धूप से पथ्य करे।

औषधि—चेहरे को चमकावे और झाई दूर करे—हरे कलमली के बीज दूध में पीसकर उबटने की तरह मले।

अन्य—चिड़िया की बिष्ठा सुखाकर पींसकर मुख पर मले।

अन्य—मुहासे को गुण करे—सिरस की छाल, काले तिल बराबर सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य-कलौंजी सिरके में पीसकर रात को लेप करे सुबह धो डाले मुहासे और मस्से दूर हो जावें इसी प्रकार अजवाइन का लगाना गुण करता है।

लेप-मुहासे को गुणकारक-झरबेरी के बेर जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर लेप करे।

अन्य—मुँह चमकावे-पीली सरसों आध पाव दूध में औटावे जब दूध सूख जावे सरसों सुखाकर पीसकर उबटना बनाकर मले।

अन्य-मुहासे को गुणकारक-मँजीठ, रक्तचन्दन, मसूर, लोध, लहसुन की कोपल कूटछानकर महीन करके रात को मुहासे पर लगाकर सुबह धो डाले।

अन्य—मुख को चमकावे और साफ करे-चावल, जौ, चने, मसूर और मटर का आटा हरएक इनमें से मुँह को साफ कर देता है उबटना बनाकर सेवन करे।

औषधि—स्त्री के रगं की सफाई के लिये उत्तमोत्तम है और मुख्य खाने में गुण करती है-खोपड़े की बट्टी लेकर उसमें छिद्र करके एक दाम केसर, एक दाम जवासा पानी में पीसकर उसमें डालकर उसके टुकड़े से छिद्र बन्द करके आठ सेर गाय के दूध में मधुरी अग्नि पर औटावे जब सब दूध सूख जावे औषध को खोपड़े से निकाल पीसकर चने की बराबर गोलियां बनावे सुबह के वक्त एक गोली पान में खावे, एक मित्र ने इसे बहुत आजमाई हुई कहा है।

औषध—अगर, सम्मगअरबी, कतीरा, निशास्ता, ईसबगोल के लुआब या खुरफे के पानी में मिलाकर सफर में मुँह पर मले तो धूप से रंग काला न हो।

काले दाग का यत्न।

अर्थात् वह काला दाग जो मुँह पर हो जावे उसे झाईं कहते हैं।

औषध-झाईं को गुणकारक-तरबूज में छिद्र करके उसमें चावल भरकर सात दिन रक्खे फिर चावल निकालकर सुखाकर उबटना बनावे।

अन्य-आम की बिजली, जामुन की गुठली पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—झाईं को गुणदायक है—नाजबो की पत्तियां, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुँह पर मले।

अन्य-कुलींजन पानी में पीसकर कई दिन लगाना त्वचा के भीतर से

खाकर दूर करता है चाहिये कि थोड़े दिन लगाकर फ़िर चावल
लेप करे कि त्वचा का रंग बराबर हो जावे ।
ई को गुण करे—चौलाई की जड़ और डाल जलाकर पानी में पीस-
पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे, सूखने के पीछे गरम पानी से
र लाहौरी नोन पीसकर मुँह पर मले ।
—झाई को गुण करे—तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर फिर मुँह
!
—कलमीशोरा, हरताल एक एक टंक तीन भाग करके एक भाग
मिलाकर मुँह पर मलकर एक घड़ी धूप में बैठे और गरम पानी से
न दिन में दूर होवे ।
—कागजी नींबू काटकर हल्दी टुकड़े टुकड़े करके उसमें फिर नींबू
टुकड़े एक सप्ताह पर्यन्त रक्खे फिर निकालकर नरकुल की पुरानी
ाथ पीसकर रात को लगाकर सुबह गरम पानी से धो डाले ।
—झाई को गुण करे—करंजुवे की गिरी गाय के दूध में पीसकर लेप
को बुर्राक और प्रकाशवान करता है ।
—झाईं को गुणकारक—शहद, सिरके और नोन में मिलाकर मला करे।
—झाईं को गुण करे—नीम के बीज सिरके में पीसकर मले ।
—झाईं को गुणकारक—अंजरूत दो भाग, कत्था एक भाग, कूटछान
के ताजे दूध में मिलाकर हररोज कई बेर मुख पर मले, शीघ्र
ी जावे ।
—झाईं को गुणदायक—कबूतर की बीट पानी में पीसकर हररोज
लगावे ।
—झाईं को गुणदायक—मसूर नींबू के रस से पीसकर लगावे ।
—भुनी फिटकरी, हराममगज एक एक दाम, चूना आधा दाम कर
र्ग औषध नींबू के रस में खूब पीसकर मरहम के सदृश करके झाईं
दी एक सप्ताह में दूर हो जावे और जब नींबू का रस सूख जावे
ा दे ।

छीप की दवायें ।

को गुणदायक—हल्दी, काले तिल भैंस के दूध में पीसकर लेप करे ।

अन्य—चीनियां के फूल, छाल और उसकी पत्तियां पानी में पीस कर लगावे।

अन्य—चीनियां के फूल, नींबू के रस में पीसकर लगावे छीप और झाईं दूर होवे।

अन्य—छीप को गुणदायक—चौलाई की जड़ और डालें जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर छीप पर लगावे और एक घड़ी धूप में बैठकर गरम पानी से धो डाले।

अन्य—छीप को गुणदायक—पवांर के बीज अधकुचले दही के तोड़ में मिलाकर दो तीन दिन रक्खे फिर बदन में मलकर नहा डाले।

अन्य—छीप को गुणदायक—सुहागा चन्दन पानी में पीसकर लगावे।

मस्से और तिल की दवायें।

मस्सों को गुणदायक—मोर की बीट सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—चूना, सज्जी पानी में घोलकर मस्से को जंगली कंडे से खुजलाकर मले दो तीन दिन में आराम होजावे।

अन्य—धनियां पीसकर लगाना मस्सों और तिल को दूर करता है।

अन्य—चुकन्दर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करना मस्सों को दूर करता है।

अन्य—खुरफे की पत्ती मस्सों पर मलना गुणदायक है।

अन्य—सीप जलाकर सिरके में मिलाकर लेप करना मस्सों को गुणकारक है।

अन्य—पीली हरताल, चूने की कली, मांस कूटने की बट्टी से कूटकर लेप करे।

अन्य—तोहफउलमोमनीन पुस्तक के निर्माता ने लिखा है कि जो सूखे चने चांद की पहिली तारीख से मस्सों की संख्या से एक एक चना एक एक मस्से में छुलाकर सबको एक लत्ते में बांधकर उस लत्ते को हाथ में लेकर दोनों पांव के बीच से हाथ निकालकर उस पोटली को इस तरह फेंके कि कंधे के उपर से पीठ की तरफ गिरजावे एक महीने में सब मस्से दूर हो जावेंगे, एक मित्र का आजमाया हुआ है।

बद का यत्न।

चाहिये कि आरम्भ में उसके गल जाने का यत्न करे क्योंकि जब पक-

कर फूट जाती है बहुत दुःख देती है और कभी कभी उसके चीरने की आवश्यकता हो जाती है उस समय बहुत दुःख होता है।

औषधि–बद को गुणकारक–केले की जड़ मनुष्य के मूत्र में पीसकर गुनगुना कपड़े पर रखकर लगावे।

अन्य–पीपल के पत्ते सीधे तरफ गरम करके बांधे।

अन्य–लसोढ़े के पत्ते गुनगुने बांधे।

अन्य–नरमें के पत्ते बांधे।

अन्य–संभालू की पत्ती गुनगुनी बांधे।

अन्य–मेथी हालों में पीसकर लेप करे।

अन्य–आमला, लसोढ़े की छाल, इमली की छाल पानी में पीसकर बांधे।

अन्य–बिनौले इतना कूटे कि टिकिया की तरह हो जावे गुनगुना करके बांधे।

अन्य–घिकुवार का पट्ठा दो टुकड़े करके थोड़ा रसौत और हल्दी पीसकर उस पर रखकर गुनगुना करके बांधे।

अन्य–आरम्भ में चूना और शहद मिलाकर कपड़े पर मरहम की तरह लगाकर बद पर बांधे और बाजों ने चूने में अण्डे की सफेदी मिलाकर लगाना लिखा है।

अन्य–बद को गुणकारक–हड़ की छाल रेंड़ी के तेल में भून पीसकर सिरके में खमीर करके लेप करे।

अन्य–बदके तोड़ने के वास्ते शीघ्र गुण करे–तूतिया आधाभाग, हालों, हल्दी, राल, एक एक भाग, गूगुल दो भाग, गुड़ अड़ाई भाग, पीसकर लेप करे।

अन्य–बद को गुणदायक–चने का आटा गूगल में मिलाकर टिकिया बनाकर बांधे, ऊपर से नीम की पत्तियां गरम करके बांधे और केवल नीम के पत्ते ही बांधना काफी है।

लेप–कुचला चन्दन की तरह घिसकर कालीमिरच मिलाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य–राई गरम पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य–बद के लिये आजमाया हुआ है–जो बद बड़ी हो चार दिन में पचादे–प्याज को छूरी से कीमा करके असमर्थ लड़के के मूत्र में पकावे जब खूब गलजावे टिकिया बनाकर बांधे।

अन्य-कलौंजी सिरके में पीसकर रात को लेप करे सुबह धो डाले मुहासे और मस्से दूर हो जावें इसी प्रकार अजवाइन का लगाना गुण करता है।

लेप-मुहासे को गुणकारक-झरबेरी के बेर जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर लेप करे।

अन्य—मुँह चमकावे-पीली सरसों आध पाव दूध में औटावे जब दूध सूख जावे सरसों सुखाकर पीसकर उबटना बनाकर मले।

अन्य-मुहासे को गुणकारक-मँजीठ, रक्तचन्दन, मसूर, लोध, लहसुन की कोपल कूटछानकर महीन करके रात को मुहासे पर लगाकर सुबह धो डाले।

अन्य—मुख को चमकावे और साफ करे-चावल, जौ, चने, मसूर और मटर का आटा हरएक इनमें से मुँह को साफ कर देता है उबटना बनाकर सेवन करे।

औषधि—स्त्री के रगं की सफाई के लिये उत्तमोत्तम है और मुख्य खाने में गुण करती है-खोपड़े की बट्टी लेकर उसमें छिद्र करके एक दाम केसर, एक दाम जवासा पानी में पीसकर उसमें डालकर उसके टुकड़े से छिद्र बन्द करके आठ सेर गाय के दूध में मधुरी अग्नि पर औटावे जब सब दूध सूख जावे औषध को खोपड़े से निकाल पीसकर चने की बराबर गोलियां बनावे सुबह के वक्त एक गोली पान में खावे, एक मित्र ने इसे बहुत आजमाई हुई कहा है।

औषध—अगर, सम्मगअरबी, कतीरा, निशास्ता, ईसबगोल के लुआब या खुरफे के पानी में मिलाकर सफर में मुँह पर मले तो धूप से रंग काला न हो।

काले दाग का यत्न।

अर्थात् वह काला दाग जो मुँह पर हो जावे उसे झाईं कहते हैं।

औषध-झाईं को गुणकारक-तरबूज में छिद्र करके उसमें चावल भरकर सात दिन रक्खे फिर चावल निकालकर सुखाकर उबटना बनावे।

अन्य-आम की बिजली, जामुन की गुठली पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—झाईं को गुणदायक है—नाजबो की पत्तियां, तुलसी की पत्तियां पीसकर मुँह पर मले।

अन्य-कुलींजन पानी में पीसकर कई दिन लगाना त्वचा के भीतर से

स्याही सुखाकर दूर करता है चाहिये कि थोड़े दिन लगाकर फिर चावल पीसकर लेप करे कि त्वचा का रंग बराबर हो जावे ।

झाईं को गुण करे–चौलाई की जड़ और डाल जलाकर पानी में पीसकर झाईं पर मले और एक घड़ी धूप में बैठे, सूखने के पीछे गरम पानी से धोवे और लाहौरी नोन पीसकर मुँह पर मले ।

अन्य–झाईं को गुण करे–तुलसी की सूखी पत्तियां पीसकर फिर मुँह पर मले ।

अन्य–कलमीशोरा, हरताल एक एक टंक तीन भाग करके एक भाग पानी में मिलाकर मुँह पर मलकर एक घड़ी धूप में बैठे और गरम पानी से धोवे, तीन दिन में दूर होवे ।

अन्य–कागजी नींबू काटकर हल्दी टुकड़े टुकड़े करके उसमें फिर नींबू के दोनों टुकड़े एक सप्ताह पर्यन्त रक्खे फिर निकालकर नरकुल की पुरानी जड़ के साथ पीसकर रात को लगाकर सुबह गरम पानी से धो डाले ।

अन्य–झाईं को गुण करे–करंजुवे की गिरी गाय के दूध में पीसकर लेप करे–चेहरे को बुर्राक और प्रकाशवान करता है ।

अन्य–झाईं को गुणकारक–शहद, सिरके और नोन में मिलाकर मला करे ।

अन्य–झाईं को गुण करे–नीम के बीज सिरके में पीसकर मले ।

अन्य–झाईं को गुणकारक–अंजरूत दो भाग, कत्था एक भाग, कूटछान कर गाय के ताजे दूध में मिलाकर हररोज कई बेर मुख पर मले, शीघ्र आराम हो जावे ।

अन्य–झाईं को गुणदायक–कबूतर की बीट पानी में पीसकर हररोज कई बेर लगावे ।

अन्य–झाईं को गुणदायक–मसूर नींबू के रस से पीसकर लगावे ।

अन्य–भुनी फिटकरी, हराममगज एक एक दाम, चूना आधा दाम कर यह सम्पूर्ण औषध नींबू के रस में खूब पीसकर मरहम के सदृश करके झाईं पर मले दो एक सप्ताह में दूर हो जावे और जब नींबू का रस सूख जावे और डाल दे ।

छीप की दवायें ।

छीप को गुणदायक–हल्दी, काले तिल भैंस के दूध में पीसकर लेप करे ।

अन्य—चीनियां के फूल, छाल और उसकी पत्तियां पानी में पीस कर लगावे।

अन्य—चीनियां के फूल, नींबू के रस में पीसकर लगावे छीप और झाईं दूर होवे।

अन्य—छीप को गुणदायक—चौलाई की जड़ और डालें जलाकर उसकी राख पानी में मिलाकर छीप पर लगावे और एक घड़ी धूप में बैठकर गरम पानी से धो डाले।

अन्य—छीप को गुणदायक—पवांर के बीज अधकुचले दही के तोड़ में मिलाकर दो तीन दिन रक्खे फिर बदन में मलकर नहा डाले।

अन्य—छीप को गुणदायक—सुहागा चन्दन पानी में पीसकर लगावे।

मस्से और तिल की दवायें।

मस्सों को गुणदायक—मोर की बीट सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—चूना, सज्जी पानी में घोलकर मस्से को जंगली कंडे से खुजलाकर मले दो तीन दिन में आराम होजावे।

अन्य—धनियां पीसकर लगाना मस्सों और तिल को दूर करता है।

अन्य—चुकन्दर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करना मस्सों को दूर करता है।

अन्य—खुरफे की पत्ती मस्सों पर मलना गुणदायक है।

अन्य—सीप जलाकर सिरके में मिलाकर लेप करना मस्सों को गुणकारक है।

अन्य—पीली हरताल, चूने की कली, मांस कूटने की बट्टी से कूटकर लेप करे।

अन्य—तोहफउलमोमनीन पुस्तक के निर्माता ने लिखा है कि जो सूखे चने चांद की पहिली तारीख से मस्सों की संख्या से एक एक चना एक एक मस्से में छुलाकर सबको एक लत्ते में बांधकर उस लत्ते को हाथ में लेकर दोनों पांव के बीच से हाथ निकालकर उस पोटली को इस तरह फेंके कि कंधे के उपर से पीठ की तरफ गिरजावे एक महीने में सब मस्से दूर हो जावेंगे, एक मित्र का आजमाया हुआ है।

बद का यत्न।

चाहिये कि आरम्भ में उसके गल जाने का यत्न करे क्योंकि जब पक-

कर फूट जाती है बहुत दुःख देती है और कभी कभी उसके चीरने की आवश्यकता हो जाती है उस समय बहुत दुःख होता है।

औषधि—बद को गुणकारक—केले की जड़ मनुष्य के मूत्र में पीसकर गुनगुना कपड़े पर रखकर लगावे।

अन्य—पीपल के पत्ते सीधे तरफ गरम करके बांधे।

अन्य—लसोढ़े के पत्ते गुनगुने बांधे।

अन्य—नरमें के पत्ते बांधे।

अन्य—संभालू की पत्ती गुनगुनी बांधे।

अन्य—मेथी हालों में पीसकर लेप करे।

अन्य—आमला, लसोढ़े की छाल, इमली की छाल पानी में पीसकर बांधे।

अन्य—बिनौले इतना कूटे कि टिकिया की तरह हो जावे गुनगुना करके बांधे।

अन्य—बिनौले इतना कूटे कि टिकिया की तरह हो जावे गुनगुना करके बांधे। अन्य—घिकुवार का पट्ठा दो टुकड़े करके थोड़ा रसौत और हल्दी पीसकर उस पर रखकर गुनगुना करके बांधे।

अन्य—आरम्भ में चूना और शहद मिलाकर कपड़े पर मरहम की तरह लगाकर बद पर बांधे और बाजों ने चूने में अण्डे की सफेदी मिलाकर लगाना लिखा है।

अन्य—बद को गुणकारक—हड़ की छाल रेंड़ी के तेल में भून पीसकर सिरके में खमीर करके लेप करे।

अन्य—बदके तोड़ने के वास्ते शीघ्र गुण करे—तूतिया आधाभाग, हालों, हल्दी, राल, एक एक भाग, गूगुल दो भाग, गुड़ अढ़ाई भाग, पीसकर लेप करे।

अन्य—बद को गुणदायक—चने का आटा गूगल में मिलाकर टिकिया बनाकर बांधे, ऊपर से नीम की पत्तियां गरम करके बांधे और केवल नीम के पत्ते ही बांधना काफी है।

लेप—कुचला चन्दन की तरह घिसकर कालीमिरच मिलाकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—राई गरम पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य—बद के लिये आजमाया हुआ है—जो बद बड़ी हो चार दिन में पचादे—प्याज को छूरी से कीमा करके असमर्थ लड़के के मूत्र में पकावे जब खूब गलजावे टिकिया बनाकर बांधे।

औषधि—बगल की सूजन को जिसे हिन्दी में कखुआरी कहते हैं गुणकारक-राई गरम पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य—कान के पीछे की सूजन और कखुआरी शीघ्र पचावे—तुलसी की पत्तियां उसके बराबर अरण्ड की कोंपल पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना लेप करे।

शोथ का यत्न।

फूलने और अंग के मोटे होने का नाम सूजन है कि अंग पर मल गिरने से पैदा हो और यह सूजन चारों दोष या वात से होता है, इसका यत्न माद्दे अर्थात् विकार की रोकनेवाली, गलानेवाली, पकानेवाली और बहाने वाली चीजों का सेवन करना है।

जदवार की गोली—जो सूजन के गलाने में तंजबी खताई के बदले काम देती है—जदवार, रसौत, गेरू, खतमी के बीज, लालचन्दन, रेवंदचीनी, मकोय, सफेद कत्था, कालीजीरी बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे, मकोय के हरे पत्ते या हरे धनिये के रस में या सिरके या गुलाब या पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य—मुख की सूजन को गुणदायक है—हल्दी, गेरू, सोंठ, बिस्मार बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे और मकोय के पत्तों के रस में पीसकर लेप करे।

औषधि—जो पीड़ा को ठहरावे और सूजन को गुणकारक और पीड़ा को शान्त करे—अजवाइन महीन कूटछानकर नींबू के रस में पकाकर गुनगुना सूजन पर बांधे और जो नींबू का रस न हो सिरके में सेवन करे।

लेप—सूजन और जोश को गुण करे—आम की बिजली पानी में पीसकर गुनगुना लगावे खैरुलतिजारब में लिखा है कि गलाने में जदवार के सदृश है।

अन्य—वरम को पचावे अरंड की छाल, बिषखपरे की छाल, सोंठ पीसकर गुनगुना लेप करे।

औषध—धतूरे के पत्ते गुनगुने शोथपर बाँधना गलाता है।

अन्य—बकरी की मेंगनी लेंप करना पुरानी सूजन को गलाता है।

औषध—कान के नीचे की सूजन और बगल की सूजन जल्दी गलावे-मिस्सी जो मशहूर दरख्त है जिसे चकसौनी भी बोलते हैं उसकी पत्ती

लेकर उसकी बराबर अरण्ड की कोंपल पीसकर थोड़ा नोन मिलाकर गुनगुना बगल पर बांधे ।

अन्य—बगल के वरम को गुणकरे और इस औषध को लाल दारू कहते हैं—कत्था, मुरदारसंग, तज, रक्तचन्दन, कबाबा, तूतिया सब्ज, ये कूटछानकर पानी में मिलाकर लेप करे ।

लेप—पीड़ा के ठहराने और मलके पकाने को गुणकरे—मूँग, जौ, लोबिया और मसूर का आटा बराबर लेकर सिरके और पानी में घोलकर लपटी की तरह पकाकर लेप करे ।

अन्य—पीड़ा और सूजन को गुणकरे—सिरस के पत्ते हररोज कई बेर गरम करके बांधे ।

अन्य—सूजन और सख्ती को गुण करे—बरगद के पत्ते घी में तर करके गुनगुने बांधे ।

अन्य—गूलर के पत्तों का रस निचोड़कर जौ के आटे में मिलाकर बाँधे सख्त वरम को गलावे ।

अन्य—वरम को गलावे—प्योटन के पत्ते गरम करके बांधे ।

अन्य—गाय का गोबर वरम पर बाँधे ।

अन्य—धनियां मनुष्य के मूत्र में पीसकर लेप करे ।

लेप—जायफल एक दाम, सोंठि दो दाम, कंघी दो दाम सिरके में पीसकर गरम करके लगावे वरम को गुणकारक—इन्द्रायन की जड़ सिरके में पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य—ईसबगोल जवकुट करके लेप करे ।

अन्य—वरम को पकाकर पीब निकाले—पीपल की छाल पीसकर लेपकरे ।

अन्य—अब्बासी के पत्ते गरम करके बांधे ।

लेप—वरम को पकाय तोड़कर मल निकाले—रवासन के बीज पीसकर गुनगुना लेप करे ।

अन्य—कंघी के पत्ते, इमली के पत्ते, चावल थोड़े-थोड़े लेकर औटावे और पीसकर फोड़े पर लगावे एक दिन में पकावे ।

अन्य—इमली के बीज पकाकर बांधे फोड़ा के तोड़ने और पकाने को गुणदायक है ।

अन्य—फोड़े के तोड़ने को गुणदायक है—सरू के पत्ते, मूंग की दाल, कबूतर की बीट पीसकर गुनगुना फोड़े पर बांधे।

लेप—फोड़े को गुणदायक है और मल को पकाकर निकालता है—थोड़ी खाने की तम्बाकू पानी में पकाकर लेप करे।

लेप—फोड़े को गुणदायक—जिस दिन फोड़ा निकले चूना और तेल मिला कर लगावे बढ़ने न देगा।

औषधि—उस फोड़े के वास्ते जो पीड़ा अधिक करे और फूटा न हो इससे अधिक कोई औषधि फोड़ने में बलवान् नहीं है। सिरस के बीज, मैनफल, जंगार नौ-नौ माशे, रेवन्दचीनी एक तोला भर, प्याज, नीम के पत्ते एक-एक तोला, एलुवा छः-छः माशे, नाखुना, गूगल, अलसी के बीज सात-सात माशे, मेथी छः माशे पीसकर तेज शराब में मिलाकर गुनगुना लगावे।

अन्य—फोड़े को गुणदायक—कबूतर के पर जलाकर उसकी राख तेल में मिलाकर लेप करे, फोड़े को पकाकर तोड़ डाले।

पट्टी—मैदा लकड़ी दो टंक कूटकर लड़के के मूत्र में पकाय पीसकर कपड़े पर रखकर पट्टी की सदृश बांधे।

औषध—घाव को खोलने के लिये हल्दी जलाकर उसकी राख कड़ुवे तेल में मिलाकर घाव पर रक्खे।

लेप—फोड़े के तोड़ने के वास्ते—साबुन, रेवन्दचीनी, गूगल, मैनफल पीसकर कपड़े में रखकर गुनगुना लेप करे।

अन्य—घाव को गुणदायक है—लसोढ़े की पत्ती, गोंदी जलाकर उसकी राख घी में मिलाकर घाव पर रक्खे।

अन्य—बगल के फोड़ों के वास्ते गुण करे—सोंठ, रेंड़ी दोनो पानी में महीन पीसकर गुनगुना लेप करे और ऊपर से अरंड के पत्ते बांधे।

औषध—पांव के छालों को जो राह चलने से पड़ जाते हैं गुणदायक है—चावल पकाकर दही में मिलाकर लेप करे तुरन्त आराम हो जावे।

अन्य—भगन्दर को गुणकारक—अड़ूसे की पत्ती पीसकर थोड़ा नोन मिला कर भगन्दर पर बांधे।

अन्य—भगन्दर की सूजन को गुण करे—करील के पत्ते और अरंड गरम करके बांधे वरम को पचावे।

अन्य—बात की पीड़ा को गुणदायक—अकरकरा, कायफल, खुरासानी

ाजवाइन, सोंठि, नरकचूर बराबर लेकर तिल और रेंड़ी के तेल में मिला-
र लेप करे।

अन्य—बात की पीड़ा को गुणदायक—रेंड़ी के तेल या मीठे तेल में मर्दन
रके महुवे के पत्तों पर वह तेल लगाकर गुनगुना बांधें।

अन्य—उस सूजन के वास्ते जो भिलावें के धुयें से पैदा हो गुण करे।

अन्य—आंबाहल्दी, सांठी के चावल, घास दूब पानी में पीसकर वरम पर
ेप करे।

अन्य—चिरौंजी खाना भिलावें की सूजन को गुणदायक है।

अन्य—गूलर की छाल पानी में पीसकर लेप करे, भिलावें के धुवें के वरम
ो गुण करे।

अन्य—मुरदारसंग पीसकर लगावे।

अन्य—मीठा तेल मले उसी समय सूजन दूर हो जावेगी।

अन्य—उस सूजन के वास्ते जो भिलावें के धुवें से हो—तेंदू की लकड़ी
ीसकर लेप करे।

अन्य—रसूली सूजन के वास्ते गुण करे—कुकरौंधे के पत्ते घी में भिगोकर
ुख में एक सप्ताह पर्यन्त रसूली पर बांधे।

छोटे दानों को जिन्हें फुन्सियां बोलते हैं उनका यत्न।

सिरस के दरख्त की छाल पानी में पीसकर लगावे।

गोली—फुन्सी और बदन के जोश को गुण करे—गेरू, रसौत, जंगी हड़,
रदारसंग, कत्था, लालचन्दन बराबर कूटछानकर गोलियां बनावे और
कोय के रस में लेप करे।

गोली—हर प्रकार की फुन्सियों को गुणदायक है—मुरदार संग, पीले हड़
ी छाल, भंग, चूने की कली, सफेद कत्था एक एक भाग, तूतिया आधा
ाग पानी में गोलियां बनाकर आवश्यकता पर घी में रगड़कर लेप करे।

गोली—फुन्सी को गुणदायक—कत्था, मुरदारसंग, भुना तूतिया, बेलगिरी
राबर पीसकर गोलियां बनावे और समय पर पानी में पीसकर लगावे
गोलियां उस फोड़े को भी गुण करती हैं जिसे औरंगजेबी कहते हैं अर्थात्
ह फोड़ा जिसमें चलनी के सदृश छिद्र होते हैं।

लेप—उन फुन्सियों को गुणकारक जिनमें दाह हो—गेरू, माजून कत्था
रस में पीसकर लेप करे।

गोली—फुन्सी को गुणकारक-सफेद कत्था, भुना तूतिया, जली सुपारी, मुरदारसंग, पीले हड़ की छाल, रेवन्द खताई, बराबर पानी में पीसकर गोलियां बनावे और आवश्यकता पर लगावे।

लेप—कंठमाला को जो गरदन के नीचे होता है गुणदायक है—सन के बीज, मूली के बीज, सहँजने के बीज, जौ, सरसों, अलसी, बराबर कूटछानकर गौ के दूध में पीसकर लेप करे।

अन्य—चट्ठों और दाद को गुणदायक—अमचूर पानी में पीसकर थोड़ा खारी नोन मिलाकर लेप करे।

अन्य—उस फुन्सी के लिये जो मकड़ी मलने से हो जावे गुणदायक है—मड़ुवा पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—सफेद जीरा, सोंठ, पानी में पीसकर लेप करे।

अन्य—मकड़ी के विष और उसके दानों को गुणदायक है—केंचुवा पीसकर मले जो केंचुवा न मिले उसकी मिट्टी का लेप करे।

अन्य—मकड़ी के दानों को गुणकारक—चूना नींबू के रस में खरल करके लेपकरे जो नींबू न मिले मीठे तेल और चिरौंजी में पीसकर लेप करे।

अन्य—मकड़ी के विष को—रक्त चन्दन, श्वेत चन्दन, मुरदारसंग पीसकर लगावे।

अन्य—खली और हल्दी पानी में पीसकर लेप करे—मकड़ी का विष दूर हो जावे।

हाथ पाँव के फटजाने का यत्न।

इस रोग का कारण खुश्की है।

औषध—हाथ पांव के फटजाने के लिये मेहँदी पानी में पीसकर लगावे-चार घड़ी के पीछे दूर करके रेंड़ी का तेल मले।

अन्य—एँड़ी फट जाने के लिये बरगद का दूध घाव में भर दे।

अन्य—बबूल का गोंद पीसकर उसमें भर दे।

अन्य—गाय की कलम या बकरी की कलम की मींगी भरदे।

अन्य—साबुन लाहौरी पानी में पीसकर रात को सोने के समय घाव में भर दे सुबह को धो डाले।

लाभ—जानना चाहिये कि जो खुरदरापन हथेली में पैदा हो उसको

छाजन कहते हैं और जो दाना कि पांव के घाव पर हो जावे उसको उकौता बोलते हैं उकौते की दवायें वर्णन हो चुकी हैं।

बफारा—छाजन को गुणकारक—बबूल की छाल, आम की छाल औटावे और हांड़ी पर सरपोश मजबूत छिपाये कि बुखार बाहर न जावे फिर हांड़ी को उतारकर हथेली और तलुओं को बफारा दे और बफारे के उपरांत घी या मक्खन मले।

अन्य—छोटी कटाई के जड़ पत्ते और डाली रेजा रेजा करके पानी के साथ हांडी में डालकर मजबूत सरपोश से छिपाकर औटावे कि उसका बुखार बाहर न जावे फिर रोगी के हाथ पांवों में घी मलकर उसका बुखार ले और जब ठंढा होने लगे पानी से हाथ पांव धोवे।

औषधि—छाजन को गुणदायक—थोड़ा नौसादर मीठे तेल में पीसकर मले।

यत्न—हाथ पांव के बिगड़ जाने के लिये कि सरदी से काले हो जावे पहिले हाथ पांव को गरम पानी में रक्खे फिर तेल गुनगुना मले।

जूँ के अधिक होने का यत्न।

इसका कारण शरीर में मल का अधिक होना है शरीर को मुसिलों से साफ करे किताबुलखवास में लिखा है कि चांदनी में बैठकर बालों में कंघी करना मुख्य जूं को पैदा करता है।

औषधि—पारा, मूली की पत्तियों के रस में या पान के रस में हल करके उसमें तागा भिगोकर शिर में रक्खे दो तीन दिन में सब जूं मर जावेंगे।

सिरका जिसे हिन्दी में बफा बोलते हैं उसका यत्न।

इस रोग का यत्न शिर में तेल डालना है।

अन्य—जवासा कलोरि के मूत्र में पीसकर शिर में डाले।

अन्य—चने के आटे को एक घड़ी सिरके में डाल दे, फिर वह सिरका लेकर शहद में मिलाकर शिर पर मले।

अन्य—नींबू का रस शक्कर में मिलाकर मले और दोपहर के पीछे शिर धो डाले।

अन्य—साबुन से शिर धोना जूं को मारता है और बफा को शिर से दूर करता है।

अन्य—चुकन्दर की जड़ और पत्तों का काढ़ा थोड़े नोन के साथ तरेड़ा देना बफा और जूं के दूर करने के वास्ते गुणकारक है।

नाखूनों की दवायें।

नाखून के टूट जाने को गुणदायक—अनार की पत्ती पीसकर बांधे कदाचित् हाथ या पांव टूट गया हो उसपर नीला कपड़ा बांधकर मूत्र किया करे।

यत्न—नाखून के फट जाने का—एक भाग सिरका, दो भाग तिलों के तेल में औटावे और उसमें थोड़ा सरेश डालकर गलावे जब मरहम के सदृश हो जावे लेप करे।

चेचक का यत्न।

चेचक कई प्रकार की हैं एक छोटी चेचक जिसको खसरा बोलते हैं और एक वह है कि जिसके दाने बड़े हों उसके उत्तम प्रकार को मोतिया कहते हैं उसका कारण दूध के विकार या तरी के विकार का जोश करना है—चाहिये कि जब शीतला की ऋतु, जो हिन्दुस्तान में बहुधा चैत का महीना है शुरू हो दूध पीने वाले लड़के और उसकी दूध पिलानेवाली को वह दवायें जो रुधिर को साफ करने वाली हैं जैसे शाहतरे का अरक, सरफोंके का अरक, खूबकला, सादी उन्नाब का शरबत, काहू के बीज का शीरा और ईसबगोल का लुआब कभी कभी पिलाया करे और जिस लड़के की आयु दो वर्ष से कम हो शीतला के दिनों में निकलने के पहिले जोंके लगानी चाहिये और उस ऋतु में चिकनाई मांस और मिठाई से पथ्य करे और जब शीतला निकल आवें गरम और ठण्ढी चीजें न दे।

हिन्दुस्तान में जब लड़कों के शीतला निकलती हैं गरम चीजों का सेवन करते हैं और भोजन में चने और गुड़ खिलाते हैं ऐसे उपाय से ईश्वर बचावे ज्वर और चेचक में केवल खिचड़ी या मूँग की दाल खिलावे और मसूर की दाल भी गुणदायक है। कई प्रकार चेचक के बड़े हैं उनमें आरोग्यता कम होती है उनमें से काली और ऊदी है उत्तमोत्तम सफेद और कम वह है कि जिसमें कम दाने हैं। अब थोड़ी दवायें सुगम लिखता हूँ जो चेचक के कम निकलने के पहिले दे निश्चय है कि न निकले और कदाचित निकले तो ईश्वर की कृपा से कम निकले।

शकायक का शरबत लड़के को पिलाना चेचक निकलने को गुणकारक है उसका नुस्खा मिरगी में वर्णन हो चुका है।

अन्य–चेचक के दूर करने और कम निकलने के वास्ते–जब चेचक का संदेह हो अगर लड़का दूध पीता हो चार तोले खोपड़ा उसके दूध पिलाने वाली को एक सप्ताह पर्यंत खिलावे, यदि दो वर्ष का लड़का हो दो तोले भर खोपड़ा और अगर तीन वर्ष का हो तीन तोले, इसी तरह एक सप्ताह पर्यन्त उस लड़के की धाय को खिलावे, ईश्वर की कृपा से चेचक कम निकलेगी। यह नुस्खा एक फिरंगी ने बताया है।

अन्य–जो चेचक के दिनों में खिलावे चेचक न निकले और जो निकले कम निकले–रुद्राक्ष कि हिन्दू उसकी माला बनाते हैं पीसकर लड़के को पिलावे।

अन्य–चेचक के दिनों में निकलने के पहिले घोड़ी का दूध पिलावे।

अन्य–तीन या चार सेमल के बीज निगल जावे, चेचक बहुत कम निकलेगी।

अन्य–आसारों, तुरंज के अरक के साथ चेचक निकलने के पहिले खिलाने से चेचक बहुत कम निकलेगी।

अन्य–हिन्दी लड़के की चेचक के वास्ते गुणदायक है–छिली मुलहठी अधकुचली, अनारदाना बराबर अपने स्वभाव के अनुकूल पानी में औटाकर शहतरे के अरक के साथ पिलावे।

अन्य–चेचक के दानों को अच्छा करदे–सिरस के दरख्त की छाल, पीपल के दरख्त की छाल, लसोढ़े के दरख्त की छाल, गूलर के दरख्त की छाल, कूटछानकर गाय के घी में मिलाकर दानों पर लगावे अगर चेचक दाह संयुक्त हो बहुत गुणदायक है।

उबटना चेचक के दानों को गुणदायक है–आंबा हल्दी, सरकंडे की जड़, जलाई हुई कौड़ी बराबर कूटछानकर भैंस के दूध में मिलाकर रात को मुँह पर लगाकर सुबह भूसी पानी में भिगोकर उस पानी से धोवे।

उबटना–रंग को लाल करे और साफ करदे–छिले मसूर, खरबूजों की गिरी दोनों बराबर पीसकर उबटना बनावे।

अन्य–नागरमोथा औटाकर सुबह को उससे मुख धोया करे।

बालों की दवायें।

बालों का बढ़ना और काला होना।

औषधि—बालों को बढ़ावे—नीम के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर नहा[illegible] के समय शिर में लगावे और चार [illegible] छे धो डाले।

औषधि—बालों के लम्बे होने [illegible] के बीज, बेर के [illegible] पीसकर दो दाम बालों की जड़ में [illegible] घड़ी के पीछे [illegible] धो डाले।

औषधि—बालों के लम्बे होने के लिये—कलौंजी पानी में [illegible] उससे बाल धोवे, इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त धोया करे।

अन्य—आमला नींबू के रस में पीसकर बालों की जड़ों में मले।

अन्य—करील की जड़ पीसकर बालों की जड़ों में मले, बाल लम्बे हो जावेंगे और बफा दूर होगी।

तेल—जो बालों को काला करे—एक सेर मीठे तेल में गेंदे की पंखुड़ियां काटकर डेगची में डालकर औटावे फिर उसे जमीन में गाड़े, एक महीने के पीछे निकालकर वह तेल बालों में मले।

तेल—बालों को काला रक्खे और सफेद न होने दे—हरी झाऊ की जड़ खूब कूटकर उतने ही तिल के तेल में और दोनों के बराबर पानी में औटावे जब सब पानी और आधा तेल जल जावे लेकर गाढ़ा गाढ़ा शिर पर लगावे थोड़े दिनों में सफेद बाल भी काले हो जावें और कभी सफेद न निकलें।

मक्खी का तेल—जो बालों को काला रक्खे—सौ मक्खियां तिलों के तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर साफ करके बालों में लगाया करे।

तेल—बालों के बढ़ाने और काला होने के लिये—सरों के पत्ते एक भाग, आमला दो भाग पानी में औटावे जब गल जावे तिल का तेल मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रहे औषधियों समेत हलकर के बालों में मले।

तेल बालों के बढ़ने के लिये—भंगरे का अरक मीठे तेल में औटावे जब पानी जल कर तेल मात्र शेष रहे हर रोज बालों में मले।

औषधि—नहाने के समय काले तिल की पत्तियों से बालों को धोवे, बाल लम्बे और नरम करता है।

अन्य—बालों के लम्बे होने के वास्ते कड़ अर्थात् कुसुम के बीज कुसुम के वृक्ष की छाल दोनों बराबर जलाकर राख करे और चमेली के तेल में मिलाकर मरहम के सदृश बालों की जड़ों में मले लम्बे और नरम हो जावेंगे।

रसियावशान जलाकर शिर पर लगावे बालों को गिरने से

षधि—जो बालखोरे को गुणकारक है—हाथीदांत जलाकर उसकी बरा-
र रसौत मिलाकर लगावे।

अन्य—बालखोरे को गुणकारक—कदीर की कोंपल बिना पानी के पीसकर
मले दो तीन दिन में बाल निकल आवें।

अन्य—भँगरा पीसकर मलना बालखोरे को गुणकारक है।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक—चुकन्दर के पत्तों का रस चार दाम
कड़ुवे तेल में जलाकर लेप करे।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक है—घोड़े या गधे का सुम जलाकर उसकी
राख मीठे तेल में मिलाकर मले और सींग जलाकर मलना भी गुण-
दायक है।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक है—गन्धक पानी में पीसकर शहद में मिला-
कर लगावे।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक—आमला चुकन्दर के रस में पीसकर लेप
करे पांच छः दिनों में बाल निकल आवें।

अन्य—बालखोरे के लिये—थोड़ा दही बे कलई के तांबे के बर्तन में डालकर
सि से इतना हल करे कि जब सब्ज हो जावे फिर लेप करे।

अन्य—बालखोरे को गुणकारक—पहिले आमले के पानी से जहां बालखोरा
हो धोकर हलके कई घावों पर उस जगह पर लगावे कि रुधिर निकल आवे फिर
नौसादर महीन पीसकर मक्खन में मिलाकर मर्दन करे एक सप्ताह में बाल
निकल आवेंगे।

अन्य—बड़ों का निश्चय है कि कुन्दश और हाथी दांत का बुरादा मुर्ग की
चरबी में मिलाकर जिस जगह पर लगावे यहां तक कि हथेली में भी बाल निकल
आते हैं।

वह औषधियां जो बाल निकलने न दें।

जो बैल का पित्ता मुर्ग के अंडे की सफेदी में मिलाकर बाल उखाड़कर लेप
करे बाल कभी न जमें।

अन्य—जोंक को नोन में लथेड़कर सुखाकर बकरी के मूत्र में पीसकर जिस
जगह बाल हों उखाड़कर लगावे फिर वहां बाल न जमें।

औषधि—बालों को बढ़ावे—नीम के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर नहाने के समय शिर में लगावे और चार घड़ी के पीछे धो डाले।

औषधि—बालों के लम्बे होने की—शीशम के बीज, बेर के पत्ते बराबर पीसकर दो दाम बालों की जड़ में मले चार घड़ी के पीछे गुनगुने पानी से धो डाले।

औषधि—बालों के लम्बे होने के लिये—कलौंजी पानी में पीसकर उससे बाल धोवे, इसी प्रकार एक सप्ताह पर्यन्त धोया करे।

अन्य—आमला नींबू के रस में पीसकर बालों की जड़ों में मले।

अन्य—करील की जड़ पीसकर बालों की जड़ों में मले, बाल लम्बे हो जावेंगे और बफा दूर होगी।

तेल—जो बालों को काला करे—एक सेर मीठे तेल में गेंदे की पंखुड़ियां काटकर डेगची में डालकर औटावे फिर उसे जमीन में गाड़े, एक महीने के पीछे निकालकर वह तेल बालों में मले।

तेल—बालों को काला रक्खे और सफेद न होने दे—हरी झाऊ की जड़ खूब कूटकर उतने ही तिल के तेल में और दोनों के बराबर पानी में औटावे जब सब पानी और आधा तेल जल जावे लेकर गाढ़ा गाढ़ा शिर पर लगावे थोड़े दिनों में सफेद बाल भी काले हो जावें और कभी सफेद न निकलें।

मक्खी का तेल—जो बालों को काला रक्खे—सौ मक्खियां तिलों के तेल में डालकर चालीस दिन धूप में रक्खे फिर साफ करके बालों में लगाया करे।

तेल—बालों के बढ़ाने और काला होने के लिये—सरों के पत्ते एक भाग, आमला दो भाग पानी में औटावे जब गल जावे तिल का तेल मिलाकर औटावे जब पानी जलकर तेल मात्र शेष रहे औषधियों समेत हलकर के बालों में मले।

तेल बालों के बढ़ने के लिये—भंगरे का अरक मीठे तेल में औटावे जब पानी जल कर तेल मात्र शेष रहे हर रोज बालों में मले।

औषधि—नहाने के समय काले तिल की पत्तियों से बालों को धोवे, बाल लम्बे और नरम करता है।

अन्य—बालों के लम्बे होने के वास्ते कड़ अर्थात् कुसुम के बीज कुसुम के वृक्ष की छाल दोनों बराबर जलाकर राख करे और चमेली के तेल में मिलाकर मरहम के सदृश बालों की जड़ों में मले लम्बे और नरम हो जावेंगे।

अन्य--परसियावशान जलाकर शिर पर लगावे बालों को गिरने से रक्षा करे।

औषधि—जो बालखोरे को गुणकारक है—हाथीदांत जलाकर उसकी बराबर रसौत मिलाकर लगावे।

अन्य—बालखोरे को गुणकारक—कदीर की कोंपल बिना पानी के पीसकर मले दो तीन दिन में बाल निकल आवें।

अन्य—भँगरा पीसकर मलना बालखोरे को गुणकारक है।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक—चुकन्दर के पत्तों का रस चार दाम कड़ुवे तेल में जलाकर लेप करे।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक है—घोड़े या गधे का सुम जलाकर उसकी राख मीठे तेल में मिलाकर मले और सींग जलाकर मलना भी गुणदायक है।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक है—गन्धक पानी में पीसकर शहद में मिलाकर लगावे।

अन्य—बालखोरे को गुणदायक—आमला चुकन्दर के रस में पीसकर लेप करे पांच छः दिनों में बाल निकल आवें।

अन्य—बालखोरे के लिये—थोड़ा दही बे कलई के तांबे के बर्तन में डालकर ांसे से इतना हल करे कि जब सब्ज हो जावे फिर लेप करे।

अन्य—बालखोरे को गुणकारक—पहिले आमले के पानी से जहां बालखोरा हो धोकर हलके कई घावों पर उस जगह पर लगावे कि रुधिर निकल आवे फिर नौसादर महीन पीसकर मक्खन में मिलाकर मर्दन करे एक सप्ताह में बाल निकल आवेंगे।

अन्य—बड़ों का निश्चय है कि कुन्दश और हाथी दांत का बुरादा मुर्ग की चरबी में मिलाकर जिस जगह पर लगावे यहां तक कि हथेली में भी बाल निकल आते हैं।

वह औषधियां जो बाल निकलने न दें।

जो बैल का पित्ता मुर्ग के अंडे की सफेदी में मिलाकर बाल उखाड़कर लेप करे बाल कभी न जमें।

अन्य—जोंक को नोन में लथेड़कर सुखाकर बकरी के मूत्र में पीसकर जिस जगह बाल हों उखाड़कर लगावे फिर वहां बाल न जमें।

अन्य–ईसबगोल का लुआब सिरके में मिलाकर बाल उखाड़कर मले अगर थोड़ा समन्दरझाग मिलावे बहुत गुण रखता है।

अन्य—बकरी की मेंगनी और राई महीन पीसकर बाल उखाड़कर मले।

अन्य–रेंड़ी की गूदी पीसकर बाल उखाड़कर मले।

अन्य—समन्दरझाग, अजवाइन साफ अफीम, सिरके में पीसकर ईसबगोल का लुआब मिलाकर बाल उखाड़कर लेप करे।

अन्य—कुचला पानी में पीसकर बाल उखाड़कर लगावे।

अन्य—जोंक सिरके में जलाकर बालों के उखाड़ने के पीछे लेप करे।

अन्य–बाल उखाड़कर चींवटी के अण्डे लेप करे।

अन्य—बाल उखाड़कर सर्प की केंचुल लगावे।

अन्य—चमगादर का रुधिर और मुर्ग का पित्ता और खरगोश का रुधिर और कछुए का पित्ता और तीतर की चरबी हर एक बालों को उखाड़कर लगाना बाल निकलने नहीं देता।

अन्य—नौसादर गाय के पित्ते में हल करके बाल उखाड़कर लगावे।

अन्य—अंजीर का दूध और सूखे मेढक की राख और मेढक का रुधिर जो बाल उखाड़कर लगावे यही गुण रखता है।

अन्य—बकरी का भेजा चूने में मिलाकर बाल उखाड़ने के पश्चात् लगावे।

अन्य–प्याज का रस, कालानोन सिरके में मिलाकर बाल उखाड़कर मले।

बाल गिरकर फिर न निकलें उसका यत्न।

चूहे की मेंगनियां सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य—लसोढ़ा पानी में औटावे जब पानी गहरा हो जावे मलकर बाल गिरने की जगह पर मले–

अन्य—हरे परसियावशान को निचोड़कर मलना गुण करता है।

अन्य—पुराना बादामरोगन लगाना गुणदायक है।

अन्य—किस्त सिरके और शहद में पीसकर मले।

अन्य–बिच्छू मीठे तेल में जलाकर लेप करे।

अन्य—समन्दरझाग जलाकर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—चुकन्दर के पत्तों का लेप करना गुणदायक है।

अन्य—मेढक जलाकर सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य—बकरी का सुम जलाकर सिरके में मिलाकर बाल गिरने की जगह पर मले।

लू लगने का यत्न।

इस रोग के नाश करने के लिये कच्चा आम भूभल में गाड़ दे जब गल जावे निचोड़कर शक्कर में मिलाकर शरबत बनाकर पिये, लू के दुःख को कि वहुत विदेश में पहुँचता है गुण करता है।

ज्वर का यत्न।

एक हमीयोम अर्थात् दिवसिक–मुख्य करके ज्वर के तीन प्रकार है, एक वह जो अधिक चिन्ता, शोच, हर्ष, जागने, तकान, मिरगी, जुकाम, नजले और पेचिश आदि से होता है बहुधा तीन चार दिन से अधिक नहीं रहता है उसका यत्न उस कारण को दूर करना है।

जैसे कि चिन्ता और विकल्प के ज़्वर में हर्ष और आनन्द देना, क्रोध ज्वर में धीरज देना, हर्ष ज्वर में अप्रतिष्ठा और ग्लानि करना और भूख के ज्वर में भोजन देना, इस तरह थोड़ी ठंढाई और मन की पौष्टिक औषध इसको काफी है।

दूसरा वह ज्वर है जो किसी दोष से उत्पन्न हो। उसमें जो मल रगों के अन्दर दुर्गंधित हो वह तप प्रति समय बराबर रहता है और जो मल, रगों के बाहर सड़ जावे वह तप हर वक्त नहीं रहता और रुधिर रगों के अन्दर रहता है।

जो खून के जोश से ज्वर हो उसे सोनोखस कहते है। जो रुधिर की अधिकता के लक्षण वर्णन हो चुके हैं उन लक्षणों से रुधिर की अधिकता मालूम हो सकती है।

उसका यत्न–फस्द के पीछे रुधिर को ठंढी दवाओं से साफ करना, जैसे कि इसबगोल का लुआब, काहू के बीजों का शीरा, कासनी, शरबत उन्नाब आदि। उन्नाब की शरबत का नुस्खा यह है–कि पाव भर उन्नाब पानी में भिगोकर औटाकर छान ले और आध सेर कन्द में कवाम करके रक्खे।

पैत्तिक ज्वर—जो उसका मल रगों के बाहर सड़ गया हो और तीसरे दिन जूड़ी आती हो। पित्त की अधिकता मुँह का कड़ुआ होना और प्यास की अधिकता और रंग की जरदी से मालूम हो जाती है। उसमें विकार होने पर

ज्वर बराबर होता है परन्तु तीसरे दिन वेग करता है। कदचित् पैत्तिक ज्वर का विकार कलेजे के पास की रगों के अन्दर सड़ जाता है। ज्वर में दाह और गरमी बहुत होती है उसको मुहरका बोलते हैं।

उसका यत्न—ठंढी चीजें पिलाना और पित्त को पकाने के उपरान्त निकालना—

कल्क—पैत्तिकज्वर को जो दिनों हो जावे गुणदायक है सदा पिलावे पैत्तिकज्वर बिलकुल जाता रहे—इमली दो तोले रात को पानी में भिगो दे सुबह को उसका साफ पानी लेकर थोड़ी शक्कर मिलाकर पहिले एक तोला ईसबगोल फांककर उस पर पिये।

सिकंजबीन बजूरी—पैत्तिकज्वर को गुणकारक और यह नुस्खा साहब जखीरा सय्यदइस्माईल साहब का है—कासनी की जड़ की छाल, कासनी की जड़, पालक के बीज, खीरे ककड़ी के बीज बराबर लेकर तीन भाग सिरके और दो भाग शक्कर में कवाम करे और तरबूज के बीजों की गिरी का शीरा या मीठे कद्दू के बीजों की गिरी के शीरे के साथ पिये और जो सिरका न मिलावे उसको शरबत बजूरी बारदक कहते हैं।

तरबूज का शरबत—पत्तिक ज्वर को गुणकारक—बड़े तरबूज के पानी के बराबर सफेद शक्कर मिलाकर कवाम करे, खूराक स्वभावानुकूल।

बंशलोचन की टिकिया—पैत्तिकज्वर को गुणकारक, मुसिल के पीछे देनी चाहिये—बंशलोचन, गुलाब के फूल पांच पांच भाग, काहू के बीज, कासनी के बीज तरबूज के बीजों की गिरी, खीरे ककड़ी के बीज, हरएक तीन तीन भाग, नीलोफर के फूल दो भाग कूटछानकर टिकिया बनावे, खूराक दो टंक।

पैत्तिकज्वर को गुणदायक—काहू के बीज, खुरफे के बीज दो दो टंक, पानी में शीरा निकालकर अलका साफ पानी दो तोले भर अधिक करके ईसबगोल एक तोला छिड़ककर पिये।

अन्य—पैत्तिकज्वर को गुणदायक—शहतरे के पत्तों का शीरा, कासनी के बीज दो टंक पानी में पीसकर सादी सिकंजबीन दो तोले मिलाकर पिये।

नींबू का शरबत—पैत्तिकज्वर को गुणदायक है और जले हुये दोष और रुधिर की गरमी को दुरुस्त करता है—आधे रत्तिल शक्कर का कवाम करके

छः दाम नींबू का रस छानकर अधिक करके कवाम पर आने के पीछे उतार कर रख छोड़े,

काढ़ा—उस पैत्तिकज्वर को जो तीसरे दिन आता है वैद्यों की रीति पर—गिलोय अर्थात् गुरच, धनियां, रक्तयचन्दन, कमलगट्टे की गिरी, नीम के वृक्ष के अंदर की छाल हर एक पांच माशे कूटछानकर तीन पाव पानी में औटावे जब आधा पाव रहे साफ करके पिये और चिकारी करने के लिये शरबत नीलोफर दो तोले अधिक करे तो कुछ हर्ज नहीं—शरबत नीलोफर ठंढे शिर के दर्द और गरम तप को गुण देता है।

अन्य—हरे नीलोफर के फूल आधे रत्तिल, गोखरू चार तोले, चार रत्तिल पानी में औटावे और छानकर सेरभर कन्द में कवाम करे, खूराक इक्कीस टंक पर्यन्त।

कद्दू का रस—लौकी लेकर कपरौटी करके हल्के तन्दूर में एक ईंट पर रख दे जब पक जावे निकालकर उसकी मिट्टी ऊपर से दूर करके कद्दू में छेद करके उसका पानी लेकर कन्द या तुरंजबीन या शीरा बिश्त या शरबत या नीलोफोर या शिकंजबीन या शरबत बनफशे के साथ जो उचित हो पिये।

काढ़ा—गरम और पुराने तप को गुणदायक—गिलोय, शहतरा, धनियां, मुलहठी अधकुचली, काकड़ासिंगी कड़वी, खस, रक्तचन्दन, नीम के पत्ते, खरबूजे के बीज अधकुचले बराबर, इसमें से दो दाम लेकर आध सेरे पानी में औटावे जब चतुर्थांश शेष रहे छानकर पिये।

अन्य—पैत्तिकज्वर को गुणदाक—नीलोफर दो मिस्काल, खाकशीर एक मिस्काल दोनों को डेढ़पाव पानी में औटावे जब आध पाव रहे झीने कपड़े में छाने कि नीलोफर रहजावे और खाकशीर छनआवे, थोड़ी मिश्री डालकर मीठा करके पिये।

अन्य—ज्वर को गुणदायक—गुरच, नीम की छाल, धनियां, पद्माक, रक्त-चन्दन, खस बराबर दो दाम के अनुमान एक सेर जल में औटावे जब आध पाव रहे छानकर पिये।

अन्य—ज्वर को गुणदायक—छिली हुई मुलहठी, काकड़ासिंगी, गिलोय, शहतरा, चिरायता, खस, रक्ततचन्दन, नेत्रबाला, अरलू की छाल, धनियां,

जवासा दो टंक बराबर लेकर प्रतिदिन तीन पाव पानी में भिगोकर सुबह को औटावे जब आध पाव शेष रहे साफ करके पिये ।

करंजुवे की गोली–कफ और पित्त की जूड़ी बुखार को गुण करे–करंजुवे की गिरी, पीपल एक एक टंक, सफेद जीरा, बबूल के पत्ते आधा आध टंक कूटछानकर पानी में फालसे के बराबर गोलियां बनावे, तीन दिन तक एक गोली सुबह और एक दोपहर और एक शाम को खावे ।

गोली—पैत्तिकज्वर को गुणदायक—सफेद कत्था चारभाग, कपूर एक भाग कूटपीसकर जंगली बेर के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली ।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणदायक—हिंदुओं की रीति पर सफेद कत्था एक माशा, संखिया एक रत्ती पीसकर मोठ के बराबर गोलियां बनावे, एक गोली जूड़ी से पहिले खावे ।

अन्य—जूड़ी बुखार के वास्ते—अफीम एक रत्ती, नीम के पत्ते ढाई खूब पीसकर गुड़ में मिलाकर चने के बराबर गोलियां बनावे और जूड़ी आने से तीन घड़ी पहिले एक गोली निगल जावे, जब तक शुरु हो दूसरी गोली दे, निश्चय है कि तीसरी गोली की आवश्यकता न होगी ।

अन्य-जूड़ी बुखार को गुणकारक—हुलहुल के पत्ते दाहिने हाथ में कलाई के जोड़पर बाहर की तरफ रखकर उस पर एक छोटी फिटकरी मजबूत बांधे, वहां एक फफोला पैदा होगा नौबत के दिन जूड़ी न आवेगी और ज्वर नष्ट हो जावेगा ।

अन्य—जूड़ी बुखार दूर करे—भुनी फिटकरी, मिश्री दोनों पीसकेर रोगी के स्वभावानुकूल आधे माशे से दो माशे पर्यंत दे, जो खांसी हो इस औषध का सेवन करे ।

अन्य—ज्वर को गुणदायक—तुलसी के पत्ते छः माशे, कालीमिरचें चार, पीपल एक पीसकर एक तोला भर मिश्री मिलाकर पिये ।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणदायक—अफीम एक माशा, कालीमिरच दो माशे, कीकर की लकड़ी का कोयला बराबर लेकर छः माशे पीसकर एक माशे कम वा जियादा स्वभाव के अनुकूल तप के वक्त से चार घड़ी पहिले दे और निहार न दे, कि कै हो जावेगी किन्तु पहले थोड़ा सा भोजन कर ले और औषध खाने के पीछे जब दोपहर या अधिक बीते तब भोजन दे इसके अन्दर न दे, निश्चय है कि एक ही खूराक काफी हो जावेगी ।

अन्य—जूड़ी बुखार को गुणदायक--धतूरे के बीज एक कुल्हिया में भरकर उसका मुँह बन्द कर कपड़मिट्टी करके तन्दूर में रक्खे जब बीज जल जावें उसकी राख चार माशे जवान को, चार रत्ती लड़के को खिलावे।

हिन्दी औषधि जो एक दिन में कफ और पित्तज्वर को दूर करे—हरताल फिटकरी हरएक पांच टंक घीकुवार के रस में नीम के उस सोंटे से कि जिसमें पैसा जड़ा हो सोरह पहर रगड़े और टिकिया बनाकर सुखाकर मिट्टी के बर्तन में टिकिया के नीचे ऊपर पीपल या अरन्ड की लकड़ी की भस्म देकर रक्खे और बर्तन को कपड़मिट्टी करके बारह पहर जंगली कण्डे की आग दे, खूराक एक चावल के बराबर, भोजन दूध चावल।

बफारा—शीतज्वर को दूर करता है—तिब की पुस्तकों में लिखा है कि ऋतु के रुधिर का लत्ता जूड़ी दूर करने को आजमाया हुआ है।

खस का खमीरा।

पित्तज्वर और प्यास को गुणदायक और मन और कलेजे को पौष्टिक है--आधसेर खस के रस में चार दाम खस रात को भिगोकर सुबह को औटावे जब आधा रहे पाव भर शक्कर डालकर कवाम करे और एक माशा खस का अतर अधिक करके खमीर बनावे और थोड़ा गुलाब अधिक करे और शरबत की अधिकता के लिए कभी एक तोला मीठा कद्दू पीस-कर डालते हैं और तपेदिक के वास्ते इसी शरबत में दो दिन चार रत्ती कपूर मिलाते हैं और अतीसार और गरम स्वभांव के समय दो टंक वंश-लोचन मिलाते हैं और इस खमीर में बहुत गुण हैं।

लाभ—समय पर रोगी को भोजन दे किन्तु जब तप की गरमी कम होने लगे भोजन दे, गरम तप में उत्तमोत्तम भोजन—आस जौ या नरम खिचड़ी या दाल चावल और खुरफा, पालक का साग और कद्दू और तरोई है।

यदि कफज्वर का विकार रगों के बाहर सड़ गया हो, हररोज ज्वर आवे और जो उसका विकार रगों के अन्दर सड़ा हो वह भी हररोज आता है—कफ के लक्षण—प्यास का होना, निद्रा का वेग, मूत्र में सफेदी, मुँह का फीका होना है।

यत्न—मल के पकाने के उपरान्त कफ को निकाले।

काढ़ा—कफज्वर को गुणदायक—सौंफ एक टंक, सौंफ की जड़, मुलहठी छिली हुई, अधकुचली गावजबां, करफश की जड़ दो-दो टंक, परसियावशान

तीन टंक औटाकर, गुलकंद दो तोले, सिकंजबीन बजूरी दो तोले हल करके पिये।

तिलिस्म—एक मक्खी, आधी कालीमिरच, बहुत थोड़ी हींग; पानी में पीसकर आंख में लगावे जूड़ी दूर हो जावे।

अन्य तिलिस्म—ज्वर का नाशकारक–उल्लू का पर और गूगल काले कपड़े में लपेटकर घी में तर करके बत्ती बनाकर जलावे, उसका काजल लेकर आंखों में लगावे चौथिये बुखार को आश्चर्यदायक प्रभाव रखता है।

अन्य—सफेद धतूरा इतवार को उखाड़कर दाहने हाथ में बांधें, एक दिन में तप दूर हो जावे।

गोली—कफज्वर को गुणदायक, वैद्यों का नुस्खा–बड़ी पीपल, करंजुवे की गिरी एक-एक तोला, सफेद जीरा, बबूल के पत्ते आधे-आधे तोला, कूटछानकर चने की बराबर गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक दोपहर और शाम को तीन दिन खावे ज्वर नष्ट हो जावेगा।

काढ़ा–मिले हुये बुखार को गुणकारक और हिन्दुओं की रीति पर–धमासा सात माशे बराबर शहद के साथ पानी में औटाकर पिये।

बजूरी की शरबत–सामान्य ज्वरों को गुणकारक–सौंफ, कासनी की जड़ हर एक चार दाम, कंद पाव भर यथाविधि दवायें भिगोकर औटाकर छानकर कन्द मिलाकर कवाम करे।

औषधि—कफज्वर को गुणकारक--मकड़ी का एक सफेद जाला साफ करके गुड़ में लपेटकर बारी से पहिले निगल जावे, शीत नहीं आती है और ज्वर दूर हो जाता है परन्तु तीन दिन सेवन करना चाहिये।

औषधि—मदार की कली जो खिली न हो गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर निगल जाने से तीन दिन में जूड़ी दूर होती है।

धतूरे की गोली—जूड़ी बुखार को गुणदायक–धतूरा बारह टंक, रेवंदचीनी आठ टंक, सोंठ, बबूल का गोंद हरएक चार टंक कूटछानकर चने के बराबर गोलियां बनावे, दो गोलियां जूड़ी आने के पहिले खावे।

औषध–कफज्वर को गुणदायक–करंजुवे की कोपलें तीन, कालीमिरचें दो पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य–करंजुवे की गिरी पानी में पीसकर नाक में टपकावे जूड़ी बुखार से छुट्टी मिलती है।

गोली— जूड़ी बुखार को गुणदायक—मदार की जड़ दो भाग, कालीमिरच एक भाग दोनों को बकरी के दूध में पीसकर चने की बराबर गोलियां बनावे, खूराक बारी से पहिले एक गोली खाये ।

आनन्द भैरव की गोली ।

हिन्दूओं की वैद्यक में लिखा है कि यह गोली सम्पूर्ण कफके रोग, कफ-ज्वर, जुकाम, अजीर्ण और पांव के ठण्ढे पसीने को गुणदायक है—शोधा बच्छनाग, कालीमिरच, पीपल, सोहागा, सिंगरफ बराबर नींबू के रस में पांच घड़ी खरल करके उड़द के बराबर गोलियां बनावे, खूराक एक गोली सुबह और शाम शक्कर के साथ और जिसका स्वभाव बहुत ठण्ढा हो दो गोली दे और दूसरे नुस्खे में मैनफल के बीज, अकरकरा, सोंठ अधिक किया है सात दिन पर्यन्त पान के रस में पीसकर बनाना और उसके रस से खाना लिखा है ।

गोली—जूड़ी बुखार को गुणकारक हिन्दुओं के ज्ञान से है—पारा, आमलासार गन्धक, शोधा बच्छनाग हरएक एक दाम, सोंठ, कालीमिरच पांच पांच दांग, धतूरे के बीज बीस दांग, हरताल आठ दांग पारा और गन्धक खूब पीसकर औषधियां कूटछानकर चार पहर अदरक के रस में खरल करे और दो रत्ती की गोलियां बनावे, खूराक एक गोली शक्कर या पानी के साथ खाय ।

औषधि—जूड़ी बुखार को गुणकारक—पारा, गन्धक, सोंठ, पीपल, काली-मिरच, सुहागा, जमालगोटा शोधा हुआ बराबर लेकर दो पहर नीम के रस में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे—खूराक एक गोली ।

औषध—कफज्वर को गुणकारक—हुलहुल के पत्ते, कालीमिरच एक पीस-कर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे और एक एक गोली तीन दिन तक खावे ।

अन्य—कफज्वर को गुण करती है—मदार के पीले पत्ते कोयलों की आग में राख करके सुबह के वक्त चार रत्ती शहद में मिलाकर खावे ।

अन्य—रामबाण—भूख को अधिक और बद्धकोष्ठ को दूर करती है और कफके तपों को दूर करती है—पारा, गन्धक, शोधा बच्छनाग, लौंग हरएक अढ़ाई अढ़ाई दाम, जायफल सवा दांग, शोधा जमालगोटा डेढ़दाम कूटछानकर तीन दिन नीम के रस में खरल करके कालीमिरच के बराबर गोलियां

बनावे दो गोली तक गरम पानी के साथ ।

भङ्ग का चूर्ण—वैद्यों का नुस्खा है जो एक घड़ी तप आने से पहिले खावे, शीतज्वर को गुणकारक—पीपल, कालीमिरच, कलौंजी, चिरायता, गेरू एक एक माशे, भङ्ग के पत्ते दो माशे कूटछानकर चूर्ण बनावे, खूराक एक माशा बारी के पहिले खावे जो रोगी कम उमर का हो एक माशे से कम दे ।

चूर्ण—वैद्य की औषधि—कफ और सौदा के जूड़ी बुखार को गुणदायक है—एक दाम संखिया बैंगन में रखकर कपड़मिट्टी करके थोड़े जङ्गली कंडों से फूंक दे फिर इसी तरह दूसरे बैंगन में रखकर आग दे फिर पीसकर लोहे की कड़ाही में आधसेर पानी के साथ डालकर नरम आग पर पकावे जब सूखजावे उसको कड़ाही से निकालकर एक दाम गेरू के साथ खरल करे आवश्यकता पर एक चावल से एक रत्ती पर्यंत बल के अनुकूल रोगी को बताशे में खिलावे, भोजन चावल और छिली दाल, नमक कम खावे ।

लाभ—चौथिया तप सौदावी है जो दो दिन बीच देकर आती है उसका विकार रगों के बाहर सड़ जाता है और तप सोदावी कि उसका विकार रगों के अन्दर सड़ जाता है और यह तप बरसों दहती है और कठिनता से दूर होती है, इसका यत्न पकाने के पीछे मल का निकालना है । अब यहां थोड़ी सुगम औषध चौथिये के ज्वर की वर्णन की जाती हैं ।

औषधि—जो चौथिये की गुणकारक है—हींग नोन दो दो माशे एक सेर जल में औटावे जब तीन चार दाम के अनुमान रहे पीजावे, चौथिया बुखार कई दिन में नष्ट होगा ।

अन्य—नौसादर तीन रत्ती, कालीमिरचें दो कूटछानकर ज्वर के दिन खिलावे ।

अन्य—कलौंजी चार दाम महीन करके शहद में मिलाकर चार दिन बराबर खावे, परन्तु जिस दिन तप की बारी हो उसी दिन से आरम्भ करे ।

गोली—कालेधतूरे के पत्ते पान के पत्ते, कालीमिरच ढाई, महीन करके कालीमिरच की बराबर गोलियां बनावे एक गोली सुबह और एक शाम को गरम पानी के साथ दे, चौथिये को गुणकारक और आजमाया हुआ है ।

चूर्ण—चौथिये और कफज्वर को गुणदायक—समंदरफल की गिरी, काली

मिरच, तुलसी के पत्ते बराबर कूटछानकर चूर्ण बनाकर एक माशा या कम या अधिक रोगी के स्वभाव व आयु के अनुसार एक घड़ी पहिले समय से पानी के साथ खिलावे।

अन्य–टेसू के फूल, धनियां एक-एक दाम, चने की भूसी दो दाम कूट-छानकर तीन भाग करे, एक भाग जल के साथ सेवन करे।

अन्य– चौथिये बुखार को गुणदायक–तीन चार माशे चूना पानी में घोलकर एक नींबू उसमें निचोड़े, जब चूना गाढ़ा होकर स्थिर हो जाय उसका साफ पानी लेकर जब तप आने के लक्षण जैसे कि आलस्य और बोझ प्रकट हों पिलावे, जो एक बेर पिलाना उसको नाश न करे दूसरी बेर दे।

औषधि–कफज्वर को गुणदायक–तीन टंक अजवाइन कूटछानकर शहद में मिलाकर दे।

अन्य–चौथिये तप को दूर करे–घीकुवार काटकर उसके ऊपर की छाल दूर करके आग पर रक्खे और थोड़ी अफीम और हल्दी महीन पीसकर उस पर डाले, फिर आग से उतारकर कपड़े में रखकर निचोड़े और बुन के दो प्यालों में भरकर पिये, दो तीन दिन में चौथिया नष्ट हो जावे।

गोली–चौथिये को गुणदायक–पलाशपापड़े का लाल छिलका दूर करके उसकी सफेद गिरी लेकर उसके बराबर करंजुवे की गिरी मिलाकर खूब महीन पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे, एक गोली बासी पानी से निगला करे।

अन्य–चौथिये के लिये–नीम के वृक्ष की भीतरी छाल पांच दाम आधसेर पानी में औटावे जब आधपाव शेष रहे तीन चार टुकड़े चकमाक पत्थर के लेकर आग में गरम करके उसमें बुझावे जब पांच छः दाम पानी बाकी रहे रोगी को पिलावे, इसी प्रकार तीन दिन सेवन करे।

गोली–पुराने तप के वास्ते–इस्पन्द भुना हुआ छः माशे, कलौंजी, पीपला-मूल एक-एक तोला भर कूटछानकर साढ़े तीन तोले भर गुड़ में मिलाकर आधे दाम के अनुमान गोलियां बनावे, गरम पानी से निहार एक गोली खाया करे।

शरबत–सब प्रकार के ज्वर और खाँसी को दूर करता है–गिलोय, शहतरा, नीलोफर, खीरे–ककड़ी के बीज, खतमी के बीज, कासनी के बीज,

चन्दनबूरा एक-एक तोला भर, मुलहठी तीन दाम, लसोढ़े तीस, दाने, बिही-दाना एक टंक डेढ़ पाव कन्द में कवाम करके शरबत बनावे।

काढ़ा–तप को गुणकरे–खशखश के पोस्ते दश कालीमिरच के साथ कूटकर औटाकर पिये।

अन्य–मुख्य करके चौथिये को गुण करती है—एक जूँ बाकले में छिद्र करके रखकर उसका मुख बन्द करके निगलजावे। कलौंजी की जवारिश चौथिये के बुखार को गुणदायक और सौदावी तप को भी गुण करती है।

तीसरा ज्वर का प्रकार तपेदिक है कि गैर असली हरारत मुख्य अर्थात् अवयव हृदय में स्थिर हो जाते हैं और यही ज्वर प्रति समय और बहुधा दिनी तप या और तप गरम रहते रहते तपेदिक हो जाती है दिनी तप अपने आप बहुत कम दिक होती है और इस ज्वर की गरमी का वेग भोजन के उपरान्त अधिक होता है इसका यत्न ठंढाई इत्यादि हैं।

कपूर की गोली–तपेदिक को गुणदायक–कपूर, कसर एक एक टंक, छिली मुलहठी, बिहीदाना, सफेद खशखाश हरएक दो टंक, खीरे-ककड़ी के बीज छिले हुये, काहू के बीज छिले हुये, चन्दन गुलाब में घिसा हुआ, छिले तर-बूज के बीज तीन तीन टंक, सम्मगअरबी आधा आधा टंक दवायें कूटपीस-कर टिकिया बनावे, खूराक एक मिस्काल।

आवजन—जीर्णज्वर को गुणकारक–हराकद्दू, तरबूज, छिले हुये जौ कुचल कर हरे खीरे-ककड़ी के टुकड़े, नीलोफर, काहू के पत्ते, खुरफे के पत्ते इन औषधियों में से जितनी मिलें पानी में औटावे, जब आधी शेष रहे आवजन करके शरीर से जल पोंछकर ठण्ढे तेल में जैसे कि कद्दू का तेल आदि मर्दन करे।

कपूर की गोली—दाहज्वर और तपेदिक को गुणदायक है–चन्दन गुलाब में रगड़कर एक टंक जहरमोहरा रगड़ा हुआ, सफेद कत्था, कतीरा, खुरफे के बीज, बनफ्शा, खशखाश के बीज एक एक टंक, केसर आधा टंक, मीठे कद्दू के बीजों की गिरी, बिहीदाने की गिरी डेढ़ टंक कूटछानकर बिहीदाने के लुआब या ईसबगोल के लुआब में गोलियां बनावे।

अन्य—तपेदिक को गुणदायक–गुड़च जवकुट करके एक तोला भर, छिली मुलहठी अधकुंचली, छः माशे खतमी के बीज, खुब्बाजी दो दो दाम, पाव-भर गरम पानी में भिगोदे सुबह उसका साफ पानी लेकर काहू के बीज

और खुरफे के बीज उसी पानी में पीसकर थोड़ी शक्कर डालकर पिये इसी प्रकार कई दिन सेवन करे।

काढ़ा—तपेदिक को गुणदायक वैद्यक की औषधि—नीम के इक्कीस पत्ते, साबुत कालीमिरचें इक्कीस दोनों को महीन कपड़े में पोटली बांधकर आधसेर पानी में औटावे जब चार दाम शेष रहे छानकर हर रोज दोनों समय पिया करे, एक सप्ताह में अच्छी तरह आराम होगा।

बोहरान का वर्णन।

बोहरान रोग के साथ वैद्य के युद्ध को कहते हैं—यदि स्वभाव प्रबल हो-जावे वह बोहरान खरा है और एक लड़ाई में बिल्कुल प्रबल न हो किन्तु दूसरी लड़ाई की इच्छा हो उसको बोहरान जय्यद नाकिस अर्थात् कुछ खोटा कहते हैं यह रोग के बढ़ जाने का प्रमाण है, और जो रोग प्रबल हो जावे उसको बोहरान रदी अर्थात् बुरा कहते हैं और जो बिल्कुल न आवे किन्तु दूसरी लड़ाई की एहतियाज हो रदीनाकिस कहते हैं, यदि प्रकृति बोहरान के समय विकार आजाय रईस और शरीफ से रजील जोड़ों की ओर दूर करे उसको बोहरान इन्तकाली कहते हैं। बोहरान जय्यद के बारह दिन हैं—चौथा १ सातवां २ ग्यारहवां ३ चौदहवां ४ बीसवां ५ इक्कीसवां ६ चौबीसवां ७ सत्ताईसवां ८ इकतीसवां ९ चोंतीसवां १० सैंतीसवां ११ चालीसवां १२ और बोहरानरदी अर्थात् बुरे बोहरान भयानक के आठ दिन हैं छठा १ आठवां २ दशवां ३ बारहवां ४ पन्द्रहवां ५ सोलहवां ६ अठारहवां ७ उन्तीसवां ८ और दिन में बोहरान नहीं होता है तेरह दिन हैं—बाईसवां १ तेईसवां २ पच्चीसवां ३ छब्बीसवां ४ अट्ठाईसवां ५ उन्तीसवां ६ तीसवां ७ बत्तीसवां ८ तेंतीसवां ९ पैंतीसवां १० छत्तीसवां ११ अड़तीसवां १२ उन्तालीसवां १३ और पांच दिन सब रहते हैं उनमें कभी बोहरान होता है और कभी नहीं होता—तीसरा १ पांचवां २ नवां ३ तेरहवां ४ सत्रहवां ५। बुकरात के बिचार से चालीस दिन के पीछे बोहरान नहीं होता है। बोहरान कई प्रकार का होता है—कभी नकसीर फूटती है कभी दस्त आते हैं कभी कै होती है कभी पेशाब आता है कभी पसीना निकलता है।

लाभ—जिस दिन तप आवे जो दिन उतरते आवे उस दिन को रोग का पहिला दिन गिनेंगे और जो दिन उतरने के पीछे आवे उसके दूसरे दिन

को पहिला दिन ठहरावेंगे और बोहरान और बारी के दिन मुसिल न देना चाहिये बहुत बुरा है अब उलथक के मुखाग्र करने के लिये जय्यदबोहरान के दिनो की संख्या ।

बोहरान जय्यद के बारहों दिन दोहों में ।

दो० चौथा सतवां ग्यारवां, और चौदवां जानु ।
बीस इकिस अरु चौबिसां, फिर सतबीस बखानु ।।
पुनि इकतिस अरु चौंतिसा, सैंतिसवां मन देहु ।
अरु अन्तिम चालीसवां द्वादश यह गनि लेहू ।।
तिसरे पँचवें नवम में, सत्रह तेरह जानु ।
इन दिवसन के मध्य में, कभी नहीं वह भानु ।।
छठें आठवें दशम में, और बारवें मानु ।
पन्द्रह सोलह अठरवें, अरु उन्तिसवें ठानु ।।
जो इनमें बोहरान हो, रदी है ताको नाम ।
बुरो बहुत बोहरान यह, भलो करैगो राम ।।

बिष का यत्न ।

जिस मनुष्य ने विष खाया हो उसका यत्न सर्वमतानुसार—गरम पानी से कै कराना चाहिये और कई बेर घृत और दूध पिलाना और मुगगूह पानी में मिलाकर जिस वक्त पिलावे तुरन्त बिष को कै कराता है और जानना चाहिये कि जंगल और नदी में काटनेवाले जानवर बहुत होते हैं उनके काटने से स्वभाव में रोग प्रकट होते हैं इसकी पूरी रीति यह है कि जहर को सुखावे और जब तक रोग से छुट्टी न हो घाव को न भरने दें और जदवार और वह औषधियां जो विष को दूर करे खाने और पीने में सेवन करे ।

अन्य—गरम जहर के सब प्रकारों को गुणदायक है—चौलाई की जड़ जो हरी हो एक तोला भर, जो सूखी हो छः माशे पानी में पीसकर गाय के घी के साथ खावे ।

अन्य—विष को गुणदायक—गाय का घी दश टंक, लाहौर नोन दो टंक मिलाकर खावे सांप के काटे हुये को भी गुणदायक है ।

अन्य—जो छोटी कटाई पीसकर खावे वैद्यों के विचार में विष का नाशकारक है ।

अन्य—कुचला, कालीमिरच पीसकर थोड़ा खावे, सर्प के विष को गुणदायक है।

अन्य—विष के सब प्रकार को गुणदायक है—एक माशा भर दरियाई नारियल पीसकर पिलावे।

अन्य—बहुत जहरों को गुणदायक है—बिनौले की मिरी कूटकर गाय के दूध में औटाकर पिलावे।

अन्य—कसेरू खाना विष को गुण करता है।

अन्य—विष को गुणकारक—बकरी की मेंगनी जलाकर खावे और लेप करे।

अन्य—अजवाइन खाना बहुत जहरों को दूर करता है।

अन्य—संखिये को गुणदायक है—कत्था दो तीन तोले पानी में घोलकर पिये।

अन्य—संखिये को गुणदायक—एक माशा कपूर कई तोले गुलाब में हल करके पिलावे।

अन्य—विष को गुणदायक—संखिया, बकरी का दूध औटाकर गाय का घी दाग करके मिलाकर पिलावे।

अन्य—विष के करने के वास्ते—कमलगट्टा एक माशा, तूतिया दो रत्ती पीसकर गरम पानी में पिये विष को कै-से निकालता है।

अन्य—अफीम के जहर को गुणदायक—अरण्ड की जड़ पीस बुन का एक प्याला भर पिये।

अन्य—अरहर की पत्ती पीसकर पिये।

अन्य—अरण्ड की कोंपल पीसकर पिये।

अन्य—तेजबल पानी में पीसकर बुन का एक प्याला भर पिये।

अन्य—अफीम के विष को गुणकारक—दो माशे हींग, दो तीन दफा करके खावे।

अन्य—अखरोट की गिरी अफीम का जहर दूर करे।

अन्य—गाय का घी और ताजा दूध अफीम की हानि से बचाता है।

अन्य—धतूरे के विष के वास्ते—बैंगन टुकड़े टुकड़े करके पानी में खूब मलकर पिलावे और जो बैंगन न मिले तो उसके पत्ते या जड़ पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य—धतूरे के विष के दूर करने को–दो दाम बिनौले की गिरी पानी में पीसकर पिये।

अन्य—नोन पानी में मिलाकर पिये।

अन्य—सिंदूर की हानि को गुणदायक है–सात दिन तक अदरक नोन के साथ किन्तु रोटी के साथ खावे और हर वक्त मुंह में रक्खे जिससे कि उसका रस कण्ठ में पहुँचे।

अन्य—नोन, तितली की पत्तियां हरएक पांच मिस्काल, चावल दश मिस्काल, अखरोट की गिरी तीस मिस्काल, सबको अंजीर के साथ कूटकर खिलावे।

अन्य—गुणदायक–पारा और शिगरफ के विकार को दूर करे–ज्वासा थोड़े पानी में पीसकर रस निकालकर पिये।

अन्य—रेंड़ी का तेल पांच माशे आधपाव गाय के दूध में हल करके पिलावे।

अन्य—भिलावें की हानि को गुणदायक–जो भिलावां खाने से शरीर में खुजली और सूजन पैदा हो इमली की पत्तियों का रस निकालकर पिये या उसके बीज पीसकर खावे या चिरौंजी और तिल भैंस के दूध में पीसकर खावे।

अन्य—जो किसी ने भिलावाँ खाया हो उसके विकार के दूर करने के लिये अखरोट खावे और भिलावें के धुवें से जो अंग पर शोथ हो आंबा-हल्दी, साठी के चावल, दूब, बासी पानी में पीसकर सूजनवाले अंग पर जोर से मले या काले तिल सिरके और मक्खन में मिलाकर लगावे।

अन्य–बच्छनाग के विष को गुणदायक–सोंठ बहुत गुणकारी है और यह शोधक है जिस तरह चाहे खावे।

अन्य–मकड़ी के विष को गुणदायक–चौलाई का साग पानी में पीसकर लगावे।

अन्य—उस मनुष्य की औषधि जिसे शेर का बाल खिलाया हो कसौंदी के पत्तों का रस तीन दिन पिये।

अन्य—तीन चार झींगे निगल जावे और शेर के बाल के खाने के यह लक्षण हैं कि बैठने के समय पेट में पीड़ा हो और जो अरण्ड के पत्ते पर मूत्र करे पत्ता टुकड़े-टुकड़े हो जावे।

अन्य—सब प्रकार के बिष को गुणदायक है-खैरुलतिजारब में लिखा है कि हुलहुल के बीज पांच टंक पीसकर खावे ।

अन्य—सांप के विष के वास्ते-सांप कई प्रकार का होता है परन्तु काले सांप का विष औरों से बड़ा बलवन्त होता है समय नहीं देता है कि जिस जगह साप काटे वह अंग यदि काटने के योग्य हो जैसे उँगली तुरन्त काट डाले और जो काटने के लायक न हो वह जगह आग से जला दे और सांप काटे हुये को सोने न दे और चक्की की आवाज सांप काटे हुये के कान में पहुँचने न दे ।

अन्य—सांप काटे हुये को गुणदायक और आजमाई है-जो काले सांप ने काटा हो सात जमालगोटे और जो और किसी तरह के सांप ने काटा हो दो तीन जमालगोटे छीलकर खिलावे और मूँग की बराबर पीसकर आँखों में लगावे जमालगोटे के खाने के पीछे सींगी से जिस जगह सांप ने डसा है खूब चूसे कि विष शरीर में न पहुँचे और बहुत सा लहसुन प्याज और राई का खाना सर्प काटे को गुणदायक है-मुजर्बातअकबरी में लिखा है कि सांप का डसा हुआ मूर्च्छित हो गया हो उसके उदर पर नाभि के ऊपर उस्तरे मारे कि ऊपर का चमड़ा छिल जावे और रुधिर न निकले फिर जमालगोटा पानी में पीसकर लगावे कै शुरू होगी और होश में आवेगा फिर और उपाय करे और एक पुस्तक में लिखा है कि सांप का डसा हुआ अगर मूर्च्छित हो गया हो और हिलता जलता न हो परन्तु अभी तक मरा नहीं किन्तु जीता है कुचला पानी में पीसकर उसके कण्ठ में डाले और थोड़ा पीसकर गरदन और बदन पर मले होश में आ जावेगा ।

अन्य—सांप के डसे हुये को गुणदायक और आजमाया हुआ है-तीन मदार की कोपलें गुड़ में लपेटकर खिलावे और उसके ऊपर घी पिलावे और चार मदार की कलियां, सात कालीमिरचें, एक माशा इन्द्रायण पीस-कर देना लिखा है ।

अन्य—मदार का दूध जिस जगह सांप ने डसा हो टपकावे जब तक सूख न जावे मौकूफ न करे जब जहर का प्रभाव न रहेगा दूध सूखना बन्द हो जावेगा ।

अन्य—मदार की जड़ पीसकर सांप काटे हुये को पिलावे और बाजे इसमें मदार की रुई भी मिलाते हैं ।

गोली—कालीमिरच, जमालगोटे की गिरी सात-सात माशे, तीन कागजी नींबू के रस में पीसकर कालीमिरच के बराबर गोलियां बनावे और पानी में पीसकर सांप काटे हुये की आंख में लगावे और दो तीन खिलावे।

अन्य—सांप के विष को गुणदायक—कसौंदी के बीज महीन पीसकर आंख में लगावे।

अन्य—सांप के विष को गुणदायक—एक खटमल निगल जावे।

अन्य—सांप के विष को दूर करे—सुहागा तेलिया एक दाम भूनकर तेल में मिलाकर पिलावे।

अन्य—चूहे का पेट फाड़कर जहां सांप ने काटा हो बांधे जहर को सुखाता है।

अन्य—सांप के विष को गुणकारक—सिरस के दरख्त की छाल और उसके जड़ की छाल और बीज और फूल, चारों एक-एक दाम एक चमचे भर गाय के मूत्र के साथ एक दिन में तीन बेर करके पिलावे, सांप का विष अपना फल न करे। सिरस का दरख्त कि जिसकी छाल काली हो गई हो उसमें बहुत गुण हैं और बाजों ने लिखा है कि जब ज्येष्ठ का महीना हो सिरस की छाल तीन दिन हररोज दो टंक साठी के चावलों के धोवन में पीसकर पिये, एक वर्ष पर्यन्त जहरदार जानवरों के विष से बचा रहे और उस मनुष्य को जो जानवर काटे वह जानवर तुरन्त मर जावे यह बात मुख्य है।

अन्य—जामुन की अढ़ाई पत्ती पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य—ताजा केंचुवा दो माशे भर पानी में पीसकर पिलावे।

अन्य—एक तख्ता सफेद कागज का थोड़े पानी में घोले और छानकर पिलावे।

अन्य—जिस जगह सांप का डंक हो और विषैले जानवरों का जैसे कि बावले कुत्ते का लगा हो उस पर मूत्र करना गुण देता है।

अन्य—कमल कूटछानकर पानी में मिलाकर पिलावे, कै आवेगी और सांप का विष दूर होगा।

अन्य—सांप के विष को गुण करे समन्दरफल महीन पीसकर दोनों आंखों में लगावे।

अन्य—मंगनधूल पीसकर नाक में टपकावे।

अन्य—कसौंदी की जड़ एक टंक, मिरच आधी टंक खावे ।

अन्य—दो टंक फिटकरी पानी में पीसकर पिलावे सांप के विष को दूर करे ।

अन्य—महुआ और कुचला पीसकर लेप करे ।

लाभ—पुस्तकों में लिखा है कि बारासिंगे का सींग लटकाना सर्प इत्यादिक विषैले चौपायों के काटने से रोकता है और बारासिंगे का सींग और बकरी का सुम और अकरकरे की धूनी से सर्प भागता है और राई सर्प को मार डालती है अगर राई को नौसादर के साथ घर में डाले सांप भाग जावे और फिर न आवे ।

अन्य—बिच्छू के विष को गुणदायक—तीन तोले लहसुन का रस और तीन तोले शहद उसी समय खिलावे और थोड़ा जमालगोटा पानी में पीसकर आंख में लगावे और जिस जगह काटा हो वहां भी मले या तितली के पत्तों का पानी थोड़ा मुंह में टपकावे कई बेर के सेवन से बिच्छू का विष और सर्प का भी दूर हो जावेगा ।

अन्य—बिच्छू के काटे हुये पर उसका मलना गुणदायक है ।

अन्य—मदार का दूध बिच्छू के घाव पर मले ।

अन्य—मक्खी का बिच्छू के घाव पर मलना गुणकारी है ।

अन्य—लहसुन सूखा और अमचूर पीसकर घाव पर लेप करे ।

अन्य—समन्दर फल पीसकर लेप करे ।

अन्य—मुश्की घोड़े का नाखून पानी में पीसकर लगावे ।

अन्य—नौसादर, सुहागा, चूने की कली बराबर हथेली पर मलकर सूंघे और कसौंदी का फल भूनकर खावें और कसौंदी के बीज पीसकर लेप करे ।

अन्य—मोर का पर चिलम में रखकर तम्बाकू के तौर पर पिये ।

अन्य—चूहे की मैंगनी लेप करे ।

अन्य—सज्जी महीन पीसकर शहद में मिलाकर लेप करे ।

अन्य—पलाशपापड़ा पानी में पीसकर घावपर लगावे ।

अमल—खैरुलतिजारब में बिच्छू के विष के दूर करने के वास्ते लिखा है कि बीस अंक उल्टे गिने अर्थात् बीस से प्रारम्भ और एक पर पूर्ण करे बिच्छू का विष दूर हो जावेगा ।

अन्य—अशनान और अजवाइन औटाकर घाव पर तरेड़ा दे ।

अन्य—बिच्छू के विष को गुणदायक–मूली नोन में मिलाकर घाव पर रक्खे जो मूली बिच्छू पर रक्खे मर जावे ।

अन्य—हरताल, हींग, साठी के चावल पानी में पीसकर लेप करे ।

अन्य—बिच्छू के डंक की पीड़ा को गुणदायक है–भंग के बीज कूटकर मोम में मिलाकर खावे ।

अन्य–घास की पत्ती घी के साथ पीसकर घाव पर मले ।

अन्य–नींबू का रस डंक के घाव पर खूब मले ।

अन्य–नागरमोथा बिच्छू के जहर के दूर करने के वास्ते पीना और लगाना गुणकारी है ।

अन्य–मोजिज में लिखा है कि एक मनुष्य के शरीर में बिच्छू ने चालीस जगह काटा उसने शीघ्र ही दो टंक इन्द्रायण का हरा फल खा लिया उसी समय आराम हो गया ।

अन्य–जो बिच्छू किसी जगह जलावे उस जगह से और बिच्छू भाग जावे ।

अन्य–हींग, हरताल, तुरंज को पीसकर गोलियां बनावे जिस जगह बिच्छू ने काटा हो लेप करे ।

अन्य–प्याज का जीरा मले और थोड़ा गुण खावे ।

अन्य–मोम जलाकर बिच्छू के घाव में उनकी धूनी दे अच्छा हो जावे ।

अन्य–बिषखपरे के पत्ते और डाली चरचरे के साथ मिलाकर मले ।

अन्य–कोंच के बीज छीलकर बिच्छू के डंक पर मले ।

अन्य–गोबरौले कीड़े को जो गोबर में पैदा होता है बिच्छू के घाव पर मलना गुणदायक है ।

भिड़ के बिष की गुणदायक दवायें ।

ईसबगोल सिरके में डालकर लुआब निकालकर पिये ।

अन्य–भिड़ के डंक को गुणदायक–तीन हथेली भर धनियां खावे ।

अन्य–काई सिरके में मिलाकर लेप करे ।

अन्य–खतमी और खुब्बाजी का लुआब मले ।

अन्य–मक्खी डंक की जगह पर मले ,

अन्य–शहद खावे और लेप करे ।

अन्य–मकोय की पत्ती सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य–घी इक्कीस बेर धोकर लगावे।

अन्य–अंग को दो तीन बेर गरम पानी से धोवे।

अन्य–हरे धनियें का रस सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कपूर सिरके में मिलाकर लेप करे।

अन्य–भिड़के छत्ते की मिट्टी लेप करे।

अन्य–तिल सिरके में पीसकर लेप करे।

अन्य–गन्धक पीसकर लेप करे।

अन्य–जिसको भिड़ काटे वह अपनी जिह्वा पकड़ ले डंक के दुःख से बच जावे।

अन्य–नया गोबर लगावे।

अन्य–जिस जगह गन्धक या लहसुन जलावे उसकी गन्ध से भिड़ भागती है।

औषधि–छिपकली के काटने का तेल और खाल मले और पानी में भूसी औटाकर गरम तरेड़ा दे।

दीवाने कुत्ते का यत्न।

जिस मनुष्य को बावला कुत्ता काटे थोड़ी देर के पीछे उस मनुष्य का एक दशा उन्माद की रीति पर हो जाती है। जब इस दशा में जियादती हो जीने की आशा नहीं। इसके यत्न में देर न करे और चालीस दिन तक घाव को भरने न दे और सींगियों से खूब चूसे और घाव के गिर्द पछने लगावे और लहसुन सिरके में पीसकर लेप करे और हवा की सरदी से पथ्य करे। और जब कुत्ते का काटा हुआ पानी से डरे जीने की आशा नहीं।

औषधि–एक तोला भर लसोढ़े की पत्ती पन्द्रह कालीमिरच के साथ पीस छानकर पिलावे, कुत्ते के काटे हुए को आश्चर्यदायक और आजमाई हुई है।

अन्य–प्याज कूटकर शहद में मिलाकर लेप करे कि घाव न भरे।

अन्य–कुचला मनुष्य के मूत्र में औटाकर पीसकर लेप करे और शराब में औटाकर छाल दूर करके एक रत्ती हर रोज खाया करे या पानी में औटाकर कूटकर थोड़ा गुड़ मिलाकर खावे।

अन्य–तीन दाम कड़वीकूठ, अधकुचली एक प्याले भर पानी में औटावे जब एक दाम शेष रहे साफ करके पिये।

अन्म–जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के, घाव भरे और उसका जहर असर न करे।

औषधि–जो कुत्ते के काटे हुये को दीवानगी की हालत में भी दे गुण करे–यह दवा आजमाई हुई है जो बरसात में पैदा होती है उसको तलैना भी कहते हैं उसे एक डिबिया में बन्द करके सुखाकर चने की बराबर गुड़ में लपेटकर खावे।

अन्य–अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये मुख्य गुणकारक है–डाक्टर अंग्रेजी की जबानी लालबनात लेकर चने की बराबर सात टुकड़े करके गुड़ में सात गोलियां बनावे और खावे।

अन्य–पछने लगाने और रुधिर निकालने के पीछे राई कूटकर लेप करे।

अन्य–मदार का दूध घाव पर लगावे।

अन्य–उसी कुत्ते के बाल जिसने काटा हो जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायक है।

अन्य–मूली के पत्ते गरम करके घाव पर रक्खे।

अन्य–चूहे की मेंगनी पीसकर लगावे।

अन्य–सँभालू के पत्तों का लेप गुणकारी है।

अन्य–बाजरे का फूल जो बाजरे की बाली में होता है एक माशा भर गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर हर रोज खावे।

अन्य–दो दाम कलौंजी गुनगुने पानी के साथ तीन दिन फांकना गुणदायक है।

गोली–चूहे के बिष को गुणदायक है–सिरस के बीज, नीम के पत्ते, करंजुवे के बीजों की गिरी बराबर के गाय के मूत्र में पीसकर गोलियां बनावे और सबय पर रगड़कर लेप करे जो गाय की चरबी घर में जलावे सब चूहे भाग जावें।

औषधि–मनुष्य के काटे हुये विष को गुणकारक है–गोभी के पत्ते शहद में पीसकर मले।

औशधि–बिल्ली के काटने के जहर को फायदा करे–काले तिल पानी में पीसकर मले और पुदीना भी खाये और मले।

औषधि–कनखजूरे के जहर को गुण करे–मीठा तेल चिराग में जलाये फिर जितना तेल चिराग में रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो मले।

दवा–बन्दर के जहर को गुण करे–मुरदारसंग और नमक पानी में पीसकर मले और कलौंजी और शहद लगावे कि घाव खुला रहे, और प्याज पीसकर मलना भी लाभ दे।

अन्य–मच्छरों के दूर करने के लिये लिखा है कि घोड़े की दुम के बाल कोठरी के दरवाजे पर लटकाये तो मच्छर वहां कम आवें। भूसी, गूगुल, गन्धक और बारासिंगे के सींग की धूनी से भी मच्छर भागते हैं।

तौलों के नाम और उनका हाल।

तौल का नाम **तौलों का हाल**

अबरीक–तिब की रू से दो मन और बाजों ने पांचरतिल लिखा है।

उरजा–चावल को कहते हैं और उससे चावल छोटा मुराद है कि दो राई के बराबर है।

असतार–साढ़े चार मिस्काल और हिन्दी के हिसाब से एक तोला पांच माशा सात रत्ती।

औकिया–इसे अदकिया भी कहते हैं साढ़े सात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्ती है।

बाकला–आधा दिरम और बाकलाई इस्कंदिरया।

हाकला–नौ कैरात और मिसर के हिसाब से बाकल अड़तालीस जौ के बराबर कि डेढ़ माशा होता है।

परमा–दो कैरात।

बंदका–कोई एक दिरम और बाजे एक मिस्काल कहते हैं।

बहलोली–एक दाम और कइयों ने चौदह माशे लिखा है।

पैसा–बारह माशे अर्थात् एक तोला।

टंक–चार माशे और बाजों ने चौबीस घुंघची भर बताया है।

छटांक–हिन्दी में सेर के सोलहवें हिस्से को कहते हैं। एक छटांक आलमगीरी सेर का चार तोला है।

अन्य–तीन दाम कड़वीकूठ, अधकुचली एक प्याले भर पानी में औटावे जब एक दाम शेष रहे साफ करके पिये।

अन्य–जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के, घाव भरे और उसका जहर असर न करे।

औषधि–जो कुत्ते के काटे हुये को दीवानगी की हालत में भी दे गुण करे–यह दवा आजमाई हुई है जो बरसात में पैदा होती है उसको तलैना भी कहते हैं उसे एक डिबिया में बन्द करके सुखाकर चने की बराबर गुड़ में लपेटकर खावे।

अन्य–अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये मुख्य गुणकारक है–डाक्टर अंग्रेजी की जबानी लालबनात लेकर चने की बराबर सात टुकड़े करके गुड़ में सात गोलियां बनावे और खावे।

अन्य–पछने लगाने और रुधिर निकालने के पीछे राई कूटकर लेप करे।

अन्य–मदार का दूध घाव पर लगावे।

अन्य–उसी कुत्ते के बाल जिसने काटा हो जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायक है।

अन्य–मूली के पत्ते गरम करके घाव पर रक्खे।

अन्य–चूहे की मेंगनी पीसकर लगावे।

अन्य–सँभालू के पत्तों का लेप गुणकारी है।

अन्य–बाजरे का फूल जो बाजरे की बाली में होता है एक माशा भर गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर हर रोज खावे।

अन्य–दो दाम कलौंजी गुनगुने पानी के साथ तीन दिन फांकना गुणदायक है।

गोली–चूहे के बिष को गुणदायक है–सिरस के बीज, नीम के पत्ते, करंजुवे के बीजों की गिरी बराबर के गाय के मूत्र में पीसकर गोलियां बनावे और सबव पर रगड़कर लेप करे जो गाय की चरबी घर में जलावे सब चूहे भाग जावें।

औषधि–मनुष्य के काटे हुये विष को गुणकारक है–गोभी के पत्ते शहद में पीसकर मले।

औशधि–बिल्ली के काटने के जहर को फायदा करे–काले तिल पानी में पीसकर मले और पुदीना भी खाये और मले।

औषधि–कनखजूरे के जहर को गुण करे–मीठा तेल चिराग में जलाये फिर जितना तेल चिराग में रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो मले।

दवा–बन्दर के जहर को गुण करे–मुरदारसंग और नमक पानी में पीसकर मले और कलौंजी और शहद लगावे कि घाव खुला रहे, और प्याज पीसकर मलना भी लाभ दे।

अन्य–मच्छरों के दूर करने के लिये लिखा है कि घोड़े की दुम के बाल कोठरी के दरवाजे पर लटकाये तो मच्छर वहां कम आवें। भूसी, गूगुल, गन्धक और बारासिंगे के सींग की धूनी से भी मच्छर भागते हैं।

तौलों के नाम और उनका हाल।

तौल का नाम **तौलों का हाल**

अब्रीक–तिब की रू से दो मन और बाजों ने पांचरतिल लिखा है।

उरजा–चावल को कहते हैं और उससे चावल छोटा मुराद है कि दो राई के बराबर है।

असतार–साढ़े चार मिस्काल और हिन्दी के हिसाब से एक तोला पांच माशा सात रत्ती।

औकिया–इसे अदकिया भी कहते हैं साढ़े सात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्ती है।

बाकला–आधा दिरम और बाकलाई इस्कंदिरया।

हाकला–नौ कैरात और मिसर के हिसाब से बाकल अड़तालीस जौ के बराबर कि डेढ़ माशा होता है।

परमा–दो कैरात।

बंदका–कोई एक दिरम और बाजे एक मिस्काल कहते हैं।

बहलोली–एक दाम और कइयों ने चौदह माशे लिखा है।

पैसा–बारह माशे अर्थात् एक तोला।

टंक–चार माशे और बाजों ने चौबीस घुंघची भर बताया है।

छटांक–हिन्दी में सेर के सोलहवें हिस्से को कहते हैं। एक छटांक आलमगीरी सेर का चार तोला है।

अन्य–तीन दाम कड़वीकूठ, अधकुचली एक प्याले भर पानी में औटावे जब एक दाम शेष रहे साफ करके पिये।

अन्य–जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के, घाव भरे और उसका जहर असर न करे।

औषधि–जो कुत्ते के काटे हुये को दीवानगी की हालत में भी दे गुण करे–यह दवा आजमाई हुई है जो बरसात में पैदा होती है उसको तलैना भी कहते हैं उसे एक डिबिया में बन्द करके सुखाकर चने की बराबर गुड़ में लपेटकर खावे।

अन्य–अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये मुख्य गुणकारक है–डाक्टर अंग्रेजी की जबानी लालबनात लेकर चने की बराबर सात टुकड़े करके गुड़ में सात गोलियां बनावे और खावे।

अन्य–पछने लगाने और रुधिर निकालने के पीछे राई कूटकर लेप करे।

अन्य–मदार का दूध घाव पर लगावे।

अन्य–उसी कुत्ते के बाल जिसने काटा हो जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायक है।

अन्य–मूली के पत्ते गरम करके घाव पर रक्खे।

अन्य–चूहे की मेंगनी पीसकर लगावे।

अन्य–सँभालू के पत्तों का लेप गुणकारी है।

अन्य–बाजरे का फूल जो बाजरे की बाली में होता है एक माशा भर गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर हर रोज खावे।

अन्य–दो दाम कलौंजी गुनगुने पानी के साथ तीन दिन फांकना गुणदायक है।

गोली–चूहे के बिष को गुणदायक है–सिरस के बीज, नीम के पत्ते, करंजुवे के बीजों की गिरी बराबर के गाय के मूत्र में पीसकर गोलियां बनावे और समय पर रगड़कर लेप करे जो गाय की चरबी घर में जलावे सब चूहे भाग जावें।

औषधि–मनुष्य के काटे हुये विष को गुणकारक है–गोभी के पत्ते शहद में पीसकर मले।

औशधि–बिल्ली के काटने के जहर को फायदा करे–काले तिल पानी में पीसकर मले और पुदीना भी खाये और मले।

औषधि–कनखजूरे के जहर को गुण करे–मीठा तेल चिराग में जलाये फिर जितना तेल चिराग में रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो मले।

दवा–बन्दर के जहर को गुण करे–मुरदारसंग और नमक पानी में पीसकर मले और कलौंजी और शहद लगावे कि घाव खुला रहे, और प्याज पीसकर मलना भी लाभ दे।

अन्य–मच्छरों के दूर करने के लिये लिखा है कि घोड़े की दुम के बाल कोठरी के दरवाजे पर लटकाये तो मच्छर वहां कम आवें। भूसी, गूगुल, गन्धक और बारासिंगे के सींग की धूनी से भी मच्छर भागते हैं।

तौलों के नाम और उनका हाल।

तौल का नाम **तौलों का हाल**

अबरीक–तिब की रू से दो मन और बाजों ने पांचरतिल लिखा है।

उरजा–चावल को कहते हैं और उससे चावल छोटा मुराद है कि दो राई के बराबर है।

असतार–साढ़े चार मिस्काल और हिन्दी के हिसाब से एक तोला पांच माशा सात रत्ती।

औकिया–इसे अदकिया भी कहते हैं साढ़े सात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्ती है।

बाकला–आधा दिरम और बाकलाई इस्कंदिरया।

हाकला–नौ कैरात और मिसर के हिसाब से बाकल अड़तालीस जौ के बराबर कि डेढ़ माशा होता है।

परमा–दो कैरात।

बंदका–कोई एक दिरम और बाजे एक मिस्काल कहते हैं।

बहलोली–एक दाम और कइयों ने चौदह माशे लिखा है।

पैसा–बारह माशे अर्थात् एक तोला।

टंक–चार माशे और बाजों ने चौबीस घुंघची भर बताया है।

छटांक–हिन्दी में सेर के सोलहवें हिस्से को कहते हैं। एक छटांक आलमगीरी सेर का चार तोला है।

अन्य–तीन दाम कड़वीकूठ, अधकुचली एक प्याले भर पानी में औटावे जब एक दाम शेष रहे साफ करके पिये।

अन्य–जो उसी कुत्ते की जिह्वा काटकर जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के, घाव भरे और उसका जहर असर न करे।

औषधि–जो कुत्ते के काटे हुये को दीवानगी की हालत में भी दे गुण करे–यह दवा आजमाई हुई है जो बरसात में पैदा होती है उसको तलैना भी कहते हैं उसे एक डिबिया में बन्द करके सुखाकर चने की बराबर गुड़ में लपेटकर खावे।

अन्य–अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लगावे।

अन्य–कुत्ते काटने के दुःख दूर करने के लिये मुख्य गुणकारक है–डाक्टर अंग्रेजी की जबानी लालबनात लेकर चने की बराबर सात टुकड़े करके गुड़ में सात गोलियां बनावे और खावे।

अन्य–पछने लगाने और रुधिर निकालने के पीछे राई कूटकर लेप करे।

अन्य–मदार का दूध घाव पर लगावे।

अन्य–उसी कुत्ते के बाल जिसने काटा हो जलाकर उसकी राख घाव पर छिड़के।

अन्य–कलौंजी की जवारिश खाना गुणदायक है।

अन्य–मूली के पत्ते गरम करके घाव पर रक्खे।

अन्य–चूहे की मेंगनी पीसकर लगावे।

अन्य–सँभालू के पत्तों का लेप गुणकारी है।

अन्य–बाजरे का फूल जो बाजरे की बाली में होता है एक माशा भर गुड़ में लपेटकर गोली बनाकर हर रोज खावे।

अन्य–दो दाम कलौंजी गुनगुने पानी के साथ तीन दिन फांकना गुणदायक है।

गोली–चूहे के बिष को गुणदायक है–सिरस के बीज, नीम के पत्ते, करंजुवे के बीजों की गिरी बराबर के गाय के मूत्र में पीसकर गोलियां बनावे और सहद पर रगड़कर लेप करे जो गाय की चरबी घर में जलावे सब चूहे भाग जावें।

औषधि–मनुष्य के काटे हुये विष को गुणकारक है–गोभी के पत्ते सहद में पीसकर मले।

औशधि–बिल्ली के काटने के जहर को फायदा करे–काले तिल पानी में पीसकर मले और पुदीना भी खाये और मले।

औषधि–कनखजूरे के जहर को गुण करे–मीठा तेल चिराग में जलाये फिर जितना तेल चिराग में रहे लेकर जहां कनखजूरे ने काटा हो मले।

दवा–बन्दर के जहर को गुण करे–मुरदारसंग और नमक पानी में पीसकर मले और कलौंजी और शहद लगावे कि घाव खुला रहे, और प्यांज पीसकर मलना भी लाभ दे।

अन्य–मच्छरों के दूर करने के लिये लिखा है कि घोड़े की दुम के बाल कोठरी के दरवाजे पर लटकाये तो मच्छर वहां कम आवें। भूसी, गूगुल, गन्धक और बारासिंगे के सींग की धूनी से भी मच्छर भागते हैं।

तौलों के नाम और उनका हाल।

तौल का नाम **तौलों का हाल**

अबरीक–तिब की रू से दो मन और बाजों ने पांचरतिल लिखा है।

उरजा–चावल को कहते हैं और उससे चावल छोटा **मुराद** है कि दो राई के बराबर है।

असतार–साढ़े चार मिस्काल और हिन्दी के हिसाब से एक तोला पांच माशा सात रत्ती।

औकिया–इसे अदकिया भी कहते हैं साढ़े सात मिस्काल कि दो तोले और तीन माशे और छः रत्ती है।

बाकला–आधा दिरम और बाकलाई इस्कंदिरया।

हाकला–नौ कैरात और मिसर के हिसाब से बाकल अड़तालीस जौ के बराबर कि डेढ़ माशा होता है।

परमा–दो कैरात।

बंदका–कोई एक दिरम और बाजे एक मिस्काल कहते हैं।

बहलोली–एक दाम और कइयों ने चौदह माशे लिखा है।

पैसा–बारह माशे अर्थात् एक तोला।

टंक–चार माशे और बाजों ने चौबीस घुंघची भर बताया है।

छटांक–हिन्दी में सेर के सोलहवें हिस्से को कहते हैं। एक छटांक आलमगीरी सेर का चार तोला है।

दाम–एकतोला आठमाशा, और बाजों ने लिखा है कि पक्कादाम एक-तोला नौमाशा और कच्चादाम एक तोला दो माशा।

दांक दवांग–तिब से एक दांग पौने चार रत्ती और शरा से चार रत्ती और पौन चावल।

दिरम–तीन माशे और बाजे साढ़े तीन माशे और कोई दो माशे दो रत्ती बतलाते हैं।

दिरहम–अड़तालीस जौ भर।

दीनार–एक मिस्काल।

रत्ती–चार दरमियानी जौ।

रतिल–अड़तालीस तोले साढ़े चार माशे होता है।

कैरात–सवा चार जौ भर।

माशा–आठ रत्ती या बत्तीस जौ या चौंसठ चावल भर।

मिस्काल–एक सौ बीस जौ भर है कि तीन माशे छः रत्ती होता है, और बाजों ने तीन माशे पौने दो रत्ती लिखा है और शेखउलरईस के हिसाब से बत्तीस जौ भर होता है।

इति इलाजुल्गुरबा भाषा सम्पूर्णम्॥

—:०:—

श्रीमती स्मिता पटवर्धन, प्रबन्ध संचालक, द्वारा राजाराम कुमार प्रेस, लखनऊ में मुद्रित।

हमारे अमूल्य प्रकाशन

पुस्तक का नाम	मूल्य	पुस्तक का नाम	मूल्य
सुखसागर	२४०)	आल्हखण्ड सजिल्द ललिताप्रसाद कृत	१२०)
योग वशिष्ठ सम्पूर्ण २ भागों में	४७५)	अमृत सागर नागरी सजिल्द	१४०)
भक्तमाल भाषा अर्थात् भक्तकल्पद्रुम		शार्ङ्गधर संहिता	६०)
लेखक-श्री प्रताप सिंह	६०)	माधव निदान भाषा टीका	६०)
शिव पुराण भाषा ११ खण्डों में	१६०)	भक्तिसागर चरणदास सजिल्द	१००)
भगवद्‌गीता भाषा सजिल्द	२५)	चाय के गुण-दोष	७)
महाभारत भाषा सचित्र सजिल्द	१८०)	डाक्टर तुलसी	७)
रामायण तु० कृ० टीका पं० लक्ष्मणप्रसाद		डाक्टर दूध	७)
भारद्वाज सचित्र सजिल्द	१४६)	डाक्टर शहद	७)
रामायण तु० कृ० टीका पं० सूर्यदीन शुक्ल		डाक्टर गन्ना	५)
सचित्र सजिल्द	छप रही है।	डाक्टर आम	५)
विश्राम सागर सटीक सचित्र सजिल्द	२२५)	डाक्टर जल	५)
नवीन संग्रह	६)	डाक्टर त्रिफला	७)
सत्यनारायण व्रत कथा रेवाखंडी	६)	डाक्टर गेहूँ और डाक्टर चना	७)
हरितालिका व्रत कथा	३)	दूध और दूध से बनी चीजें	५)
हनुमन्त बावनी	१)	नमक के गुण-दोष	७)
विवाह पद्धति भाषा टीका	३०)	नींबू के सौ उपयोग	५)
सुन्दर विलास	२१)	नीम के सौ उपयोग	६)
सुन्दरकांड गुटका	३)	प्याज के उपयोग	५)
नूतन स्त्री सुबोधिनी	६०)	लहसुन के उपयोग	७)
अष्टावक्र गीता सटीक	६६)	मिट्टी चिकित्सा	५)
पार्वण श्राद्ध	६)	सोयाबीन	७)
दुर्गासप्तशती भाषा टीका सजिल्द	४५)	वृहत्पाकावली	३)
प्रेम सागर सचित्र सजिल्द	१२०)	कर्म विपाक संहिता	३५)
शतपंच चौपाई	३)	प्रश्न प्रकाश	७.५०)
चित्रकूट माहात्म्य	७)	फल प्रकाश	६)
चाणक्य नीतिदर्पण	१५)	चमत्कार चिन्तामणि	७)
महाभारत सबलसिंह चौहान		वृहज्जातक सटीक	३५)
दोहा-चौपाई	१२५)	वैराग्य संदीपिनी	छप रही है।
मुहूर्तचिन्तामणि सटीक	४५)	लग्न चन्द्रिका	३५)
नरसिंह पुराण	५०)	सर्वतोभद्र चक्रम	२५)
व्रज विलास	६०)	हंसराज निदान सटीक	१५)
विष्णु सहस्रनाम	७)	गोपाल सहस्रनाम	६)

मिलने का पता-

तेजकुमार बुक डिपो (प्रा०) लिमिटेड

पोस्ट बाक्स ८५, १, त्रिलोक नाथ रोड, लखनऊ-१

इलाजुल्गुरबा भाषा

अर्थात्

दीन-जन-चिकित्सा

अनुवादक –

स्वर्गीय काश्मीरी पंडित प्यारेलाल रुग्गू

[संशोधित संस्करण]

प्रकाशक –

तेजकुमार बुक डिपो, (प्रा०) लिमिटेड

उत्तराधिकारी –

नवलकिशोर बुक डिपो, लखनऊ

श्रीमती स्मिता पटवर्धन

प्रबन्ध संचालक

द्वारा राजा राम कुमार प्रेस, लखनऊ में मुद्रित

सन् २००३

सोलहवी बार } २,००० मूल्य रू. ६२/–

सर्वाधिकार सुरक्षित